

## प्रस्तावना -

नियति की बात मुझसे मत करो ! मानवीय बुद्धि को नियति से भी मज़बूत संकल्प करना होता है और तब यह स्वयं नियति बन जाती है।

### **थोमस मान - द मैजिक माउन्टेन**

यह कथा अलग - थलग पड़े पहाड़ी इलाके के एकल-शिक्षक-शाला में बिताए चार वर्षों की कथा है। आखिरी कस्बा छोड़ सड़क लगातार उम्र चढ़ती जाती है जब तक हठात वह शिखर तक न पहुंच जाए और हम पर्वत शिखर से सटी एक छोटी, संकरी घाटी को झांककर देख सकें। तब सड़क, जिसके दोनों ओर दर्जन भर मकान हैं, अचानक नीचे उतरने लगती है और घूमते - घामते घाटी तक उतर आती है। सड़क के अंत में जंगल का जो हिस्सा साफ किया हुआ है वहीं स्टोनी ग्रोव स्कूल है। सड़क के आखिरी घुमाव पर मुड़ते ही वह दृश्य अचानक मुझे नज़र आता रहा, तब भी जब मैं उससे बाकयदा परिचित हो चुकी थी। सुबह-सुबह अलाव पाखियों का 'टीचर - टीचर' से स्वागत करना सुखद लगता था।

मुझे पता था कि मैं यहीं की हूँ। जब छोटी सी थी तब से ही इच्छा थी कि किसी ऐसी ही शाला में पढ़ाऊँ। यह सौभाग्य मुझे अंततः अब जाकर मिला था।

स्टोनी ग्रोव स्कूल में बिताए चार सालों तक मैंने एक डायरी लिखी। खास इस मकसद से कि मैं एक अच्छी टीचर बनना सीखूँ क्योंकि लगा यह कि जो कुछ घट रहा हो उसे लिखने पर मेरा चिंतन और साफ होगा। मेरे कुछ मित्रों को लगा कि इस डायरी को प्रकाशित करना चाहिए। मैं एक शिक्षिका हूँ लेखिका नहीं, पर अपनी साहित्यिक सीमाओं के बावजूद मैंने डायरी को प्रकाशन के लिए तैयार करने का बीड़ा उठाया क्योंकि मुझे विश्वास था कि मेरे पास कहने को कुछ है। आगामी चंद वर्षों में शिक्षा को चंद गम्भीर निर्णय लेने हैं कि वह किस दिशा में बढ़ेगी। मैं यह कथा उन तमाम कथाओं में जोड़ना चाहती हूँ ताकि पलड़ा ऐसी शिक्षा की ओर झुके जो लोगों के जीवन में कुछ अंतर लाती हो। मेरा पक्का विश्वास है कि शिक्षा जीवन की गुणवत्ता में खासा सुधार कर सकती है। पर ऐसा बदलाव पुराने तौर - तरीकों से नहीं लाया जा सकता। हमें किताबी ज्ञान से कुछ अधिक की जरूरत है। हमें बच्चों को जानना - समझना होगा, वे दरअसल कैसे हैं और उनकी क्या आवश्यकताएं हैं? इन आवश्यकताओं की पूर्ति का सबसे माकूल तरीका होगा उनकी रुचियों का फायदा उठाना, उनके परिवेश में आस-पास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना और जहां दरकार हो पूरक साधन जोड़ने होंगे। यों हम बच्चों को उनके समग्र व्यक्तित्व का विकास करने में मदद कर सकेंगे और हमारी अनिश्चित सी दुनिया की चुनौतियों का रचनात्मक तरीकों से सामना करने के वास्ते

तैयार कर सकेंगे।

‘प्रस्तुत पुस्तक’ मूल डायरी के आकार की लगभग एक चौथाई है ज़ाहिर है कि यह एक तरह का सार - संक्षेप है। बच्चों को और उनकी पृष्ठभूमियों को भलीभांति समझने सम्बन्धी में जो संकेत मैं कर पाई हूँ, उससे भी अधिक बहुत कुछ घटता है। उम्मीद है कि हर वाक्य की तह में गहरे दबे बच्चों और उनके परिवेश के ज्ञान की अनुभूति आप तक सम्प्रेषित हो सकेगी। मैंने पठन जैसे विषयों को पढ़ाने की विधि की तकनीकी प्रस्तुति नहीं की है। तमाम अन्य लोग ऐसा पर्याप्त रूप से कर चुके हैं। इस पुस्तक में मैंने बच्चों के साथ जीने और काम करने की एक राह दर्शाने की कोशिश की है।

हमारा सामूहिक जीवन चौथे साल में अपनी श्रेष्ठता पर पहुंचा। ज़ाहिर है कि पिछले तीन सालों की उठा-पटक के बिन यह संभव नहीं हुआ था। वृद्धि के इस स्तर तक पहुंचने में आई कठिनाइयों के बारे में पढ़ने पर सम्भवतः आपको कुछ रोचक लगे, कोई मदद मिले और शायद कुछ प्रेरणा भी।

स्टोनी ग्रोव जाने के पहले मैं तीन सालों तक हमारी ही काउन्टी (तहसील) के बड़े स्कूलों में पढ़ाती रही थी। इस दौरान मैंने उन कठिनाइयों से जूझना सीखा था जिनका सभी शिक्षक प्रारम्भ में सामना करते हैं। पर इससे भी महत्वपूर्ण यह था कि मुझे काउन्टी के काम से प्रेरणा मिली थी और मैंने यह तो सीख ही लिया था कि शिक्षण का क्या अर्थ हो सकता है।

हमारी काउण्टी में शाला निरीक्षक होता है जिसे स्टेट डिपार्टमेण्ट ऑफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन (सार्वजनिक शिक्षा विभाग) स्कूलों के कार्य को निर्देशित करने के लिए नियुक्त करता है। साथ ही तीन सहायक शिक्षक होते हैं, न्यू-जर्सी में ग्रामीण निरीक्षकों को इस नाम से बुलाया जाता है, जो शिक्षकों की मदद करते हैं। उक्त चार व्यक्तियों ने एक ठोस और भविष्योन्मुखी नेतृत्व उपलब्ध करवाया गया। उन्होंने अध्ययन किया, तमाम प्रयोग किए और बालक - बालिकाओं के समग्र विकास के बेहतर तरीके तलाशने में पहल की। काउन्टी के बच्चों की सेवा में उनके बीच घनिष्ठ सहकार रहा।

इस समूह का एक सदस्य विगत पच्चीस वर्षों से निरंतर इस आस्था को संजोए काम करता रहा है कि बच्चे महत्वपूर्ण हैं और उनके साथ जो कुछ होता है वह हमारा सबसे महत्वपूर्ण सरोकार है। बच्चों के लिए प्रति यह सरोकार ही हमारे शैक्षिक कार्यक्रम की बुनियाद है। इस दौरान हमारे राज्य का नेतृत्व भी ऐसा रहा कि सभी काउन्टियां राज्य भर में एक बेहतर शिक्षा कार्यक्रम को गढ़ने के वास्ते एक-दूसरे के साथ मिलकर काम कर सकीं।

स्कूली कार्यक्रम को लागू करने में कई एजेन्सियां परस्पर सहयोग करती हैं। ग्रामीण नर्स हर सप्ताह स्कूलों में जाती हैं। एक प्रशिक्षित लाइब्रेरियन के

नेतृत्व में एक काउन्टी पुस्तकालय स्कूलों को ढेरों पठन सामग्री उपलब्ध करवाता है। एक घरेलू प्रदर्शन एजेण्ट व 4 एच क्लब एजेण्ट कृषि विस्तार के कार्य का मार्गदर्शन कर स्कूलों में 4 एच क्लबों के ज़रिए लड़के - लड़कियों और समुदाय के वयस्कों को ग्रामीण जीवन को सुधारने का महत्व बताते हैं।

जब मैं स्टोनी ग्रोव गई तो काउन्टी की नीति व इन एजेन्सियों के योगदान के सबूत मुझे मिले। बच्चे खुश थे और अपनी शिक्षिका के साथ उनका सम्बन्ध भी अच्छा था। उस शिक्षिका ने कई कमिटियों में काम किया था और काउण्टी की शैक्षणिक नीति में हुई प्रगति के विषय में सबको बताया था। वह बच्चों को जानती-समझती थी और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने की चेष्टा कर रही थी। दोपहरी का गर्म भोजन का कार्यक्रम जम चुका था उसके लिए उम्दा उपकरण थे और उसकी योजना घरेलू प्रदर्शन एजेण्ट व सहायक शिक्षक व शिक्षिका ने मिलजुलकर बनाई थी। कस्बाई शिक्षा बोर्ड व काउण्टी सार्वजनिक शिक्षा विभाग के बीच घनिष्ठ सहकार था।

स्टोनी ग्रोव किसी भी शिक्षिका के लिए बढ़िया स्थान था। मुझे किसी भी परिपाटी, की अनुपालना की ज़रूरत नहीं थी। मैं ऐसे राज्य और काउण्टी में थी जिसके शिक्षा कार्यक्रम ने सालों से बच्चों का ख्याल रखा था। कार्यक्रम क्रमशः विकसित हो रहा था और मैं उसमें भागीदारी कर सकती थी। जब मैंने स्टोनी ग्रोव में पढ़ाना शुरू किया तो मैं भी सीखने को तैयार थी, मुझे यह आज्ञादी भी थी कि स्वयं प्रयोग कर यह तलाश सकूँ कि बच्चों का एक समूह और उनकी शिक्षिका किस प्रकार रचनात्मकता की ऊंचाइयों और लोकतांत्रिक जीवन तक पहुंच सकते हैं। अगर मुझे कुछ सफलता मिली तो वह इसलिए कि मेरे लिए सभी राहें खुली थीं। मानसिक-स्वास्थ्यविद (मेंटल हाइजिनिस्ट) हमें बताते रहे हैं कि जिस मानव स्वभाव व परिस्थिति में हम स्वयं को पाते हैं वह दरअसल स्थाई है ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण हद तक हमारे द्वारा ही बनाई गई होती है और उन्हें बदला जा सकता है। इस विचार को स्वयं जांचने-परखने व तलाशने का मुझे हर चंद मौका मिला और साथ ही मिली अमूल्य सहायता। हम ऐसी सामाजिक व्यवस्था कर सकते हैं जिसकी मदद से प्रत्येक, व्यक्ति अपनी समूची सम्भावनाओं को पूरी तरह हासिल करे और जिसके माध्यम से हम मानव जीवन के उच्च स्तर का अनुभव कर सकें - अगर हम सच में ऐसा करना चाहें तो !

जिन लोगों का मैंने उल्लेख किया उनके प्रति मैं अपना आभार जताना चाहती हूँ। मैं उनकी बेहद ऋणी हूँ। मैं अपने माता - पिता की भी ऋणी हूँ जो सीधे - सरल इंसान होते हुए भी शिक्षा की शक्ति को पहचानते थे। मैं अपने अनेक अद्भुत मित्रों की आभारी हूँ जिन्होंने मेरे जीवन के दौरान, जैसी मैं बन सकती

थी उससे एक बेहतर इंसान बनने में मदद की और यों एक बेहतर टीचर बनने में भी।

डॉ. फ्रैंक सिर कोमलता से, पर लगातार मुझ पर तब तक दबाव डालते रहे जब तक मैंने डायरी को प्रकाशन के लिए तैयार करने का वादा न कर डाला। तब उन्होंने पाण्डुलिपि पढ़ी, उसकी आलोचना की और प्रकाशक के समक्ष प्रस्तुत की। डॉ. फैनी डन, एन हॉपकॉक, ब्लांश मोरान व डॉ. पर्सी ह्यूस ने भी पाण्डुलिपि पढ़ी और मुझे कई अच्छे सुझाव दिए, टिप्पणियां की मैं उनकी विशेष आभारी हूँ। श्री व श्रीमती वॉलस क्लार्क ने पाण्डुलिपि टाइप की और सम्पादकीय सुझाव दिए, उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

मार्सिया एवर्ट की मैं बेहद आभारी हूँ। उन्होंने मेरी निस्वार्थ व अपार मदद की ताकि मैं एक रचनात्मक शिक्षिका बन सकूँ। यह पुस्तक हमारे लम्बे व प्रेरणादायक वार्तालापों और चर्चाओं का ठोस नतीजा है जो स्कूल में और उनके घर पर आनंददायक खाने के साथ हुए थे। उन्होंने उन चार सालों के दौरान लिखी गई मूल डायरी का एक - एक पृष्ठ पढ़ा। उस नन्हीं सी शाला के विकास पर लगातार नज़र रखी और संवेदनशील दिशादर्शन किया। उनकी समर्पित सहायता और मित्रता के बिना यह पुस्तक शायद कभी लिखी ही न जाती।

## **अध्याय-1**

### **मेरी ग्रामीण शाला की डायरी**

#### **पहला वर्ष**

इस वर्णन में बच्चों, अन्य लोगों व समुदाय के स्थानों के नाम काल्पनिक हैं। परन्तु काउन्टी की विभिन्न एजेन्सियों व समुदाय के बाहर के मददगारों के नाम मैंने नहीं बदले हैं।

### **मैंने बच्चों को जानना सीखा**

#### **पहले दिन की तैयारी**

**शुक्रवार 5 जून 1936**

मैं आज उस नन्हीं सी शाला को देखने कई जहां मैं आगामी पतझड़ से पढ़ाने वाली हूँ। जब मैं धूप में चमचमाते उस सफेद डब्बेनुमा साफ - सुधरा भवन के द्वार तक पहुंची तो उसने मन में एक विचित्र सी उत्तेजना जगाई एकल शिक्षक शालाओं तथा रचनात्मक व लोकतांत्रिक जीवन के लिए बच्चों को तैयार करने के जो सतत अवसर वे देते हैं, उनमें मेरी गहरी आस्था है। यहां

मुझे बच्चों के एक समूह के पास रहने और उन्हें घनिष्ठता से जानने का अवसर मिल सकेगा। मेरे पास वे उस अवधि तक रहेंगे कि मैं उन्हें एक यथासम्भव सम्पन्न वातावरण में दिशादर्शन के सहारे अपनी क्षमताओं का विकास करते देख सकूँ। मैं दरवाजे पर एक पल रुकी और शाला भवन के इर्दगिर्द पसरे जंगल पर नजर दौड़ाई। हाल में हुई वर्षा ने पत्तों को धो - पोंछ कर चमका दिया था और जंगल सौँधा-सौँधा महक रहा था। “यह सब हमारी प्रयोग शाला होगी” मैंने सोचा।

जब मैं कक्षा में दाखिल हुई तो पाया कि बच्चे अपने वार्षिक खेल दिवस के लिए एक सर्कस तैयार कर रहे थे। कुछ बच्चों ने मेरी और सकुचाई सी दृष्टि डाली, पर सभी काम में जुटे रहे। बच्चों के काम करने के दौरान उनकी शिक्षिका ने उनकी पृष्ठभूमियों व क्षमताओं और भावनात्मक विकास से सम्बन्धित जरूरी बातें बताईं। इस वार्तालाप के दौरान मैंने जो नोट्स लिए और बच्चों के नाम आयु और कक्षाओं की एक सूची के अलावा मुझे उनका कोई अन्य रिकॉर्ड नहीं मिला।

कक्षा	नाम	आयु/वर्ष - माह
8	अन्ना ओल्सेउस्की	13 - 5
8	ओल्गा प्रिलैक	15 - 8
7	कैथरीन सामेटिस	13 - 7
7	रूथ थॉमसन	15 - 2
7	सोफिया सामेटिस	10 - 8
6	डॉरिस एन्ड्रयूस्	11 - 3
6	मेरी ओल्सेउस्की	10 - 10
6	फ्रैंक प्रिलैक	14 - 8
5	मे एन्ड्रयूस्	09 - 3
5	वॉरेन हिल	09 - 7
5	जॉर्ज प्रिलैक	12 - 4
5	एडवर्ड वैनिस्की	
4	हेलेन ओल्सेउस्की	08 - 0
4	एन्ड्रयू डुलिओ	12 - 2
3	एल्बर्ट हिल	08 - 3
3	पर्ल प्रिलैक	10 - 1
3	मार्था जोन्स	08 - 9
3	जोसेफ डन्डर	13 - 5
3	वर्ना कार्टराइट	11 - 2

3	एलेक्स कार्टराइट	12 - 1
3	गस कार्टराइट	13 - 2
2	एलिस प्रिंलैक	8 - 8
2	वॉल्टर विलियम्स	7 - 1
2	विलियम्स सामेटिस	7 - 8
प्रारंभिक बच्चे		
	रिचर्ड कार्टराइट	8 - 6
	जॉन डन्डर	8 - 4
	जॉयस विलियम्स	5 - 4

### सोमवार, 6 जुलाई

मैं शाला भवन में गई और अलमारी की सारी किताबें बाहर निकाली। ज्यादातर किताबें अच्छी थीं, यद्यपि उनकी संख्या कम थी। अलमारी की ऊपरी टाण्ड में मैंने पुरानी अनुपयोगी किताबें जमाई जिनके बारे में मुझे लगा कि मैं उन्हें कभी काम में न लूंगी, पर उन्हें फाड़ने की मेरी हिम्मत न हुई। शेष किताबों में से एक-एक प्रति घर ले जाने के लिए अलग रखने के बाद, मैंने बाकि ताकों पर तरतीब से सहेज दीं ताकि सितम्बर में वे मुझे सुविधा से मिलें। “जब तक मैं बच्चों के बारे में तथा एकल शिक्षक शाला को कैसे चलाया जाए यह जान नहीं लेती मुझे इन्हीं किताबों के बुनियादी पाठों का सहारा लेना होगा।

पुस्तकालय किस्म की तकरीबन दर्जन भर किताबें भी हैं, और उनकी हालत से अंदाज लगा कि बच्चे उन्हें बारंबार पढ़ चुके होंगे। स्कूल खुलने से पहले मुझे काउण्टी पुस्तकालय जाना होगा और कुछ नई किताबें लानी होंगी। लगता है प्रथम वर्ष में मेरे दो उद्देश्य रहेंगे। पहला बच्चों की आवश्यकताओं और उनकी क्षमताओं के बारे में यथासम्भव जान लेना। दूसरा हमारे सामूहिक, रोजमर्रा के जीवन से जितने अवसर मिले और आस-पास के समुदाय के पास उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से इन आवश्यकताओं की पूर्ति बच्चों की क्षमताओं का विकास आरम्भ करना होगा।

### सोमवार 7 सितम्बर

आज शाला भवन, आस-पास उगे खरपतवार के बीच बेहद अकेला लग रहा था। सच गर्मियों में भी भवन का इस्तेमाल होना चाहिए। मैं पहुंची तब श्री हार्ट खिड़कियां साफ करते नजर आए। उन्होंने बताया कि वे साल में एक बार अलाव व चिमती खिड़कियां व दीवारें साफ करने और लकड़ी के फर्श को तेल से चमकाने आते हैं। बाकि समय हमें यानि शिक्षिका और छात्र-छात्राओं को सफाई रखनी होती है। मैंने आस्तीन चढ़ाई और कमरे को व्यवस्थित करने लगी और वह सारा सामान भी जमाने में जुटी जिसकी हमें पहले दिन ज़रूरत

होगी। पाया कि मेज-कुर्सियां अपने स्थान पर टुकी नहीं, हैं उन्हें हटाया जा सकता है। इनके अलावा कमरे में दो छोटी किताबों की अलमारियां हैं, एक पुराना औरगन (एक वाद्य) एक शिक्षक-मेज़ और पहिएदार कुर्सी। भी है। घर की बनी चार कुर्सियां भी मुझे विरासत में मिली हैं जिनका उपयोग शायद पुस्तकालय कोने के रूप में किया जाता है। कमरे के एक कोने ने एक अलाव है। कमरे के प्रवेश दरवाज़े के बाहर एक छोटा सा हॉल है जिसमें एक सिंक लगा है, पर चालू पानी नहीं है। यह हिस्सा कोट आदि टांगने के लिए काम आता है। दूसरी ओर एक रसोई है। वहां दीवार में ही दो अलमारियां बनी हुई हैं, फर्श से छत तक। पकाने-खाने के सभी बर्तन-भाण्डे इसमें आराम से समा सकते हैं। वहां दो मुँहा तेल स्टोव भी है। जब मैं और श्री हार्ट वापस लौटे तो शाला भवन साफ-सुथरा था, और वैसा नजर भी आ रहा था। इस साल अन्दरूनी दीवारें हल्के मलाइया-पीले रंग से पोती गई हैं।

मंगलवार 8 सितम्बर

गर्मियों के दौरान मैंने फैनी डब्ल्यू डन तथा मार्सिया ए एवर्ट की किताब 'फोर ईयर्स इन अकन्द्री स्कूल, फिर से पढ़ी थी और उन पाठ्य पुस्तकों को भी देखे हूँ, जिसका इस्तेमाल मुझे इस साल करना है। आज मैं पहले दिन की तैयारी करने बैठी हूँ। बच्चों को यह लगना चाहिए कि दिन भर स्कूल में गुज़ारने के बाद उन्होंने सच में कुछ हासिल किया, और जो समय यह सब करते गुज़ारा उसमें उन्हें मज़ा भी आया। तभी तो अगले दिन लौट कर आने की चाह जागेगी। जो कार्यक्रम मैं बनाऊँ वह मुझे बच्चों को काम करते देखने का मौका भी दे, ताकि मैं उन्हें जान सकूँ, उनके मनोभाव ताड़ सकूँ। पर साथ ही यह कार्यक्रम इतना तयशुदा तो हो ही कि मैं आत्मविश्वास से बच्चों के साथ हंस-खेल सकूँ, वे मुझे अपना दोस्त मान सकें। समूचे साल की सफलता और असफलता काफी हद तक पहले दिन पर टिकी होती है। मेरी योजना की रूपरेखा कुछ यो हैं: प्रातः 9 से 9.30 : मेज-कुर्सियों की ऊँचाई बच्चों के हिसाब से ठीक करना। किताबें और सामग्रियां बाँटना (इससे बच्चों को शुरू से ही सक्रिय रूप से कुछ करने को मिलेगा)।

9.30 से 10.30 : सामाजिक अध्ययन। शुरूआती दौर में दसक मिनट बच्चों को कुछ बताना। सम्भव हो तो उन्हें अपने विषय में कुछ बताने को उकसाना।

बड़ी कक्षाओं (छठी, सातवीं, आठवीं) के समूह और बीच के समूह को इतिहास की पाठ्यपुस्तक के कुछ पन्ने पढ़ने को कहना। जिन सवालों के जवाब उन्हें देने हैं, उन्हें श्यामपट्ट पर लिख देना होगा। ये बच्चे खुद पढ़ेंगे और मैं अगले बीसेक मिनट प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों से बातचीत करूंगी।

छोटी कक्षाओं के बच्चों से गर्मियों में उन्होंने क्या-क्या मज़े किए पर बात करूंगी। छोटे बच्चे अमूमन बात करते समय अपने पालतू जानवरों की बात करते हैं। कोशिश यह करनी होगी कि सभी बच्चे कुछ योगदान ज़रूर करें। उनके साथ एक कितबिया की योजना बनाऊंगी, जो शायद उनके पालतू जानवरों पर होगी। कहूंगी कि वे चित्र बनाएं और जो कुछ उन्होंने चर्चा में कहा था उसे लिख डालें।

छोटी कक्षाओं के बच्चे तब अपना काम जारी रखेंगे और मैं निचले समूह के साथ करीब पन्द्रह मिनट काम करूंगी। हम एक-एक कर सभी सवालियों पर चर्चा करेंगे। तब प्राथमिक समूह, बिचले समूह के एक बच्चे के नेतृत्व में बाहर चला जाएगा। बिचले समूह के शेष बच्चे चर्चा के अनुसार काम जारी रखेगा। मैं तब बड़ी कक्षाओं के बच्चों के साथ पन्द्रह मिनट की चर्चा करूंगी। बातचीत उसी तरह होगी जैसी बिचली कक्षाओं के साथ हुई थी।

10:30 से 10:50 : शारीरिक शिक्षा। 4 से 8 वीं कक्षाओं के बच्चों को डॉज बॉल खिलवाना शुरू कर प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ खेलूंगी।

10:50 से 12:00 प्राथमिक बच्चों को 'क्लार्क इंग्राहैम पठन निदान परीक्षा' दूंगी। (इससे उनकी पठन क्षमता का पता चल सकेगा) इस दौरान बड़े बच्चे अपनी-अपनी 'रीडर' में से पहली कहानी पढ़ेंगे और उनकी समझ को जांचने के लिए कुछ सवालियों के जवाब देंगे। यह काम खत्म करने पर वे पुस्तकालय से लाई नई किताबें देख-पढ़ सकेंगे, जिन्हें मैं स्कूल ले जाऊंगी।

12:00 से 1:00 बीस मिनट का भोजन अवकाश और तब बाकि समय मैदान में खेल।

1:00 से 1:30 प्रार्थना। बाईबल पढ़ना, लॉर्डस् प्रेयर, अमरीकी ध्वज को सलाम। संगीत : बच्चों से गोल्डन बुक ऑफ सांग्स से चुनकर गीत गाने को कहना।

1:30 से 2:15 बड़े बच्चों को गणित निदान टेस्ट दूंगी। छोटे बच्चे पुस्तकालय की किताबें देख-पढ़ सकेंगे और तब बाहर खेलने जाएंगे। यह कालांश मुझे बच्चों के काम का अवलोकन करने का मौका देगा। सवा दो बजे छोटे बच्चे घर लौट जाएंगे।

2:15 से 2:30 शारीरिक शिक्षा। बड़े बच्चों के साथ कोई खेल खेलना।

2:30 से 2:45 वर्तनी। सातवीं व आठवीं को जोड़ कर आठवीं के शब्दों की परीक्षा। पांचवीं छठी को छठी के शब्द। चौथी के लिए चौथी कक्षा के शब्द। सभी बच्चों को एक साथ ही बैठा कर यह सिखाना होगा कि वे अपने-अपने शब्दों को स्वतंत्र और प्रभावी रूप हो कैसे पढ़ें और सीखें।



2:45 से 3:30 गणित। पर सभी कमोबेश व्यक्तिगत स्तर पर काम करेंगे। वे अपनी किताबों की शुरुआत में दिए गए दोहराव के पाठ से प्रारंभ करेंगे। मुझे उनकी काम करने की आदतों के अवलोकन का मौका फिर से मिलेगा। यह योजना वैसे तो काफी औपचारिक सी लग रही है पर बच्चों के साथ मेरा बर्ताव अनौपचारिक और दोस्ताना रहेगा।

### **बुधवार 9 सितम्बर**

सुबह घर से निकले समय डर और थरथराहट सी थी। यह जानती थी कि मैं तैयार हूँ, कक्षा व्यवस्थित है, सामग्रियां करीने से रखी हैं, पूरे दिन की सावधानीपूर्वक योजना बना ली गई है, पर मानो अपनी सारी अपर्याप्तताओं के बोझ का अहसास मुझे दबा रहा था। घर से शाला भवन की दूरी ग्यारह मील है और रास्ते भर मैं अपने संबोधन को दोहराती रही, मैं बच्चों को बताऊंगी कि खुद को यहां पाकर कितनी खुश हूँ और मैं उनमें से एक बन कर रहूंगी, यह हमारा सौभाग्य है कि हम एक निहायत खूबसूरत जगह पर रहते हैं, और हम मिलजुलकर उसकी खोजबीन करेंगे। यह भी बताऊंगी कि साल कमोबेश वैसा बनेगा जैसा हम उसे बनाएंगे। हम अपनी समस्याओं के समाधान साथ-साथ तलाशेंगे, एक दूसरे को ठीक से समझ लेंगे।

पर तब यह भय सताने लगा कि बच्चे समझेंगे नहीं। शायद एक कहानी कहनी चाहिए, एक हास्यकथा पर खूब सोचने पर भी एक भी उपयुक्त कहानी नहीं सूझी।

जब स्कूल पहुंची तो बच्चे दरवाजे के इर्दगिद इकट्ठे थे, घुसना ही मुश्किल था। वे मेरे साथ ही दाखिल हुए और तब तक स्थान बदलते रहे जब तक उन्हें मन माफिक जगह न मिल गई। अंततः कमरे में एक शांति सी छा गई और वे मुझे आतुरता से देखने लगे। स्कूल शुरू करने के अलावा, कोई चारा न था। हमने मेज कुर्सियों की ऊँचाई सही की। रैल्फ और फ्रैंक ने इस मशक्कत की जिम्मेदारी ली। नौ बजते-बजते हम काम शुरू करने को तैयार थे। बच्चे आज चुप थे और अधिकतर वह सब करते रहे जो कहा गया।

कुछ बच्चे समूह में अलग से नजर आते हैं। रैल्फ और फ्रैंक-दो बड़े लड़के और एना व रूथ मौका पड़ते ही मदद को तैयार रहते हैं। मार्था की आंखें ज़ोर से चमकती हैं। हिल लडकों की मुस्कान प्यारी सी है। ओल्गा इतनी बड़ी और शर्मीली है, असहज सी लगती है। दोनों नन्हे विलियम्स बच्चे घबराए से लगते हैं। ढेरों कार्टराइट बच्चे हैं। जोसेफ इन्डर, जो मनोवैज्ञानिक क्लिनिक की रिपोर्ट के अनुसार लगभग मनोरोगी है, ने नाक में दम कर दिया। सभी बच्चे शर्मीले और संकोची लगे।

### **गुरुवार 10 सितम्बर**

आज की समय सारणी लगभग कल सी थी। मेरा मुख्य उद्देश्य था बच्चों के बारे में और अधिक जानना। पठन के कालांशों में मैंने हरके को ज़ोर से पढ़ते सुना है और यह तय कर लिया है कि मैं फिलहाल उनके अस्थाई समूह कैसे बनाऊंगी। मैंने पाया कि इतिहास के पाठ दोनों समूहों आठवीं के बच्चों के अलावा को समझने में बेहद कठिन लग रहे हैं। एन्ड्र्यू जिसे दरअसल चौथी में होना चाहिए, प्रवेशिका तक नहीं पढ़ पाता है। प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों ने अपनी पठन परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया। परन्तु चौथी और उसके बाद की कक्षाओं के बच्चों का पठन कौशल कमजोर था। कुछ ही बच्चे हैं जिन्हें पढ़ना पसंद है। सभी ने पुस्तकालय की किताबों के चित्र देखे पर कुछ ही लड़कियों ने उन्हें पढ़ना शुरू किया है लगता है कि मेरा सबसे बड़ा काम होगा इन बच्चों को छपे पन्नों से अधिकतम निकाल पाने में मदद करना, पढ़ने में आनन्द लेना सिखाना। पढ़ने की क्षमता में कमी का एक कारण यह लगा कि पढ़ने के अनुभव का ही अभाव है। मैंने गौर किया कि वे पढ़ते समय कई कठिन शब्दों की जगह चालू भाषा के शब्द रख काम चला लेते हैं।

आज बच्चों की दो अन्य आवश्यकताएं भी उभरीं। पहली तो यह कि इन बच्चों को न तो साथ-साथ खेलना आता है, न ही वे साथ खोलना चाहते हैं। कल लड़कियों को लड़कों के साथ डॉज बॉल के खेल में दिक्कत हुई थी। लड़कियों ने कहा कि लड़के बड़े उजाड़ हैं। आज लड़कियों ने कहा कि वे छोटे बच्चों के साथ जो खेलना चाहती हैं। लड़कों के साथ जो खेल शुरू करवाया था वह जल्दी ही बन्द हो गया, और वे हमें खेलते देखने लगे। मैंने उन्हें साथ खेलने को आमंत्रित किया और जवाब में वे हंस पड़े। मुझे लगा कि रैल्फ ही इस सबमें नेतागिरी कर रहा था। मैंने मन में गाँठ बान्ध ली कि उसे अपनी पाली में मिलाने का उपाय मुझे ढूँढना होगा।

दूसरी, अगर इन बच्चों से ऐसी किसी गतिविधि में हिस्सा लेने को कहा जाता है जिसे वे “स्कूली काम” नहीं मानते तो वे बड़ा असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। अधिकतर लड़के गाते नहीं हैं। वे मुझे कहते हैं कि वे गा नहीं सकते। मैंने जानना चाहा कि क्या वे हारमोनिका बजाना सीखना चाहेंगे। उनकी प्रतिक्रिया ठीक-ठाक लगी। शायद इससे इन अतिसंवेदनशील लड़कों को संगीत का कुछ अनुभव मिल सके।

आज कुछ बच्चों से व्यक्तिगत स्तर पर थोड़ी निकटता आ पाई। वॉरेन दो बार अपना काम न कर पाने के कारण रो पड़ा। पहली बार मैंने अनदेखी की, पर दूसरी बार वह इतनी ज़ोर से रोने लगा कि मैं शारीरिक शिक्षा वाली कक्षा को खुद खेलने छोड़ उससे बात करने आई। मैंने कहा “वॉरेर, हम अपनी समस्याओं पर रोते नहीं हैं उन्हें सुलझाने की कोशिश करते हैं। मेरा काम यह भी है कि मैं तुम्हारी उन समस्याओं को सुलझाने में मदद करूँ, जिन्हें तुम

खुद नहीं सुलझा पाते। रोने के बदले क्या मुझे यह नहीं बताओगे कि तुम्हारी परेशानी क्या है” उसने दो गहरी सांसों के बीच कहा कि वह कोशिश करेगा। जॉन और जोसेफ डन्डर आज अनुपस्थित थे। इससे मुझे मौका मिला कि मैं उनके घर जाऊँ और उनके माता-पिता से परिचय कर लूँ। वॉरेन ने कहा कि वह मुझे डन्डर परिवार का घर दिखा देगा। उसके कुछ और करीब आने के अवसर का मैंने स्वागत किया। वॉरेन का भाई एल्बर्ट और वॉल्टर विलियम्स भी साथ चलना चाहते थे। स्कूल के बाद मैं पहले वॉरेन और तब वॉल्टर के घर उन्हें साथ ले जाने की अनुमति लेने गई। हम जब पहुंचे तब श्रीमती हिल ब्रेड बना रही थीं। हिल परिवार ने अपना छोटा सा खेत तीन साल पहले खरीदा था और अब वे घर की मरम्मत करवा रहे हैं। वॉरेन में मुझे खुशी से गमकते हुए हर सुधार दिखाया। मुझे पत्थरों से बना बड़ा अलाव बेहद पसंद आया जो उन्होंने अपनी बैठक में बनवाया है। श्री हिल शिक्षक हैं और हर हफ्ते शनि और रविवार को घर आते हैं। विलियम्स परिवार के यहां मैं वॉल्टर की माँ और दो छोटे बच्चों से मिली जो अभी स्कूल आने लायक नहीं हुए हैं। श्री विलियम्स गांव के लिए सड़कों का काम करते हैं। उनका फूल और सब्जियों का बेहद सुंदर बाग है। श्रीमती विलियम्स ने मुझे वे सारे डब्बे दिखाए जिसमें उन्होंने पिछले सप्ताह फल भरे थे।

डन्डर परिवार एक छोटी सी झोंपड़ी में रहता है। श्री डन्डर उस संपत्ति के दरबान हैं जिसके मालिक न्यूयार्क में रहते हैं। श्रीमती डन्डर ने बताया कि लड़कों की स्कूल आने की इच्छा ही नहीं हुई। मैंने उन्हें बताने की कोशिश की कि नियमित उपस्थिति महत्वपूर्ण है। पर उनका कहना था कि अगर लड़के आना ही न चाहें तो वे भला क्या कर सकती हैं। मैं खास असर न डाल सकी।

आज रात फिर से दैनिक कार्यक्रम की योजना बनाई। ज़ाहिर है जैसे ही इसमें कमी लगेगी वह फिर से बदला जाएगा। अब मैं कक्षाओं के विभाजन छोड़ कर बच्चों को उन समूहों में रखने वाली हूँ जो उनके अनुकूल हों। इसका मतलब यह भी होगा कि समूहों की संख्या घटेगी और मैं प्रत्येक समूह के साथ अधिक समय बिता पाऊंगी। बड़े समूहों में काम करने से बच्चों को चर्चा के मौके मिलेंगे, वैचारिक आदान-प्रदान होगा और उनका सामाजिक विकास भी होगा, जो अकेले या छोटे समूहों में काम करने पर सम्भव नहीं होता।

### **शुक्रवार 11 सितम्बर**

हमारा उजाड़ खेल मैदान आसपास के खूबसूरत नज़ारों से बिल्कुल विपरीत दिख पड़ता है। मुझे लगा कि स्कूल मैदान का सौंदर्यीकरण हमारे प्रकृति और विज्ञान के अध्ययन के लिए सही उपाय रहेगा क्योंकि यह हमारे अध्ययन को एक व्यावहारिक उद्देश्य भी देगा। मैंने बच्चों को सुझाया कि हम अपने

स्कूल परिसर के कुछ चित्र बनाएं जिसमें हम वे बदलाव भी दर्ज करें जो हम भविष्य में चाहते हों। हमने ब्लैकबोर्ड पर सारे क्षेत्र और स्थिर वस्तुएं नोट कर लीं जिनको हमें नापना था। तब हमने चौथी से आठवीं तक के सभी बच्चों को दो-दो की जोड़ियों में बांट लिया। बच्चा नापने की टेप और गज-फुट्टे लेकर बाहर चले गए और मैंने अपना ध्यान नन्हे-मुन्नों की ओर लगाया।

प्राथमिक समूह पतझड़ के लक्षणों की बात का रहा था। वे दबाते-सुखाने के लिए रंगीन पत्ते, तरह-तरह के बीज, कृमिकोष और पतझड़ के जंगली फूल लाएंगे। एलेक्स और गस एक कांच की शीशी में चींटियों की बाम्बी लाना चाहते हैं जैसा हमारी विज्ञान की किताब में सुझाया गया है ताकि वे देख सकें कि चींटियां दरअसल शीतनिद्रा करती हैं या नहीं। यह सब हमारे विज्ञान संग्रहालय में जाएगा। हमें कुछ समय कागज़ की पवन-चक्कियां बनाने के लिए भी मिल पाया।

जब नन्हे बच्चे अपनी कागज़ की चक्कियों के साथ खेल में जुट गए तो मैंने स्कूल परिसर का चित्र बनाने में बड़े बच्चों की मदद की। हमने बोर्ड पर एक अच्छा सा नक्शा बनाया जिसमें लंबाई, चौड़ाई और दूरियां लिखीं तब मिलजुलकर यह हिसाब लगाया कि कागज़ के आकार के अनुसार उनका नाप-जोख क्या रहेगा। बातचीत के दौरान बच्चों ने सुझाया कि स्कूल भवन के सामने फूलों की क्यारी एक छोटी बनानी चाहिए।

पुस्तकालय पठन के लिए मैं कुछ समय अलग से तय करती हूँ ताकि बच्चों को पढ़ने में दिशा दे सकूँ। इससे बच्चों को यह बताने का मौका भी मिलेगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं। बच्चे पढ़ना पसंद करने लगे इसका एक ही उपाय मुझे आता है, वह यह कि उन्हें पढ़ने दिया जाए, पर संतोषजनक स्थितियों में। आग्रह करने पर प्राथमिक समूह के चार बच्चे सबको यह बताने को स्वेच्छा से आगे आए कि वे कौन सी किताबें पढ़ रहे हैं। मार्था ने अपनी बात बड़ी सिफत से रखी और समूह को मज़ा आया। विलियम और वॉल्टर कुछ संकोच से बोले, वह भी इतने धीरे की सुनने में कठिनाई हुई।

स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों की ज़रूरत ज़ाहिर ही है। मैंने सोचा है कि इन आदतों को सुधारने में यथासंभव व्यवहारिक उपाय ही अपनाने होंगे। रोज़मर्रा के जीवन में स्वास्थ्य के महत्व के बारे में कुछ प्रारंभिक टिप्पणियों के बाद मैंने बच्चों से ही पूछा कि वे सुबह उठने के बाद रात को सोने के बीच कौन-कौन से ऐसे काम करते हैं जिनका रिश्ता स्वास्थ्य से हो। हमारे ब्लैकबोर्ड पर एक लम्बी सूची बन गई। तब मैंने रेखांकित किया कि हम जो कुछ भी करते हैं लगभग उन सभी कामों में स्वास्थ्यप्रद आदतें जुड़ी होती हैं, स्वास्थ्य का ज्ञान अच्छा जीवन जी पाने के लिए ज़रूरी है। हमने सोचा है कि हम सूची

में आने वाले प्रत्येक बिन्दु पर बात करेंगे ताकि हम नए स्वास्थ्य आचरणों के बारे में 'क्यों' के उत्तर तक पहुंच सकें।

आज खेल के कालांश बेहतर रहे। आज दोनों एन्ड्र्यू बालिकाओं के आलावा सभी बच्चे खेले। डॉरिस ने कहा कि उसका दिल कमजोर है।

स्कूल के बाद मैंने हमारे 4-एच वानिकी क्लब को व्यवस्थित किया। यह इलाका प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है। बच्चे जहां रहते हैं उस बारे में उन्हें काफी कुछ जानना चाहिए। इससे उनकी जड़ें मज़बूत होती हैं, उनमें सुरक्षा और किसी स्थान विशेष के होने को भावना पनपती है। क्लब में इस इलाके में रहने वाले हाईस्कूल विद्यार्थी भी होंगे। वे सब स्कूल के बाद कुछ समय शाला भवन में बिताते रहे हैं। गाँव चार मील दूर है और स्कूल के अलावा कोई सामुदायिक संस्था है ही नहीं। अतः उनके लिए मनोरंजन का कोई दूसरा ठिकाना भी नहीं है।

इस पहली बैठक में हम ग्यारह जन थे और हाईस्कूल की पाँच लड़कियाँ। हमने "खजाने की खोज" का खेल खेला क्योंकि मैं जानना चाहती थी कि वे अपने प्राकृतिक वातावरण के बारे में दरअसल कितना जानते थे। हरेक सम्भागी को कोई ऐसे प्राकृतिक नमूने की पहचान करनी थी जिसका नाम उसे पता हो, और तब वहीं खड़े रहना था, क्योंकि उसे नुकसान पहुंचाने से उसे दल से निकाल दिए जाने की शर्त थी। दो हाईस्कूल लड़कियों के नेतृत्व में दो टोलियां बनी। हमने अट्टानवें नमूनों की पहचान की। ये बच्चे अपनी प्रकृति से सच में वाकिफ हैं

डॉरिस प्रायः बस से घर जाती है सो मैंने वाद किया कि आज रात अगर वह क्लब के लिए रुकती है तो मैं उसे घर छोड़ दूंगी। मैं उसकी माँ से मिली वे एक शांत महिला हैं जो घर से बिरले ही निकलती हैं। मुझे पता चला कि डॉरिस का दिल कमजोर नहीं है। उसकी माँ ने बताया कि डॉरिस बहुत स्वस्थ बच्ची नहीं है। पर वह घर में लगातार टैप-नृत्य करती है और थक जाती है। मुझे डॉरिस को दूसरे बच्चों के साथ खेलने को प्रोत्साहित करना हागा। उसे दूसरों से मेलजोल के अनुभव की दरकार है। श्री एन्ड्र्यू की मृत्यु हो चुकी है और श्रीमती एन्ड्र्यू को बच्चों के लिए सरकारी पेन्शन मिलती है।

#### **सोमवार 14 सितम्बर**

एकल शिक्षक विद्यालय में पढ़ाने सम्बन्धी इतने आयाम हैं कि मुझे लगता है कि मैं ढंग से कोई भी काम करना तब तक नहीं सीख पाऊँगी, जब तक मैं उनमें से कुछ पर ध्यान केन्द्रित न कर लूं। अगले कुछ समय तक मैं पठन और प्रबन्धन पर ही ध्यान केन्द्रित रखूँगी। इन बच्चों को दिन में कई बार निर्देशित पठन अनुभव देने की कोशिश करूँगी।

इस तरह की शाला का प्रबन्धन खास बड़ी बात नहीं होनी चाहिए। अगर कुछ रोजमर्रा के काम व्यवस्थित हो जाएं, जैसे कमरे और परिसर की सफाई, और यह कुशलता से निपटा लिए जाएं, तो हम दूसरे कामों पर ध्यान दे सकते हैं। पर एक दूसरी समस्या भी है, वह है खेल मैदान का प्रबन्ध जहां कुछ समय तक तो सावधानी से नज़र रखना ज़रूरी होगा। बच्चे इसके पहले दोपहरी के अवकाश में इधर-उधर भटकते रहते थे सो उन्हें लग रहा है कि मैं उनके मध्यावकाश छीने ले रही हूँ, क्योंकि मैं शारीरिक शिक्षा के कालांशों में उन्हें खेल-खेलने को जो कहती हूँ। स्कूल दरअसल छोटे-छोटे गुटों में बंटा हुआ है और एक दूसरे में उनकी खास रूचि नहीं है। उनमें सामूहिक चेतना का अभाव है।

गस अपने एक सफेद चूहे को स्कूल लाया और हमने उस पर एक कहानी लिखी। प्राथमिक समूह अब उसे पढ़ना सीख रहा है। कहानी बनाना कठिन काम है और मुझे इसके लिए बच्चों से कई सवाल पूछने पड़े, तमाम सुझाव भी देने पड़े।

मैंने बड़े समूहों को इतिहास की दूसरी किताबें दी हैं जो इतनी कठिन नहीं हैं। बच्चे उन सवालों के जवाब भी लिखने लगे हैं जो मैं बोर्ड पर लिखती हूँ परन्तु हम चर्चाओं के दौरान उन पर्वों को इस्तेमाल नहीं करते। जब बच्चों को किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता तब हम किताब में उत्तर तलाशते और उसे जोर से पढ़ते हैं। तब अपने शब्दों में वह जवाब लिखते हैं। यह प्रक्रिया उबाऊ है पर इन बच्चों के लिए पहला कदम है। वे ऐतिहासिक सामग्री पढ़ना सीख रहे हैं और साथ ही अपने लेखन में तथ्यात्मकता और स्पष्टता लाना भी। इसमें काफी समय लग रहा है, पर बाद में इसी कारण समय भी बचेगा।

### **मंगलवार 15 सितम्बर**

बच्चे जिम्मेदारियां ले जवाबदेह बनना सीख रहे हैं। अगर उन्हें बुद्धिमान नागरिक बनना है तो एक नागरिक की जिम्मेदारियों को निभाने का अभ्यास तो उन्हें करना ही होगा। दिन खत्म होने पर मैंने एक विज्ञान क्लब बनाने की चर्चा बच्चों से की। उन्हें ऐसे क्लब की गतिविधियों का कोई अंदाज ही नहीं था अतः ज्यादातर बातचीत मुझे ही करनी पड़ती। मैंने समझाया कि समूह के समक्ष आने वाली समस्याओं का उन्हें साझा समाधान करना होगा और हम अपने स्कूल को रहने-जीने का एक बेहतर स्थान बनाने की कोशिश करेंगे। हमने क्लब का गठन किया और पदाधिकारी चुने। जब मैंने बच्चों से पूछा कि उनका अध्यक्ष कैसा होना चाहिए तो उनका जवाब था कि उसे दयालु, अच्छा और बड़ा होना चाहिए। उनका कहना था कि उपाध्यक्ष की भी ठीक यही योग्यताएं होनी चाहिए और सचिव को लिखने में माहिर होना चाहिए। एना हमारी पहली अध्यक्ष हैं, रैल्फ उपाध्यक्ष, और मेरी सचिव। चुनाव के बाद

हमने बोर्ड पर उन जिम्मेदारियों की सूची बनाई जिन्हें प्रतिदिन करना होगा। हमने यह भी तय किया कि ये काम कौन-कौन करेगा।

सामान्य प्रबंधक - ओल्गा  
कमरे की सफाई - रैल्फ और एडवर्ड  
लड़कियों का टॉयलेट - रूथ  
लड़कों का टॉयलेट - जॉर्ज  
झाड़-पोंछ - कैथरीन व एलिस  
हॉल प्रबंधक - एना  
पुस्तकालय प्रभारी - सोफिया  
संग्रहालय प्रभारी - मे  
हाथों की धुलाई - एन्ड्रू  
अलाव और कमरे का तापमान - फ्रैंक  
मेजों का निरीक्षण - वॉरेन  
झंडे को चढ़ाना उतारना - डॉरिस  
खिड़कियां - मेरी  
फूलों को पानी देना - हेलन  
अल्मारियों का निरीक्षण - वर्ना  
बाहरी जूते और खाने के डब्बे - रिचर्ड और वॉल्टर  
खेल सामग्री - गस  
कागज़ जलाना - एलेक्स  
मेज़बान - एल्बर्ट  
मेज़बान - वार्था

क्लब के कई, नाम सुझाए गए और अंततः हमने उसे 'सहायक क्लब' का नाम देना तय किया।

आज मैं ओलसेउस्की परिवार के यहाँ गई। एना की माँ बड़ी खुश थी कि उसकी बेटी को कक्षा का "हैड" चुना गया है। पाती हूँ कि उनका रसोईघर बिल्कुल सादा है, रगड़ कर साफ किए गये फर्श पर लाइनोलियम तक नहीं है। बच्चे घर के सिले अरोचक, तंग-ढीले कपड़े पहने थे, पर सबके कपड़े झक साफ थे। श्री ओलसेउस्की मृत्यु हो चुकी है और श्रीमती ओलसेउस्की को बच्चों के लिए सरकारी पेंशन मिलती है। उन्होंने बताया कि उनके बच्चों को नई टीचर जी अच्छी लग रही हैं और उम्मीद जाहिर की कि मैं अक्सर मिलने आऊंगी पाया कि लड़कियों ने पहले अपनी माँ से पोलिश भाषा में बात करने से ही इन्कार कर दिया था। उन्होंने माँ को कहा था कि वह मेरे सामने अपनी भाषा का प्रयोग न करे उन्हें डर था कि मुझे ऐसा करना अच्छा नहीं लगेगा। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं अपनी मातृभाषा न केवल बोल बल्कि

पढ़ और लिख भी सकती हूँ तो वातावरण अचानक हल्का हो गया।

प्रिलैंक परिवार के यहां मुझे ढेरों फूल दिए गए। इस परिवार में ग्यारह बच्चे हैं। दो अब काम करते हैं पांच पढ़ रहे हैं और चार स्कूल जाने लायक आयु के नहीं हुए हैं। परिवार की आय सीमित है क्योंकि वह मात्र चार गायों के दूध पर निर्भर है। श्रीमती प्रिलैंक कुपोषित और काम के बोझ से दबी लगती हैं।

### **बुधवार 16 सितम्बर**

गस के चूहे पर चर्चा आज बेहतर रही और जल्दी ही एक कहानी बन गई। बच्चों को लिखने के लिए कुछ मिला।

हम जम्बो को देख रहे हैं।

वह सेब और रोटी खाता है।

वह जाली पर चढ़ जाता है।

वह अपना बिल बनाता है।

वह हमसे डरता है।

हम शोर कम करेंगे।

दोपहर बाद के सत्र में एक शान्ति पसर आई। गणित कम से कम शरीर को शान्त करता है। मुझे गणित, का कालांश, दिन के आखिरी हिस्से में रखना पसन्द आता है। आज मैंने वॉरेन को जोड़ना सिखाने में मदद की। उसे पता था कि यह काम दूसरी कक्षा का था, पर उसने मेरी मदद स्वीकारी और रोया नहीं।

लौटते समय मैं श्रीमती समेटिस से मिलने रुकी। श्री समेटिस की शहर में दुकान है और वे महीने में एक बार आते हैं। घर अस्त-व्यस्त था और बहुत साफ भी नहीं था। उनकी एक बड़ी बेटी है जो हाई स्कूल में पढ़ती है और बड़ी चतुर है। बाकि बच्चे भी शालीन और मजेदार लगे। मैं उनकी पृष्ठभूमि को ठीक से जानना चाहूंगी।

घर लौटने के पहले हिल परिवार के पास भी रुकती हूँ। हम वॉरेन पर लंबी बातचीत करते हैं। वॉरेन जब शिशु शाला में जाने लगा तो उसमें संवेदनशीलता के लक्षण नज़र आने लगे थे। जब हिल परिवार ने यह खेत खरीदा और यहां आ बसे तो वॉरेन को स्कूल बदलना पड़ा, शिक्षिका के तौर-तरीके बदलने पर उसे परेशानी होने लगी। उसे जब यह लगने लगा कि वह आगे नहीं बढ़ पाएगा तो भावनात्मक रूप से इतना उद्वेलित हो गया कि आगे सीखना और कठिन बन गया। लड़कों को पता चल गया कि वह आसानी से बुरा मान जाता है। फिर क्या था, उन्होंने उसका जीना हराम कर डाला। एल्बर्ट छेड़छाड़ से इतना परेशान नहीं होता, सो नई परिस्थितियों में आसानी से अनुकूलित हो गया। शायद श्रीमती हिल और मैं, मिलकर वॉरेन की मदद कर



सकें।

## गुरुवार 17 सितम्बर

आज सुबह स्कूल शुरू होने के पहले कुछ लड़के चोर-सिपाही खेल रहे थे कि रॉल्फ ने सुझाया कि “चलो डॉज बॉल-खेलते हैं।” नौ बजे के पहले सबके सब जोर-शोर से खेलने में जुट चुके थे। लगता है उन्हें साथ खेलने में मज़ा आने लगा है।

वॉल्टर अपने कुत्ते को स्कूल लाया और हमने उसके बारे में एक कहानी लिखी जो पालतू जानवरों की किताब का हिस्सा बनेगी। बड़े बच्चों का सामाजिक अध्ययन अब भी धीमी रफ्तार से चल रहा है। मैं बच्चों के सामाजिक अध्ययन के पर्चों का अंग्रेजी भाषा के लिए उपयोग कर रही हूँ। हम सामाजिक अध्ययन के कालांश का कुछ समय कुछ ज़रूरी भूल-सुधार के लिए करते हैं और यह जानने के लिए भी कि वे सुधार ज़रूरी क्यों हैं। किसी-किसी दिन हर बच्चा खुद अपना पर्चा पढ़ता है ताकि भूल पकड़ सके। जो बच्चे इसमें मदद चाहते हैं, उनकी सहायता मैं करती हूँ। अन्य दिन अगर कई बच्चे एक ही गलतियाँ करते हैं, तो मैं उन पर पूरे समूह से बात करती हूँ। कभी-कभार अंग्रेजी की पुस्तकों में दिए गए अभ्यास भी करने पड़ते हैं ताकि बच्चों को कुछ ज़रूरी कौशलों का अभ्यास मिले। इसके लिए हम अंग्रेजी भाषा के नियमित कालांश का इस्तेमाल करते हैं।

बच्चों द्वारा लिखे पर्चों को मैं जहां तक संभव है उनके साथ ही पढ़ना पसन्द करती हूँ। स्कूल के बाद उनके पर्चे जांचना समय जाया करना सा लगता है, क्योंकि जांचने के बाद उन्हें बच्चे बिरले ही देखते हैं, सिवाय यह देखने कि उन्हें कौन सी श्रेणी मिली है। सो मैंने उनके पर्चों को श्रेणियाँ देना बंद कर दिया है। बच्चों के साथ मिलकर, करीब से काम करना ही अधिक कारगर है और तब स्कूल के बाद का समय बच्चों और उनके समुदाय के बारे में जानने में, क्लब के द्वारा उनकी जरूरतें पूरी करने में और स्कूल कार्यक्रम के मूल्यांकन में लगाया जा सकता है।

पुस्तकालय के कालांश में एल्बर्ट हिल ने ‘लिटिल ब्लैक सैम्बा’ की कहानी बड़े रोचक और मनोरंजक अन्दाज़ में सुनाई। दो बड़े बच्चों ने भी उन किताबों पर स्वेच्छा से बातचीत की जो वे पढ़ रहे हैं। पहली मतर्बे बड़े बच्चों ने कुछ सुनाने की पहल की है। इन बच्चों को खूब-खूब बोलने की ज़रूरत है।

स्वास्थ्य के कालांश में हमने स्कूल आने की तैयारी करते समय स्वस्थ आदतों की बात की। कुछ बच्चे बिना नाश्ता किए स्कूल आ जाते हैं। ज़्यादातर मंजन करना भूल जाते हैं। रुमाल लाना भी कुछ ही बच्चों को याद रहता है, क्योंकि उनका कहना है कि रुमाल की जरूरत ही नहीं पड़ती। मैंने सुझाया कि वे

अच्छी आदतों की एक सूची बना सकते हैं ताकि हम उन्हें याद रख सकें हर बच्चे ने अपनी कॉपी में एक तालिका बनाई और उसके सामने चौकोर खाने भी ताकि हर दिन उन पर निशान लगाए जा सकें। बड़े बच्चे छोटे बच्चों के लिए ऐसी ठीक चार्ट बनाएंगे। बड़े बच्चे प्रतिदिन अपनी चार्ट में निशान लगाएंगे और उनमें से कोई छोटे बच्चों की मदद करेगा ताकि जाँच करने के बाद उनमें निशान भी लगाए जा सकें। मैं एकाध दिन चुपचाप इस समूची गतिविधि को देखूंगी। मुझे उन्हें प्रोत्साहित करना होगा जिससे वे सही तरीके का नाश्ता खा कर आया करें।

आज हमारी पहली क्लब बैठक हुई। एना बिल्कुल सहज थी और उसने अच्छी तरह अध्यक्षता की। जहां तक संसदीय प्रक्रियाओं का प्रश्न था मुझे काफी उकसाना पड़ा और चर्चा बिन्दु भी सुझाने पड़े। बच्चों ने कहा कि वे डॉज बॉल खेल-खेल कर उकता गए हैं। मैंने सुझाया कि वे इच्छानुसार खेल सारिणी बना सकते हैं। उन्होंने रॉल्फ, रूथ और मेरी को चुन एक समिति बनाई ताकि वे अगले सप्ताह की खेल योजना बना लें। बच्चों ने ईमानदारी से खेलने और कम धक्कमपेल करने का मुद्दा भी उठाया और उस पर बात की।

स्कूल के बाद मैंने विलियम्स परिवार के घर रात का खाना खाया। बच्चे कुछ शर्माएँ और घबराएँ दिखे। वे अपनी माँ को बेहद प्यार करते हैं। श्रीमती विलियम्स शिक्षा के नए तौर-तरीकों के पक्ष में हैं।

### **शनिवार 19 सितम्बर**

मैंने बड़े बच्चों को जो निदानात्मक जांच के जो पर्चे दिए थे, उनके नतीजे देख लिए हैं। नतीजों के अनुसार छह बच्चे (एना, ओल्गा, सोफिया, मे, हेलेन और मेरी) अच्छी तरह काम कर रहे हैं और शेष आठ (रैल्फ, रूथ, कैथरीन, फ्रैंक, डॉरिस, वॉरेन, एडवर्ड और जॉर्ज) कुछ पिछड़े हुए हैं। ओल्गा और एना ने बहुत ही अच्छा काम किया था। बच्चों को सबसे ज्यादा दिक्कत भाषा और पठन में हैं। वॉरेन अपवाद रहा, उसने इन दोनों विषय में खूब अच्छा किया। जो अधिक कुशाग्र बच्चे हैं, गणित उनका सबसे कमजोर विषय है। मैं इन बच्चों को लेकर जो सोच रही थी, उसकी पुष्टि इन जांचों से भी हुई है।

### **सोमवार 21 सितम्बर**

बच्चों को साथ खिलाने में मुझे अभी भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। सप्ताह की खेल योजना बनाने के लिए खेल समिति ने स्कूल से पहले अपनी बैठक की। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, तब अचानक शारीरिक शिक्षा के दोपहरी के कालांश में फ्रैंक और जॉर्ज ने खेलने से इन्कार कर दिया। कुछ समय तक माहौल तनावपूर्ण बना रहा रैल्फ और एना ने

समझदारी दिखाते हुए उन दोनों के बिना खेलने का निर्णय लेकर स्थिति सम्भाल ली। शेष बच्चों ने उनके सुझाव माने और खेल बढ़िया रहा। खेल मैदान में रैल्फ बच्चों के नेता के रूप में उभर रहा है। मैंने फ्रैंक और जॉर्ज से बात की और समझाया कि बड़े समूह में हर बार, हर बच्चे को खुश करना सम्भव नहीं होता, कभी-कभार हमें ऐसे खेल भी खेलने पड़ते हैं जो हमें नापसन्द हों। अगर हरेक केवल वही खेल खेले जो उसे पसन्द हो तो खेल के लिए पर्याप्त खिलाड़ी ही नहीं मिलेंगे। इन बच्चों को अल्पसंख्यकों के अधिकारों का सम्मान करना सीखना होगा। पर उपदेश का खास असर शायद नहीं हुआ है। मेरी बात समझने के पहले उन्हें उसका अनुभव करना होगा। आशा है समय के साथ यह भी सम्भव होगा।

दोपहर को एना और रूथ छोटे बच्चों को सैर के लिए ले गईं। बीज, पत्ते और फूल इकट्ठे किए। लड़कों ने मैदान में क्यारी बनाने की तैयारी की। दोपहर का घण्टा कितना शान्त था।

छोटे बच्चे बड़ों की तरह अच्छी तरह काम नहीं कर पाते। सुबह का घण्टा अकेले काम करने के लिए उन्हें बेहद लम्बा लगता है। मार्था और पर्ल अपना काम खत्म करने के बाद कुछ रोचक गतिविधि चुन लेती हैं। एल्बर्ट और विलियम अपना काम कभी समय से पूरा ही नहीं कर पाते हैं, वे एक दूसरे को देख मुँह बिचकाने में इतना समय जो बिता देते हैं।

मैं सोच रही थी कि पालतू जानवरों की किताबियाँ आज पूरी हो जाएंगी। जब मैंने यह सुझाया तो बच्चों ने प्रतिवाद किया। “नहीं, हमने अब तक मेंढक और गिलहरी के बारे में कुछ लिखा ही नहीं है।” मार्था और पर्ल आत्मनिर्भर हो गई हैं, वे अपनी मौलिक कहानियाँ लिखती हैं। शेष बच्चे सामूहिक कहानियों को पढ़ना सीख लेने पर अपनी कॉपियों में उतार लेते हैं। जो बच्चे पहली बार स्कूल आए हैं, वे सिर्फ चित्र ही बना रहे हैं।

## **मंगलवार 22 सितम्बर**

वॉरेन आज सुबह फिर दुखी हुआ। किसी ने उसे “छोकरी” (सिसि) कहा और वह ऐसे फूटफूट कर रोया मानो उसका दिल ही टूट गया हो। मैंने उससे अलग से बात की और कहा कि अगर उसकी प्रतिक्रिया यही रही तो लड़के उसे और छेड़ते रहेंगे। उसने कहा कि वह कोशिश करेगा पर उसे लगता है कि उसे कोई पसंद नहीं करता। मैंने कहा कि ऐसी बात नहीं है, पर वे उसकी कीमत पर थोड़ा मज़ा ले रहे हैं। उसने मुझे अपनी टिकटों का संग्रह दिखाया और पूछा कि क्या वह उसे स्कूल में रख सकता है। आज पहली बार वॉरेन ने अपना काम पूरा किया और दोपहर को किसी वास्तविक लड़के की तरह खेला भी।

आज मैं वैनिस्की परिवार से मिलने गई। श्री वेनेस्की ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में

बताया कि पिछले पंद्रह सालों में अपने खेत को जमाने में उन्हें कितनी परेशानियां झेलनी पड़ी हैं। पर अब उनके चार-चार बड़े बेटे काम में हाथ बँटा रहे हैं। एडवर्ड परिवार में सबसे छोटा है। उनके पारिवारिक रिश्ते घनिष्ठ हैं और समूचा परिवार बेहद मेहनती है।

### **बुधवार 23 सितम्बर**

छोटे बच्चों के सुबह के लंबे कालांश को मैंने पंद्रह-पंद्रह मिनट के कहानी सत्रों से तोड़ने की कोशिश की। ओल्गा ने पहले सत्र में आधे बच्चों की जिम्मेदारी ली और एना ने शेष बच्चों की। उन्होंने बच्चों को पढ़कर सुनाया। 11:40 पर वे बाहर खेलने गए। यह कारगर रहा। लौटकर वे फिर से काम में जुटे, अच्छी गति से जो कुछ काम करना था किया और कल से अधिक सफाई से भी किया।

### **गुरुवार 24 सितम्बर**

बच्चों को यह बात अच्छी नहीं लगी कि हमारे जानवर हॉल में रखे गए हैं, क्योंकि तब वे उन्हें देख नहीं पाते। उन्होंने सुझाया कि हम कक्षा-कक्ष में ही एक कोना अपने संग्रहालय के लिए बना लें। इसका मतलब था कि कुछ बदलाव किया जाए। अतः हमने दोपहर में कमरे को नई तरह से व्यवस्थित करने का निर्णय लिया। कमरे में जहां सबसे अधिक रोशनी है वहां हम पढ़ने का काम करेंगे और हमारा पुस्तकालय भी वहीं रहेगा। विज्ञान संग्रहालय को हमने सामने की ओर रखने का सोचा ताकि वह किसी के आड़े न आए। थोड़ी जगह हमने छोटे बच्चों के खेलने के लिए छोड़ी है जिससे वे तब भी खेल सकें, जब बाहर जाना सम्भव न हो। मेरी मेज़ कमरे में पीछे की ओर सरका दी गई है क्योंकि उसको मैं वैसे भी कम ही काम में लेती हूँ। इस सबके बाद कमरा इतना अच्छा लगने लगा कि कुछ बड़ी लड़कियों ने स्कूल के बाद रुक कर हमारी किताबों और सामग्रियों की अलमारी को भी साफ कर डाला। उनका कहना था कि एक सुंदर, व्यवस्थित कक्ष में वह बुरी लग रही थी। स्कूल के बाद श्रीमती डूलियो ने मुझे बताया कि जब एन्ड्रू सात साल का था तब उसके सिर पर गम्भीर चोट लगी थी। उन्हें लगता है कि इस घटना का उसके दिमाग पर असर पड़ा है। डूलियो परिवार यहाँ चन्द महीने पहले ही आया है। वे शहर से यहाँ आए हैं क्योंकि वहाँ रहना बड़ा खर्चीला था, वे मेहनती लोग हैं। अपने परिवार की देखभाल करने के साथ श्री डूलियो एक छोटी सम्पत्ति की देखभाल भी करते हैं।

### **शुक्रवार 25 सितम्बर**

बच्चों ने जो फूल-पत्तियां इकट्ठी की थीं, उन्हें अब वे चिपका रहे हैं। बड़े बच्चे शान्ति से आधे घण्टे तक काम में जुटे रहे और इस दौरान मैंने छोटे

बच्चों की पालतू जानवरों की किताबों पर जिल्द चढ़ाने में मदद की। तब एना न अक्षर काट-काट कर उन्हें चिपकाने में इन नन्हो की मदद की और मैं बड़े बच्चों के साथ स्कूल परिसर की योजना बनाने गई। एना इन नन्हें-मुन्नो के साथ बड़ी शांति और सहजता से काम करती है। वह शिक्षिका बनना चाहती है। हमने बात यह की कि हम हमारे स्कूल मैदान कैसा देखना चाहते हैं। कक्ष में लौटने पर हम समितियों में बँट गए ताकि अपनी योजना के विभिन्न पक्षों पर कुछ पढ़ें। चार समितियां बनाई गई थीं ताकि वे सदाबहार पौधों, झाड़ियों, मिट्टी और जंगली फूलों के पथरीले बागों (रॉक गार्डन) के बारे में ज्ञानकारी इकट्ठी करें। ये समितियां तय करेंगी कि कौन-कौन से पौधे हमें लगाने चाहिए और कहाँ।

सहायक क्लब की बैठक अच्छी नहीं हुई। बच्चे काफी असहज हैं और जब “अध्यक्ष महोदया” कहते हैं तो घबराहट से हंस पड़ते हैं। मैं कोशिश करती हूँ कि बैठकें छोटी हो और बच्चे त्वरित कार्रवाई करें। आज हमने दो नियम बनाए : हमें बिना अनुमति स्कूल परिसर से बाहर नहीं निकलना चाहिए और शाला भवन में घुसते समय शोर नहीं करना चाहिए।

दिन का काम अब आराम से होने लगा है और समय भी कम बर्बाद होता है। बड़े बच्चे महाद्वीप के इन्डियन बाशिन्दों के बारे में पढ़ रहे हैं और उत्तरी अमरीका के विभिन्न हिस्सों में वे कैसे रहते थे विषय पर एक चित्रवल्ली (फ्रीज़) बना रहे हैं। बिचला समूह सामाजिक अध्ययन के कालांशों में “इतिहास की झलकियों” की नाटकीय प्रस्तुतियां स्वतः ही करता रहा है और अब बच्चे कोलम्बस के जीवन पर एक नाटक लिखना चाहते हैं। यह काम करने, प्राकृतिक नमूनों की पहचान करने और पुस्तकालय की किताबें पढ़ने में बच्चों का खाली समय गुज़र रहा है। पर छोटे बच्चों के साथ मुझे इतनी सफलता नहीं मिल पाई है। उनके पास ज्ञाया करने के लिए अब भी बहुत समय है।

खेल मैदान में और परेशानियां! शारीरिक शिक्षा के कालांश के अंतिम दौर में बेस बॉल का खेल चल रहा था। रैल्फ जैसे ही होम-प्लेट की ओर फिसलता पैर बढ़ा रहा था कि फ्रैंक ने उसके पल भर पहले ही गेंद फेंक दी। मैं अम्पायर थी, मुझे कहना पड़ा ‘आउट’। रैल्फ यह कह कर पैर पटकता चल दिया कि वह और नहीं खेलेगा और सच में उसने इसके बाद बिल्कुल भागीदारी नहीं की। स्कूल के बाद मैंने उससे बात की। उसकी शिकायत थी कि टोलियां सही नहीं हैं और सारे बड़े बच्चे फ्रैंक की टोली में हैं। मैंने याद दिलाया कि वह भी उसी खेल समिति का सदस्य था जिसने मेरी बनाई टोलियों को सही ठहराया था। मैंने पूछा कि क्या उसे लगता है कि खेलने से मना करने पर समस्या सलट गई। मैंने सुझाया कि वह यह मसला खेल

समिति में उठाकर टोलियों को अधिक न्यायपूर्ण बना सलटाया जा सकता है। हमारे वानिकी क्लब में हमने एक सरल सा संविधान बनाया, पदाधिकारी चुने और प्रकृति हॉबी समितियों की योजना बनाई। सभी सदस्य भूविज्ञान में रुचि रखते हैं और मिलजुलकर उसका अध्ययन करना चाहते हैं। पशुओं की आदतों में भी उनकी रुचि है।

हाई स्कूल में जोन्स परिवार की दो लड़कियां हैं। मैं उनके साथ उनकी सबसे बड़ी बहन से मिलने गई, जो उनकी देखभाल भी करती है। दो साल पहले उनकी माँ की मृत्यु हो गई थी तबसे वे दादी के साथ रहती हैं। श्री जोन्स कस्बे में मैकेनिक हैं। मार्था ने पियानो पर मुझे कुछ प्रार्थनाएं बजा कर सुनाईं। उसने सुनकर उन्हें बजाना सीखा है। रैल्फ ने कपड़े बदल कर पुराने कपड़े पहने और खेलने निकल गया। वह लड़कियों के साथ और समय नहीं बिताना चाहता था। मुझे लड़कियों के प्रति उसकी नापसंदगी की पृष्ठभूमि अचानक समझ आने लगी। वह पांच बहनों के बीच अकेला लड़का है और चार बहनें तो उससे बड़ी हैं।

### **सोमवार 28 सितम्बर**

खेल समिति की सुबह बैठक होनी थी ताकि दोनों टोलियां बराबरी की बनाई जा सकें। समिति बैठी पर रैल्फ कहाँ था? जब वह आया तो उसने साथ नहीं दिया। समूह के हरेक सुझाव पर कहता रहा, “मेरी बला से, जो चाहो कर लो।” समिति ने मुझसे मदद चाही। मैंने सुझाया कि बैठक तब तक के लिए मुलतवी कर दी जाए, जब तक रैल्फ शान्त नहीं हो जाता। जब स्कूल शुरू हुआ तो अचानक बादल छँट गए। दोपहर को जब समिति फिर से मिली तो रैल्फ ने सक्रिय हिस्सेदारी की। इस पर फ्रैंक असंतुष्ट हो गया उसने कहा कि उसकी टोली कमज़ोर है। रैल्फ ने बड़ी उदारता से सुझाया कि वह टोली की अदला-बदली को तैयार है। तब कहीं मामला शांत हुआ।

बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मैंने बोर्ड पर दिन की योजना लिखनी शुरू कर दी है। इससे कुछ बच्चे समय का बेहतर उपयोग कर पा रहे हैं। पर उन्हें इन योजनाओं के उपयोग का अभ्यास चाहिए। मुझे लगता है कि हर सुबह योजना पर बातचीत करना बेहतर होगा। बाद में शायद हम दिन का कार्यक्रम भी साथ मिलकर बना सकें।

आज खाना खाने बाहर जाने के पहले मैंने बच्चों से इधर-उधर खाना और कागज़ बिखरने पर बात की। शाम तक हमारी कक्षा और खेल-मैदान इतने गंदे हो जाते हैं। मैंने प्रबंधक के रूप में ओल्गा को सफाई की ज़िम्मेदारी इस उम्मीद से सौंपी थी कि उसका आत्मविश्वास और समूह में उसकी कद्र बढ़ेगी। पर वह ठीक से काम नहीं कर पाती है, वह बच्चों को बेतरतीब काम

करने देती है और कभी-कभार तो वे बिल्कुल ही डण्डी मार देते हैं। समस्या आंशिक रूप से तो यह भी है कि बच्चे अपना काम करना जानते ही नहीं हैं। कैथरीन यह तो जानती है कि झाड़ने की जिम्मेदारी उसकी है, पर किस चीज़ को और कैसे झाड़ना है यह उसे पता नहीं है। जब बच्चे अपने आप गणित का काम कर रहे थे तो मैं उन्हें एक-एक कर ले गई और उन्हें काम बताया ताकि वे यह समझ लें कि उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी क्या है और उसे वह काम कैसे करना है। मैंने ओल्गा की मदद की ताकि वह अपने लिए एक जाँच-सूची बना ले और यह देख सके कि सब काम पूरे हुए हैं या नहीं। मैं जानबूझ कर व्यक्ति के बदले काम को रेखांकित करती रही। इस तरह बच्चे एक-दूसरे की आलोचना करने के बदले, कुछ समय बाद एक-दूसरे की मदद करने लगेंगे और काम ठीक से हो जाए।

### **मंगलवार 29 सितम्बर**

आज इतनी ठण्ड थी कि आग जलानी पड़ी फ्रेंक ने दिनभर अलाव का ध्यान रखा। वह जिम्मेदार है और अलाव के बारे में मुझसे कहीं ज्यादा जानता है। उसने कमरे का तापमान नियंत्रित करने के लिए खिड़कियां भी उठाई-गिराई ताकि हवा कम या ज्यादा आए।

बरसाती दिन था, हमें अन्दर ही खेलना पड़ा। फलों की टोकरी का गिरना और रूथ और जेकब का खेल खेला। हेलेन और मार्था बेहद शोर मचाती हैं। वे हर बात पर चीखती-चिल्लाती हैं। पर जोसेफ तो इनका भी बाप है। जब भी समूह सक्रिय होता है तो वह आपा ही खो बैठता है। बच्चों ने उसे नज़रअंदाज़ करना सीख लिया है। पर वह जितनी बड़ी समस्या बन सकता है उतना ही नहीं। बच्चे शायद यह समझते हैं कि वह दरअसल अपने कृत्यों के लिए जिम्मेदार नहीं है। एक सामान्य कक्षा की स्थिति में मैं जोसेफ के लिए बहुत कुछ कर भी नहीं सकती। उसे शायद किसी ऐसे संस्थान में होना चाहिए जहां उसे आवश्यक ध्यान मिल पाए। आज सुबह पहली बार मैंने बच्चों से दिन के कार्यक्रम पर पहले बात की। इससे काफी मदद मिली। उन्हें समझ आ गया कि उन्हें दिनभर में क्या-क्या करना है। मैंने बोर्ड पर सिर्फ बड़े बच्चों का कार्यक्रम ही लिखा।

### **आज की योजना**

8:55 से 9:05 दिन की योजना बनाना

9:05 से 9:20 समूह अ मेमोग्राफ से पढ़ेगा। हमारे देश के इण्डियन आदिवासियों के आवास, पाठों में दी गई स्थाई और अस्थायी आवासों के बारे में भी पढ़ेगा। कितबिया के लिए आवासों पर एक कहानी लिखना शुरू करेगा। समूह ब कोलम्बस व रानी इसाबेल के वार्तालाप वाले दृश्य की

योजना बनाएगा। वे क्या कहेंगे इसे लिख डालेगा।

9:20 से 9:40 समूह ब टीचर के साथ दृश्य पर बात करेगा समूह अ ऊपर बताया काम जारी रखेगा।

9:40 से 10:00 समूह अ टीचर के साथ इंडियनों के आवासों की चर्चा करेगा। समूह ब चर्चित दृश्य को आंकेगा।

10:00 से 10:20 खेल जेकब और रूथ

10:10 से 11:20 समूह 5 पृष्ठ 87 से शुरू होने वाली कहानी पढ़ेगा और सामने वाले बोर्ड पर लिखे सवालों के उत्तर देगा। समूह 6 पृष्ठ 92 से प्रारंभ होने वाली कहानी पढ़ेगा और बगल वाले बोर्ड पर लिखे सवालों के उत्तर देगा। पढ़ने के बाद दोनों समूह किए जाने वाले काम की सूची देखेंगे।

11:20 से 11:40 समूह 6 टीचर के साथ पठन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देगा। समूह 5 पढ़ना जारी रखेगा।

11:40 से 12:40 टीचर के साथ भाषा। इण्डियनों के आवासों और नाट्य प्रस्तुति की भूल सुधार।

1:00 से 1:30 हार्मोनिका का पाठ, टीचर के साथ

1:30 से 2:15 किए जाने वाले काम को देखना

2:15 से 2:30 खेल

2:30 से 2:45 वर्तनी, समूह 4 टीचर के साथ। शेष बच्चे कल की आरंभिक परीक्षा में हुई भूल वाले शब्दों को पढ़ेंगे।

2:45 से 3:20 गणित, व्यक्तिगत काम की पर्चियों से। हेलेने और मेरी टीचर के साथ काम करेंगी।

3:20 से 3:30 सफाई

बोर्ड पर किए जाने वाले काम की सूची, इस प्रकार थी :

- परीक्षा में भूल वर्तनी वाले शब्दों को कॉपी में उतारना।
- गणित का काम पूरा करना।
- चित्रवल्ली पर काम करना।
- पत्तियों व फूलों की पहचान करना।
- फूलों की क्यारी की योजना बनाना।
- शाला परिसर को सुंदर बनाने वाली समिति का काम करना।
- सामाजिक अध्ययन की जो कहानियाँ अधूरी हैं उन पर काम करना।
- स्वास्थ्य संबंधी बिन्दुओं को अपनी नोटबुक के लिए साफ कागज़ पर उतारना।

**बुधवार 30 सितम्बर**



बारिश ने फिर हमें अन्दर रखा, पर हार्मोनिका ने हमें उबारा। संगीत के कालांश में हमने अभ्यास किया। छोटे बच्चे उसे बजाना नहीं सीख रहे, पर वे भी आज सुनना चाहते थे। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि शारीरिक शिक्षा के कालांश में, बाहर न जा पाने के कारण हमने फिर से संगीत का अभ्यास किया।

समूह “अ” के बच्चे सामाजिक अध्ययन में अच्छी प्रगति कर रहे हैं और आज पहली बार एक स्वतःस्फूर्त चर्चा हो सकी। सभी बच्चों ने हिस्सा लिया। इण्डियनों के बारे में जानने की उनमें जिज्ञासा है। अब तक इस विषय पर खास गतिविधियां नहीं हो सकी हैं। बच्चे अपनी-अपनी कुर्सियों पर जमे रहते हैं। वे चित्रवल्ली के अपने-अपने हिस्सों पर काम कर रहे हैं और बाद में उन्हें एक साथ जोड़ेंगे। प्रत्येक, एक सचित्र नोटबुक भी बना रहा है जिसमें कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ हर पाठ के प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित हैं।

सप्ताह के बीच की वर्तनी परीक्षा में वॉल्टर बिल्कुल बिखर गया, उसे लगा कि वह शब्दों के हिज्जे नहीं कर पा रहा। मैंने उससे कहा कि वह परीक्षा के बारे में भूल जाए और दूसरे जब बातें करें सिर्फ उसे सुने। जब शेष बच्चे अपनी गलतियां सुधार रहे थे और शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दे रहे थे, मैंने वॉल्टर को धीमी गति से शब्द पढ़कर सुनाए और उससे उन्हें लिखने को कहा। वह यह जान खुशी से पगला गया कि वह उन्हें लिख सकता था। “अगली बार दूसरों के साथ लिखने में तुम्हें दिक्कत नहीं होगी, है ना?” मैंने जानना चाहा। उसने जवाब नहीं दिया पर उसके चेहरे की मुस्कान में उत्तर छिपा था।

### **गुरुवार 1 अक्टूबर**

आज शारीरिक शिक्षा के कालांश में मैं बड़े बच्चों को एक इण्डियन नृत्य सिखाने लगी और यह देख चकित रह गई कि एक भी बड़े लड़के ने इस पर कोई आपत्ति नहीं उठाई। उन्हें अपनी काउण्टी के इण्डियनों के बारे में पढ़ने में मज़ा आ रहा है। हमने पाठ्यपुस्तकें किनारे रख दी हैं और कुछ समय के लिए मेमोग्राफ की गई उस सामग्री को देख रहे हैं जो मैंने तैयार की है।

### **शुक्रवार 2 अक्टूबर**

आज सुबह तैयार की गई फूलों की क्यारियों में हमने बीस कन्द बोए, पर यह तय करने के बाद कि उन्हें कैसे और कहां बोना है। लड़कों ने उसके इर्दगिर्द तारों का बाड़ा बनाया ताकि उन्हें पड़ौसियों की भेड़ों से बचाया जा सके। जंगली फूलों वाले रॉक-गार्डन समिति उन जंगली फूलों की सूची बना रही है जो हमारे इलाके में उगते हैं। भू-समिति ने विभिन्न प्रकार की मिट्टी और जल निकास के बारे में कुछ पढ़ा। वे अपनी सामग्री काउन्टी पुस्तकालय की

किताबों से इकट्ठा कर रहे हैं। शेष दो समितियों ने बीज कम्पनियों को कैटेलॉग मंगवाने के लिए पत्र लिखे हैं।

स्वास्थ्य कालांश हमने स्वास्थ्य नोटबुकों के आवरण बनाने में बिताया। मैंने बच्चों को चौकोर खाने वाले कागज़ों पर अक्षर लिखना सिखाया। छोटे बच्चों के लिए स्वास्थ्य के विषय पर कोई औपचारिक पाठ नहीं है। पर हां कभी-कभार हम आदतें सुधारने के मकसद से कुछ बातें ज़रूर करते हैं। फिर भी स्वास्थ्य शिक्षा के दिन भर में तमाम मौके मिलते हैं। स्वास्थ्य निरीक्षण के समय में कुछ सुझाव देती हूँ। पठन के कालांश में किताबें कैसे पकड़नी चाहिए, रोशनी कैसे पड़नी चाहिए, पढ़ने बैठते समय रीढ़ की हड्डी क्यों सीधी होनी चाहिए आदि पर बात होती है। बाहर खेलते समय बीमारियों, खास कर जुकाम होने पर, पेंसिल और कैंचियों जैसे उपकरणों के इस्तेमाल आदि के दौरान स्वास्थ्य शिक्षा और स्वस्थ आचरण पर बातचीत के तमाम मौके निकल आते हैं।

हरेक बच्चा अब अपने हार्मोनिका पर सारे स्वर बजा लेता है। अब मैं उन्हें अमेरिका की धुन सिखा सकती हूँ।

वानिकी क्लब बैठक में हमने कोलम्बस दिवस पर एक पिकनिक की योजना बनाई। शेष समय हम बाहर थे और मैंने समूह को प्लास्टर ऑफ़ पेरिस से जानवरों के खुर के निशान बनाना सिखाया। पर हमारे पास केवल नेगेटिव बनाने का ही समय था।

क्लब बैठक के बाद मैं कार्टराइट परिवार से मिलने गई। श्रीमती कार्टराइट ऐन दरवाज़े पर ही मिलीं, जिसे सच में मरम्मत की ज़रूरत है। सालों से उस पर रंग-रोगन नहीं हुआ है। खिड़कियों में से कांच गायब हैं और उन खाली स्थानों पर गंदे चीथड़े घुसेड़े हुए हैं। दरवाज़ा खांचे में ठीक से नहीं समाता है। सभी बच्चे मेरे पहुंचने पर छिप गए और झांक-झांक कर मुझे देखते रहे। श्रीमती कार्टराइट के खुद के छह बच्चे हैं और छह सौतेले बच्चे भी। मैं अब सभी बच्चों के घर जा चुकी हूँ और इससे उनके स्कूली आचरण पर सच में काफी रोशनी पड़ी है।

### **सोमवार 5 अक्टूबर**

आज ओल्गा के साथ बैठक की। यह किसी अकेले बच्चे के साथ मेरी पहली नियमित बैठक थी। यद्यपि मैं ज़रूरत पड़ने पर किसी भी बच्चे के साथ अकेले बातचीत करती हूँ, पर अब तय किया है कि मैं प्रत्येक बच्चे के साथ माह में कम से कम एक बार नियमित बैठक करूँ। इस बैठक में हम उसके काम का साझा आंकलन कर सकते हैं और आगामी माह की योजना भी बना सकते हैं। उम्मीद है कि मैं उन्हें उनकी व्यक्तिगत पसन्द-नापसन्द और महत्वाकांक्षाओं

-दुष्चिताओं तथा आनन्द के बारे में बताने की प्रेरणा दे सकूंगी। वे जो कुछ भी मुझसे कहना चाहें कह सकेंगे। ओल्गा बेहद शरमाई और “हां” और “ना” से ज्यादा बोल तक नहीं पाई। उसकी कॉपियाँ बड़ी तरकीब से व्यवस्थित और उसका काम पूरा है। मैंने उसकी मेहनत की प्रशंसा की तो वह शरमा कर मुस्कराई। मैंने पूछा कि वह अगले महीने क्या करना चाहती है। उसे पता ही नहीं था। मैंने सुझाया कि वह पुस्तकालयक के कालांश के लिए एक अच्छी सी रपट तैयार करे।

### **मंगलवार 6 अक्टूबर**

ओल्गा और एना अपने समूह के लिए तय किए गए काम से अधिक काम कर पाती हैं। क्योंकि शेष बच्चों के साथ मुझे रफ्तार कम रखनी पड़ती है, मैं इन लड़कियों को और सुझाव भी देती हूँ ताकि वे दूसरों से कुछ अधिक पठन या लेखन का काम करें। फिलहाल वे एक मौलिक नाटक पर काम कर रही हैं। आज उन्होंने अपना लेखन समूह को पढ़कर सुनाया। बच्चों को लगा कि वे इसका उपयोग अपने माता-पिता और मित्रों के लिए आयोजित होने वाले मनोरंजन कार्यक्रम में कर सकते हैं। इस कार्यक्रम से वे स्कूल के गर्म दोपहरी के भोजन परियोजना के लिए पैसे जुटाना चाहते हैं। आम राय यह थी कि नाटक एक रंगारंग संध्या के लिए कुछ छोटा था। सोफिया ने सुझाया कि हम चित्रवल्ली को समझाने के लिए उस पर भाषण भी दे सकते हैं। हम अपने इण्डियन अवशेषों के संग्रह को भी दिखा सकते हैं। एडवर्ड, जो इस चर्चा को सुन रहा था, ने जोड़ा कि हम कोलम्बस वाला नाटक भी पेश कर सकते हैं। इस पर सामाजिक अध्ययन के दो समूह जुड़ गए और दोनों ने मिलजुलकर मनोरंजन संध्या की योजना बनाई।

आज सुबह के खेल घण्टे में वॉरेन और लड़कों के बीच फिर से झड़प हुई। मैंने वॉरेन से अपने आँसू पोछने को कहा और उसे किसी काम से पड़ोस में भेजा ताकि मैं दूसरे बच्चों से बात कर सकूँ। मैंने समूह को समझाया कि अगर वॉरेन बड़ा होकर ऐसा इंसान बन जाए जिसे आहत होने पर हर बार रोना पड़े तो बड़ा बुरा होगा। हम उसकी मदद के लिए कुछ भी नहीं कर रहे। मैंने सुझाया “अगर तुम सब उसके साथ भी वैसा आचरण करो जैसा एक-दूसरे के साथ करते हो, तो शायद यह पाओ कि वह बुरा लड़का नहीं है।” बच्चे जिस तरह मुझे देख रहे थे उससे यह लगा कि उन्हें स्थिति को इस नज़र से देखना नई बात लग रही थी। उन्होंने अब तक यह नहीं जाना है कि दूसरे इंसानों के प्रति भी हमारा कोई दायित्व होता है। जब तक वॉरेन लौटा सब अपने-अपने काम में लगे हुए थे और किसी ने उसकी ओर आँखें उठा कर देखा तक नहीं।

आज सुबह स्कूल शुरू होने से पहले मैं खुद लड़कों से उनके द्वारा पढ़ी

किताबों के बारे में बात कर रही थी। फ्रैंक ने कहा कि उसने “पिनोकियो” पढ़ी थी जो उसे इतनी पसन्द आई कि वह उसे फिर से पढ़ना चाहता था। कई बच्चों को ठीक ऐसा ही लगा था, सो रैल्फ ने जानना चाहा “आप क्या उसे पढ़कर हमें नहीं सुना सकतीं” इसके बाद फ्रैंक ने बताया कि पिछले साल उसने लकड़ी का पिनोकियो बनाया था।

बच्चे कठपुतली प्रदर्शन के बारे में जानते थे पर उन्होंने कभी उसका खेल देखा ही नहीं था। मुझे लग रहा है कि इन शरमीले-झिझकने वाले बच्चों के लिए यह एक बढ़िया गतिविधि हो सकती है। वे एक-दूसरे के लिए कठपुतली नाटक कर सकते हैं और कई स्वतः स्फूर्त नाटक इस गतिविधि से जन्म सकते हैं। अगर वे इन पुतलियों में खो सकें तो वे मुक्त हो जाएंगे, उनमें संतुलन आएगा और भाषा में प्रवाह भी। वे नाटक की तैयारी के माध्यम से सहकार करना और दायित्व उठाना भी सीख सकेंगे। पर कल्पना की इस उड़ान को भरने के पहले मुझे खुद कठपुतलियां बनाना और उन्हें नचाना सीखना होगा।

आज रात मैंने एना के साथ बैठक की उसका काम भी उतना ही उम्दा है जितना ओल्गा का। एना ने अपनी दो बहनों के बारे में काफी कुछ बताया। वे दोनों न्यूयॉर्क शहर में घरेलू व्यवस्थापक (हाउसकीपर) हैं। हाई स्कूल में न पढ़ पाने का उन्हें आज तक मलाल है। उन्होंने तय किया है कि उनके शेष भाई-बहनों को यह मौका जरूर मिले। एना को भी आगामी माह के काम के बारे में कोई इल्म न था। मैंने सुझाया कि जब वह अपनी छोटी बहन की भूल सुधारे तो अपने गुस्से पर काबू रखने पर ध्यान दे। हमने अच्छे दोस्तों की तरह एक-दूसरे से विदा ली।

### **बुधवार 7 अक्टूबर**

शारीरिक शिक्षा के कालांश में गज़ब की बहसबाज़ी चलती है। जैसे ही एक टोली हारने लगती है, वे दूसरी पर चालबाज़ी का आरोप लगाते हैं। बड़े बच्चों ने छोटे बच्चों के साथ मेरे खेल में दो बार रूकावट डाली। अंततः मुझे कहना पड़ा कि “अगर हम साथ खेल ही नहीं सकते तो शायद हमें खेलना ही नहीं चाहिए।” जब अन्दर लौटे तो मैंने उन्हें यह गौर करने को कहा कि वे सब बिना सोचे-समझे कही और की गई बातों से कितने दुखी हैं। उन्हें लगता है कि खेल के “स्कोर” ही सबसे महत्वपूर्ण हैं, पर सच तो यह है कि खेलने का आनन्द कहीं अधिक महत्व का है। मन में भरे गुस्से और ऐंठन ने शारीरिक अभ्यास का भला लाभ पहुँचाया होगा।

### **गुरुवार 8 अक्टूबर**

कल के भाषण का कोई फायदा नहीं हुआ खेल का समय और भी गुस्से से

भरा था। रैल्फ, फ्रैंक और जॉर्ज खेल छोड़ गए। जब बाकि बच्चे खेल रहे थे तो हम चारों ने बातचीत की। “लड़कों” मैंने कहा “हमें इस समस्या को बिल्कुल से सुलझाना होगा। तुम्हारे क्या सुझाव है? फ्रैंक ने सुझाया कि वह और रैल्फ बारी-बारी अपनी टोलियां चुनें, इससे दोनों टोलियां बराबर होंगी। मैंने फ्रैंक से कहा कि वह जानता है कि दोनों टोलियां कभी भी बिल्कुल बराबरी की नहीं हो सकतीं। “पर अगर हम खुद अपनी टोली चुनते हैं, तो कमज़ोरी टोली के लिए हम खुद जिम्मेदार होंगे, सो हमें उसे झेलना होगा।” फ्रैंक ने प्रतिवाद किया। उसने यह सुझाव भी दिया कि हर सप्ताह नई टोलियाँ बनाई जाएं ताकि सबके साथ न्याय हो। नतीजा तो समय ही बताएगा।

स्कूल के बाद माताओं के साथ पहली बैठक हुई। उन्हें बैठक के लिए शाला भवन आने का अभ्यास नहीं है। ग्यारह में से मात्र पांच आई : श्रीमती ओलसेउस्की, श्रीमती विलियम्स, श्रीमती कार्टराइट, श्रीमती थॉमसन और मार्था की सबसे बड़ी बहन जो जोन्स परिवार का घर सम्भालती है। हमने मध्याह्न भोजन के लिए वित्त जुटाने की बात की। मैंने उन्हें रंगारंग कार्यक्रम के बारे में भी बताया। उन्होंने बिक्री के लिए केक और फज बनाने का प्रस्ताव रखा। कई बच्चे रुक गए थे, उन्होंने अपनी माताओं को वह काम दिखाया जो वे कर रहे थे। बैठक संक्षिप्त पर दोस्ताना थी।

### **शुक्रवार 9 अक्टूबर**

शारीरिक शिक्षा के कालांश आज ठीक रहे। रैल्फ और फ्रैंक ने बारी-बारी एक-एक सदस्य चुना और बच्चों ने बेसबॉल खेला। मैंने छोटे बच्चों के साथ घेरे में खरगोश खेला। खेल घण्टे के बाद फ्रैंक मेरे पास आया और बोला “हमें मजा आया मिस वेबर।” रैल्फ की टोली जीती और दिन भर जीतती रही। इससे फ्रैंक को अपनी बात सिद्ध करने का मौका मिला और वह जाँच में खरा भी सिद्ध हुआ।

मैंने वानिकी क्लब को प्लास्टर ऑफ पेरिस के नेगेटिव ढाँचे को पॉज़िटिव बनाना सिखाया। अंतिम आधे घण्टे में मैंने यथासम्भव सरल भाषा में पृथ्वी की रचना और पत्थरों के बनने और टूटने की कथा सुनाई। यह पत्थरों और खनिजों के अध्ययन की पृष्ठभूमि थी। हाई स्कूल की कुछ लड़कियों ने खुद नोट्स लिखे। उनकी रुचि गहरी लगी।

स्कूल के पहले दिन से आज ठीक एक महीना हो चुका है। आकलन का सही समय है।

इस माह मैंने बच्चों से परिचित होने, उन्हें जानने, उनकी पृष्ठभूमि का पता लगाने, उनकी ज़रूरतों और क्षमताओं को जानने की कोशिश की। बारह

परिवारों के अट्ठाइस बच्चे हैं। तीन पोलिश हैं, एक इतालवी, एक ग्रीक और सात अमरीकी। वाइनिस्की परिवार को छोड़ दें तो शेष सभी आर्थिक दृष्टि से असुरक्षित हैं। उनके जीवन का भौतिक स्तर काफी कमज़ोर है। परन्तु हिल, थॉमसन व ओलसेउस्की परिवार का आध्यात्मिक स्तर ऊँचा है और पारिवारिक जीवन है समृद्ध भी। समेटिस परिवार के बच्चों में ऐसी शाइस्तगी है जो उनके रोज़मर्रा के अनगढ़ से जीवन में बिरले ही मिल पाती है।

मोटे रूप से सभी बच्चे शोर-शराबा करते हैं। पढ़ने में कमज़ोर हैं। कुछ व्यक्तिवादी भी हैं। बहुत साफ नहीं हैं और अपने कमरे और आसपास की स्थिति के प्रति लापरवाह हैं। वे संकोची हैं। पर उन्हें चीजें इकट्ठी करने का शौक है, वे प्रकृति को जानते हैं, गीत गाना पसन्द करते हैं, सुझावों को खुलेमन से स्वीकारते हैं और खुश मिजाज़ बच्चे हैं।

उनके व्यक्तित्वों में भारी अंतर है, जैसा हमेशा होता ही है। सभी ओलसेउस्की बच्चे तेज़, कुशाग्र और सक्षम हैं। हेलेन खिलंदड छोकरे सी है और पूरी तरह बहिर्मुखी। वह हमेशा किसी न किसी से बहस में उलझी रहती है। एना, हेलेन के आचरण को नापसन्द करती है। वह खुद बाकायदा सुशील महिला है। मेरी इन दोनों का सुखद मिश्रण है जिसे समूह में सबसे ज्यादा पसन्द किया जाता है।

प्रिन्लैक बच्चे सबसे शर्मीले हैं। वे दूसरों से तब तक कोई वास्ता नहीं रखते जब तक उपेक्षा करना असम्भव ही न हो जाए। प्रिन्लैक बच्चों में एलिस और फ्रैंक सबसे कम शरमाते हैं। पर्ल अक्सर यों व्यवहार करती है मानो किसी ने उससे दुर्व्यवहार किया हो और वह बदला चुका रही हो।

समेटिस बच्चे हरेक गतिविधि के लिए प्रस्तुत रहते हैं। उनकी भाषायी अभिव्यक्ति बेहद सुंदर है। वे सब दुबले-पतले हैं और उनके बैठने-खड़े होने का अंदाज़ खराब है। विलियम की आँखें बेहद काली हैं और उनमें हास्य की झलक दिख पड़ती है।

रैल्फ और मार्था को वास्तव में एक माँ की दरकार है। उनकी बड़ी बहन और दादी इस कमी को पूरा करने की भरसक कोशिश करती हैं, पर प्यार और समर्पित सेवा तो सिर्फ माँ ही दे सकती है। दादी के साथ उनकी अक्सर झड़प हो जाती है। वे यह नहीं समझ पाते कि एक बढ़िया घर उन्हें दादी के कारण ही मिल पाया है। दोनों बच्चे तेज़ हैं। मार्था में अपनी ओर से पहल करने की क्षमता भी है।

रूथ थॉमसन हमेशा ठिठियाती रहने वाली शरमीली लड़की है, पर वह सबको पसन्द भी आती है। चर्चा में, उसका योगदान कम रहता है, काम की गति कुछ सुस्त है और वह उसे कठिन भी लगता है। उसकी माँ समुदाय के साथ

मेरे काम में मदद करने वाली हैं। बड़ी सिफत से मुझे वे समझा देती हैं कि मुझे क्या करना या नहीं करना चाहिए।

एन्ड्रूज़ लड़कियों को समझना कठिन है, वे लगातार यह संप्रेषित कर मुझे असहज बना डालती हैं कि मेरा हर काम उन्हें नापसंद है। वे मुझे सवालिया नजर से घूरती हैं। उनसे दोस्ती के मुझे विशेष प्रयास करने होंगे। दोनों अभिनेत्रियों खासकर नृत्यांगना बनना चाहती हैं।

एलबर्ट हिल मस्त-मौला है। कुछ आलसी और लापरवाह भी, पर संतुलित। वॉरेन कुशाग्र और अति-संवेदनशील हैं, भावनात्मक रूप से असंतुलित। वॉरेन की माँ समझदार हैं। हम दोनों उसकी मदद करना चाहते हैं जिससे वह संतुलित हो अपनी क्षमताओं का विकास कर सके।

एडवर्ड वेनिस्की एक गदराया सा आराम पसन्द लड़का है। उसका पसन्दीदा जुमला है “मैं नहीं करना चाहता।” वह चुपचाप रहता है और मैं अब तक उसके बारे में खास जान नहीं पाई हूँ जैसा अक्सर शान्त रहने वाले बच्चों के साथ होता है। उसका काम अमूमन घटिया होता है।

घुंघराले बालों वाले एण्ड्रू डुलियो को समूह में सब पसन्द करते हैं। अपनी उम्र के हिसाब से उसका आकार छोटा है, सब उसे नन्हा ही समझते हैं। एण्ड्रू रूथ का खास दोस्त है।

डन्डर बच्चे कठिन समस्या पेश कर रहे हैं। मैंने जोसेफ को उसका नाम लिखना सिखाने की बहुतेरी कोशिश की हैं पर यह असम्भव काम लग रहा है। वह बेहद शोर-शराब करता है। उसे व्यस्त रखने के लिए काम तलाशना मुश्किल लगता है क्योंकि समूह में उसका ध्यान ही सबसे कम अवधि के लिए केंद्रित हो पाता है। अधिकतर समय हम उसके गुल-गपाड़े की उपेक्षा करते हैं। जब छोटे बच्चे बाहर नहीं होते तो मैं उसे जितना हो सके उतना खेलने देती हूँ। लगता है जॉन पढ़ना सीखने लगा है। उसका व्यवहार सामान्य बच्चों सा लगता है।

कार्टराइट बच्चों की उम्र काफी हो चुकी है और वे बेहद सुस्त हैं। वे शांत हैं और दिए गए काम को मेहनत से करते हैं। वे सफाई में हिस्सेदारी करते हैं और कमरे के साफ-सुथरे होने में दूसरे बच्चों से अधिक गर्व लेते हैं।

विलियम्स बच्चे बिल्कुल साफ और बढ़िया कपड़े पहने रहते हैं। श्रीमती विलियम्स की बहन उन्हें कपड़े देती रहती हैं। दोनों बच्चों स्कूल में लोकप्रिय भी हैं और उनसे सब जलते भी हैं। बड़ी लड़कियां जॉयस को लाड़ लड़ाती हैं, उसके कपड़े संवारती रहती हैं। वे ऐसा व्यवहार करती हैं मानो वह एक खास गुड़िया हो। वॉल्टर से दोस्ती करना कठिन है, वह भी दोस्ती करना नहीं चाहता, पर वह एक नन्हे खरगोश सा संकोची है।

बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति की कुछ चेष्टाएं मैंने इस माह की हैं। दैनिक गतिविधियों में बदलाव किए हैं उन्हें और समृद्ध बनाने की कोशिश की है। कक्षा का रूप बदल गया है और अब हमारा कमरा हमारी गतिविधियों के अनुरूप लगता है। कमरे के पिछवाड़े, दाहिने कोने में हमारा पुस्तकालय है, एक अल्मारी, लाइनोलियम की फर्शी, एक कार्ड-टेबल और चार नारंगी कुर्सियाँ। मेज़ पर एक सुंदर मेज़पोश और कुछ रंगीन किताबें हैं। बाएं कोने में मेरा मेज़ है। कमरे के सामने की ओर दाहिने हाथ पर हमारा प्रकृति कोना है, जिसमें शीतनिद्रा में लिप्त चींटियों की बाम्बी है, एक एक्वेरियम में कछुआ है, रुई पर मढ़े जंगली फूल हैं, जिस पर सेलोफेन का कागज़ है, मोम लगी पतझड़ को पत्तियों की किताब है, एक कितबिया पत्तियों के छापों की है। पत्थरों, फफूंद चिड़ियों के घोंसले, एक तश्तरी में कार्ड, व बेरियाँ हैं। कमरे के सामने की ओर बाएं कोने में पठन कोना है, जहाँ मैं पठन समूहों के साथ काम करती हूँ और बीचों-बीच है नन्हे मुन्नो का खेल कोना बच्चे घर से कुछ गुड़ियाएँ, उनके कपड़े, एक पलंग, कुछ जिग साँ पहेलियाँ, कुछ टूटी-फूटी गाड़ियाँ जैसे खिलौने ले आए हैं। हमारे सूचना पट्ट और उसके नीचे वाली टाण्ड पर इण्डियनों के अवशेष सजाए गए हैं। इसमें पच्चीसेक बाणों के शिर, एक कुल्हाड़ी, एक सिल-लोढ़ा, कुछ चिकने पत्थर और बर्तनों के टुकड़े हैं। हमारे पास इण्डियनों के कई चित्र और उनसे संबंधित कहानियाँ भी हैं। इस सूचना-पट्ट के ऊपर इण्डियन आवासों को चित्रवल्ली है।

दूसरे सूचना पट्ट पर हमारी खेल-चार्ट है। सूचना पट्टों के नीचे वे कितबियाएँ हैं जो प्राथमिक समूहों ने स्कूल में लगाए गए पालतू जानवरों की कहानियों और चित्रों के साथ बनाई हैं। एक चार्ट प्राथमिक रंगों की है। प्राथमिक समूह के बड़े बच्चों द्वारा बनाई गई कहानी की किताबें भी हैं जो उन्होंने अपनी रीडर में छपी कहानी पर बनाई हैं। इसकी ठीक सामने वाली दीवार पर खिड़कियों के नीचे, सामाजिक अध्ययन से संबंधित समस्याओं व प्रश्नों की चार्टें हैं जो बिचले और बड़े समूह के लिए हैं। साथ हैं बड़े बच्चों की बनाई इण्डियनों पर किताबें। कमरे के सामने वाले श्यामपट्ट के नीचे वे कितबियाएँ हैं जो प्राथमिक समूह ने पशुओं के आवासों पर बनाई हैं। बिचले समूह द्वारा बनाया गया एक नक्शा भी है, जो दर्शाता है कि कोलम्बस द्वारा अमरीका की तलाश के पहले दुनिया के बारे में लोग कितना जानते थे। आगामी महीनों में इन लड़कियों व लड़कों को समझने की कोशिश जारी रखूंगी और उनकी क्षमताओं को सामाजिक रूप से वांछनीय तरीकों से विकसित करने की चेष्टा करूंगी।



## अध्याय -2

### बच्चों की प्रगति

#### शनिवार 10 अक्टूबर

सभी बच्चों को और खासकर इन बच्चों को जिनके अनुभव बेहद सीमित हैं, उन्हें तमाम रुचियों से जुड़ने की ज़रूरत है ताकि उनके जीवन समृद्ध हो और वे अपना समय सार्थक कार्यों में बिता सकें। मैंने अब तक यह कोशिश की है कि हम मिलजुल कर अपने स्कूल भवन और उसके मैदान को सुन्दर बनाएँ, पुस्तकालय के कालांश में पढ़ने का आनंद लें, वानिकी क्लब के माध्यम से अपने आसपास के प्राकृतिक परिवेश के बारे में जानें। इस समुदाय का एक और समृद्ध संसाधन है स्थानीय इण्डियनों का इतिहास। यह भण्डार मैंने बच्चों के लिए खोल दिया है, पर इस अनुभव को वास्तविक बनाने के लिए मुझे उन्हें एक इण्डियन-यात्रा पर ले जाना होगा। आज मैं कैथरीन, फ्रैंक, रूथ और सोफिया को ले गई। हम एक पहाड़ी आश्रय तक गए और तब शिवर रोड पर बड़े, यह किसी जमाने में इण्डियनों का इलाका: हुआ करता था। मैंने उनकी बात की, उनके पुराने मुखिया चीफ टामेनुण्ड्, उनकी बस्ती और परिषद वृक्ष की बात बताई। मिन्सी कबीला, जो कभी यहां बसता था, के बारे में जो कुछ बच्चों ने पढ़ा था, उस पर भी हमने चर्चा की।

#### सोमवार 12 अक्टूबर

छुट्टी की आज सुबह में अ समूह के शेष बच्चों (रैल्फ, एना, ओल्गा और डॉरिस) को भी इण्डियन-यात्रा पर ले गई। वे प्रथम समूह से अधिक चुप थे। ओल्गा के लिए इतनी पास की यात्रा करना भी नया अनुभव था। बातचीत इण्डियों और प्रकृति की ओर मुड़ी। जबसे वानिकी क्लब में मैंने हमारी पृथ्वी के इस भाग की रचना की कहानी सुनाई है रैल्फ जीवाश्म ढूंढने में खास रुचि ले रहा है। रैल्फ ने गौर किया कि शिवर रोड के पत्थरों में खास तरह के मोड़ हैं। उसने इस बारे में पूछा। मैंने बच्चों से ही उत्तर निकालवाने की कोशिश की और पाया कि वे भू विकास के बारे में समझ है।

आज शाम वानिकी क्लब के हम बीस सदस्य पिकनिक पर गए। बच्चों ने खाने के बाद सफाई में मदद की और हमने कूड़ा-कचरा जलाया। रैल्फ और फ्रैंक ने आग पर एक भारी लट्ठ डाला और हम आग के इर्दगिर्द आराम से बैठ गए। कुछ देर चुप्पी-चुप्पाह रही, चीड़ के जंगल की खूशबू हवा में तैर रही थी, उसे सुंघते रहे, झरने की कलकल सुनते रहे। हाई स्कूल की एक लड़की ने कुछ मज़ेदार किस्से सुनाए। तब मैंने इण्डियनों के आख्यान सुनाए और स्कनी वुण्डी की कहानियाँ भी। इन कथाओं के लिए इससे उपयुक्त पृष्ठभूमि हो नहीं सकती थी, और लगा मानो मेरे अंतस में इण्डियन

कथावाचक की आत्मा समा गई हो “सुनो मेरे बच्चों, कि मैं नायक स्कनी वुण्डी की शौर्य गाथायें कहती हूँ जिसने दलदल की डाकिनों का नाश कि और उन्हें नरकट के टीलों में बदल डाला।

इसके बाद हमने तमाम तरह के गीत गाए, शिविर गीत, काउबॉय गीत, पुरानी लोकप्रिय धुन। पर जल्दी है घर लौटने का समय हो गया। श्री थॉमसन अपनी बड़ी ट्रक लाए और बच्चों को उनके घरों तक पहुंचा आए।

### **मंगलवार 13 अक्टूबर**

आज दिन भर बारबार “पिकनिक” शब्द कानों में पड़ता रहा। सभी एक दूसरे के प्रति नेह जताते रहे। उस पहले दिन से हम काफी दूर निकल आए हैं जब हरेक अपनी निजी राह पकड़ता था।

बिचले समूह ने अपनी इतिहास पुस्तकों की दूसरी इकाई प्रारंभ की। हमने इकाई में दी गई समस्याओं के अर्थ पर चर्चा की। प्रारंभिक उपनिवेशियों की इस इकाई में तीन मुख्य समस्याएँ हैं। प्रत्येक मुख्य समस्या सुलझाने के लिए उन्हें अधिक विस्तृत प्रश्न दिए जाएंगे। जब इन सवालों के जवाब मिल जाएंगे तब वे उनके सहारे एक कहानी लिखेंगे जो संक्षेप में समस्या का समाधान रखेगी। मैं चाहती हूँ कि बच्चे किसी एक सवाल का जवाब ढूँढ़ने के बदले उस समस्या को पहचाने जिसका समाधान उन्हें पाना है। बच्चों के लिए यह दूसरा कदम होगा।

### **बुधवार 14 अक्टूबर**

जितनी बार आँखें काम से ऊपर उठाई मुझे तमाम खाली कुर्सियां नज़र आईं। सामने वाले आंगन में छोटे लड़के नारंगियों के खाली खोखों से एक खेल घर बना रहे हैं, यह सब सुबह योजना बनाने के बाद हो रहा है। नन्ही लड़कियाँ अपनी गुड़ियों के लिए कपड़े बना रही हैं। कुछ बड़े बच्चे मनोरंजन कार्यक्रम के विज्ञापन पोस्टर बना रहे हैं, तो कुछ चित्रवल्ली के शीर्षक लिख रहे हैं। जो मेज़ों पर जमे हैं वे गणित, वर्तनी या पठन का काम कर रहे हैं।

शारीरिक शिक्षा में सब ठीक चल रहा है। अब हम दैनिक स्कोर के बजाए साप्ताहिक स्कोर रखने लगे हैं ताकि हारने वाले को अगले दिन फिर से मौका मिले। कल जो टोली बेसबॉल में हारी थी आज लांग बॉल के खेल में जीत गई है, सो दोनों टोलियों में मात्र एक अंक का अंतर है।

### **गुरुवार 15 अक्टूबर**

दिन भर इतनी व्यस्तता रहती है कि हमें नाटक का अभ्यास करने का समय नहीं मिल पा रहा। बच्चों ने बखुशी दोपहर का समय इसमें लगाना शुरू किया है। रिहर्सल खराब चल रहे हैं। इण्डियन नृत्य में बच्चों को मज़ा आता है पर

वे उसे अनगढ़ तरीके से करते हैं। वे बेहद शरमीली हैं और हर बार असहज हो ठिठियाने लगते हैं। ऐसे वक्त हमें रुक कर धीरज से दोबारा शुरुआत करने का इंतजार करना पड़ता है। मैं तो इस रंगारंग संध्या को लेकर भयभीत हूँ।

### **शुक्रवार 16 अक्टूबर**

आज सुबह विज्ञान के घंटे में मैं बच्चों को पैदल घुमाने ले गई ताकि वे पतझड़ से पेड़ नंगे हो जाए उसके पहले पत्तियां देख लें। हमने कई वृक्षों को पहचाना और “क्वेकिंग एस्पन” को अपने वृक्ष मित्रों की सूची में जोड़ा। चीड़ के अलग - अलग वृक्षों के रंग कितने भिन्न-भिन्न हैं। पहाड़ी के ऊपर एण्ड्रू के घर के पास के पेड़ों को हम दूर से ही आकार - प्रकार के आधार पर पहचानने की कोशिश करते हैं। ट्यूलिप पेड़ अलग से नज़र आते हैं। सदाबहार वृक्ष समूह में एक नीला स्पूस, सरल वृक्ष, महानीम व पीले देवदार को पहचान पाते हैं। स्वास्थ्य के घण्टे में हम व्यक्तिगत साफ-सफाई की आवश्यकता, तथा कैसे साफ रहा जाए पर बात करते हैं। बड़े बच्चे त्वचा की संरचना के बारे में कुछ सीखते हैं। इस सबके बाद इतना ही समय बचता है कि वे चर्चा का सार संक्षेप आपनी कॉपियों में दर्ज कर लें, यद्यपि चर्चा सब साथ-साथ करते हैं, पर लिखने की उम्मीद उनसे उनकी क्षमता के अनुपात में ही रखी जाती है। छोटे बच्चे चित्रों की कितबियाँ बना रहे हैं।

हमारे सहायक क्लब की बैठक सादी पर अच्छी हुई। हमने अगले चार सप्ताहों के लिए नए पदाधिकारी चुने। हम हर माह नए पदाधिकारी चुनेंगे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को नेतृत्व करने का मौका मिले। इस बार रैल्फ अध्यक्ष बना है, ओल्गा उपाध्यक्ष और एना सचिव। रैल्फ ने चुनाव के बाद बैठक की कार्यवाही सम्भाली और उसमें नेतृत्व की सम्भावना नज़र आई। हमने इस बात पर चर्चा की कि वे अपने द्वारा बनाए गए नियमों का स्वयं कितना पालन करते हैं। रैल्फ को लगा कि हमने पुराने नियम अच्छी तरह सीख लिए हैं सो हमें नए नियम बनाने चाहिए, खासकर साथ-साथ खेलने के लिए संबंध में। एक पूरा सप्ताह गुज़र चुका है और कोई झगड़ा हुआ नहीं है। मैंने सुझाया कि हमें अपनी अच्छी आदतों पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए : हम और शांति से काम करें ताकि दूसरों के काम में कोई खलल न पड़े और हम अपनी कक्षा और अपने काम की सफाई को और व्यवस्थित रखें।

### **सोमवार 19 अक्टूबर**

छोटे बच्चे अब विभिन्न प्रकार के घरों की कितबियाँ बना रहे हैं जिसमें उनकी कहानियां भी होंगी। आज उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी और पहला चित्र बनाया। हमने कहानी पर पहले “बात” की और तब श्यामपट्ट

पर वे शब्द लिखे गए जिनका उन्हें उपयोग करना होगा। कोशिश कर रही हूँ कि वे लेखन में अधिक आत्मनिर्भर हो जाएँ।

### **बुधवार 21 अक्टूबर**

आज सुबह रूथ ने शुक्रवार की सैर पर एक कविता लिखी और मुझे थमाई।

#### **सैर**

वी वेंट फॉर ए वॉक एण्ड हैड जॉली ओल्ड टॉक।

वी लुकड एट द लीव्स टू स्टडी द ट्रीस।

वी बेंट ऑवर बोन्स टू लुक फॉर स्टोन्स।

(हम सैर में गए और खूब की बातें।

पत्तों को देखा ताकि पेड़ों को जानें।

हड्डियां अपनी मोड़ीं और ढूँढे ढेरों पत्थर?

मुझे रूथ की कविता को एक बड़े कागज़ पर लिख, चित्रों से सजा, सूचनापट्ट पर लगा देना चाहिए। संभव है दूसरे भी इससे प्रेरित हों। बाद में हम एक दीवार अखबार की बात भी सोच सकते हैं जिसमें ऐसी रचनात्मक चेष्टाएं शामिल हों।

### **गुरुवार 22 अक्टूबर**

आज मार्था सभी प्राथमिक बच्चों को बाहर ले गई और कुछ देर उन्हें पढ़ कर सुनाया। एक बार जब मैं यह देखने बाहर गई कि सब ठीकठाक चल तो रहा है। मैंने पाया कि वह जो पढ़कर सुनाया था, उस पर प्रश्न पूछ रही है। मैं कुछ देर सुनती रही और पाया कि मैं जैसी चर्चा करवा पाती हूँ उससे कहीं जीवंत चर्चा चल रही थी।

सुबह के शारीरिक शिक्षा कालांश में विलियम ने पूछा कि क्या वह हमें कोई खेल सिखा सकता है। उसने खेल अच्छी तरह समझाया और हमने कई सवाल पूछे। खेल था “लोमड़ी, क्या तुम तैयार हो” सच हमें बड़ा मज़ा आया। पिछले कुछ समय से बड़ी कक्षाओं के बच्चें स्कूल के पहले सुबह ही कोई खेल शुरू कर देते हैं।

### **शुक्रवार 23 अक्टूबर**

आज सुबह एना एक कविता लाई और उसने जानना चाहा कि वह उसे रूथ की कविता की तरह, चित्रों से सजाने के लिए कागज़ घर ले जा सकती है क्या।

आज सुबह रुक-रुक कर बरसात होती रही। पर लड़कों ने फिर भी लकड़ियां, तने, शाखाएं, रंगीन पत्तों की टहनियां, काई और पत्थर इकट्ठे किए ताकि इण्डियनों वाले नाटक का दृश्य बनाया जा सके। कई बच्चों ने

कहा कि इतना सुंदर मंच उन्होंने पहले कभी नहीं देखा है। बिचले समूह ने नाटक को हमारी इतिहास पुस्तक में वर्णित कोलम्बस के जीवन की कुछ शीर्षक दिया हैं। उन्होंने एक बड़ा सा चित्र-फ्रेम बनाया हैं जिसके अंदर ही नाटक खेला जाएगा। यह खाका मंच में सामने वाले हिस्से में रखा जाएगा और उसे पर्दे से ढक दिया जाएगा। नाटक खत्म होने पर बच्चे इस फ्रेम को हटा देंगे ताकि इण्डियनों वाले नाटक के लिए मंच खाली रहे। लड़कियां फ्रेम के पर्दे बना रहीं थी तब वॉरेन आया और कहने लगा कि वे काम को कठिन बना रही हैं। उसने बड़े उम्दा सुझाव दिए। एक झटके में समूह में वॉरेन की साख में इज़ाफा हो गया।

नाटक वाले कालंश के बाद हम अनौपचारिक तरीके से बैठे और मैंने उन्हें मिलने की “बहेन की वर वेरी यंग” (हम जब बहुत छोटे थे) से पढ़कर कविताएँ सुनाई। बच्चों ने कई कविताएँ दोहराने को कहा, खासकर वह जिसमें एक छोटा लड़का है जिसके पास एक पाई थी और जो उससे एक खरगोश खरीदना चाहता था। यह कविता मुझे चार बार पढ़नी पड़ी और बच्चे स्थाई को मेरे साथ दोहराने लगे।

नन्हे-मुन्ने घर लौटते उसके पहले मैंने उन्हें “उपदेश” दिया कि हम किसी कार्यक्रम के दौरान कैसा आचरण करते हैं। जब मैं उनसे गम्भीरता से कोई बात करती हूँ तो वे मुझे ऐसे घूरते हैं कि मेरा दिल उन्हें गले से लिपटाने का हो आता है।

आज शाम के रंगारंग कार्यक्रम के लिए तकरीबन पचास लोग इकट्ठे हुए, जिसमें बच्चे भी शामिल थे। हमने कार्यक्रम समूह गान से आरंभ किया। सच इन लोगों को गाना कितना पंसद है। हमने पुराने लोकप्रिय गीत गाए और वह गीत भी जो मैंने सिखाया है “स्वीटली सिंग्स द डॉन्की” (मधुर गाता है गधा)। प्राथमिक बच्चों ने एक समूह गीत गाया और खूब तालियाँ बजीं। वे बागबाग हो गए। कार्यक्रम खत्म होने के बाद भी लोग रुके रहे, देर तक। बच्चों ने अपने अभिभावकों और दोस्तों को हमारे कक्ष में रखी रोचक वस्तुएं दिखाई, अपने काम के बारे में बताया। श्रीमती हिल को यह जान आश्चर्य हुआ कि उनके बच्चे भी उन्हें सब कुछ दिखने को आतुर थे। घर के बने केक और चॉकलेट से हमने दस डॉलर कमाएँ।

पिछले सप्ताह भर से कई बच्चों और कुछ अभिभावकों ने मुझे चेतावनी दी थी कि कुछ उजड़ड़ नव युवक स्कूल के मनोरंजन कार्यक्रम में बाधा डाल सकते हैं। इन नौजवानों में दो मुख्य एडवर्ड के भाई हैं आज शाम कार्यक्रम प्रारंभ करने से पहले मैंने उनसे बात की। बताया कि आज के नाटक हमारे लड़के-लड़कियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इसके लिए दिनों-दिन मेहनत

की है ताकि वे सबको प्रभावित कर सकें। पर उनकी आवाजें कोमल हैं, रोज क्या वे दरवाजे के पास खड़े होकर यह सुनिश्चित कर सकेंगे कि कोई बीच में ज़ोर से न बोले। सौभाग्य से मेरा उपाय कारगर रहा और हमारे कार्यक्रम शांति और आनंद से हो सका।

### **सोमवार 26 अक्टूबर**

आज मौसम बाहर ठण्डा था, तेज़ हवाएँ भी चल रही थीं, पर इसके विपरीत अन्दर बड़ा सुहाना लग रहा था। हमने बारिश को पेड़ों से पत्तियां नोचते देखा और आसपास के जंगल में हवा का संगीत सुना। सब इतना अच्छा लग रहा था। कक्षाएं शुरू होने से पहले हमने शुक्रवार के फैलाव को समेटा। नौ बजे तक हम एक साफ-सुथरे कमरे में पढ़ाई के लिए तैयार थे।

समेटिस बच्चे अपने पिता के पास साथ रहने वाले हैं, मैं दुखी हूँ। वे अब जाकर मुक्त और सहज अनुभव करने लगे थे और उन्हें फिर से नई जगह जाकर तालमेल बैठाना होगा।

अपने रोजमर्रा के कामों पर लौटना जहां एक ओर शांत और व्यवस्थित लग रहा था, वहीं कुछ उबाऊ भी।

### **मंगलवार 28 अक्टूबर**

बच्चों को काम करते देखने के लिए जब-तब कुछ पल निकाल पाती हूँ, जो मुझे लाभदायक लग रहा है। खासकर, उन बच्चों के प्रति मैं अधिक सचेत हो पाती हूँ जो सामान्यतः बिना दूसरों का ध्यान आकृष्ट किए चुपचाप अपना काम करते हैं। उदाहरण के लिए एडवर्ड कोई शरारत नहीं करता, पर किताबों को घूरते हुए काफी समय बरबाद करता है, क्योंकि वह ठीक से पढ़ नहीं पाता। मुझे उसे पढ़ने को आसान किताबें देनी चाहिए। रैल्फ भी घर से लाई “चीजों” से खेलने में समय ज़ाया करता है, क्योंकि वह उन्हें अपनी मेज़ में रखता है। ज़ाहिर है कि उसे उसकी चीज़ें स्कूल के काम से अधिक चुनौतीपूर्ण लगती हैं। मेरी और ओल्गा दिल लगा के मेहनत करती हैं, और हमेशा ही उम्मीद से अधिक काम करती हैं। फ्रैंक भी ठीक यही करता है, यद्यपि उसके काम में इतनी सफाई नहीं होती। हेलेन अपनी सभी पढ़ाईयों से उलझती है और रूथ का ठिठियाना रुकता ही नहीं है।

जब भी अवलोकन करने, बैठती हूँ तो शुरूआती नन्हों को देख अपराध बोध जगता है। मैं उनके साथ कम समय बिता पाती हूँ अतः वे कितने कुछ से वंचित रह जाते हैं। नतीजा यह होता है कि वे काफी समय सिर्फ बैठे रहते हैं। उन्हें गाना, खेलना, नाटक करना, चित्र बनाना चाहिए। जितना वे कर पाते हैं मुझे उससे कहीं अधिक अनुभव उपलब्ध करवाने के रास्ते तलाशने होंगे।

आज स्कूल के बाद 4-एच सिलाई क्लब की पहली बैठक हुई। बिचले और बड़े समूह की सभी लड़कियाँ और चार हाई स्कूल की लड़कियाँ उपस्थित थीं। काम से संबंधित छोटी सी बैठक हुई और हमने पदाधिकारी चुने। हमने अपनी परियोजनाएँ बनाईं। छोटी लड़कियाँ मशीन से सीकर गमलों की लटकने बनाएंगी ताकि वे मशीन चलाना सीख सकें। शेष शमीज़ें बनाएंगी जिसके नमूने हमें काउन्टी गृह प्रदर्शिका मिस मून ने उपलब्ध करवाए हैं।

### **गुरुवार 20 अक्टूबर**

आज स्कूल के बाद माताओं के साथ दूसरी बैठक हुई केवल श्रीमती हिल, श्रीमती ओलसेउस्की, श्रीमती कार्टराइट और श्रीमती थॉमसन ही आईं। मुझे बड़ी निराशा हुई पर उन्होंने बताया कि यह उनके लिए बेहद व्यस्तता का समय है। हमने शिक्षा सप्ताह की योजना बनाई उस सप्ताह वे गुरुवार को दोपहर बारह बजे स्कूल आ जाएंगी और शाम तीन बजे तक रुकेंगी, जब बच्चों की छुट्टी होती है। बच्चों के घर चले जाने के बाद हम उनके अवलोकनों पर चर्चा करेंगे।

### **शुक्रवार 30 अक्टूबर**

आज बड़े बच्चों ने एक नई कॉपी बनाई, जिसमें वे अपनी वर्तनी की गलतियों का रिकार्ड रखेंगे और सही वर्तनी दर्ज करेंगे। वे इस कॉपी में वे शब्द भी दर्ज करेंगे जिनका उपयोग करना वे सीख रहे हैं और उन किताबों के नाम भी लिखेंगे जो उन्होंने पढ़ ली हैं। वे जिस उत्साह से काम में जुटे उससे मेरा मन खिल उठा।

वानिकी क्लब की बैठक में बच्चों ने अपनी कॉपी में शिलाखण्डों की वह कुंजी उतार लीं, जो मैंने उनके लिए तैयार की थी। इसके बाद अभ्यास सत्र हुआ जिसमें उन्होंने कुंजी का उपयोग सीखा। हमने अपने संग्रहालय में रखे शिलाखण्डों की पहचान भी की।

### **सोमवार 2 नवम्बर**

नया माह हम सबके लिए भी मानो नई शुरुआत लाता है। हमने महीने का स्वागत बढ़िया साफ-सफाई से किया बच्चों ने अपनी मेजों को झाड़-पोंछ कर चमकाया इकट्ठा हुए रद्दी कागज़ों की छंटनी को, अपनी किताबें, कॉपियाँ और उपकरणों को तरतीब से रखा। इससे हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली “तो हम अलमारियां भी क्यों नहीं साफ कर देते?” आधा दर्जन बच्चों ने एक साथ पूछा। पता नहीं क्यों, उन्हें अलमारी साफ करने में मज़ा आता है। पर इसके बाद भी सफाई से उनका मन नहीं भरा। रूथ को लगा कि हमें लगे हाथ रसोई के आलों को भी साफ कर डालना चाहिए ताकि जब गर्म भोजन का कार्यक्रम शुरू हो तो सब व्यवस्थित हो। फ्रैंक ने सच्ची खांटी परिपाटी के

अनुसार रगड़-रगड़ कर टांडें घोईं। वॉरेन ने उन्हें पूरी तरह सुखाया। एना और रूथ ने कपों पर बच्चों के नाम लिखकर चिपकाए। तब उन्होंने सारी थालियां, भगोने-पतीले, चावल - आटा आदि रखने के डब्बे उबाल कर धोए और उन्हें पोंछ कर आलों में सजा दिया। जब हम यह सब कर चुके तो वॉरेन और फ्रेंक ने ज़ोर देकर कहा कि इन सर्दियों के दौरान वे ही रसोइए रहेंगे। आज हमने जो कुछ किया उसे वॉरेन “कठिन खेल” कहता है। सफाई में पूरा दिन निकल गया, पर अब हमारा कमरा सफाई से महक और दमक रहा है। साफ कक्षा कक्ष और खेल मैदान पर ज़ोर देने के कारण बच्चे भी अब कुछ ज़्यादा साफ दिखने लगे हैं।

#### **बुधवार 4 नवम्बर**

बच्चों की शब्दावली हौले-हौले बढ़ रही है। हम नए शब्दों का मज़ा उठा रहे हैं, हर अवसर पर उनका प्रयोग करते हैं। उनका ताज़ा सीखा शब्द है एक्सर्ड (बेतुका)। हम पढ़ने, लिखने और गणित में फिलहाल ज़्यादा समय लगा रहे हैं क्योंकि सबसे अधिक मदद बच्चों को इन्हीं में चाहिए। इन उपकरण विषयों में दक्षता केवल इसलिए आवश्यक नहीं है कि वे जीवन के लिए उपयोगी हैं बल्कि इसलिए भी कि इनमें लगातार असफलता पाने से बच्चों में भावनात्मक समस्याएँ उपजती हैं। वॉरेन इसका उम्दा उदाहरण है। जब से गणित और वर्तनी में सुधार से उसे कुछ संतोष मिला है, वह समूह में अधिक सहज भी महसूस करने लगा है। पठन के लिए मैं शिक्षक मार्गदर्शिका का अनुसरण करती हूँ क्योंकि पठन विशेषज्ञ मुझसे बेहतर यह समझाते होंगे कि बच्चे दरअसल पढ़ना कैसे सीखते हैं, और कौन सी कहानी से किस उद्देश्य प्राप्ति में मदद मिलती है। पर मैं फिर भी अपने हिसाब से कई तब्दीलियाँ करती हूँ क्योंकि आखिर अपनी कक्षा की लड़कियों और लड़कों को मैं किसी भी पठन विशेषज्ञ से अधिक बेहतर जानती हूँ।

हमारी शाला में गणित, वर्तनी, भाषा और लेखन व्यक्तिगत मसले हैं। प्रत्येक बच्चे की अपनी कॉपी है जिसमें उसकी ज़रूरतें दर्ज हैं। कोशिश यह कर रही हूँ कि प्रत्येक को उसकी निजी आवश्यकताओं का अहसास हो और उनमें सुधार की इच्छा मज़बूत होती जाए। बच्चों के साथ व्यक्तिगत बैठकें कारगर सिद्ध हो रही हैं।

कुछ समय पहले तक, दोपहर का अभ्यास कालांश तीन घेरों वाले सर्कस सा लगता था। बच्चे खुद ईमानदारी के साथ कोशिश करने से पहले ही मेरे पास भागे आते थे। मैं बारीबारी छोटे समूहों में बच्चों के साथ बैठी और उनका परिचय गणित की पाठ्यपुस्तकों से करवाया। उन्हें समझाया कि हर नए काम के पहले पाठ में गणित की क्रिया के प्रत्येक चरण को सिलसिलेवार समझाया गया है। इन स्पष्टीकरणों का उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह मैंने उन्हें



क्रमशः दिखाया। अब सही जवाब पाने से हटकर ध्यान समस्या को समझने पर केन्द्रित होने लगा है। रूथ आज बोली “जवाब तो सही आ गया, पर मुझे समझ नहीं आया कि वह सही क्यों है?”

अब क्योंकि बच्चे स्वतंत्र रूप से काम करने लगे हैं मैं हर दिन बच्चों के साथ व्यक्तिगत बैठकों के लिए समय निकाल पाती हूँ। आज हमने रूथ की कॉपियाँ सावधानी से देखीं। कॉपी में सारा काम लापरवाही के साथ किया हुआ था। एक माह तक रूथ अपने लिखे हुए को फिर से पढ़ेगी और अगर गलतियाँ नज़र आएँ तो उन्हें सुधारेगी। इसके पहले वह, काम खत्म हो गया है, ऐसा नहीं मान लेगी। हमने लोगों के प्रति उसके दृष्टिकोण पर भी बात की, खासकर समुदाय के उन वयस्कों के प्रति जिन्हें वह जानती है। मैंने समझाया कि हम जानते हैं कि वह किसी का अपमान नहीं करना चाहती, पर यह आदत खास अच्छी नहीं है।

### **शुक्रवार 6 नवम्बर**

आज स्कूल के बाद हमारी वानिकी क्लब की बैठक हुई। हाजिरी के समय हमें अपना नाम पुकारे जाने पर उपस्थित दर्ज करवाने के साथ एक जानवर का नाम भी बोलना था। रूथ ने हाई स्कूल की एक लड़की का नाम बोला। इससे एक लम्बी चर्चा छिड़ी कि इंसान पशु होता है या नहीं। तब हमने कुंजी की मदद से अन्य शिलाखण्डों को जाँचा। इस सप्ताहान्त वॉरेन, रैल्फ और एडवर्ड आसपास घूमेंगे और शिलाखण्डों के टूट कर मिट्टी में बदलने के जितने प्रमाण मिल सकें उन्हें तलाशेंगे। अगले सप्ताह वे हमें उन स्थानों पर ले जाएंगे। मैंने बच्चों को 4 एच क्लब का एक नया गीत भी सिखाया।

### **सोमवार 9 नवम्बर**

आज दोपहर हमने अपने दरवाज़े पर एक तख्ती लटकाई “पिकनिक पर गए हैं। एक बजे लौटेंगे।” इतना खुशनुमा दिन था कि हम उसे यों ही ज़ाया नहीं कर सकते थे। हम पहाड़ की ओर बढ़े और एक बलखाती धारा के किनारे बैठ हमने अपना खाना खाया। लौटते समय मैं बच्चों को बतियाते सुनती रही। अचानक बड़ी शिद्दत से उनकी ज़रूरतों का अहसास होने लगा और उतनी ही शिद्दत से अपनी कमियों की चेतना भी जगी। मैं उनसे ठीक उसी तरह बात करना चाहती थी जैसे श्री स्कोवल, हमारे वन अधिकारी करते हैं ताकि प्रकृति की दुनिया के चमत्कार उनके सामने खोलकर रख सकूँ। पर मैं खुद कितना कम जानती हूँ। सप्ताह के दौरान जब तक मैं बच्चों की कॉपियाँ सावधानी से देखती हूँ, अपने छह पठन समूहों की तैयारी करती हूँ और सामाजिक अध्ययन की सामग्री पढ़ती हूँ, अपने काम से जुड़ी बारीकियों से जुझती हूँ, तब तक सोने का समय हो जाता है। इतना थक जाती हूँ कि जिन बातों की विस्तृत योजना बनानी है उनके बारे में सोच भी नहीं पाती। सो जो

कर रही हूँ उसी राह पर बढ़ती जाती हूँ। इच्छा करती है कि काश मैं एक की जगह चार होती ताकि हरेक बच्चे के दिल-दिमाग में जो कुछ हो रहा है उसे समझ पाती और उस बारे में कुछ कर पाती।

### **गुरुवार 12 नवम्बर**

यह शिक्षा सप्ताह है। हमने अपनी समय सारिणी उलट दी है ताकि माताएँ बच्चों को सामाजिक अध्ययन पर काम करते देख सकें। सिर्फ श्रीमती थॉमसन, श्रीमती विलियम्स और श्रीमती डूलियो आईं। चार माताओं ने लिखित माफी मांगली। न आने के सबके जायज़ कारण थे। श्रीमती डूलियो के आने की मुझे बेहद खुशी हुई। वे पहली बार स्कूल आई थीं। तीन बजे बड़ी लड़कियों ने माताओं को चाय परोसी और हमने गपशप की। श्रीमती विलियम्स दक्षिण कैरोलीना में अपने रिश्तेदारों के पास समय बिता कर लौटी हैं। उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में बताया।

### **शुक्रवार 13 नवम्बर**

हमने अखबार की सम्भावनाओं पर बात की उसकी व्यवस्था कैसे की जाएगी, हम उसमें क्या-क्या डाल सकते हैं। वॉरेन को मुख्य सम्पादक और ओल्गा को सह-सम्पादक चुना गया।

### **सोमवार 16 नवम्बर**

आज खासी ठंड थी, सो दोपहर को एक गर्म व्यंजन परोसना उचित लगा। रूथ और मेरी ने कुशलता से पकाया और सफाई का ध्यान रखा। पर खाना खाने के दौरान काफी शोर मचा और उलझन हुई। खाने के बाद का सत्र आरम्भ करने से पहले कुछ मिनट खाने के घंटे की बात हुई। अब से जिन्हें बारह बजे रसोई के काम में जुटना है वे 11:50 को हाथ धो लेंगे। डेस्क जोड़कर बड़ी मेज़ बनाएंगे, उस पर मोमजामे की पट्टियाँ लगा, रूमाल, चम्मचें रखेंगे। इस बीच समूह के बाकि लोग हाथ साफ कर लेंगे। जब तक सब हाथ धो, अपने-अपने स्थान पर बैठ नहीं जाते परोसगारी नहीं होगी। जब सबको भोजन परोस दिया जाएगा हम प्रार्थना करेंगे। खाना पकाने वालों यह ध्यान रखना होगा कि तश्तरियों को धोने के लिए गरम पानी तैयार हो और रसोई फिर से व्यवस्थित की जाए। जब तक थालियाँ उठाकर धो-पोंछ कर वापस नहीं रख दी जातीं सब बैठे रहेंगे। बर्तन धोने वालों को साबुन घुला गर्म पानी मिलेगा और धोने के लिए उबलता पानी। जब बच्चे बाहर खेलने जाएंगे तो कुछ बच्चे मोमजामे की पट्टियाँ धो-पोंछकर रख देंगे और फर्श की सफाई भी करेंगे ताकि दोपहर की पढ़ाई के काम में कोई दिक्कत न आए। थालियाँ धोने वाले बच्चे और उन्हें पोंछकर रखने वाले बच्चे रसोईघर में काम करेंगे। सामान्य देखभाल करने वाले बच्चे यह सुनिश्चित करेंगे कि सब काम

हुए या नहीं, वे चूल्हे की सफाई भी करेंगे और रसोईघर को व्यवस्थित करना भी उनकी जिम्मेदारी होगी। इसके बाद हमने अखबार के आलेखों का काम शुरू किया। हमने बोर्ड पर उन चीजों की सूची बनाई जिन पर हम लिखना चाहते थे और सबने अपनी पसंद के विषय चुन लिए। इस काम के लिए फिलहाल कुछ समय तक हमें अंग्रेज़ी के कालांशों का उपयोग करेंगे।

### **मंगलवार, 17 नवम्बर**

आज मध्यान्ह भोजन पकाने, परोसने, और उसके बाद सफाई में काफी सुधार रहा। यह सुधार सायास था क्योंकि कई बच्चों ने कहा “आज हम कल से अच्छे थे, हैं ना?”

### **बुधवार, 18 नवम्बर**

आज फ्रैंक से दिल खुश रहा। वह लड़का सच में मुझे अजीज़ लगता है। आज उसने तय किया कि वह पाँच नन्हो के साथ खाना खाएगा। उसने उन्हें ढंग से चम्मचें पकड़ना सिखाया आलू के शोरबे की आखिरी बूंद तक उन्हें खिलाई। शोर करने वालों को चपाया। लड़के फ्रैंक को पसंद करते हैं। उसका उन पर अच्छा असर पड़ता है, खासकर एल्बर्ट पर।

### **शुक्रवार, 20 नवम्बर**

आज तीनों लड़के वानिकी क्लब के सदस्यों को घुमाने ले गए। उन्होंने हमें हवा, पाले, बढ़ते वृक्षों और पानी से टूट कर मिट्टी बनते शिलाखण्ड दिखाए। लौटने पर हमने नमक के क्रिस्टल (रवे) बनाए, ताकि समझ सकें कि प्रकृति में यह प्रक्रिया कैसे होती है। कई बच्चों को स्पटिक के टुकड़े मिले हैं। वे यह सोचने पर मजबूर हुए कि जो आकृति इन टुकड़ों की बनी वह क्योंकर बनी होगी।

### **गुरुवार 26 नवम्बर**

आज सुबह का काफी समय अखबार के आलेखों पर लगा। हमने लेख व्यवस्थित किए और बोर्ड पर यह योजना बनाई कि वे अखबार में कहाँ छापे जाएंगे। मैं छपाई के लिए उन्हें टाइप करवाऊंगी।

### **सोमवार, 30 नवम्बर**

रैल्फ अगले दो सप्ताहों के लिए थालियाँ साफ करने वाला रहेगा। वह कुशलता से काम करता है और आज पहली बार दोपहर के सत्र के पहले उनसे सलटकर उसने रसोई भी व्यवस्थित कर दी थी। एन्ड्रूज बहनों पर खाना पकाने की जिम्मेदारी थी, उन्होंने हर छोटी-मोटी बात पर बार-बार पूछताछ की। सुबह स्कूल शुरू हो उसके पहले उनके साथ अधिक समय बिताना होगा ताकि वे स्वतन्त्र रूप से काम कर सकें।

### **मंगलवार, 1 दिसम्बर**

आज एक नया लड़का आया। उसके साथ उसकी माँ भी आई, जिसने मुझे चेता दिया कि वह शरारती है और मुझे उसे सीधा करना होगा। फ्रेड लुत्ज़ तीसरी कक्षा में है। उसकी सुबह ठीक-ठाक कटी और उसने आसानी से दोस्त बनाए। जोसेफ ने खराब व्यवहार किया वह नए लड़के के सामने शान बघारने लगा, क्योंकि फ्रेड चुपचाप सुन भी रहा था। बाद में मैंने फ्रेड से बात की और कहा कि वह जोसेफ पर ध्यान न दे, क्योंकि वह जो कुछ करता-कहता है उसके लिए खुद ज़िम्मेदार नहीं है। पर हम बेहतर हैं और वह सब नहीं करते जो जोसेफ करता है।

### **बुधवार, 2 दिसम्बर**

ओल्गा और एना ने आज अखबार की प्रति छापी। जब वे छाप चुकीं तो हमें काम बन्द कर उसे पढ़ना पड़ा। बच्चे अपनी मेहनत के नतीजे से बड़े खुश थे। हमने अभिभावकों और दोस्तों के लिए क्रिसमस कार्ड बनाए। बच्चे ये कार्ड मोटे कागज़ पर बना रहे हैं। मैंने बच्चों को दो भागों में “साइलेंट नाइट” गना सिखाया। उन्होंने गीत को हार्मोनिका पर बजाना भी सीखा

### **शुक्रवार, 4 दिसम्बर**

इन बच्चों को खुद अपनी गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए क्योंकि रुचि और उद्देश्य दोनों ही समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। सहायक क्लब व व्यक्तिगत बैठकों से वे उद्देश्य सहित योजना तो बनाने लगे हैं। आज हमने इस दिशा में एक और कदम बढ़ाया। हर सुबह हम बोर्ड पर दिन की योजना बनाते हैं। इसके बाद हम उस पर चर्चा कर सबसे पहले क्या करेंगे यह भी तय कर लेते हैं। पर आज मैंने उन्हें खुद अपने दिन की योजना बनाने को कहा। हमने मौखिक रूप से जो किया जाना है उसकी सूची बनाई और तब उसे श्यामपट्ट पर व्यवस्थित किया। बच्चों को लगा कि सुबह कमरा बेहद ठण्डा रहता है तो वही समय क्रिसमस कैरल्स (गीत) के अभ्यास के लिए सही है। सामाजिक अध्ययन के घण्टे में हम अपना क्रिसमस का नाटक तैयार कर रहे हैं। हमारा नाटक क्रिसमस की जो कथा ल्यूक के दूसरे अध्याय में दी गई है उस पर आधारित है। इस नाटक के बीच, जगह-जगह हम उपयुक्त गीत गाएंगे।

### **सोमवार, 7 दिसम्बर**

बच्चों ने अपना दिन सफलतापूर्वक नियोजित किया। अपने समूहों की योजना लेने के बाद बच्चों ने अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों की सूची बनाई। एना ने एण्ड्रू के साथ क्रिसमस नाटक की मंच सज्जा पर बात कर यह तय किया कि वे तैयारी कब से करेंगे। पोशाक समिति ने यह तय किया कि वे कब-कब मिलेंगे। रैल्फ और वॉरेन ने समय निकाला ताकि वे लकड़ी के

कोठार को साफ कर दें क्योंकि कल नई लकड़ी आने वाली है। बच्चों ने अपने स्तर पर भी सूचियाँ बनाई (पृष्ठ 72 के गणित के सवाल करो,.....शुक्रवार के श्रुतिलेखों की भूलें सुधारो.....एक क्रिसमस कार्ड बनाओ.....लाइब्रेरी पुस्तक से एक अध्याय पढ़ना है)। काम पूरा करते ही वे सूची में दर्ज काम के सामने निशान लगाते गए। कई बच्चों ने इतनी लम्बी-चौड़ी सूची बनाई थी कि काम दिनभर में पूरा हो ही नहीं सकता था, ज़ाहिर था नहीं हुआ। शाम को हमने इस बात पर चर्चा की कि हमने काम कैसा किया।

### **मंगलवार, 8 दिसम्बर**

आज हमने नाटक का अभ्यास किया। गायक टोली को अब नाटक में अपनी भूमिका समझ आने लगी है सो अब वे नाटक ने संवाद न बोल पाने के दुख से उबरने लगे हैं। सामान्यतः जिस समय हम पठन का काम करते हैं उस समय हमने अपने उपहार बनाने शुरू किए। बड़े बच्चे कांच पर आकृतियाँ बना रहे हैं, जिसे वे बाद में फ्रेम में मढ़ देंगे। छोटे बच्चे कपड़ों की लीरियों से गमले लटकाने वाले छींके बुन रहे हैं।

### **शुक्रवार, 11 दिसम्बर**

इन बच्चों को ऐसा सामाजिक आचरण व दृष्टिकोण सीखना है ताकि वे अपने संगी-साथियों से सही बर्ताव करें और आत्म विश्वास और संतुलन से नई परिस्थितियों का सामना करें। हमने शारीरिक शिक्षा और पुस्तकालय के कालांशों में इस पर मेहनत की है। आज हमें यह अभ्यास करने का एक और मौका मिला। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के दो शिक्षक हमसे मिलने आए। मैं बच्चों की प्रतिक्रिया देखने के लिए उन पर नज़र गड़ाए थी। कुछ ऐसे भी मौके आए जब वे शरमाए। क्लब की बैठक के समय रैल्फ की बोलती बन्द हो गई। मैंने उसकी कुछ मदद की, पहले सदमे के बाद शेष कार्रवाई बिना व्यवधान चली। ओल्गा ने न तो मेहमान नवाज़ी में भाग लिया न चर्चा में शिरकत की। सहायक क्लब की बैठक में मेरी को तमाम सुझाव देने थे पर वह कुछ सकुचा गई। इस पर वॉरेन ने उसकी ओर से सुझाव रख दिए। बाद में मेरी ने मेहमानों से दोस्ती कर ली और हमारे काम के बारे में बताया। मार्था, हेलेन, रूथ और एन्ड्रूज़ बहनों ने उनसे सहजता व बेतकल्लुफी से बातचीत की। मेहमानों ने हमारे गर्म खाने की योजना में रुचि जताई और काफी समय रसोई में हमारे खानसामों के साथ बिताया। जब मैं वहाँ झाँकने गई तो मेरी स्पैगेथी और टमाटरों में मनोयोग से मसाले डाल रही थी। उसने सिर उठा मुझे देखा और मुस्काई। मेरी में कुछ बेहद आकर्षक है। उसमें हल्का सा हास्यबोध भी है, जिसे पोषित किया जाना चाहिए। डॉरिस भी स्वावलम्बी बनने लगी है। वह टमाटरों का एक डब्बा खोल रही थी और डब्बा खोलने के उपकरण को ठीक से चला नहीं पा रही थी। रूथ ने डब्बा

खोलने में मदद की पेशकश की। इस डोरिस ने जवाब दिया “ना! बस मुझे बता दो कि कैसे करना है, फिर मुझे ही खोलने दो।” हमारे मेहमान संतुष्ट थे, सीखने-समझने की प्रक्रिया को गहराई से समझते भी थे। उन्होंने कहा कि इतना बढ़िया स्पेगैथी व टमाटर उन्होंने पहले कभी नहीं खाए, जिसमें मसालों का प्रमाण भी बिल्कुल सही हो। हमारी लड़कियाँ बेहद खुश हो गईं।

हमारे सहायक क्लब के नए पदाधिकारी चुने गए। वॉरेन अध्यक्ष है, एडवर्ड उपाध्यक्ष और ओल्गा सचिव। एडवर्ड के चुने जाने से मुझे खुशी हुई। वह इतने कम काम अच्छी तरह से कर पाता है। उपाध्यक्ष का पदभार कठिन नहीं है, पर उसके साथ कुछ सम्मान जुड़ा हुआ है और वह सहायता करते हुए काफी कुछ सीख सकेगा। मुझे खुशी है कि समूह ओल्गा के महत्व को पहचान रहा है। और वॉरेन! तीन माह पहले वह अकेला, अतिसंवेदनशील बच्चा था जिसके कोई दोस्त नहीं थे। उसने न केवल अपने काम में खूब प्रगति की है बल्कि वह समूह का सबसे लोकप्रिय लड़का भी बन गया है।

### **सोमवार, 14 दिसम्बर**

समेटिस बच्चे शहर से लौट आए हैं, सब इससे बेहद खुश हैं। श्रीमती समेटिस ने कहा कि शहर बच्चों को बड़ा करने के लिए ठीक जगह नहीं है। वे उन पर नज़र तक नहीं रह पाती थीं। जब हम दिन की योजना बना रहे थे तो बच्चों ने कहा कि वे समेटिस बच्चों से उनके शहर के उस स्कूल के बारे में सुनना चाहेंगे जहाँ वे जाते रहे थे। वॉरेन ने न्यू ब्रनस्विक ने शुक्रवार को जो कठपुतली नाटक देखा था, उसके बारे में भी वे जानना चाहते थे। सोफिया ने अपनी बात काफी व्यवस्थित तरीके से रखी, पर वॉरेन ने समूचे समूह को पूरी तरह बाँध लिया। जब उसने बात खत्म की तो मेरी बोल पड़ी “यार! किस्सा सुनाना तो इसे खूब आता है।”

मैंने आज जाना कि श्रीमति समेटिस के चार भाई हैं, एक ग्रीस में डॉक्टर है, एक कायरो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर, तीसरा येरूशलम में पादरी है, और सबसे छोटा न्यू यॉर्क में सेल्समैन। श्रीमती समेटिस अपने परिवार की अकेली संतान थीं जिन्हें लड़की होने के कारण पढ़ाया-लिखाया नहीं गया। पर उन्होंने खुद को न केवल अपनी मातृभाषा ग्रीक पढ़ना सिखाया, बल्कि अंग्रेजी पढ़ना भी। इस पृष्ठभूमि से समेटिस बच्चों की दक्षता अब समझ आने लगी है।

### **बुधवार, 23 दिसम्बर**

पिछले कुछ दिन बेहद व्यस्त रहे हैं। हमने उपहार बना और पैक कर दिए हैं, कार्ड भी बन चुके हैं। हमारे क्रिसमस ट्री और मंच की जो कुछ सजावट करनी थी वह पूरी कर दी गई है, परदे और पोशाकें जाँच ली गईं

हैं। हमने नाटक का अभ्यास किया और कैरल गाए। आज हरेक मदद कर रहा था और खुश भी था। आखिरकार वह दिन आ गया है। आज रात हमारा छोटा कमरा मेहमानों से अटा पड़ा था। दो को छोड़ सभी माता-पिता आए। श्री हिल भी कोशिश कर समय से पहुंच गए। श्रीमती एण्ड्रूज़ भी आईं। वे इतने सालों से पास ही रहती हैं पर अब तक कभी स्कूल नहीं आई थीं। एण्ड्रूज़ बहनों को इससे बड़ी खुशी हुई।

ब्लेयर एकेडमी के प्राचार्य डॉ. ब्रीड और उनकी पत्नी भी आईं। उन्हें नाटक अच्छा लगा, गायन भी पसंद आया। डॉ. व श्रीमती ब्रीड हमारी मदद करना चाहते थे, सो उन्होंने पियानो के पेटे कुछ पैसे दिए। पियानो की हमें सख्त ज़रूरत है।

मेरे पिता सैंटा बने और उन्होंने बच्चों को संतरे व मिठाइयाँ और अभिभावकों को उपहार बाँटे। बेहद खुशनुमा शाम गुज़री। दर्शकों को देख ऐसा लगा कि दोस्ताना वातावरण चारों ओर है। हम अच्छे दोस्त बन चुके हैं, ये लोग और मैं।

### **गुरुवार, 24 दिसम्बर**

सफाई में पूरी सुबह निकल गई। एक बजे बच्चे छुट्टियों के लिए घर लौट गए और स्कूल भवन सूनसान हो गया। गुजरे महीनों में कितना कुछ हुआ है। मैंने इन बच्चों के व्यक्तित्व को क्रमशः उभरते और कुछ आज़ाद होते देखा है। योजना बनाने, उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने, समस्याओं को पहचानने और उन्हें सुलझाने की क्षमता उनमें पनपती देखी है। एक दूसरे के साथ रहने व एक दूसरे का सम्मान करने की काबलियत उनमें आई है। मैंने कई गतिविधियों को प्रोत्साहित किया है ताकि हरेक बच्चे को कम से कम एक प्रवृत्ति चुनौतीपूर्ण लगे और वह उसके ज़रिए समूह में अपना स्थान बना सके।

## **अध्याय तीन**

### **वृद्धि की पीड़ाएँ**

#### **सोमवार, 4 जनवरी, 1937**

आगामी कुछ माह में हरेक बच्चे का सहकार पाने की कोशिश करूँगी ताकि उसके काम के उद्देश्य तय हो सकें। छुट्टियों के पहले कई दिनों तक मैंने बच्चों को उपलब्धि परीक्षा देने में आधा-आधा दिन लगाया था। इस पिछले सप्ताह मैंने उनकी परीक्षा पुस्तिकाओं को जांचा और नतीजों का ग्राफ बनाया। यह ग्राफ बच्चों की पहली परीक्षा के नतीजों के ग्राफ के ऊपर चिपका है ताकि हरेक बच्चा अपने व्यक्तिगत सुधार और तरक्की को देख सके। मैंने

इनमें प्राप्तांक नहीं दर्शाए हैं। ग्राफ केवल यह बताते हैं कि विभिन्न विषयों में बच्चा ऊपर गया है या नीचे। सभी बच्चों ने प्रगति की है। रैल्फ ने तो हर विषय में तरक्की की है।

आज सुबह जब बच्चे स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे, तो मैंने एक-एक कर उनके साथ व्यक्तिगत सत्र किए। इसलिए ताकि मैं उन्हें उनसे उनकी प्रगति और सुधार के उपायों पर बातचीत कर सकूँ। बच्चों को रंगीन ग्राफ पसंद आए, खासकर इसलिए क्योंकि उनसे अब तक हुआ सुधार साफ नज़र आता था। निरंतर प्रयत्न के लिए सुधार बड़ा भारी प्रोत्साहन सिद्ध होता है। इन सत्रों के बाद बच्चों ने अपनी प्रगति पुस्तकें बनाईं। जिसमें से ये ग्राफ और सुधार संबंधी कामों के सुझाव दर्ज करेंगे। वे एक पन्ना उन बातों को दर्ज करने के लिए भी रखेंगे 'जिनको मैंने खुद किया।' की श्रेणी में रखा जा सके। इस माह वे इसमें ऐसी छोटी-मोटी बातें भी दर्ज करेंगे जैसे खेलने के बाद बिना किसी के कहे खुद खिलौने को यथास्थान रखना। जैसे-जैसे उनकी प्रबन्धन क्षमता बढ़ेगी वे केवल उन बातों को दर्ज करेंगे जिनमें वास्तव में प्रबन्ध शामिल हो, जैसे किसी समिति की अध्यक्षता।

क्रिसमस के पहले, कस्बे में रहने वाली हमारे समुदाय की मित्र श्रीमती विल्सन ने कहा था कि वे हमारे लिए मात्र दस डॉलर में पियानो की व्यवस्था कर सकती हैं। हम यह देख प्रसन्न थे कि उन्होंने एक अच्छा सा पियानो भिजवा दिया था, जिसे दुरुस्त भी करवा दिया गया था। ज़ाहिर था कि हमें एक छोटा संगीत सत्र भी करना पड़ा।

“ ”

### **मंगलवार, 5 जनवरी**

आज अद्भुत और रहस्यमय चीजें होती रहीं। रसोई प्राभारियों ने सफाई का खास ध्यान रखा। रैल्फ ने दो बार उठ कर दरवाज़ा बन्द किया, जिसे कोई लापरवाहीवश खुला छोड़ गया था। उसने पहले ऐसा कभी नहीं किया है, चाहे वह खुद ही ठिठुरने क्यों न लगा हो। एडवर्ड ने बिना कहे गुणा करना सीखा। कैथरीन ने पियानो को पॉलिश से चमकाया। क्यों भला? बात अचानक तब साफ हुई जब मैंने कैथरीन को अपनी प्रगति पुस्तक खोल उसमें यह दर्ज करते देखा “जनवरी 5, जब कोको की ट्रे भर गई, तो मैंने डॉरिस की उसे परोसने में मदद की।” वे सब जुटे हुए हैं कि अपनी सूची में कुछ जोड़ सकें। यही इन बच्चों का अगला कदम है।

### **शुक्रवार, 8 जनवरी**

वॉरेन ने सहायक क्लब की बैठक की अध्यक्षता की। वह आत्मविश्वास से भरा था और उसने चर्चा प्रोत्साहित की। एल्बर्ट बोला “अध्यक्ष महोदय, हमें शारीरिक शिक्षा के घण्टे के बारे में कुछ करना चाहिए। इतना शोर मचता है कि हमारा सिर दुखने लगता है।” ठण्ड के कारण हमें अक्सर अन्दर ही



खेलना पड़ता है। सुबह तो हम उस घण्टे में नाच लेते हैं, पर दोपहर में हर बच्चा कोई न कोई खेल ढूँढ़ता है, और तब मचता है शोर। सुझाव दिया गया कि खेल समिति कुछ समूह बनाए और उनके लिए खेल तय कर दे। हर समूह, हर दिन खेल बदल सकेगा और समूह का स्वरूप भी सप्ताह भर बाद बदलेगा मुझे नहीं पता कि इससे मदद मिलेगी या नहीं। कमरा बेहद छोटा पड़ता है, और हमारी संख्या है अधिक। जब खेल में मज़ा आने लगता है तो अनचाहे ही शोरगुल मच जाता है।

### **सोमवार, 11 जनवरी**

बच्चों को खेल समिति द्वारा बनाए समूह पसंद नहीं आए। उनका कहना था कि टोलियों में बंटना उन्हें अच्छा नहीं लगा रहा, क्योंकि इससे कुछ लोग बड़े दुखी हो जाते हैं। अतः सुझाव यह आया कि हम अपने समूह खुद बना लें। हरेक यह सुनिश्चित कर ले कि वो इधर-उधर न भटके और किसी न किसी समूह वास्तव में जुड़े। हमने संभावित खेलों की सूची बनाई। मेरी उनका चार्ट बना सूचना पट्ट पर लगा देगी। जैसे-जैसे, खेल समिति नए खेल को मिलेंगे, बच्चे उन्हें सूची में जोड़ते जाएंगे।

### **मंगलवार, 12 जनवरी**

ग्राफ तथा काम सुधारने संबंधी उपचारात्मक सुझावों से बच्चे अपनी मदद खुद कर पा रहे हैं। एडवर्ड कक्षाकार्य को बेहतर करने में जुटा है और प्रतिदिन यह बता जाता है कि उसने कितना कर लिया है। वह सभी संगीत कालांशों में गाता है, और उनके अलावा भी। वह रोज़ कोयला लाता है और जो कुछ उसके हाथों गिराता है उसे उठाता भी है। रैल्फ भी सुधारने के सचेत प्रयास कर रहा है। वह चर्चाओं में ध्यान से सुनता है, सक्रिय हिस्सेदारी करता है। शब्दकोष लगातार काम में लिए जाते हैं। इन सर्दियों में अपने काफी समय अपने सीखने के उपकरणों को बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे।

### **बुधवार, 13 जनवरी**

जब से पिनोकियो पढ़कर सुनाना समाप्त किया है बच्चे लगातार उसे एक नाटक के रूप में प्रस्तुत करने की सम्भावनाओं पर विचार कर रहे हैं। हमने पन्द्रह दृश्यों की सूची बनाई है जिन्हें नाट्य रूप दिया जा सकता है। ज़ाहिर है कि हम इतना सब कर ही नहीं पाएंगे, अतः हम इनमें से छह ही चुनेंगे। मैंने बच्चों को छह समूहों में बांट दिया है ताकि वे पटकथा लिख सकें। छोटे बच्चे अभी भी अपने घर बना रहे हैं और उनके बारे में कहानियाँ लिख रहे हैं। उनकी शब्द सूची इतनी लम्बी हो चुकी है कि आज हमें उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए उसकी समीक्षा करना पड़ी कि बच्चों को वे शब्द याद भी हैं या नहीं।

## शुक्रवार, 15 जनवरी

आज वानिकी क्लब की बैठक के बाद जब हम घर लौटने की तैयारी कर रहे थे, तो मैंने पाया कि जिस क्यारी में फूलदार कंद बोए थे उसका बाड़ा नीचे गिरा है, और क्यारी में हर और पैरों के छाप हैं। कैथरीन और सोफिया ने बताया कि बड़े लड़के बाड़े का उपयोग ऊंची कुदान के लिए कर रहे थे। मेरा तो दिन ही मानो मटियामेट हो गया, दिन भर जो अच्छा हुआ था दिमाग से गायब हो गया। इन लड़कों ने ठीक इसी क्यारी को बनाने में कितना समय लगाया था, फिर वे ऐसा भला कैसे कर सकते हैं? वह काम उन पर लादा नहीं गया था, उन्होंने स्वेच्छा से, सानंद किया था।

## सोमवार, 18 जनवरी

आज सुबह रैल्फ से मैंने अनुरोध किया कि वह कुछ देर मेरे पास बैठे। मैंने उसे बताया कि शुक्रवार को मैंने क्या देखा था। पर आगे सवाल करती उसके पहले ही रैल्फ बोल पड़ा “मुझे पता है वह किसने किया था। जॉर्ज, एन्ड्रू, हेलेन, एल्बर्ट और फ्रेड।” “और तुम, तुम नहीं थे उनके साथ?” मैंने सवाल किया। उसने बताया कि न उसने, न फ्रैंक ने इसमें हिस्सा लिया था। “रैल्फ तुमने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?” उसके उत्तर से मुझे लगा कि अच्छा हुआ जो यह घटना घटी। “फ्रैंक और मैंने उन्हें क्यारी में कूदते देखा था, और हमें लगा था कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, सो हमने उन्हें कूदना बन्द करने का कहा। वे बात मान गए, तो मुझे लगा कि आपको बताने की कोई ज़रूरत नहीं है।” उन्होंने ठीक वही किया जो दरअसल उन्हें सिखाने की कोशिश में कर रही थी, वह यह कि अपनी समस्याएँ खुद सुलझाओ। मैंने पाँचों बच्चों से कहा कि वे बाड़े की मरम्मत कर दें।

आज जब मेरी सहायक शिक्षिका आई तो मैंने उसे पूरा वाकया सुनाया। उसका कहना था कि बच्चों को अब तक क्यारी में लागाए अपने श्रम का कोई नतीजा नहीं मिला था। कोई परिपक्व व्यक्ति ही तात्कालिक आनंद को दूर-भविष्य के आनंद के लिए मुलतवी कर सकता है। यह बच्चों ने अभी सीखा नहीं है। साल भर बाद ही वे क्यारी के फूलों की सुंदरता का आनंद पाएंगे, आगन्तुक उनके मैदान की प्रशंसा करेंगे, तब शायद वे ऐसे विवेकहीन हरकतें न करें।

## मंगलवार, 19 जनवरी

आज दोपहर वॉरेन, जॉर्ज और फ्रैंक ने चारों ओर पानी बिखेर दिया। बीच-बीच में मध्यान्ह भोजन से संबंधित अपने काम कोई भी नहीं करना चाहता, आज ठीक ऐसा ही दिन था। एल्बर्ट को चटाइयाँ उठाने को कहना पड़ा, मेरी ने उन्हें इतनी खराब तरह से साफ किया कि उसे फिर से सफाई

करनी पड़ी। कैथरीन लगातार वॉरेन और फ्रैंक की शिकायत करती रही। अल्मारियाँ अव्यवस्थित छोड़ दी गईं। तौलिए धोए नहीं गए और चूल्हे पर से खाने के अवशेष साफ नहीं हुए। मैंने इस सब पर कोई बात नहीं की। कई बार लगता है कि ज़्यादा टोकाटोकी ठीक नहीं है।

### **बुधवार, 20 जनवरी**

आज मैंने रसोई में बच्चों की मदद की। उन्हें काम करने के अधिक आसान तरीके बताए। तौलिए धोने में दिक्कत इसलिए आती है क्योंकि गर्म पानी पूरा नहीं होता। आज जब तश्तरियाँ धोने का पानी तैयार हो गया तो हमने एक पुरानी बाल्टी में पानी गर्म किया ताकि तश्तरियाँ धोने वाले टब भी साफ किए जा सकें। इससे थोड़ी मदद मिली पर फैंक ने कहा “मुझसे यह काम नहीं होता। और मुझे यह अच्छा भी नहीं लगता है।”

कार्टराइट बच्चे पिछले कुछ दिनों से बाहर थे और आज पता चला कि उन्हें इन्फ्लुएन्जा हुआ है। आज उन्नतीस में से सिर्फ सत्तरह बच्चे ही उपस्थित थे। इस कारण भी गर्म खाने को लेकर परेशानियाँ पैदा हो रही हैं। बच्चे दो सप्ताह के लिए अपने-अपने काम करते हैं। दो सप्ताह शुरू होने के प्रारंभ में मैं काम का सावधानी से निरीक्षण करती हूँ, ताकि बच्चों उन्हें ढंग से करने लगे पर इतने बच्चे अनुपस्थित हो जाते हैं तो बच्चों को अपने काम के अलावा, दूसरी जिम्मेदारियाँ भी उठानी पड़ती हैं। मैं चाह कर भी सबकी मदद नहीं कर पाती। फिर हमारी कोई प्रभावी कार्य योजना भी नहीं है। सच यह है कि मुझे भी उतना ही सीखना है, जितना बच्चों को।

### **शुक्रवार, 22 जनवरी**

आज जब हम अपनी दैनिक योजना बनाने लगे तो कई बच्चों ने कहा कि संगीत सुबह सबसे पहले रखना चाहिए, क्योंकि पिछले कई दिनों से दूसरे कामों के दबाव में संगीत छूटता रहा है। मैंने समूह को छपी लिपी देख कर संगीत पढ़ना सिखाया। इसमें सबको मज़ा आया, शायद इसलिए कि यह कुछ नया था। लड़कों ने भी गाया।

### **सोमवार, 25 जनवरी**

हमें फ्रेड के साथ कुछ परेशानी हो रही है। वह किसी न किसी से लड़ता रहता है। फ्रेड अपनी उम्र से अधिक परिपक्व है। उसके घर जाने पर मैंने जाना कि वह सुबह स्कूल आने से पहले छह गायों को दुहता है। वह काम के बाद कपड़े नहीं बदलता, सो गौशाला की गंध आती है। ये लोग कड़ी मेहनत में डूबे रहते हैं, उन्हें उस दुनिया को देखने की फुरसत तक नहीं मिलती जिसमें वे जीते हैं। परिवार का प्रबन्धन अच्छा नहीं है। श्रीमती लुत्ज़

“ ”

लगातार स्थान बदती रहती हैं। जब खेत बिक्रियाँ होती हैं तो लोग उन्हें, उनके बिखरे बाल, पुरुषों के जूते और उजड़्ड भाषा के कारण पहचान लेते हैं। बच्चे फ्रैंड की पृष्ठभूमि को मुझसे बेहतर जानते थे और यही कारण है कि उसे समूह में दिक्कतें आ रही हैं।

### **मंगलवार, 26 जनवरी**

दिन समाप्त होने को था और तब मैंने सप्तहान्त पर बनाई कठपुतली मसखरे विलफर्ड को पेश किया। कठपुतली कैसे चलाई जाती है यह दिखाने और हरेक को कुछ अभ्यास का मौका देने के बाद मैंने पूछा कि कौन स्वेच्छा से दो मिनट उसका खेल दिखाएगा। कुछ बहादुर बच्चों, हेलेन, मेरी, वॉरेन, रूथ और एण्ड्रू ने कोशिश की। हम इतना हंसे कि पूछो मत। हमें यह नन्हा जोकर बड़ा प्यारा लगा। सभी बच्चे अब कठपुतलियाँ बनाना चाहते हैं। उन्होंने डोरियों वाली कठपुतलियों की किताब बड़े ध्यान से देखी। मैंने वह किताब पुस्तकालय वाली मेज़ पर रख दी थी।

“ ”

### **बुधवार, 27 जनवरी**

गर्म खाने की व्यवस्था में मैं काफी वक्त लगाने लगी हूँ, और यह मुझे थका देता है। लगता है मानो मैं तीन घेरों वाला सर्कस संचालित कर रही हूँ। सुश्री मॉर्गन ने पहले ही कहा था कि इस साल इसमें दिक्कत आएगी क्योंकि पिछले दो सालों से जो लड़कियाँ कुशलता से यह कार्यक्रम चला रही थीं, वे हाई-स्कूल चली गई हैं। लगता है अब कुशल कार्यकर्ताओं का समूह गढ़ना मेरा काम है। इस महीने हमने कई चीज़ें सीखीं। आज एना हमारी उस पडौसन के यहाँ जाना चाहती थी जिनकी मशीन हम सिलाई के लिए काम में ले रहे हैं। वह अपनी सिलाई पिछली रात क्लब के समय पूरी नहीं कर पाई थी। मैंने उसे याद दिलाया कि उसे भोजन में रूथ की मदद करनी है, तो वह बोली “अब खास करने को बचा ही नहीं है। जो करना है रूथ कर लेगी।” दोनों खड़ी रहीं पर चावल पैंदे से जल गए। कैथरीन को आधे घण्टे तक रगड़-रगड़ कर भगोना मांजना पड़ा। बच्चों ने दोनों रसोइयों को साफ-साफ सुनाया कि वे उनकी पाककला के बारे में क्या सोचते हैं।

### **गुरुवार, 28 जनवरी**

हार्मोनिका का अभ्यास तेजी से बढ़ रहा है। आज हमने “यकी डूडल” बजाना सीखा। मैं बच्चों को संगीत निर्देशन कैसे दिया जाता है यह भी सिखा रही हूँ। कई बच्चों ने वाद्य वृंद निर्देशन किया, और अच्छा ही किया।

### **शुक्रवार, 29 जनवरी**

बिचले समूह ने अपनी इतिहास पुस्तक “दोज़ हू डेयर्ड” (जिन्होंने साहस किया) पूरी की। बच्चों को यह किताब इतनी अच्छी लगी थी कि उन्होंने

अंतिम कुछ अध्याय पढ़ कर सुनाने को कहा था। जब मैंने आखिरी वाक्य पढ़ किताब बन्द की तो मेरी भावुक हो बोली “यह बेहद खूबसूरत किताब थी।” बच्चों की प्रगति पुस्तिका के जो मैंने खुद किया वाले पृष्ठों में मेरी खास रुचि है। बच्चों ने जो चीजें लिखी हैं उनमें से कुछ हैं:

मेरी की गणित में मदद की।

पर्दा खींचा ताकि कैथरीन की आखों पर धूप न आए।

रसोई साफ की।

पर्ल से कहा कि वह बुदबुदा कर न पढ़े।

पुस्तकालय से रद्दी कागज़ हटाए।

पकाने में खूब मेहनत की।

अलाव का निचला दरवाज़ा बन्द किया ताकि कमश बहुत गर्म न हो जाए।

बर्तन धोने के लिए गर्म पानी हो, यह सुनिश्चित किया।

जब हम टेन पिन्स खेल रहे थे जो फ्रेड को लड़ने से रोका।

जब खेल में कोई भी ‘वह’ नहीं बनना चाह रहा था तो मैं उदारता से ‘वह’ बना। क्लब बैठक की कार्रवाई लिखना याद रखा।

खेल घण्टों में खेल शुरू करवाया।

पिनोकियो नाटक में अपना हिस्सा मेहनत से लिखा।

प्राथमिक समूह के बच्चों की दरी बुनने में मदद की।

हेलेन से कहा कि वह पियानो पर न खेले और उसी समय हेलेन से कहा कि वह अपनी किताब में न लिखे।

शब्दकोष का जो पन्ना निकल गया था उसे वापस रखा।

खुद को व्यस्त रखा। दरवाज़े से कोट उठाकर टांगे।

### **सोमवार, 1 फरवरी**

जैस-जैसे बच्चों ने अपना काम खत्म किया हरेक ने अपने साप्ताहिक रीडर संकलन के लिए मोटे कागज़ की जिल्द बनाना शुरू किया। हम भूगोल का खास औपचारिक अध्ययन नहीं कर रहे। मुझे लगा कि हम इस अखबार के माध्यम से बच्चों के लिए सार्थक भूगोल का कुछ अध्ययन कर पाएंगे। मैंने यह भी सुझाया कि अगर हमारे पास दुनिया का बड़ा नक्शा हो तो हम उन स्थानों की पहचान कर सकते हैं जिनके बारे में हम पढ़ रहे हैं। मेरे पास एक फटा-पुराना 4 फीट X 1फीट आकार का दुनिया का नक्शा था, सोफिया, हेलेन और रूथ ने कहा कि वे उसे ब्राउन पेपर पर ट्रेस करेंगी।

आज रैल्फ ने कोई भी काम करने से इन्कार कर दिया। मैंने उसे

एडवर्ड से कहते सुना “यह उसका काम है, उसे इसके पैसे मिलते हैं मिस हैनसन! (किसी दूसरे स्कूल में उसकी शिक्षिका) हमेशा अपना काम खुद करती थीं।” मुझे काफी समय से पता था कि कुछ बच्चे ऐसा सोचते हैं। मुझे पता नहीं कि इस बारे में मुझे क्या करना चाहिए। यह भी नहीं जानती कि तत्काल कुछ किया जा भी सकता है या नहीं। दृष्टिकोण में बदलाव लाने में समय लगता है और ऐसा धीरे-धीरे ही होता है।

### **मंगलवार, 2 फरवरी**

रैल्फ, फ्रैंक और एडवर्ड ने खुल्लम-खुल्ला अपने काम करने से इन्कार कर दिया। सो स्कूल के बाद मुझे बड़े बच्चों से बात करनी पड़ी। मैंने यह समझाने की कोशिश की कि हमारे जैसे स्कूल में सबको काम में हाथ क्यों बँटाना पड़ता है। मैंने उन्हें यह विचार करने को कहा कि शाला को साफ और व्यवस्थित रखने में पूरे समूह को कितना समय लगता है और अगर एक ही व्यक्ति यह सब करे तो कितना लगेगा। गन्दगी और अव्यवस्था मैं खुद नहीं करती, पर सफाई फिर भी हर दिन करती हूँ। अगर मैं अकेले ही सफाई करूँगी तो हमें अपनी अधिकांश गतिविधियाँ बन्द करनी होंगी क्योंकि सब कुछ करना एक इन्सान के लिए असम्भव हो जाएगा। अगर हम दिन भर अपनी मेज़-कुर्सियों पर बैठे रहें तो सफाई करना भी काफी आसान होगा। “यह स्कूल तो अन्त-तन्त तुम्हारा है, और मैं चली जाऊँगी उसके बाद भी कई सालों तक तुम्हारा ही रहेगा। जो चीजें तुम्हारी हैं उनमें गर्व तो हो, क्योंकि ये आखिर यह भी तो बताती हैं कि तुम किस तरह के व्यक्ति हो। इस समय तक उनकी गर्दन झुक गई थी, और मुझे खुद पर शर्म आने लगी थी। सच कभी-कभी लगता है कि मैं कुछ ज़्यादा ही बोलती हूँ।

### **बुधवार, 3 फरवरी**

फ्रैंक के मुँह से फिर से “जी, बिल्कुल” सुनना अच्छा लगा। उसने आज अपने तयशुदा कामों से कहीं अधिक काम किए, दूसरे लड़कों की तरह। आज तो स्कूल की आत्मा ही बदली-बदली नज़र आ रही थी। लगा मानो हमारी आपसी समझ और गहरा गई हो। जब से गर्म खाना परोसा जाने लगा है, तब से आज पहली बार लगा कि सब कुछ मैं संचालित नहीं कर रही।

नव वर्ष के बाद आज माताओं के साथ हमारी दूसरी बैठक हुई। पिछली बैठक में मैंने उन्हें बच्चों के प्रगति ग्राफ के नतीजे दिखाए थे और उन्हें समझाया था कि हम उनका उपयोग कैसे कर रहे हैं। वे बच्चों के काम में हुए सुधार से प्रसन्न थीं उसमें रुचि दिखा रही थीं। उन्होंने प्रगति पुस्तिकाओं के शेष पन्ने पलट कर देखे। तब हमारे गर्म भोजन पर चर्चा की। उन्होंने विमर्श किया कि इसके लिए और पैसे कैसे जुटाए जा सकते हैं। श्रीमती विलियम्स ने कहा कि अगर कोई नाटक खेला जाए तो उन्हें उसमें

भूमिका करना अच्छा लगेगा। वे जब हाई स्कूल में पढ़ती थीं उसके बाद से उन्होंने कोई नाटक में हिस्सा नहीं लिया था। “कितना मज़ा करते थे हम, याद है ना? उन्होंने” पूछा।

काउन्टी पुस्तकालय में लाइब्रेरियन की मदद से हमने एक हल्का-फुल्का हास्य नाटक तलाशा। नाटक था “हाउ द स्टोरी ग्र्यू” (कहानी कैसे बढ़ती गई)। आज रात हम श्रीमती थॉमसन के घर मिले और श्रीमती हिल ने हमें नाटक पढ़ कर सुनाया। हम इतना हंसे कि आँखों से आँसू निकल आए। क्योंकि हमारे पास नाटक खेलने वाली माताओं की संख्या पर्याप्त नहीं थी हमने दो हाई स्कूल छात्राओं को भी आमंत्रित किया।

### **गुरुवार, 4 फरवरी**

आज सिलाई क्लब की बैठक में लड़कों ने भी रुकना चाहा। कुछ लड़कियों ने अपने फ्रॉक काटे, दूसरी कुछ ने अपने शमीजों पर सिलाई की, लड़कों ने कठपुतलियों की सिलाई की। उनका आग्रह था कि वे उसी मशीन पर सिंगे जो श्रीमती मून ने हमारे लिए जुगाड़ दी थी। बड़ी गड़बड़ी मची, हमें पर्याप्त संख्या में सूइयों और पिनें नहीं मिलीं, और हमारी संख्या इतनी अधिक थी कि हम एक-दूसरे के काम में बाधा डालते रहे। बच्चों को बेहद मज़ा आया।

आज रात मैं श्रीमती ब्रीड से मिलीं। वे जानना चाहती थीं कि वे हमारे लिए और क्या कर सकती हैं। अचानक मुझे सूझा एक नौजवान खाती..पहले भला क्यों नहीं सूझा होगा। “क्या आपकी अकादमी में कोई ऐसा लड़का है जो हमारे लिए कठपुतली नाटक का मंच बना दे?” श्रीमती ब्रीड ने वादा किया कि वे तहकीकात करेंगी? घर लौटते समय सोच रही थी हॉ, किसी एकल शिक्षक शाला की अध्यापिका को ठीक यही तो करना चाहिए। जो वह स्वयं नहीं जानते उसे सिखाने-पढ़ाने के लिए दूसरो को आमंत्रित करना चाहिए।

कल शाम मैंने सुश्री एवर्ट, हमारी सहायक शिक्षिका के साथ यह विचार करने बिताई थी कि इन बच्चों के लिए अगला चरण, खासकर सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में, क्या होना चाहिए। अब तक यह अध्ययन औपचारिक रहा है और हम अपनी पाठ्यपुस्तकों के हिसाब से चलते रहे हैं। उपलब्ध सामग्री को श्रेष्ठतम उपयोग हो सके इसकी चेष्टा भी करती रही हूँ। पर बच्चों के समक्ष कोई वास्तविक उद्देश्य नहीं रहा है। बच्चे न तो सवाल करते हैं, न ही योजना बनाने में भागीदारी। हमने स्वयं से पूछा कि “हम इन बच्चों को सवाल करना कैसे सिखाएं? उनकी जिज्ञासा को जगाने में मदद कैसे करें? उनके अधिगम को एक-दूसरे से कटे तथ्यों का निष्क्रिय संकलन

के बदले सक्रिय कैसे बनाएँ?

सुश्री एवर्ट का मानना था कि भ्रमण नए अनुभव पाने की आवश्यकता की पूर्ति करेगा। विभिन्न प्रकार के भ्रमण पर बात करने के बाद हमने तय किया कि बच्चों को डॉयल्सटाउन स्थित संग्रहालय ले जाया जाए। इससे हम बच्चों के मन में पायोनियर (जो सर्वप्रथम बीहड़ इलाकों में जाकर बसे।) जीवन के प्रति जो रुचि हैं, उसे और पैनी बना सकेंगे। क्योंकि बच्चे जिस विषय में रुचि रखते हैं, उसके बारे में अधिक पूछते हैं, और-और जानना चाहते हैं। अब क्योंकि हम दोनों ने ही इस संग्रहालय को देखा नहीं था, हमने तय किया कि हम शनिवार को वहाँ जाएँ ताकि पता लगा सकें कि वहाँ बच्चों के देखने लायक क्या-क्या है।

ऐसे भ्रमण से हम कई परिणामों की उम्मीद कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि बच्चे अपना पाठ पढ़ने मात्र के बजाए अधिक जानकारी के लिए दूसरी किताबें देखें। हम चाहते हैं कि बच्चे उस स्थान के बारे में अधिक जानें, जहाँ वे रहते हैं। संग्रहालय अधिक दूर नहीं है और वहाँ अध्ययन किया जा सकता है। इस भ्रमण के दौरान हम बच्चों की बात सुनेंगे और वह तलाशने की चेष्टा करेंगे जो उन्हें चुनौती भरा लगे। यह काम मैं बड़े तथा बिचले समूहों के बच्चों को साथ जोड़कर करूंगी। बच्चों से परिचय अब बढ़ चुका है सो मैं काम को ऐसी दिशा दे सकूंगी कि प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार प्रगति कर सके। इसके अलावा हमें साथ-साथ काम करने के लिए अधिक समय भी मिलेगा।

### **शनिवार, 6 फरवरी**

सुश्री एवर्ट और मैं डॉयल्सटाउन गए और पाया कि संग्रहालय ठीक वैसा है जेसा हम चाहते थे। डॉयल्सटाउन के आस-पास जो अवशेष पायोनीयर जीवन के मिले वे वहाँ संकलित हैं। हमने संग्रहालय के पुस्तकालय में रखी कुछ किताबें देखीं-पढ़ीं और पाया कि हमारे कस्बे के प्रारम्भिक दौर पर काफी रोचक सूचनाएं उनमें हैं। हमने कुछ नोट्स भी बनाए।

### **सोमवार, 8 फरवरी**

हम जब दैनिक योजना बनाते हैं तो बच्चे भी यदा-कदा सुझाव देते हैं। इससे क्रमशः हमारी दैनिक कार्यक्रम भी बदलने लगा है। हम स्कूल मैदान की बात कर रहे थे तब बच्चों को लगा कि अगर हमें बंसत ऋतु में बाहर काम करना है तो हमें अपने खेल मैदान की योजना पर केन्द्रित काम करना होगा। वॉरेन बोला “आज ही शुरू करते हैं।” फिर जोड़ा “तो विज्ञान हम सोमवार को क्यों नहीं करते? सब कुछ वैसे भी शुक्रवार को ही होता है।” मेरी ने ध्यान दिलाया “विज्ञान तो हम वानिकी क्लब में भी करते हैं ना।” सो हमने आज सुबह विज्ञान की कक्षा करने का निर्णय लिया। कुछ बदलाव किए



गए, जो यों थे:

प्रतिदिन: 8.55 से 9.10 दिन का कार्यक्रम बनाना

सोमवार: 9.10 से 9.25 ग समूह का विज्ञान (प्राथमिक समूह) (शेष सप्ताह सामाजिक अध्ययन) 9.25 से 10.00 समूह “क” व “ख” (बड़े बच्चों के समूह) का विज्ञान (सप्ताह के बाकि दिन सामाजिक अध्ययन)

बुधवार नृत्य लड़कियों के लिए

गुरुवार: लड़कों के लिए नृत्य (अगर मौसम सही हो तो बाहर अन्यथा कक्ष में ही अभ्यास)

शुक्रवार: 11:20 से 12:00 साप्ताहिक रीडर पर तथा ताज़ा घटनावृत्त पर चर्चा 11:40 से 12: पुस्तकालय

बुधवार: 11:40 से 12:00 स्वास्थ्य

सोमवार व शुक्रवार: बड़े बच्चों के लिए गायन (क व ख समूह)

छोटे बच्चे गाएं या सिर्फ चुनें।

बुधवार: प्राथमिक समूह (ग समूह) के लिए गायन। बड़े बच्चे सहायता करें।

मंगलवार व गुरुवार: हागोनिा बजाने का अभ्यास। दिन के अंत में जब अभ्यास (ड्रिल) का घण्टा चले, उस दौरान बच्चों के साथ व्यक्तिगत विचार-विमर्श बैठकें।

पिछले तीन सप्ताह से हम होम एण्ड गार्डन (घर व बाग) पत्रिका व बीज कैटेलागों का अध्ययन करते रहे हैं। और स्कूल मैदान के सौन्दर्यकरण की अपनी व्यक्तिगत योजनाएं और विचार हम दर्ज करते रहे हैं। रैल्फ, वॉरेन, सोफिया, एना, रूथ और मेरी स्कूल मैदान के दो बड़े (6 फीट X 3 फीट) नक्शे बना रहे हैं। एक नक्शे में मैदान जैसा आज है यह दर्शाया जा रहा है और दूसरे में हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं वह। आज हमने हमारे तमाम विचारों पर बातचीत की। हमने खेलने का स्थान, रॉक गार्डन, और शौचालयों के पास की जगह पर निर्णय लिए। यह सारी बातें हमारे बड़े नक्शे पर दर्ज कर ली जाएंगी।

### **मंगलवार, 9 फरवरी**

आज श्रीमती ब्रीड श्री विल्सन को अपने साथ स्कूल लाई। वह नौजवान कठपुतलियों के बारे में जानता है। विल्सन ने हमारी कपड़े की पुतलियों के नाप लिए। उसने कहा कि वह मुलायम लकड़ी लाएगा और लड़कों को सिखाएगा कि उससे पिनोकियो और उसके दो मित्र कैसे तराशे जाएँ। बच्चे उसे घेरकर खड़े हो गए और मुंह बाए सुनते रहे। उसके जाने पर टिप्पणी की “कितना अच्छा लड़का है वह।”

## शनिवार, 13 फरवरी

डॉयलसटाउन निकलने में देर हुई क्योंकि आखिरी वक्त श्री प्रिन्लैक ने कहा कि वे अपने बच्चों को नहीं जाने देंगे। मैं खुद उनके घर समझाने गई क्योंकि प्रिन्लैक बच्चों को ऐसे अनुभव की ज़रूरत सबसे अधिक है। उन्हें डर था कि बच्चों को चोट लग जाएगी। मैंने समझाने की कोशिश की कि वे वहाँ वह सब भी सीख सकेंगे जो घर बैठे सीखा नहीं जा सकता। पर यह उपाय भी कारगर नहीं रहा। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि वे स्वयं यूरोप के सभी देशों में घूमे थे, पर उन्हें इसका कोई फायदा नहीं हुआ। “और वैसे भी स्कूल तो बकवास है, जितना कम बच्चों को स्कूल जाना पड़े, उतना ही बेहतर हो। आज वैसे भी शनिवार है। स्कूल की तो छुट्टी है।” सो हमें उनके बिना जाना पड़ा और मैं बेहद दुखी हुई।

संग्रहालय में बच्चों ने अपनी आँखें खुली रखीं और वह सब भी देखा, जिस पर हमने पिछले शनिवार ग़ौर तक नहीं किया था। उन्होंने बार-बार “यह क्या है?” का सवाल किया। किस कौतूहल व उत्सुकता से उन्होंने एक-एक चीज़ देखी।

संग्रहालय से लौटते समय हम एक खान पर रुके और वहाँ से अपने स्कूल के संग्रहालय के लिए टैल्क और अभ्रक (बायोटाइट व मस्कोवाइट दोनों) सर्पेन्टाइन, सोपस्टेन, ग्रैफाइट, कैल्साइट व एस्बस्टॉस के नमूने लिए। बच्चों को खान इतनी अच्छा लगी कि उन्हें वहाँ से निकालना ही मुश्किल हो गया।

## सोमवार, 15 फरवरी

जैसे ही हम शाला भवन में घुसे रैल्फ ने बताया कि उसने अपने पिता के साथ नक्शे पर डॉयलसटाउन देखा और वह रास्ता भी तलाशा जिस रास्ते से हम गए थे। रैल्फ ने हमारे न्यू जर्सी और पेन्सिलवेलिनया के नक्शे पर वह रास्ता दिखाया और बच्चे अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएँ बताने लगे।

मैंने बच्चों को खुलकर बात करने को प्रोत्साहित किया ताकि पता चले कि उनकी सर्वाधिक रुचि किस में थी और वे किस बारे में और जानना चाहते हैं। जिस कमरे में कठपुतलियाँ थीं, उसने सबका ध्यान आकर्षित किया था। रैल्फ को इण्डियन अवशेष अच्छे लगे। सोफिया को कताई कक्ष। एना को बैल गाड़ियाँ और घोड़ा गाड़ियाँ आकर्षक लगीं। वॉरेन को बन्दूकें। अधिकतर बच्चे सिर्फ अपने संस्मरण सुना रहे थे। यह संकेत न मिल पाया कि उन्होंने जो देखा उसमें से किस बारे में वे और जानना चाहते हैं।

आज श्री विल्सन आए और उन्होंने ढाई से साढ़े चार बजे तक

लड़कों के साथ काम किया और उन्हें मोहे रखा। उन्होंने संक्षेप में बात समझाई और क्या करना है वह करके दिखाया और तब सबको काम पर लगा दिया। आरियों का कुशल व सुरक्षित उपयोग उन्हें सिखाया। जाने के पहले उन्होंने बच्चों को ठीक से समझा दिया कि सप्ताह के शेष दिन उन्हें क्या-क्या करना है।

### **मंगलवार, 16 फरवरी**

आज शाम सुश्री एवर्ट के साथ यह सोचते बिताई कि आगे कौन सी दिशा पकड़नी है। बच्चों को किताबों से प्यार है अतः हमने आखिरकार यह तय किया कि जो कुछ हमने देखा उस पर कुछ किताबें सुश्री एवर्ट ले आएँ। शायद इधर-उधर कुछ पढ़ने से उनकी जिज्ञासा जगे।

### **बुधवार, 17 फरवरी**

मिस एवर्ट काफी सारी किताबें लाई और पुस्तकालय की मेज़ पर रख गईं। खाने के बाद बच्चे उन्हें देखने लगे। वे उन चीज़ों के चित्र दिखाने मेरे पास आते रहे जो उन्होंने केवल संग्रहालय में ही नहीं बल्कि डेलवेयर नहर की यात्रा के दौरान भी देखे थे। वॉरेन, रूथ, एना, सोफिया, कैथरीन, डॉरिस और मैंने तकरीबन दो घण्टे किताबों के साथ बिताए। हेलेन और मेरी ने अधिक समय लगाया। ओल्गा के अलावा बाकि प्रिन्लैक बच्चों ने किताबों में झांका तक नहीं। उनकी बात समझ भी आती है।

### **शुक्रवार, 19 फरवरी**

दिन के काम की योजना बनाने के बाद हमने सुश्री एवर्ट द्वारा लाई गई किताबों पर बात की। हर बच्चे ने अपनी पंसद का कोई चित्र दिखाया और उस पर बात की। जब मौका मिला मैंने पूछा “मैं सोच रही थी हमारे आस-पास जो बड़े बुजुर्ग रहते हैं उनके पास ऐसी चीज़ें हैं या नहीं?” मैं ने बताया कि उसके पास एक डल्सीमर (एक प्रकार का तार वाद्य) है। कई बच्चों ने कहा कि उनके पास लकड़ी से बने प्याले और मक्खन निकालने की बिलौनियाँ हैं। मेरी ने जोड़ा “हम अपना संग्रहालय भी तो बना सकते हैं ना।” कई बच्चों ने समुदाय के बुजुर्गों की बात बताई। मैंने सुझाया कि बच्चे उनसे मिल सकते हैं। शायद हम भ्रमण के लायक स्थलों का पता भी लगा सकते हैं। आज दोपहर हमने अपने शिला उद्यान का काम शुरू किया। जब सड़क चौड़ी की गई थी तो मैदान के एक ओर पत्थर और मिट्टी इकट्ठी हो गई थी। यह सड़क के किनारे छायादार जगह है। हमें वहाँ से पत्ते साफ करने पड़े, झाड़ियाँ हटानी पड़ीं। बाहर काम करने के लिए अच्छा दिन था और बच्चे काफी खुश लगे।

## मंगलवार, 23 फरवरी

बच्चों ने संग्रहालय के लिए चीजें इकट्ठी करनी शुरू कर दी हैं। हमारे पास एक मक्खन निकालने की बाल्टी, सांचा और एक पुराना गुलदान आ चुका है। किसी ने एक पुराना पालना देने का वादा किया है। मे अपना तार वाद्य लाने वाली है।

## मंगलवार, 24 फरवरी

आज हमने अपने समुदाय के अतीत पर कुछ देर बातचीत की। रैल्फ ने बताया कि उसने सुना है कि स्कूल के सामने वाला मार्ग पहले ओल्डटाउन को जाने वाली स्टेजकोच (यातायात वाली घोड़ागाड़ियाँ) का मार्ग हुआ करता था। बच्चों को लगा कि पहाड़ की ओर से ओल्डटाउन जाना तो अधिक टेढ़ा रास्ता है। वे वहाँ से क्यों नहीं जाते थे जहाँ से हम आजकल जाते हैं? मैंने सुझाया कि अगर हम यह पता लगा सकें कि पायोनियर यह कैसे तय करने थे कि रास्ते कहाँ बनेंगे, तो शायद हमें हमारे सवाल का उत्तर भी मिल जाए। हम मिस एवर्ट द्वारा लाई किताबों पर लौटे, मैंने उनकी पठन क्षमता के हिसाब से किताबें दे दीं। बच्चे दो-तीन के समूहों में बैठ यह जानने की कोशिश करने लगे कि पायोनियरों के ज़माने में यात्रा कैसे की जाती थी। उन्हें यह पता नहीं था कि वे सामग्री कैसे तलाशें, सो मैंने उन्हें विषय सूची और तालिका का उपयोग करना सिखाया। हमने बोर्ड पर कुछ मुख्य शब्दों की सूची बना ली ताकि वे 'यात्रा' के अलावा दूसरे शब्दों के सहारे भी सूचना तक पहुँच सकें। मैं बच्चों को व्यक्तिगत स्तर पर यह भी बताने लगी कि नोट्स कैसे लिए जाते हैं।

रुथ ने बताया कि उसकी माँ कुछ ऐसे लोगों को जानती हैं जो हमें कस्बे के बारे में बता सकते हैं। एन्ड्रूज़ बहनों और रैल्फ ने भी हमें दो लोगों के नाम बताए। रुथ ने जोड़ा कि उसकी माँ का सुझाव यह है कि हम अपने सवाल तैयार कर ले जाएँ ताकि लोगों को बताने में आसानी हो। माताएँ सच में शिक्षकों की मददगार बन सकती हैं।

## शुक्रवार, 26 फरवरी

आज हमने अपने कठपुतली नाटक की तैयारी पूरी गम्भीरता से शुरू कर दी। हमने अपने नाटक को पढ़ा, पात्रों की सूची बना हर बच्चे ने अपनी पसन्द का किरदार चुना। जहाँ किसी एक भूमिका के एक से ज्यादा दावेदार थे, वहाँ उन्हें जाँचा गया और बच्चों ने खुद निर्णय लिया। पिनोकियो सब बनना चाहते थे, जाँच के बाद सोफिया को किरदार दिया गया। एना इस पर रोने लगी बोली अगर पिनोकियो का किरदार उसे नहीं मिला तो वह नाटक

में हिस्सा न लेगी। रूथ बोली “ऐसा ही एना पिछले साल भी कर रही थी, अगर उसकी नहीं चलती तो वह सहयोग नहीं करती। पर यह तो नुकसान होगा।” दिन खत्म होने को था, हम सब थके हुए थे, सो मैंने सुझाया कि हम मसला सोमवार तक के लिए टालें, तब शायद हम मामले को दूसरी तरह से देख पाएँ। रैल्फ और फ्रैंक के सिवाए सभी बच्चे नाटक में हिस्सा लेना चाहते पर ये दोनों, दृश्य सज्जा और प्रकाश व्यवस्था करना चाहते हैं।

### **सोमवार, 1 मार्च**

सुबह साढ़े नौ बजे दरवाजे पर झिझक भरी दस्तक हुई, जब मैंने द्वार खोला, तो आँसुओं से सना चेहरा लिए अस्तव्यस्त सा दिखने वाला एक लड़का दिखा। उसने मुझे एक मुड़ा-तुड़ा लिफाफा धमाया, जो पहले बन्द रहा होगा। पर अब खुला था। मैंने पत्र निकालकर पढ़ा, उसमें लिखा था कि पत्र वाहक पाँचवी जमात का नया शिक्षार्थी है। साथ लिखा था कि मुझे उसके साथ जैसा ज़रूरी बन पड़े वैसा बर्ताव करने की अनुमति है क्योंकि थॉमस एक गुस्सैल और झूठ बोलने वाला लड़का है। पत्र में मुझे उस पर कड़ी नज़र रखने को कहा गया था। “तुमने यह पढ़ा है?” मैंने थॉमस से पूछा। उसने कहा “हाँ”। मैंने पत्र की चिन्दी-चिन्दी कर फाड़ डाला और कहा कि हमारे लिए उसका कोई मतलब नहीं था क्योंकि इस शाला में हम किसी व्यक्ति को उसके काम से आंकते हैं दूसरों की उनके बारे में राय से नहीं। हमने उसे एक मेज़ दी और काम पर लगा दिया।

आज एना के साथ बात करने का कुछ समय मिल सका। दरअसल यह बड़ी सहजता से हो गया। दोपहरी को हम दोनों कुछ पल अकेले थे। मैंने कहा “एना नाटक में तुम्हारी भूमिका पर निर्णय नहीं हो सका। समूह चर्चा करे इसके पहले मैं तुमसे कुछ बात करना चाहती थी।” मैंने साफ किया कि समूह उसके बारे में क्या सोचता है यह बताना मेरे लिए ज़रूरी नहीं है, पर मुझे क्या लग रहा है यह जनना शायद उसे ठीक लगे। मैंने उन छोटी-छोटी बिना सोचे-समझे की गई बातें उसे याद दिलाई जो अपने आप में महत्वपूर्ण न थीं, पर कुल मिलाकर एक ऐसे इन्सान की छवि बनाती थीं जिसे लोग आस-पास नहीं चाहते। तब मैंने तमाम अच्छी बातें भी याद कीं जो उसने की थी। मैंने कहा “तुम सक्षम लड़की हो। समूह तुम्हारी कीमत तब समझेगा जब तुम सब कुछ जितना अच्छा कर सकती हो वैसे करो।” एना ने जाने से पहले कहा कि वह ऐसा इन्सान बनने की कोशिश करेगी जिसके साथ जीना आसान हो। उसने नाटक में दूसरी भूमिका स्वीकार ली।

pages 74-75 are missing in the copy we have

हमारे बच्चों की माताएं सप्ताह में दो बार अलग-अलग घरों में इकट्ठी हो अपने नाटक का अभ्यास कर रही हैं। आज सब मौज में थीं। श्रीमती थॉमसन और श्रीमती विलियम्स ने “आइरिश धोबन” का नाच किया। श्रीमती जोन्स केक लाई थीं।

#### **गुरुवार, 4 मार्च**

पिछले तीन दिनों से हम सामाजिक अध्ययन के घण्टे में यह शोध कर रहे हैं कि पायोनियरों के ज़माने में यात्रा कैसे की जाती थी। साल की शुरुआत में हमने काफी समय यह सीखने में लगाया था कि किताब से उपयोगी सामग्री कैसे छांटी जाती है। किसी विषय पर सामग्री इकट्ठा करना किसी प्रश्न के उत्तर को ढूँढने से भिन्न लगता है।

आज बड़ा व्यस्त और थकाऊ दिन था। सुबह आठ बजे से शाम छह बजे ड्रेस रिहर्सल तक बाहर निकलने तक का वक्त नहीं मिला। लड़कियों ने माताओं के नाटक के लिए पर्दे लगाने में और चीजों की व्यवस्था करने में मदद की। नाटक की जानकारी देने की, खाने-पीने के सामान की और टिकटों की पूरी ज़िम्मेदारी उन्होंने खुद सम्भाल ली है। यहां तक कि अतिरिक्त कुर्सियों तक की व्यवस्था उन्होंने कर ली है।

#### **शुक्रवार, 5 मार्च**

आज जब बड़े बच्चे यात्रा का अध्ययन कर रहे थे मैंने छोटे बच्चों के साथ लगभग पूरा एक घण्टा बिताया। उनका खेलघर अब तैयार है। उन्होंने छोटी-छोटी मेज़-कुर्सी आदि बनाई और रंगी हैं। उन्होंने दरियाँ बुनी हैं। लड़कियों ने पर्दे सिए हैं, बिछौना बनाया है, और धरेलू साजो-सामान तैयार किया है। हमने अधिकतर समय खेल घर बनाने के अनुभवों को लिखने में लगाया। बच्चों को लिखने का काफी अनुभव मिला है इससे लेखन कौशल में सुधार हुआ है। प्राथमिक स्तर के बड़े बच्चे अब सही लम्बाई की मौलिक कहानियाँ, लिखने लगे हैं।

आज शाम का प्रदर्शन अच्छा रहा। रैल्फ के जीजा ने सामुदायिक गायन में नेतृत्व किया। नाटक के बाद उसने कारुबॉय गीत सुनाए। समेटिस परिवार की सबसे बड़ी बेटी ने इतालवी ऑर्गन के विषय में कुछ पढ़ कर बताया। गर्म खाने के लिए माताओं ने पंद्रह डॉलर इकट्ठे किए।

नाटक के बाद श्रीमति विलियम्स और मैंने बैठकर रैल्फ के बारे में बातचीत की उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि उनके अलावा भी कोई रैल्फ को पसंद करता है। वे जब से इस इलाके में आई हैं उन्होंने रैल्फ के बारे में सिर्फ भयानक कहानियाँ ही सुनी है। “रैल्फ के अंदर कुछ

अच्छे गुण भी हैं, मेरा यह विश्वास है” वे बोलीं “पर कोई संवेदनशील और धैर्यवान ही उन्हें बाहर उभार सकता है।” मैंने उनसे कहा कि रैल्फ भी दूसरे ही जीवन्त लड़कों की तरह है उनसे बुरा तो कतई नहीं लगता। “पता है, इस साल वह पहले की तरह गैराज की ओर भी नहीं जाता” उन्होंने टिप्पणी की। “वहाँ जो आदमी हैं वे उसे छेड़ते हैं और बेहूदी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यह तो किसी भी लड़के के लिए अच्छा नहीं है। और फिर उसका पिता भी तो उसे ठीक से नहीं सम्भालता।”

### **सोमवार, 8 मार्च**

आज सुबह बड़े बच्चों ने यात्रा के बारे में जो कुछ पढ़ा था उस पर बातचीत की। दूसरी बातों के साथ उन्होंने यह भी पता लगाया था कि पुराने मार्ग ठीक वहीं बनाए गए थे जिन रास्तों पर इण्डियन आया-जाया करते थे। उन्होंने प्रारंभिक उद्योगों के बारे में भी जाना। उन्होंने पाया कि प्रारंभिक उद्योग यात्रा से जुड़े थे। उन्होंने इस बात पर चर्चा की तब गाड़ियाँ ऐसे बनाई जाती थीं कि वे ऊबड़-खाबड़, कच्चे मार्गों पर चल सकें। मैंने पूछा कि क्या वे अन्य प्रारंभिक उद्योगों के बारे में भी कुछ जानते हैं। बच्चों ने कुछ कयास लगाए और तब और जानकारी इकट्ठा करने की इच्छा जताई।

श्री लॉरेंजो हमारे 4 एच क्लब के एजेंट हैं। वे हमारे खेल मैदान सौन्दर्यीकरण की योजनाओं में रुचि जताते रहे हैं। उन्होंने कहा था कि वे श्री ब्लैकबर्न को स्कूल में आमंत्रित करेंगे। श्री ब्लैकबर्न लैण्डस्केप विशेषज्ञ हैं। आज वे पधारे। उन्होंने हमारे नक्शे देख कर टिप्पणी की कि हमारी योजना बिल्कुल सही और स्पष्ट है। हम शालाभवन के चारों ओर फूलों की क्यारियाँ नहीं बना सकते क्योंकि छत का छज्जा टपकता है। मैदान के चारों ओर क्यारियाँ बनाने से खेलने की जगह में से करीब छह फीट ज़मीन कम हो जाएगी। मैदान वैसे ही छोटा है। उन्होंने सुझाया कि जंगल का दृश्य छिपना नहीं चाहिए बल्कि वहाँ कुछ सफाई की जरूरत है। बाहरी भवनों को हरा रंग देना चाहिए ताकि वे पृष्ठभूमि में घुलमिला जाएँ और उनके इर्द-गिर्द हमें झाड़ियाँ और फर के पेड़ बोन चाहिए। शाला भवन के कोनों में झाड़ियाँ लगाने पर भवन अधिक स्थाई लगेगा। यह सब जानकारी हमें हमारे प्रश्नों के उत्तरों में मिली। श्री ब्लैकबर्न को शिला-बाग व दरवाज़े के दोनों ओर गुलाब की लताओं का विचार भी अच्छा लगा। उनका सुझाव था कि हम स्थानीय झाड़ियाँ ही लगाएँ। उन्होंने खाद डाल कर पेड़-पौधों को कैसे बोया जाए यही समझाया। उनका सुझाव था कि स्कूल में यह सब करने के बाद बच्चे अपने घरों में भी ठीक ऐसे प्रयोग करें। वे भी यह समझते हैं कि हमारे समुदाय के पास बहुत कुछ ऐसा है जो हमारे जीवन को समृद्ध कर सकता है।

आज फिर श्री विल्सन कठपुतलियाँ बनाने में लड़कों की मदद करने आए। उन्होंने रैल्फ से कहा “ठीक है, रैल्फ अब तुम यह जान चुके हो कि यह कैसे किया जाता है। अब तुम दूसरों की मदद करो। उन्होंने रैल्फ को सिखाया कि टोली में काम कैसे बाँटा जाए, सबके काम को दिशा कैसे दी जाए, गलतियाँ हों तो उन्हें कैसे सुधारा जाए। उन्होंने अगले सोमवार तक रैल्फ को मुखिया बनाया। उन्हें लगता है कि रैल्फ एक अच्छा लड़का और लायक शिष्य है। मैं श्री ब्लैकबर्न और विल्सन को हमारे लड़के-लड़कियों के साथ काम करती देखती रही और मेरे मन में उनके प्रति गहरी श्रद्धा और प्रशंसा का भाव उपजा। वे चंद सरल शब्दों में अपनी बात सामने रख देते हैं और आचरण में वांछित बदलाव के बीच बो पाते हैं। उनके उद्देश्य बिल्कुल साफ हैं और उनके हमारे प्रयास सीधे उन्हीं उद्देश्यों की दिशा में केंद्रित होते हैं। काश मैं भी यही कर पाती। अक्सर लगता है कि मैं ‘विनि द फू’ और उसके दोस्त ‘पिगलेट’ (लोकप्रिय कहानी के दो पात्र) की तरह हूँ, जो किसी अस्पष्ट वस्तु के लिए झाड़ी के इर्द-गिर्द तलाश में जुटे रहते हैं।

### **गुरुवार, 11 मार्च**

छोटे बच्चे कठपुतली मंचन की मांग करते रहे हैं। डोरे वाली कठपुतलियाँ चलाना कठिन है सो मैंने हाथ कठपुलियों का इस्तेमाल करने का सोचा है। मैंने उन्हें कहा कि वे मंचन के लिए कहानियाँ पसंद करें। उन्होंने यह बात इतनी गंभीरता से ली और खोज में कुछ यों जुटे कि बड़े बच्चों में से एक को कहना पड़ा “कितनी चुप्पी है। लगता है मानो सारे नन्हे घर चले गए हों।”

### **शुक्रवार, 12 मार्च**

प्राथमिक समूह के बच्चे यह तय नहीं कर पाए हैं कि उन्हें जो बायस नेल्स पर या ‘हैन्सल और ग्रेटल’ की कहानी को नाटक का रूप देना है। आखिरकार उन्होंने ‘हैन्सल और ग्रेटल’ को चुना क्योंकि दूसरी कहानी में दृश्य बारबार बदलता है।

पिछले कुछ सप्ताहों से वानिकी क्लब की बैठकें बढ़िया चल रही हैं। हम विविध प्रकार के पत्थर इकट्ठा कर उनकी पहचान कर रहे हैं। आज हमने अपने व्यक्तिगत संग्रहों को प्रदर्शन के लिए फलाई वुड पर सजाने का काम शुरू किया।

### **शनिवार, 13 मार्च**

हमारे अखबार के दूसरे अंक की छपाई में इतना समय लगता है और ऐसा फैलावड़ा मचता है कि इच्छा हुई कि छापा-मशीन घर ले आऊँ और स्कूल के बदले वहीं छपाई पूरी करूँ। एना और रूथ भी कल रात मेरे साथ



आई। आना दरअसल ओल्गा को था, पर उसके पिता ने अनुमति नहीं दी तो उसकी जगह रूथ आई। लड़कियों के लिए यह अच्छा अनुभव होता है क्योंकि उन्हें घर से बाहर समय बिताने का मौका ही नहीं मिलता। एना ने हिसाब लगाया कि एक अखबार छापने में कितना समय लगता है। समूचे अखबार को टाइप करने में सात घण्टे और उसकी पैंतीस प्रतियाँ छापने में साढ़े चार घण्टे लगे। लेख लिखने के समय को न जोड़ें तब भी तकरीबन बारह घण्टे लगते हैं। पर क्योंकि हम साल में केवल तीन अंक ही छपने वाले हैं, हमें लगता है कि इस पर लगाए गए प्रत्येक पल का सच में अच्छा उपयोग हुआ है। बच्चों के लेखन के लिए एक उद्देश्य देने में और समुदाय को स्कूल से परिचित करवाने में इसकी जो कीमत है उसे तो नापा ही नहीं जा सकता।

दोपहर हम मेरे पिता के फार्म पर गए, जहाँ हमें क्वॉर्टज़ के स्फाटक (क्रिस्टल), बलुआ पत्थर, सलेटी पत्थर, चूना पत्थर और चकमक पत्थर मिले। हमने अपने संग्रहालय के लिए उन्हें इकट्ठा किया। काश मैं यह अक्सर कर पाती, एक शिक्षिका और उसके शिक्षार्थी के बीच ऐसी यात्राओं से घनिष्ठता आ पाती है।

### **सोमवार, 15 मार्च**

आज पहला काम जो हमने किया, वह था अपने अखबार को पढ़ना। पढ़ना खत्म किया ही था कि थॉमस, नया लड़का, बोल उठा “यार, यह तो सच में बढ़िया अखबार है।” उसकी आकस्मिक घोषणा से सब खुशी से खिलखिला उठे।

आज दोपहर बच्चों को दो हिस्सों में बाँट कर गाना सिखाने का पहला प्रयास किया। श्रीमती विलियम्स इस दौरान आई, और बोलीं कि बाहर से गायन सच में मधुर लग रहा था। लड़के अब तक भी गहरी आवाज में गाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि लड़कों को ठीक ऐसे ही गाना चाहिए। मैं छोटे लड़कों को तैयार करूंगी ताकि संगीत के प्रति उनका दृष्टिकोण सही हो।

### **सोमवार, 22 मार्च**

आज हमने अपना पहला द्विभागीय गीत गया, एक प्यारी सी फ्रेंच धुन। बच्चों को ऐसे गाना पसंद आ रहा है। कुछ लड़कियाँ सरगम को देख कर पढ़ने लगी हैं। सोफिया उनकी चहेती निर्देशिका बनती जा रही है। आज स्कूल के बाद मेरे भाई ने लड़कों को शाला भवन के द्वार के दोनों ओर भुर्ज की जालियाँ बनाना सिखाया।

### **मंगलगवार, 23 मार्च**

आज लड़कियों को अपनी किताबों में कुछ नमूनों के चित्र मिले।

उनका कहना था कि वे उन्हें बनाना चाहेंगी। कई लड़के गाड़ियों और घोड़गाड़ियों के नमूने बनाना चाहते हैं। जॉर्ज की इच्छा लकड़ी के पात्र बनाने की है। मैंने इस सूची में एक और बात जोड़ी। कहा कि वे पायोनियर जीवन के कुछ दृश्यों के चित्र भी बना सकते हैं जिन्हें हम दीवार पर लटकाएँ। एना और सोफिया ने फौरन यह काम करने की इच्छा जताई। इनमें से कुछ गतिविधियाँ आज ही शुरू कर दी गईं। फ्रैंक दोपहर भर रैल्फ के कानों में विरोधी स्वर फूंकता रहा। जब सब बाहर खेलने गए तो मैं फ्रैंक के साथ बैठी। आजकल उसका चहेता जुमला है “क्या फायदा”। मैंने उससे हरेक चीज़ के ‘फायदे’ की बात की! मैंने कहा “फ्रैंक हरेक गतिविधि में भाग लेने की कोशिश करो। जब हम किसी चीज़ का हिस्सा बनते हैं तो अकेलापन महसूस नहीं होता।” बाहर जाते-जाते वह कह गया कि “मैं कोशिश करूँगा।” स्कूल के बाद रैल्फ और रूथ ने मुझे समुदाय के तीन बुजुर्गों के घर तक ले जाने में मदद की ताकि हम उनसे साक्षात्कार की बात तय कर सकें। रैल्फ ने कहा कि फ्रैंक भी आना चाहता है। हम चारों ने अच्छा समय बिताया, अधिकांश बातचीत फोर्ड कम्पनी की गाड़ियों के गुणों पर होती रही।

### **गुरुवार 25 मार्च**

हमारी सहायक क्लब की बैठक में कैथरीन ने प्रस्ताव रखा कि खेल समिति बाहर की गतिविधियों की योजना बनाए, जैसा पतझड़ के समय किया गया था। समूह का मानना था कि उनकी बैठक गुरुवार को ही हो क्योंकि शेष समितियाँ शुक्रवार को मिलती हैं। इससे फायदा यह होगा कि सोमवार को समय ज़ाया किए बिना हम काम शुरू कर सकेंगे। नई खेल समिति का गठन किया गया। उसमें एल्बर्ट को भी चुना गया क्योंकि बच्चों को लगा कि छोटे बच्चों का भी कोई प्रतिनिधि खेल समिति में होना चाहिए।

### **शनिवार, 27 मार्च**

आज सुबह सोफिया कैथरीन, ओल्गा, जॉर्ज और मैं श्री हैरॉल्ड स्मॉल से मिलने गए। फ्रैंक को भी हमारे साथ चलना था पर ओल्गा ने बताया कि शायद उसकी तबियत खराब है। जब हमने स्मॉल साहब से मिलना तय किया था, तो हमने उनके पास हमारे सवालियों की एक सूची छोड़ी थी। आज वे उनके जवाबों की तैयारी के साथ मिले। जॉर्ज को छोड़ सबने बातचीत अपनी कॉपियों में दर्ज की। कैथरीन बड़ी चैतन्य थी, उसने ढेरों सवाल पूछे। स्मॉल साहब ने हमारे गांव के प्रारंभिक बसावट के बारे में काफी कुछ बताया। लौटने पर हम लट्ठों से बने उस बखार को देखने रुके जिसके बारे में श्री स्मॉल ने हमें बताया था। वह पूरी तरह मोटे लट्ठों से बना था और आज भी अच्छी हालत में है। उसके वर्तमान मालिक ने हमें बताया कि यह बखार लगभग दो सौ साल पुरानी है।

दोपहर को डॉरिस, में और रूथ मेरे साथ श्री व श्रीमती ब्राउन से मिलने गए। वे वैली व्यू की प्रथम बसावट में रहते हैं। उनके पास मूल पट्टा भी था, जिसकी हमने नकल कर ली। शाम साढ़े चार बजे एना, मेरी, हेलेन और एडवर्ड श्री जॉन रेबर्न से मिलने गए। उन्होंने हमें बताया कि उनकी दादी कैसे-कैसे भोजन पकाया करती थीं।

### **मंगलवार, 30 मार्च**

हरेक बच्चा छोटे से ईस्टर अवकाश के बाद लौट आया है। हमने शनिवार की मुलाकातों पर बात की। मैंने बच्चों से कहा कि उनके पास ऐसी कीमती जानकारी है जिसे उन्हें लिख लेना चाहिए क्योंकि हमें वह किसी भी किताब में नहीं मिलेगी। ये बड़े बुजुर्ग जब नहीं रहेंगे तो यह सारी जानकारी भी उनके साथ ही गुम हो जाएगी। हमने सारी सामग्री विषय के अनुसार बोर्ड पर सूचीबद्ध कर ली। बच्चों ने वे विषय चुन लिए जिन पर वे लिखना चाहते थे, और अपनी कॉपियों में उससे सम्बन्धित सूचनाएँ दर्ज करना चाहते थे। फ्रैंक पूरे दिन गुस्साए रहा। खेलते समय खराब खेला और मुंह फुलाए रहा। जब दूसरे बच्चे हमारे शिला-बाग पर काम करने को आतुर हुए तब उसने काम करने से भी इन्कार कर दिया।

### **बुधवार, 31 मार्च**

आज कल सुबह इतनी खुशनुमा होती है कि बच्चे अपने शिला-बाग पर काम करने की अनुमति चाहते हैं। आज हमने सभी बच्चों के लिए आधे घण्टे बाहर काम करने का समय निकाला। हम अलग-अलग टोलियों में गए, हरेक टोली का एक बॉस था। कितना मज़ा आता है उन्हें इसमें। वे अपनी काम को श्रमिकों की भूमिका से नाटकीय बना डालते हैं। एक बॉस ने आकर मुझे सूचना दी कि 11:20 की टोली का समय हो चुका है। लड़के ऊंची कूद के लिए एक रेतीला टुकड़ा भी खोद रहे हैं। उन्हें भविष्य में उस जगह बाड़े की दरकार नहीं होगी।

मैं चौथे समूह के पास काम करने जाऊँ उसके पहले वे अक्सर साथ मिलकर अपना पाठ पढ़ते हैं। आज वॉरेन की ज़िम्मेदारी थी और उन्होंने एक दूसरे को खूब सिखाया। आजकल वे उन शब्दों को भी नहीं छोड़ते जो वे नहीं जानते हैं। वे अर्थ के सभी रूपों पर, बारीक अंतरों पर बात करते हैं। लगता है वे शब्द की ताकत के प्रति सचेत हो चले हैं।

### **गुरुवार, 1 अप्रैल**

कल रात मैंने मिस एवर्ट के साथ काम किया और हम दोनों को ही लगा कि छोटे बच्चों को नाटक खेलने और अन्य भाषा सम्बन्धी गतिविधियों को करने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पा रहे हैं। वाक्य बनाने और लेखन की

गतिविधियाँ हो रही हैं, पर वार्तालाप का अवसर योजना बनाने के आलावा नहीं मिल पाता। हमें यह भी लगा कि इन नन्हों को कुछ व्यापक अनुभव भी मिलने चाहिए। इनमें से कोई भी कभी रेलगाड़ी में नहीं बैठा है। हमें पता है कि उनकी इसमें रुचि होगी अतः हमने तय किया कि शुरुआत इसी से करना उचित होगा।

आज सुबह मैंने बच्चों से बात की। यह पता लगाने की कोशिश की कि वे रेलगाड़ियों के बारे में क्या जानते हैं। पता लगा कि वे दरअसल बहुत कम जानते हैं।

आज हमने रसोई की अल्मारियाँ साफ करने का समय निकाला ताकि सब सामान तरकीब से अगले सत्र के लिए रख दिया जाए, क्योंकि अब हमें इस सत्र में गर्म भोजन की ज़रूरत नहीं होगी। बच्चे इस सुहाने मौसम में बाहर पिकनिक ही करना चाहते हैं।

कल से हमने बाहर खेलना शुरू कर दिया, जैसा हम पिछली पतझड़ के मौसम में कर रहे थे। और आज यह साफ भी हो गया कि उन्हें साथ-साथ खेलना फिर से सीखना होगा। वे इतना लड़ते-झगड़ते हैं। फ्रैंक पिछले दिनों काफी गुस्साता रहा है और अक्सर वही फसाद शुरू करता है।

### **सोमवार, 5 अप्रैल**

छोटे बच्चों ने उन चीजों की सूची बनाई जो वे रेलगाड़ियों के बारे में जानना चाहते हैं। हमने कई रेल कंपनियों को एक सामूहिक पत्र लिखा ताकि हमें जानकारी मिल सके। बच्चों ने पत्र लिखवाया, जिसे मैंने बोर्ड पर लिख डाला। फ्रेड, मार्था और वर्ना पत्र की प्रतियाँ बना देंगे।

बड़े बच्चों ने अपनी गतिविधियाँ पूरे ज़ोर-शोर से शुरू कर दी हैं। लड़कियाँ अपने नमूने बना रही हैं और लड़के संग्रहालय के लिए वस्तुएँ। एना दीवार पर लटकाने के लिए 3 फीट X 4 फीट का चित्र बना रही है, आज उसने उसका रेखाचित्र बनाया, और तब उसे बड़े पैमाने पर ब्राउन पेपर पर उतार लिया। उसके चित्र पुराने ज़माने का मैं एक वाहन है जिसके पीछे दो बच्चे नंगे पैर चल रहे हैं। एना ध्यान से पायोनियर काल की वेशभूषा का चित्र ढूँढ़ती रही ताकि उसके चित्र में वेशभूषा सही हो। उसने खूब शिकायत भी की क्योंकि उसे चित्र मिल ही नहीं रहा था। रूथ और ओल्गा ने तब वेशभूषा के बारे में कुछ पढ़कर सुनाया।

### **मंगलवार, 6 अप्रैल**

और अब मैं नाखुश है। आज सुबह कुछ देर मैंने उससे बातचीत की। पिछले कुछ समय से वह न तो खेल में हिस्सा लेती है, न गाती है। मुँह लटकाए घूमती रहती है। उसका सामान्य आचरण ही मानो बदल गया है।

बातचीत से मैं इतना ही समझ सकी कि उसे लगता है कि कुछ लड़कियाँ उससे जलती हैं। कारण वह नहीं जानती। मैंने कहा कि उसे दूसरे क्या सोचते हैं कि चिंता छोड़ उसे काम का मज़ा लेना चाहिए। सारी सुबह वह उदास सी रही पर हार्मोनिका अभ्यास के दौरान अचानक चटक हो गई, और उसने समूह के निर्देशन में भी भागीदारी की।

मे अकेली नहीं है जिसे परेशानी हो रही हो। चारों बड़ी लड़कियों को हमारे कस्बे के जंगल फूलों की एक चार्ट पर काम करना था, पर उनमें बहसबाज़ी हो गई मैंने पूछ कि क्या वे बिना लड़े काम का बंटवारा करने लायक बड़ी नहीं हो चुकी हैं। उन्होंने इस पर सोचा और तब निर्णय लिया।

पर इतना भर ही नहीं हुआ, इन्तिहा तब हुई जब थॉमस और रैल्फ भिड़ गए। थॉमस ने ऐसा कुछ किया जो रैल्फ को पसंद नहीं आया और रैल्फ ने तड़ाक से मुक्का जड़ दिया। थॉमस की कलाइयाँ ज़ोर से पकड़ लीं। उसकी आँखें लाल हो गईं और दांत किटकिटाने लगे पर उसने मेरा प्रतिरोध नहीं किया। मैंने उससे यथासंभव शांत स्वर में बातचीत की, पर अंदर से मैं खुद हिली हुई थी। मैंने कहा कि अगर वह गुस्से में कुछ करेगा तो बाद में उसे खुद को पछतावा होगा। थॉमस जब कुछ शांत हो गया तब मैंने रैल्फ से बात की, उसने माना कि वह आपा खो बैठा था। मैंने कहा कि हम नए लोगों से कितना खराब बर्ताव करते हैं। हम उन्हें आसानी से स्वीकारते नहीं हैं, इससे वे भी हम सबसे तालमेल नहीं बैठा पाते। रैल्फ बोला कि ऐसा नहीं है कि हम कोशिश ही न करते हो, पर नए लोग खुद पागलपन करते हैं। मैंने समझाया कि नए लोगों को आज़ादी का अनुभव नहीं होता, और उन्हें आत्म नियंत्रण सीखना पड़ता है, जो हमारे जैसी शाला में बेहद महत्वपूर्ण होता है। मैंने रैल्फ को याद दिलाया कि साल के शुरूआत में हमें खुद कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा था, और सबने रैल्फ के प्रति उस समय कितना धीरज दर्शाया था, जब रैल्फ समूह के सदस्यों के साथ सहकार करना सीख रहा था। रैल्फ ने तय किया कि वह थॉमस के प्रति सहनशील बनने की कोशिश करेगा।

आज मेरा मन गड़बड़ा गया था और मैंने अपनी सहायक शिक्षिका मित्र का आश्रय लिया। हमने विस्तार से इस नन्ही शाला के उतार-चढ़ार पर बात की, मिस एवर्ट के पास से लौटते समय मैं सम्भल चुकी थी। उन्होंने वही सब दोहराया जो मैं पहले सैकड़ों बार सुन चुकी हूँ, पर रोज़मर्रा की उलझनों बहक जाती हूँ, परिप्रेक्ष्य ही खो बैठती हूँ। उन्होंने मुझे फिर से पटरी पर लौटने में मदद की।

अगर ये बच्चे किसी औपचारिक शाला में होते, जहाँ कोई सद्भावी तानाशाह

होता तो शायद ये तमाम समस्याएँ भी नहीं उभरतीं। शायद स्कूल अधिक सुचारु रूप से चलता। पर समस्याएँ तो तब भी होतीं, और शायद तब उभरतीं जब उनका समाधान करना भी असम्भव होता। ये समस्याएँ स्कूल में उठें तो ही बेहतर रहता है, क्योंकि वहाँ कोई परिपक्व व्यक्ति तो मौजूद रहता है, जिसे भले ही काफी कुछ सीखना बाकि हो, पर कम से कम बच्चों के मार्गदर्शन का प्रशिक्षण तो उसे मिला ही होता है। किसी औपचारिक स्कूल में फ्रैंक, रैल्फ और थॉमस को अनुशासनात्मक समस्या के रूप में देखा जाएगा। पर हमारी शाला में अनुकूलन की समस्याओं के बावजूद वे हमारे छोटे से समाज में अपना योगदान करना सीख रहे हैं। वे वांछनीय आचरण भी सीख रहे हैं। हमारी शाला एक नैसर्गिक सामाजिक परिस्थिति है और बच्चे इसमें सहज रूप से खप कर ज़िम्मेदार नागरिक बनना सीख रहे हैं। यह अभ्यास भविष्य में व्यापक समुदाय में सक्रिय भागीदारी में उनके काम आएगा।

### **बुधवार, 7 अप्रैल**

छोटे बच्चे पुस्तकालय की किताबों में रेलगाड़ियों की कहानियाँ तलाश रहे हैं। जब उन्हें कोई कहानी मिलती है तो वे उस किताब में निशान के लिए कागज़ लगा देती हैं। ढेरों कहानियाँ ढूँढ़ चुके हैं वे। जिन बच्चों ने अभी-अभी आना शुरू किया है, वे भी मदद कर रहे हैं।

### **गुरुवार, 8 अप्रैल**

पिछली टीचर से पता चला कि में की बड़ी बहन को लेकर उन्हें परेशानी झेलनी पड़ी थी। वह भी आत्मदया भी जूझती थी। उसे लगता था कि सब उसे नापसंद करते हैं और उसके साथ बदसलूकी करते हैं। यही कारण है कि हाई स्कूल में भी उसे कुछ खास पसंद नहीं किया जाता। लगता है मे उसी की नकल कर रही है। काश मैं जानती कि क्या करना चाहिए। दोपहर के घण्टे में के साथ बातचीत की कोशिश की। बताया कि लोग अक्सर ऐसे ही लोगों के पसंद करते हैं जो समूह का हिस्सा बनना पसंद करते हैं और स्कूल वातावरण को खुशमिजाज़ बनाने में योगदान देते हों। मेने सर्दियों भर इतनी मेहनत की है और समूह उसके विनोदप्रिय स्वभाव को सच में पसंद भी करता है। जो वह महसूस कर रही हैं वह निराधार हैं। आज दोपहर उसे दूसरे बच्चों के साथ उसे खेलते देख, अच्छा लगा। रेलगाड़ियों से जुड़े जो सवाल नन्हो ने पूछे वे अब एक चार्ट पर आ चुके हैं। आज उन्होंने उनके जवाब तलाशने शुरू किए।

आज इतने सप्ताह बाद पता चला कि फ्रैंक जैसा बर्ताव कर रहा है उसका कारण क्या है। उसके पिता के पास घोड़ा नहीं हैं, न इतने पैसे कि एक खरीद सकें। वे खेत जुताई के लिए किसी को लगा भी नहीं सकते। सो उन्होंने हल को अपनी गाड़ी के पीछे लगा लिया है। वे खुद गाड़ी चलाते हैं और फ्रैंक को

उसे सीधा रखना पड़ता है। काम आसान नहीं हैं। पिछले दो सप्ताहों में फ्रैंक दोपहर को बीमार होने के बहाने तीन दिन तक लगातार घर लौटता रहा है। वह नहीं चाहता था कि मुझे बात पता चले। उसकी कड़वाहट का यह ही कारण है।

### **शुक्रवार, 9 अप्रैल**

आज जमकर बरसात हुई सो हमें अपनी सूरज की छटा खुद बनानी पड़ी। सुबह पहले हमने गीत गाए। बच्चे कितना सुंदर गाने लगे हैं। वे शब्दों को सही उच्चारण करते हैं, भावनाओं के साथ गाते हैं। उन्होंने बाख के संगीत पर आठवाँ (भजन) गाया। वे बिना वाद्यों का सहारा लिए गाते हैं और पूरे निर्देशों की पालन करते हैं। संगीत के सौंदर्य न मुझे विह्वल कर दिया। मैं रैल्फ को देख रही थी, वह गा नहीं रहा था, पर उसके हावभाव बता रहे थे कि वह भी उद्वेलित हुआ है। दूसरे बच्चों को भी गायन छू रहा था। गाने के बाद कुछ पल मौन छाया रहा। और तब मेरी ने नाक साफ की।

छोटे बच्चों ने अपनी-अपनी माँ को खत लिखा जिसमें मंगलवार को ट्रेन यात्रा पर जाने की अनुमति चाही। वे बेहद आतुर थे। हमने पहले बात की और तय किया कि पत्र में क्या लिखा जाएगा, तब बोर्ड पर उन शब्दों को लिखा जिनका उन्हें उपयोग करना था। हरेक ने अपना पत्र खुद लिखा। भूल सुधारने में मैंने मदद की।

सहायक क्लब की बैठक में आज बड़ा बखेड़ा हुआ। हाल में खूब विवाद होने लगे हैं। प्रिन्लैक और ओलसेउस्की परिवार के बीच खटपट चल रही है और बच्चे ये झगड़े स्कूल ले आते हैं। ओलसेउस्की बच्चों को रूथ से परेशानी थी और रूथ को उनसे। समेटिस बच्चों को रूथ और ओलसेउस्की बच्चों से परेशानी है। मे को सबसे उलझन है। फिलहाल यह विवाद सभी परिवारों की लड़कियों तक सीमित है। मैं सोचने की कोशिश करती रही कि यह सब आखिर शुरू कैसे हुआ।

### **सोमवार, 12 अप्रैल**

आज रैल्फ बिगड़े मिजाज़ के साथ ही स्कूल पहुंचा था। कई लड़कियों ने उसे छेड़ा, सो वह और भी भड़क गया। कक्षाएँ प्रारंभ हों उसके पहले गेंद से खेलते-खेलते उसने खिड़की का एक काँच तोड़ डाला। उसने रूथ पर हुकुम चलाते हुए काँच साफ करने को कहा। मैंने कहा यह काम उसी का है। उसने झाड़ू लगा काँच इकट्ठी की, जितना सा टुकड़ा खिड़की में लगा रह गया था उसे भी पटी को खरोंच कर निकाल दिया। शारीरिक मेहनत ने मानो उसे शांत कर दिया। वह जब कक्षा में लौटा तो हम गा रहे थे। वह भी गाने लगा।

नन्हे बच्चों हैंसल और ग्रेटल नाटक की पुतलियाँ तैयार कर ली हैं। आज उन्होंने पहली बार उन्हें चलाने का अभ्यास किया। ज़हिर है वे काफी फूहड़ तरीके से पुतलियों को चला रहे थे, पर मज़ा उन्हें बहुत आया।

### **मंगलवार, 13 अप्रैल**

छोटे बच्चों ने अपनी रेल यात्रा पर बातचीत की। उन्होंने वे सारे सवाल फिर से देखे जिन्हें वे स्टेशन के एजेंट और कन्डक्टर से पूछना चाहते थे। हमने उनके बर्ताव पर भी बात की।

सुश्री एवर्ट और मैं चौदह छोटे बच्चों के साथ गए। बच्चों ने स्टेशन पर अपनी-अपनी टिकटें खरीदीं। उन्होंने डाकबाबू को रेलगाड़ी में डाक का थैला रखते देखा। एन्ड्रू को झंडा दिखा गाड़ी शुरू करने का संकेत देने का मौका मिला। कन्डक्टर बच्चों में रुचि ले रहा था। उसने हमें हमारी सीटें बताईं। बाद में वह बच्चों को भोजनकक्ष दिखाने ले गया और उन्हें बैठक में बैठने की अनुमति भी दी। जेम्सबर्ग में हमने दूसरी गाड़ियों को स्टेशन पर आते देखा और सीटियों और सिग्नलों के बारे में जाना। वहाँ पांच व दस सेंट वाली दुकान से हमने रेलगाड़ी की किताबें खरीदी और पेय स्टोर से आइसक्रीम ली।

जब मिस एवर्ट और मैं छोटे बच्चों के साथ थे तो उस दौरान सुश्री होपॉक, जो एक सहायक शिक्षिका हैं, बड़े बच्चों को समुदाय के पुराने बारिशदे श्री लिविंग्स्टन के साथ साक्षात्कार के लिए ले गईं। बाद में उन्होंने नहर के किनारे पिकनिक की। जब हम लौटे तो बड़े बच्चे अपने अनुभव सुनाने को आतुर थे, और छोटे बच्चे अपनी यात्रा के अनुभव सुनाने को बेचैन। अगले आधे घण्टे, दोनों समूहों ने अपनी-अपनी बात बताई।

### **गुरुवार, 15 अप्रैल**

आज सामाजिक अध्ययन के घण्टे में बच्चों ने प्रारंभिक स्कूलों पर चर्चा की। सबने चर्चा में हिस्सा लिया और आज उन्हें अब तक हुई तमाम चर्चाओं से कहीं अधिक मज़ा आया। श्री लिविंग्स्टन ने बच्चों को हमारे स्कूल के इतिहास के बारे में बताया था। जब वे खुद एक छोटे से लड़के थे उस समय स्कूल कैसा लगता था, वे कौन से खेल खेला करते थे, आदि।

मार्था ने कल रात ट्रेन यात्रा के बारे में लिखा और उसे स्कूल लेती आई। इससे सभी ने अपनी कहानी लिखने की इच्छा जताई। मार्था ने कहा कि वह रेलगाड़ी पर किए किताब बनाना चाहती है। यह विचार सबको पसंद आया। मार्था ने छोटे बच्चों को उन शब्दों के हिज्जे बताए जो वे नहीं जानते थे। इस बीच मे उनमें से कुछ बड़े बच्चों के साथ काम करती रही। क्लब बैठक के दौरान बच्चों ने अपने खेल के बारे में एक निर्णय और लिया। अब तक रैल्फ



और फ्रैंक अपनी-अपनी टोलियों को चुनते रहे थे। मेरी ने सुझाया कि यह विशेषाधिकार दूसरे बच्चों को दिया जाए। बच्चों ने इस पर काफी सलीके से बातचीत की और तब तय किया कि इस सप्ताह फ्रैंक और रैल्फ ही टोलियाँ चुनें, अगले सप्ताह जिन दो लोगों को उन्होंने सबसे पहले चुना होगा वे टोलियाँ चुनेंगे। उसके बाद के सप्ताह में दूसरे नंबर पर चुने गए बच्चों, और यों जब तक सभी बच्चों को बारी नहीं मिलती, वे बदल-बदल कर टोलियों ने नेता चुनते रहेंगे।

### **शुक्रवार 16 अप्रैल**

हम जितने काम करना चाहते हैं, उनके लिए समय कम पड़ने लगा है। अंग्रेज़ी की कक्षा में हमने अपनी वाचिक अशुद्धियों की समीक्षा की। हमने आमतौर पर बोलने में होने वाली भूलों के सही रूप की सूची बनाई। हमारी सूची में बयालीस वाक्य थे। बच्चे अपनी ही गलतियों के प्रति कितने सचेत हो गए हैं यह देखना बड़ा रोचक था। वे फटाफट वाक्य सुझा रहे थे। हमारी क्यारी में ट्यलिप के फूल निकल आए हैं, जो हमारे खेल मैदान में रंगों की छटा बिखेर रहे हैं। कई लोग हमें बता चुके हैं कि फूलों के कारण हमारा मैदान कितना प्यारा लगने लगा है। बच्चे इससे बेहद खुश हैं और रोज़ सुबह नए फूलों पर पैनी नज़र रखते हैं।

### **सोमवार, 19 अप्रैल**

आज सुबह नन्हे बच्चों ने एक नाटक खेला। उन्होंने अपनी मेज़ें रेल डब्बों की तरह जोड़ दीं। एन्ड्रू इन्जिनियर बना। विलियम टिकट बाबू, फ्रेड कन्डक्टर। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि उन्होंने यह खेल शारीरिक शिक्षा के घण्टे में फिर से खेलने की अनुमति चाही।

### **मंगलवार, 20 अप्रैल**

छोटे बच्चों ने कल के रेलगाड़ी खेल पर बात की। हमने तय किया कि हम उसे फिर खेलें उसके पहले ऐसी तैयारी कर लें कि हमारा वार्तालाप हमारी रेलयात्रा को समेट सके। मार्था ने कहा कि हमारा रेल-खेल इसलिए अटका था क्योंकि यात्रियों के सवाल का कोई जवाब नहीं दे पाया था। फ्रेड ने सुझाया कि हमें जवाब ढूंढ लेने चाहिए। बच्चों ने कहा कि अगर हम रेल कंपनियों द्वारा भेजे गए परचे पढ़ लें तो हमें जवाब मिल जाएंगे। हम तीन समूहों में बंट गए ताकि हम सीटियों के संकेतों, रसोई घर और भोजन कक्ष के बारे में अधिक जानकारी इकट्ठा कर सकें। इन्हीं तीनों में बच्चों की रुचि सबसे ज़्यादा थी। एन्ड्रू, एलैक्स और गस ने अपनी ट्रेन पुस्तकें निकालीं और यों बैठे कि उनके सिर आपस में छू रहे थे। बाद में एन्ड्रू ने कहा “अच्छा हुआ हमने सीटियों के बारे में फिर से पढ़ा, कल हमने खेलते समय काफी गलतियाँ

की थीं।

### **शुक्रवार, 23 अप्रैल**

एक बढ़िया दिन के अंत में उसे मटियामेट करने को कुछ तो होना ही था। बच्चे बस का इंतज़ार कर रहे थे और इस बीच थॉमस ने रैल्फ को गाली दी। रैल्फ का खोपड़ा सरका और उसने थॉमस की नाक पर मुक्का जड़ दिया। तब वह रुका नहीं, भाग गया। थॉमस की नकसीर फूट आई मैंने उसकी तरफदारी की। मैंने कहा कि यद्यपि जो रैल्फ ने किया वह गलत था, पर अगर थॉमस दूसरों को गाली देता रहेगा तो ऐसा पलटवार हो सकता है। थॉमस का स्पष्टीकरण था “पर उसने मुझे गुस्सा दिलाया था।”

### **मंगलवार 27, अप्रैल**

थॉमस कल स्कूल नहीं आया था। मैंने रैल्फ को यह बताने की कोशिश की कि जो कुछ उसने किया उसके नतीज़े बड़े गंभीर हो सकते हैं। आज सुबह श्रीमती लैनिक का पत्र मिला कि उन्होंने थॉमस और रैल्फ के बीच हुई घटना की सूचना राज्य पुलिस को दे दी है। मैं दुखी हुई। लेकिन परिवार को यहाँ आए दो माह ही हुए हैं और मैं उनसे परिचित होने का समय तक नहीं निकाल पाई हूँ। अगर मैं यह कर पाती तो शायद बात यहाँ तक न पहुंची होती। उन्होंने पत्र में लिखा था कि वे रैल्फ को बखूबी जानती हैं, और उसका पिता उसे सुधारने के लिए कुछ करने वाला नहीं है। उन्होंने मुझे दोष नहीं दिया बल्कि लिखा कि वे तो मेरी मदद ही कर रही हैं। मेरी मदद! काश वे जानती कि मैं किस तरह रैल्फ पर काम करती रही हूँ। लगता है मेरे साल भर की मेहनत पर पानी फिर जाएगा।

मैंने तय किया कि मुझे रैल्फ को बात बतानी ही होगी। मैंने रैल्फ को खत की वे तमाम बातें बताईं जो मुझे लगा कि उसे जाननी चाहिए। हमने तय किया कि बेहतर होगा कि रैल्फ और मैं उसके पिता से बात कर लें, पेशतर इसके कि कोई पुलिसिया उन्हें बताए। मैंने रात को इस परिवार के साथ खाना खाया और खाने के बाद हम तीनों ने बात की। मैंने श्री जोन्स को तथ्य बताए और तब उन्होंने रैल्फ से बात की। मुझे लगा कि उन्होंने सूझबूझ से बात की और रैल्फ को अच्छी सलाह दी। बाद में श्री जोन्स ने मुझे धन्यवाद दिया, कहा कि वे अब भावी घटनाओं के लिए तैयार हैं। रैल्फ भी कृतज्ञ था वह मुझे गाड़ी तक छोड़ने आया, जो उसने पहले कभी नहीं किया है।

### **बुधवार 28, अप्रैल**

आज सुबह एक पुलिस अधिकारी आया। मैंने उससे पहले बात की और स्थिति समझाई। इसके बाद उसने रैल्फ से बात की। आशा है अब यह मामला खत्म हो जाएगा और रैल्फ इस अनुभव से सीख लेगा।

आज छोटे बच्चों ने बड़ी देर तक इस विषय पर बात की कि भाप का इंजन आखिर चलता कैसे है। एल्बर्ट ने बड़ी कक्षा की विज्ञान की किताब के एक चित्र के सहारे यह बताया कि इंजन के पहिए कैसे घूमते हैं। उसने देर तक चित्र को देखा और बार-बार पढ़ कर समझा ताकि सरल और सटीक शब्दों में वह नन्हो यह प्रक्रिया बता सके। जब रेलगाड़ी का खेल हुआ तो एल्बर्ट इंजिनियर बना और उसने जिज्ञासू सवारियों के सवालों का जवाब दिया। बाद में उन्होंने अपने खेल में रसाई और भोजनकक्ष के दृश्य भी जोड़े।

बड़े बच्चों ने आज बड़ी मेहनत से हमारे करबे के अतीत कहानियाँ लिखीं। उन्होंने अब तक यह जानने की कोशिश की है कि पहले ज़माने में लोगों के घर कैसे होते थे, वे कैसे कपड़े पहनते थे, दवा-दारू, इलाज की क्या व्यवस्था थी, स्कूल कैसे थे, धर्म का स्वरूप क्या था और पायोनीयर अपना मनोरंजन कैसे करते थे? हमारे संग्राहालय में अब उन्नीस वस्तुएँ हैं। लड़कियों ने अपने नमूने बना लिए हैं। और एक नमूना लट्ठे से बने केबिन का भी है। एना ने मलमल के कपड़े पर अपना चित्र बनाया है और उस पर मोम के रंग लगाए हैं। चित्र तैयार है, बस उसके पीछे एक कपड़े की तह और लगनी है। सोफिया ने 3 फीट X 6 फीट का। विशाल चित्र बनाया है जिस पर पायोनीयर जीवन का वर्णन है। समूह के कई बच्चे उनमें रंग भरने में मदद कर रहे हैं।

### **गुरुवार, 29 अप्रैल**

आज स्कूल के बाद हमारी नियमित बैठक में आठ माताएँ आईं। हमने अगले सत्र के गर्भ भोजन कार्यक्रम पर वे गर्मियों में स्कूल के पास रहने वाले पड़ोसियों को तब सूचना दे देंगी जब उनके पास अतिरिक्त सब्जियाँ होंगी। फिर कुछ माताएँ और बड़ी लड़कियाँ मिलजुलकर उन्हें डब्बा बन्द कर देंगी। वे इस काम को बारीबारी करेंगी।

### **गुरुवार, 10 जून**

पिछले दिनों इतनी व्यस्तता रही कि कुछ काम हाशिए पर खिसकाने पड़े। उनमें से एक डायरी लिखना भी था। डायरी लिखना अन्य गतिविधियों के तात्कालिक दबावों के कारण एक विलास सा लगने लगा था। यह सच है कि घटनाक्रम को बाद में याद कर लिखना, विश्लेषण और मूल्यांकन की दृष्टि से इतना सहायक नहीं होगा, फिर भी लगता है कि दर्ज की गई अंतिम घटना के बाद की घटनाओं का सार-संक्षेप तो दर्ज कर ही लेना चाहिए।

बच्चों ने अपनी कठपुतली प्रदर्शन पर बड़ी मेहनत की। श्री विल्सन ने लड़कों की एक ऐसा मंच बनाने में मदद की जिसे सरकाया जा सकता था। उन्होंने लड़कों को परदों और दृश्यों के लिए फ्रेम बनाना भी सिखाया। यह भी कि

प्रकाश कैसे किया जाता है। लड़कियों ने नई मलमल के परदे बनाए। लड़कों ने विभिन्न दृश्यों के चित्र, अन्य सज्जा सामग्री तैयार की और कठपुतलियों की डोर के लिए लकड़ी भी पकड़ भी तैयार की। बच्चों ने कठपुतलियों को नचाने का खूब अभ्यास किया। इतना कि वे उन पुतलियों में रम गए और कठपुतलियाँ जीते-जागते इन्सानों में तब्दील हो गईं।

नन्हो ने अपनी हाथ पुतलियों को चलाने का खूब अभ्यास किया और अपने प्रदर्शन को सही किया। 21 मई को बच्चों ने काउन्टी उपलब्धि दिवस कार्यक्रम में माता-पिता व शिक्षकों के बड़े समूह के समक्ष अपने कठपुतली नाटक प्रस्तुत किए। 26 मई को उन्होंने शाला भवन में वही कार्यक्रम फिर से दिखाया। उसकी ख्याति फैल गई और जो उसे देख नहीं पाए वे पूछते रहे हैं कि हम क्या इसे फिर से दिखाने वाले हैं। इस माह हमने सात पृष्ठों का अखबार प्रकाशित किया, इस साल का तीसरा अखबार।

और मानो करने को काम कम हों, हमने वार्षिक कस्बाई खेल दिवस के लिए एक प्रस्तुति तैयार की। हर साल हमारे कस्बे के दोनों स्कूल साथ मिलकर खेल दिवस मनाते हैं। दोपहर को होने वाले मनोरंजन कार्यक्रम में दोनों स्कूल हिस्सा लेते हैं। इस साल हमने अपने कस्बे के इतिहास की नाट्य प्रस्तुति तैयार की और अभिभावकों को “वैली व्यू कस्बे के इतिहास के कुछ रोचक तथ्य” शीर्षक से एक परचा भी बाँटा।

इस अवधि की जो सबसे गहन छवि है वह पारस्परिक सहकार की, जो हरेक काम में नज़र आता रहा। आनन्दमय, व्यस्त कार्यशाला नुमा वातावरण हमारी शाला में बना रहा।

पिछले साल के काम को पलट कर देखती हूँ तो लगता है कि हमारे तमाम संघर्ष, बड़े होने जुड़ी पीड़ा, निरर्थक नहीं रहे। बल्कि उनके माध्यम से हम सब, बच्चे, उनके माता-पिता और शिक्षक-काम करने, खेलने-कूदने और साथ जीने के हमारे अनुभवों के कारण पहले से कहीं ज़्यादा समृद्ध हो सके हैं।

## अध्याय 4 दूसरा वर्ष

### नई शुरुआत

**शुक्रवार, अगस्त 1937**

व्यस्त गर्मियाँ गुजर चुकी हैं। अब ध्यान स्कूल के नए सत्र पर केन्द्रित करना है। मैंने इक्कतीस बच्चों की सूची को ध्यान से देखा। मैं जब उनसे पहली बार मिली थी तब से वे सालभर बड़े हो चुके हैं। सूची में चार नए बच्चे भी हैं।

एलिजाबेथ प्रिन्लैक, उम्र 7 वर्ष 8 माह

फ्लोरेंस हिल, उम्र 5 वर्ष 1 माह

चार्ल्स विलिस, उम्र 5 वर्ष 1 माह

एरिक थॉमसन, उम्र 5 वर्ष 1 माह

तीन बच्चे समूह छोड़ भी चुके हैं। ओल्गा शहर में काम कर रही है। एना कस्बे के हाई स्कूल में दाखिल हो चुकी है और फ्रैंड लुत्ज गर्मियों में जा चुका है। पठन, वर्तनी और गणित के समूह फिर से बनाए हैं। सामाजिक अध्ययन और विज्ञान व स्वास्थ्य के विषयों के लिए हम दो-दो समूह बनाएंगे फिलहाल हम पिछले सत्र के अंत में हमारा जो दैनिक कार्यक्रम था, उसी के हिसाब से काम करेंगे, जब तक हमारी नई योजना बन नहीं जाती।

**सोमवार, 30 अगस्त**

आजा शाला भवन गई। द्वार के पास जालियों के सहारे लगी गुलाब की झाड़ियाँ बड़ी हो चुकी हैं। रूथ ने बताया कि गर्मियों में गुलाब के फूल भी खिले थे।

मैं रास्ते में पड़ने वाले घरों में अभिवादन करने रूकी। रूथ, 4एच क्लब के शिविर में गई थी। उसने मुझे अपना कीड़ों का संग्रह दिखाया। श्री थॉमस अब भी सड़क पर काम कर रहे हैं। समय निकाल कर लकड़ियाँ काटकर भी बेचते हैं। मैंने उन्हें कभी सुस्ताते नहीं देखा है।

समेटिस बच्चे मिलकर खुश हुए। कैथरीन दुबली हो गई है। पर सोफिया और विलियम का वज़न बढ़ा है। गर्मियों में कुछ लोग रहने आए हुए हैं, कमरे किराए पर लिए हैं उन्होंने पर खाना खुद बनाते हैं। ये सभी आवासी बच्चों और मेरी बातचीत सुनते रहे।

सोफिया के पास संतरों के कुछ डब्बे हैं जिनकी लकड़ी का उपयोग स्कूल फर्नीचर बनाने में किया जा सकता है इन बच्चों को गर्मियों में अपने पसंदीदा काम करने की फुर्सत नहीं मिल पाई है।

श्रीमति विलियम्स बीमार रही। चारों बच्चे घर पर समय बिता पाए, वे अपने

विभिन्न रिश्तेदारों के यहाँ बारी-बारी से जाते रहे। पर उनके लिए यह अनुभव बढ़िया व स्वास्थ्यप्रद रहा।

जोन्स परिवार के यहाँ सिर्फ मार्था, इनेज़ और दादी मिले। रैल्फ गर्मियों भर अपने पिता के साथ गैराज में काम करता रहा है। मुझे यह सोच भय लग रहा है कि स्कूल खुलने पर इसका उस पर क्या असर पड़ेगा। मार्था ने कीड़ों और दबाई हुई पत्तियों का अपना संग्रह मुझे दिखाया।

हिल बच्चे मुझे देखते ही बाहर दौड़े। श्री हिल एक बसंत घर बना रहे हैं। एल्बर्ट ने बताया कि उसके घर के पास बहने वाले नाले से चिकनी मिट्टी मिल सकती है। वॉरेन का स्टैम्प संग्रह बढ़ चुका है। दोनों लड़कों ने कुछ इल्लियाँ इकट्ठी कर ली हैं, जिन्हें वे तब तक पत्ते खिला रहे हैं, जब तक वे कोष में नहीं बदल जातीं।

एडवर्ड ने आज दोपहर हमारी औज़ार अल्मारी में ताकें बनाने और उनमें हुक लगाने में मदद की ताकि हम अपने नए औज़ार लटका पाएँ। गर्मियों में शाला कोष से सात डॉलर खर्च कर औजारों का एक नया सेट खरीद लाई हूँ। बाद में हम लकड़ी कम्पनी में गए ताकि अपने तीन पाट के पर्दे और चित्रफलक (ईज़ल) के लिए लकड़ी का ऑर्डर दे सकें।

### **मंगलवार, 31 अगस्त**

आज क्या-क्या नहीं सुना मैंने। साथ-साथ जीने और काम करने में जो नई समस्याएँ होने वाली हैं उनका सामना करने के लिए साहस और समझदारी की जरूरत होगी।

प्रिन्लैक व ओलसेउस्की परिवारों के बीच का पुराना झगड़ा फिर से उभर गया है। कोर्ट-कचहरी, गाली-गलौज, पत्थर फेंकना, यहाँ तक कि गोलियाँ भी चल चुकी हैं। सुना कि फ्रैंक ने सबसे ज्यादा फसाद किया है। ओलसेउस्की परिवार मुझसे मदद माँग रहा है। मैं क्या कह सकती हूँ। फ्रिन्लैक परिवार के यहाँ जाने पर पता चला कि उनकी गुज़र बसर बड़ी मुश्किल से चल रही है। श्री प्रिन्लैक बोले कि “अगर इन्सान गरीब हो तो ताउम्र ही गरीब बना रहता है।” श्रीमती प्रिन्लैक ब्रेड बना रही थीं। लौटने के पहले उन्होंने मुझे घर ले जाने के वास्ते ढेर सी बेरियाँ दीं मेरे झिझकने पर उन्होंने बताया कि उनके पास छब्बीस बड़े मर्तबान भरे हैं। जब मैं आई उस वक्त फ्रैंक और जॉर्ज छिप गए थे। इन परिस्थितियों से घिरे बच्चों के लिए स्कूल क्या कर सकता है, इतनी लाचारी पहले कभी महसूस नहीं हुई थी।

जब कार्टराइट परिवार के यहाँ पहुंची तो सभी बच्चे पिछवाड़े में छुप वहीं से झाँकते रहे। नज़रें मिलने पर मुस्कुराए पर तुरन्त वापस छिप गए। कार्टराइट परिवार का बाग बेहद खूबसूरत है जिसकी देखभाल लड़के करते हैं, पर

फल-सब्जियों को बाद के लिए बचाने के लिए एक भी डब्बा नहीं बनाते। आज पहली बार थॉमस के पिता ओर सौतेली माँ से मुलाकात हुई श्रीमती लैनिक मिलकर खुश लगीं। उन्होंने थॉमस के बारे में काफी बातें बताईं। माता-पिता के तलाक के बाद थॉमस अपनी दादी के पास रहने गया। वह मर्जी होती तभी स्कूल जाता। जब थॉमस की सौतेली माँ उसके पिता के साथ रहने लगीं तो थॉमस को यह अच्छा नहीं लगा वह उनसे बदसलूकी और विद्रोही बर्ताव करने लगा। श्रीमति लैनिक उसे “अच्छा” लड़का बनाने की कोशिश कर रही हैं। वह उसे साफ रखती हैं। उसके लिए घर साफ-सुथरा रखती हैं। पर वे अब भी मानती हैं कि थॉमस दरअसल खराब लड़का है, और उसका कुछ ख़ास हो नहीं सकेगा।

श्रीमती डुलियो मुझे तहखाने में ले गईं। उन्होंने मुझे डब्बाबन्द सब्जियों, फलों, मशरूम की तमाम बोटलें दिखाई जो उन्होंने और एन्ड्रू ने मिलकर तैयार की थीं। उन्होंने मुझे वह स्थान भी दिखाया जहाँ वे गाजर, चकंदर गाड़ेंगी, और वे डब्बे दिखाए जिनमें सेव का मुरब्बा रखेंगी। वे गर्मियों में कहीं नहीं गए थे। उनके घर न रेडियो है, न अखबार ही आते हैं। वे बस इसी किराए के खेत के काम में जुटे रहे ताकि कुछ पैसे बचें। इतने कि वे अपना छोटा सा खेत खरीद सकें। तमाम कठिनाइयों के बावजूद इस परिवार में खुशी भी है। एन्ड्रू अपनी माँ का जब देखता है तो उसकी आंखों में स्नेह झलकता है। श्रीमती डुलियो उसे “घुंघराले बालों वाला बेटा” कह बुलाती हैं। उनका दर्शन बड़ा सरल है- मेहनत करो और जिस बारे में कुछ नहीं कर सकते, उसकी चिंता छोड़ दो।

एन्ड्रूस परिवार के यहाँ जाना ऐसा लगा मानों रेगिस्तान में नखलिस्तान पहुंच गए हों। लड़कियाँ स्कूल खुलने का बेताबी से इंतज़ार कर रही हैं ताकि अपने विचारों को साकार कर सकें। श्रीमती एन्ड्रूस ने बताया कि उनकी गर्मियाँ आराम से कटीं। उन्होंने कई फिल्में देखीं। डॉरिस के टॉन्सिल्स निकाल दिए गए। उनके घर का वातावरण खुशनुमा था। घर लौटते समय श्रीमती रेमसे मिलीं। वे अपनी नन्हीं बेटी के कस्बे के स्कूल भेजती रही हैं, पर इस साल उसे स्टोनी ग्रोव भेजना चाहती हैं क्योंकि उन्होंने हमारी शाला की काफी तारीफ सुनी है। ईरीन छह साल की है। उसके आने पर हमारा नामांकन बत्तीस हो जाएगा।

अब पिछले दो दिनों के अनुभव पर विचार करने पर मैं भयभीत हूँ। शायद शुरूआत यही मानकर करनी चाहिए कि हम पिछले साल जिस तरह साथ-साथ जीवन गुज़ार रहे थे वैसे ही गुज़ार सकेंगे। पर उसके बाद...?

**शनिवार, 4 सितम्बर**

एना, हेलेन रूथ, सोफिया और कैथरीन ने मुझे शाला भवन की ओर गाड़ी से आते देखा। वे भी सफाई में मदद करने आ पहुंचीं। हमने सारी मेज़े कुर्सियाँ, अल्मारियाँ धोईं, किताबें अल्मारियाँ से निकाल कमरे में लगाईं। दिन भर काम करने के बाद हम कस्बे की दुकान में गए, ताकि पर्दों और अल्मारियों को ढकने के लिए कपड़ा खरीद लें।

### **बुधवार, 8 सितम्बर**

जब मैं पहुंची तो छोटे बच्चों दरवाजे के पास खड़े थे। बड़े बच्चे स्कूल के पिछवाड़े थे, शायद पहले दिन मिलने में झिझक रहे थे। मैंने उन्हें तुरंत काम पर लगा दिया ताकि वे मेज़ों की ऊँचाई कम ज्यादा कर दें, और वे तत्काल सहज हो गए।

इरीन खुश थी, उसने कहा उसे हमारा स्कूल पसंद आ रहा है। चार्ल्स विलिस दिन भर बिसुरता रहा और उसके साथ एक “दुघर्टना” भी घट गई। अपनी तीन वर्ष की आयु के हिसाब से वह अपरिपक्व लगता है। एरिक तकरीबन पूरे समय रैल्फ से चिपका रहा, जिससे रूथ को बड़ी परेशानी हुई। इलिज़ाबेथ और फ्लोरेंस ने दूसरे बच्चों से दोस्ती कर ली और वे जल्दी ही सहज हो गईं। पिछले साल हमने हमारे कमरे की आसुविधाओं पर कुछ बात की थी। स्कूल बन्द होने से पहले हमने इनकी एक सूची बना ली थी, और यह भी तय कर लिया था कि हम उनके बारे में क्या करेंगे। हमारी सबसे बड़ी समस्या थी छोटे बच्चों के लिए खेलने की जगह बनाना। ऐसी जगह जहाँ वे सच में बातचीत कर सकें, चल फिर सकें। इस साल पाँच मेज़-कुर्सियाँ और बढ़ी हैं तो छोटे बच्चों के लिए स्थान की समस्या और गहरा गई थी। मेरी दूसरी बड़ी समस्या की उन बड़े लड़कों की आवश्यकताओं को पूरा करने के उपाय तलाशना, जो अपनी कक्षा के लिए बड़े हैं पर धीमी गति से सीखते हैं। उन्हें शारीरिक गतिविधियों की ज़रूरत है ताकि वे सीखने के प्रति उत्साहित हों और उन गतिविधियों को कर सकें। इन दोनों समस्याओं से निपटने के लिए मैंने बच्चों को यह सुझाव दिया कि हम बाहर मैदान में एक खेलघर बनाएं जिसमें कई बच्चे एक साथ खेल सकें।

एक दूसरी समस्या थी कि हम अपने कठपुतली मंच का कैसे उपयोग करें कि वह जितनी जगह घेरता है, उसका “किराया वसूल” तो हो सके। हमें अपनी रसोई और भण्डार घर को अलग करने के लिए परदे की दरकार थी। कमरे की खिड़कियों पर भी हमें परदे चाहिए थे ताकि घर का सा अहसास हो। हमें और चित्र फलक भी चाहिए थे। सुबह नौ बजे हम अपनी योजनाएँ बनाने को तैयार थे।

दीवार कागज के नमूनों, किताबों के आले और प्लायवुड से चित्रफलक



बनाना-एडवर्ड व रैल्फ।

कठपुतली मंच को लाइनोनियम से मढ़ना-फ्रैंक।

तीन पाट वाले परदे का खाका बनाना-वॉरेन व जॉर्ज।

कठपुतली मंच के पैरों को ढकने के लिए परदा, अल्मारियों और खिड़कियों के लिए पर्दे सिलना-कैथरीन, सोफिया, में, डॉरिस, रूथ, हेलेन व मेरी। खेलघर के लिए संतरों की पेटियों से मेज़कुर्सी बनाना-एलेक्स, गस, एन्ड्रू, जोसेफ व वॉल्टर।

कुर्सियों के लिए कुशन व कुशन के गिलाफ बनाना, चिन्दियों से बनी दरी के लिए चिन्दियों को रंगना-वर्ना, एलिस मार्था, पर्ल और जॉयस।

चिन्दियों से दरी बुनने के लिए दो हाथ करघे बनाना-एल्बर्ट और विलियम। कपड़ों से चिन्दियाँ फाड़ना-जॉन व रिचर्ड।

पालने के लिए बिस्तर बनाना-फ्लोरेंस, एलिज़ाबेथ, इरीन।

स्कूल के पहले मैंने मेरी को एमझा दिया था कि पालने के लिए बिस्तर कैसे बनाए जाएंगे। उसने छोटी लड़कियों की इस काम में मदद की। बड़े लड़कों को मेरी मदद की ज़रूरत न थी, उन्होंने मुझसे लकड़ी काटने के पहले सिर्फ माप की बात की। मेरा ज्यादातर समय संतरों के डब्बों से मेज़ कुर्सियाँ बनाने वाले लड़कों के साथ बीता। दस बजे तक हमारी कार्यशाला चली।

शारीरिक शिक्षा की कक्षा के बाद गर्मियों की छुट्टियों में हमने जो किया उस पर बातचीत हुई। मेरी ने कुछ चित्र बनाए थे। मार्था और रैल्फ कीड़े इकट्ठे कर रहे थे। विलियम के पास कुछ जीवाश्म थे। फ्रैंक ने दो हवाई जहाज बनाए थे और दो घड़ियाँ सुधारी थीं। रैल्फ ने तैराकी के नए गुर सीखे थे। कुछ दूसरे बच्चों ने भी कुछ मन पसंद कामों को शुरू किया था, पर उन्हें पूरा नहीं कर पाए थे।

मैंने बच्चों को बताया कि मैंने छुट्टियों में मिशिगन के एकल शिक्षक स्कूल में प्रदर्शन शिक्षिका के बतौर काम किया था। मैंने उन्हें वह डायरी दिखाई जो मिशिगन के बच्चों ने लिखी थी, और वे जीवाश्म भी जो मैं साथ लाई थी। हमने उनकी तुलना विलियम के जीवाश्मों से की। नए बच्चों की स्वास्थ्य आवश्यकताएँ इतनी लगीं कि कुछ समय तक उन पर ध्यान केंद्रित करना होगा। प्रतिदिन सुबह का आखिरी आधा घण्टा इसी पर लगाऊँगी। पिछले साल दोपहर के खेल घण्टे बाद काफी परेशानियाँ हुई थीं। इस साल शायद दोपहर के काम के बाद पंद्रह मिनट का विश्राम का कालांश उनके मिजाज़ को ठण्डा रखने में मदद दे। स्वास्थ्य के घण्टे में हमने विश्राम के मसले पर बात की।

आज विश्राम का घण्टा सफल रहा। कई बच्चे डेस्क पर सिर टिका सुस्ताना

नहीं चाहते थे। उन्होंने आसान किताबें पढ़ी। हम इतने ढीले हो गए कि संगीत के घण्टे में उबासी लेते रहे। आज हमने अपने पुराने पसंदीदा गीत गाए। मैंने छोटे बच्चों को जोड़-बाकी समझाया और उस दौरान बड़े बच्चों ने सुबह शुरू किए काम जारी रखे। प्रत्येक बच्चे के पास जोड़-बाकि के सवालियों के कार्डों की गड्डी है, उसे पूरा करने के बाद वह रिकॉर्ड शीट में निशान लगाता है।

देर दोपहर बड़े बच्चों ने अपनी गणित की किताबों की समीक्षा की। और यों एक व्यस्त और रोचक दिन समाप्त हुआ।

### **गुरुवार, 9 सितम्बर**

इतने दिनों बाद स्कूल आने के कारण बच्चे कल इतने खुश थे और इतने व्यस्त भी कि झगड़े-फसाद से बचे रहे। लग यह रहा था मानों गर्मियों का अवकाश हुआ ही नहीं हो और हम बिछड़े ही न हों। पर आज छुट्टियों के अनुभव हमारे बीच धकिया कर घुस आए।

हमारे पास गेंदें नहीं हैं। हमारी अच्छी वाली गेंद बंसत में कस्बोई खेल दिवस के दिन खो गई थी। बेसबॉल वाली गेंद ज़रूर है पर उसका बल्ला नहीं है। खेल उपकरण न होने के कारण लड़के दोपहर के समय बिना कुछ किए इधर-उधर खड़े थे। इस पर मैंने सुझाया कि हम सब मिलकर जंगल के पास वाले स्थान को खेल-घर बनाने के लिए साफ कर दें। सिर्फ जॉर्ज ने टिप्पणी की “यह तो बिल्कुल काम सा लगता है।” वे भवन के पिछवाड़े चले गये और वहाँ छोटे बच्चों को छेड़ने लगे। एल्बर्ट, जो अब बड़े समूह में आने के कारण खुद को बड़ा लड़का मानने लगा है, उनकी धींगामस्ती का मज़ा ले रह था। पर इसी खींचतान में उसे चोट लग गई। मैंने बड़े लड़कों को बुलाया और उनसे बातचीत की। मैंने कहा कि अगर वे खेलघर बनाने में मदद करते, तो शायद उन्हें दोपहर का अधिक मज़ा आता। इस पर रैल्फ बोला “हम खेलघर बनाने में मदद क्यों करें? हम उसका इस्तेमाल थोड़े ही करेंगे।” मैं यह समझाने लगी कि हम कई काम प्रत्यक्ष फायदे के लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी करते हैं जिनसे सिर्फ संतोष ही मिलता है। बच्चों ने इस पर कोई प्रतिक्रिया न कर चतुर टिप्पणियों का सहारा लिया। वे नहले पर दहला जड़ते गए। हमें अपनी बातचीत बिना कुछ हासिल किए बन्द करनी पड़ी। बल्कि इसका नुकसान ही हुआ। अब पलटकर देखने पर अपनी गलती साफ नज़र आती है। मुझे रैल्फ और फ्रैंक से, जो उस गुट के नेता थे, अलग से बात करनी चाहिए थी। उस समय नहीं जब उनके समर्थक श्रोता साथ हों बेहतर तो शायद यही होता कि मैं भाषणबाज़ी करती ही नहीं। अब तो एक ही उपाय है कि गेंद जल्द से जल्द सुधरवा ली जाए, बल्ला लाया जाए और नए खेल

सिखाए जाएँ। मैं छोटे लड़कों को खेलघर बनाने के काम में जोड़ूंगी और जब बड़े लड़कों की रुचि उसमें स्वतः ही जगेगी, तो हम उन्हें भी शामिल कर लेंगे। यही मुझे दरअसल पहले ही करना चाहिए था। शिक्षकों का सौभाग्य है कि बच्चे आसानी से भूलते हैं।

शारीरिक शिक्षा के घण्टे में लड़कों ने खेलने से इन्कार कर दिया। फ्रैंक बोला “यह तो काम करने जैसा है, जो मैं घर पर काफी कर लेता हूँ।” वह इस बात से नाराज था कि उसे रैल्फ की टोली में नहीं रखा गया था। उसने कहा कि पिछले साल भी ठीक यही हुआ था। अब अगर वह रैल्फ की टोली में शामिल नहीं होता तो वह खेलेगा ही नहीं। मैंने रैल्फ से कुछ बात की, क्योंकि उसका मिजाज़ कुछ ठण्डा हो गया था। मैंने उसे खेल शुरू करने पर मना लिया और तब फ्रैंक से बात की। मैंने कहा “फ्रैंक, तुम्हारे विवेक को क्या हो गया है? पिछले साल तुमने ही खेल मैदान की समस्याओं को सुलझाने में हमारी मदद की थी। मुझे यह बताने की ज़रूरत है क्या कि दो सबसे बड़े लड़के अगर एक ही टोली में होंगे तो यह सही नहीं होगा।” मैंने उसे खेलने बुलाया, पर वह माना नहीं, सो मैं उसे सीढ़ियों पर बैठा छोड़ आई, जहाँ से वह हमें खेलते देखता रहा।

स्वास्थ्य के पाठ के दौरान मैंने खेल मैदान में होने वाले सतत फसाद की बात उठाई। हमने हमारे मानसिक दृष्टिकोण और सामान्य स्वास्थ्य के पारस्परिक रिश्ते पर चर्चा की। हमने निठल्ले बैठे रहने के दुष्प्रभावों पर बात की। यद्यपि बच्चों ने बात ध्यान से सुनी और चर्चा में भागीदारी भी की, पर इसी पाठ का असर दोपहर के खेल घण्टे पर नज़र आया। वे लगातार यही कहते रहे कि अगर निठल्ले रहेंगे तो परेशानी में पड़ सकते हैं। और इसी बात को वे जाँचते रहे- यह जानने के लिए कि किस तरह की और कितनी परेशानी में वे फँस सकते हैं।

### **शुक्रवार, 10 सितम्बर**

आज का दिन कल से बेहतर था। सुबह काम के घण्टे हमेशा अच्छे गुज़रते हैं। बच्चे जो कर रहे हैं, वह उन्हें पसंद है।

दोपहर सारे छोटे लड़के खेल घर के लिए जगह साफ करने लगे। बड़े लड़के अधिकतर समय देखते रहे। अगर कल मैंने इस मुद्दे को रेखांकित न किया होता तो वे आज ज़रूर मदद करते। स्कूल के बाद मैं शौचालय का निरीक्षण करने गई, और यह देख सन्न रह गई, कि लड़कों के शौचालय में अश्लील बातें लिखी हुई थीं। मैं यह पहचान नहीं सकी कि लिखाई किसकी थी।

### **सोमवार 13 सितम्बर**

आज सुबह लड़के आए, मैंने उनसे शौचालय में लिखाई के बारे में

पूछा। पर जैसा मुझे लग ही रहा था किसी ने यह नहीं कहा कि उन्हें कुछ पता है। दो नाम बाद देते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची कि यह काम चारों बड़े लड़कों ने मिलकर या उनमें से किसी एक ने किया होगा। जब बच्चे बाहर खेल रहे थे मैंने चारों लड़कों से बात की। मैंने कहा कि हमारी नई पुती दीवार को यों खराब करना अच्छी बात नहीं है। मैंने इस मौके का उपयोग यौन शिक्षा के लिए किया। लड़कों ने बात ध्यान से सुनी। मैंने उन्हें दीवार की लिखावट पर फिर से रंग पोतने भेजा।

आज बरसात हुई सो हम बाहर खेल नहीं सके। मैंने कुछ सुझाव दिए और तब छोटे समूह के साथ जीवाश्मों को देखने बैठ गई। वे एक लेंस और तिपाए पर रखे सूक्ष्मदर्शी से उन्हें देख रहे थे। हम काम में तल्लीन थे और कुछ ही देर में रैल्फ, फ्रैंक, एडवर्ड और जॉर्ज की रुचि भी जगी। रैल्फ ने कुछ बड़े पत्थर फोड़े और हमने उनके अंदर नन्ही सीपियाँ जड़ी पाईं। हमारे बीस मिनट बड़े अच्छे गुज़रे।

पर दोपहर का घण्टा आनंददायक नहीं रहा। छोटे बच्चे ढूँढ़ ढाँढ़कर अपना कोई शांतिपूर्ण खेल खेलते और बड़े उसमें टांग अड़ा उसे भंग कर देते। एल्बर्ट लेंस से जीवाश्म देख रहा था। रैल्फ आया और उससे लेंस छीनने लगा। एल्बर्ट लेंस देना नहीं चाहता था, इस छीना झपटी में लेंस का फ्रेम चकनाचूर हो गया। मैंने रैल्फ से कहा कि उसे नया लेंस लाना होगा (जो मात्र 10 सेंट का आता है।) स्थिति काबू में नहीं आ रही थी इसलिए मैंने बच्चों से कहा कि वे अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठें और चुपचाप विश्राम करें। जॉर्ज और एडवर्ड को बात नगवारा गुज़री और उन्होंने शेष दोपहर काम करने से इन्कार कर दिया। वे अपनी कुर्सियों पर मुंह सुजाए बैठे रहे। मुझे इस स्थिति के लिए कुछ सकारात्मक करना चाहिए, यह मैं समझती हूँ, पर क्या?

और जोसफ वह बड़ों बच्चों का पिछलग्गू बन, उनके आगे पीछे डोलता है, उनकी नकल करता है। गला फाड़कर चिल्लाता है, धमाधम पैर पटकता है। वह किसी सार्वजनिक शाला के लिए बहुत बड़ा हो चला है।

चार्ल्स के पिता मुझसे सहमत हैं कि चार्ल्स को साल भर स्कूल नहीं आने देना चाहिए क्योंकि वह अब तक खुद अपने कपड़े तक नहीं पहन सकता। मैंने उसके पिता श्री विलिस को एक सूची में है। इस सूची ने तमाम वे बाते हैं, जो उसे अगले साल स्कूल आना शुरू करने के पहले सीख लेनी होंगी।

सुबह खेल घण्टे के अलावा आज के दिन में एक ही बात अच्छी रही। दो गीत गाने के बाद हमने संगीत का घण्टा कुछ छोटा कर दिया ताकि बच्चे

अपनी कहानियाँ सुना सकें। कैथरीन ने एक नन्हे खरगोश की कहानी सुनाई जो अपनी माँ की बात कतई नहीं मानता था। हरेक बच्चे को यह कहानी बेहद मजेदार लगी। इसके बाद उन्होंने कुछ पढ़ कर सुनाने का आग्रह किया मैंने कैथरीन की कहानी सी एक नीति कथा सुनाई।

### **मंगलवार, 14 सितम्बर**

कल रात मैंने अपनी समस्या पर सावधानी से सोच-विचार किया। यह सच है कि बच्चों को परेशानी हो रही है, पर मुझे भी हो रही है। मैं सच में उनकी जरूरतें पूरी करना चाहती हूँ पर इसके लिए कितना संघर्ष करना पड़ रहा है। लगता है कि स्कूल खुलने के बाद से मैंने सही के बजाए गलत काम ही अधिक किए हैं। यह काम मेरी कल्पनाशक्ति और धैर्य दोनों से भारी कीमत मांगता है। तानाशाही से चलने वाली शाला का प्रबंधन कितना आसान रहता है। पर मैं एक लोकतांत्रिक शाला के उद्देश्यों को तिलांजलि नहीं दे सकती क्योंकि ये उद्देश्य ज़ोर-जबरदस्ती से हासिल नहीं किए जा सकते।

मुझे बच्चों को ऐसे काम सोपने चाहिए जो चुनौतीपूर्ण हों। अगर मैं उन्हें व्यस्त रख सकूँ, उनकी जिज्ञासा और रुचि को बाँध सकूँ तो शायद उनकी ऊर्जा को सभी दिशाओं में मोड़ सकूँगी। मैंने दो गेदों में चिप्पियाँ लगवा ली हैं और शाला कोष से एक बल्ला भी खरीद लिख है। रूथ बेसबॉल की गेंद को घर ले गई है ताकि उसके फीते बांध सके।

सामाजिक अध्ययन के घण्टे का उपयोग कमरे के रंग-रूप को सुधारने और कारगर व्यवस्था करने में लगाना सही रहा है। इसके साथ मैंने अपनी मिशिगन यात्रा में बच्चों की रुचि का ठोस उपयोग करने का भी निश्चय किया। आज सुबह मैंने श्यामपट्ट पर उन रोचक वस्तुओं की सूची बनाई जो मैंने मिशिगन में देखी थी। जीवाश्म, पवन चक्कियाँ, गोल छतों वाले खलिहान और उन पर लगे बिजली के सरिए, गेहूँ और मक्के के खेत, चौकोर खेत और सीधी सड़कें, भेड़े व सुअर, तेल के कुंए, सपाट जमीन, कम पेड़ और ढेरों तालाब। हमने अपने भूगोल की किताबों में एक नक्शा ढूँढ़ा और वह रास्ता देखा जिस पर मैं गई थी। रूथ ने पढ़ा कि मैं जिस इलाके से गुज़री थी उसे मक्का-पट्टी कहते हैं। उसने समझाया कि अमरीका के शेष राज्यों की तुलना में यहां मक्के की पैदावार अधिक होती है। बच्चों ने नक्शा देख यह भी समझा कि गेहूँ भी यहाँ दूसरे राज्यों से अधिक पैदा होता है। इसके अलावा चेरी का फल अधिक उगता है, ज्यादा गाड़ियों का उत्पादन होता है, और तो और यहां जितनी आटा चक्कियाँ हैं उतनी दुनिया में कहीं और नहीं हैं। मैंने बच्चों से कहा कि वे इस इलाके को अपनी ऊगलियों से घेरा बना चिन्हित करें। चर्चा के वास्ते हमने इलाके को 'उत्तर मध्य राज्य' का नाम दिया। मैंने

सुझाया कि बच्चे पढ़कर यह जानने की कोशिश करें कि यह क्षेत्र इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

जब मैं दूसरे बच्चों के साथ काम कर रही थी तो लड़कियों ने बर्ना के निर्देशन में कुशन सिए और कुछ ने दरियां बुनीं, और छोटे लड़कों ने गस के नेतृत्व में नारंगी के डब्बों से बनाई गई मेज़-कुर्सियों को रखा। बाद में काम छोड़ कुछ देर खेल-घर की योजना बनाने लगे। उन्होंने सोच है कि वे 7 फिट का चौकोर बनाएंगे और ऊंचाई छः फीट की रखेगी। वे उसकी छत ढलुआ बनाना चाहते हैं। पहले उन्होंने तय किया था कि वे चारों तरफ खिड़कियाँ बना लें, पर एन्ड्रू ने कहा कि इसके लिए बहुत नाप-जोख करनी होगी। उसने सुझाया कि उत्तरी और पूर्वी दिशा की दीवारें पूरी तरह बन्द रहें, जैसा उसके पिता ने उनके मुर्गी खाने में किया था। हमने उसका नक्शा बनाया और बाहर गए ताकि लकड़ी की खूंटियों और सुतली से निशान बना लें

### **बुधवार, 15 सितम्बर**

बड़े बच्चों ने कल की चर्चा के बाद कुछ सवाल बनाए

- 1 मिशीगन तक जीवाश्म कैसे पहुंचे?
- 2 उस क्षेत्र की मिट्टी इतनी उपजाऊ क्यों है?
- 3 वे इतनी मक्की और गेहूँ क्यों उगा पाते हैं?
- 4 उस राज्य के शहर इतने बड़े कैसे बन गए?

### **गुरुवार, 16 सितम्बर**

एल्बर्ट पर्ल और मार्था इस साल बड़े बच्चों के साथ काम कर रहे हैं। उन्हें नक्शों का उपयोग करने में कठिनाई हो रही थी। सो जब शेष बच्चे सवाल पर काम करने लगे मैंने उन्हें नक्शा दिया जिसमें वे उत्तरी मध्य राज्यों की बाहरी रेखाएं बना सकें। प्राथमिक बच्चों ने कल का काम जारी रखा।

आज डॉक्टर साहब को बच्चों की जांच करने आना था। हमने स्वास्थ्य के घण्टे में उनके लिए तैयारी की। मैंने बच्चों को वह कहानी पढ़ कर सुनाई जिसमें एडमिरल बायर्ड एन्टार्टिका यात्रा के लिए साथियों को चुनते है। हमने नियमित शारीरिक जांच के महत्व की बात की। यह भी कि अगर किसी शारीरिक कमी का समय रहते पता चल जाता है तो क्या फायदा होता है। हमारी चर्चा खत्म हुई ही थी कि नर्स और डॉक्टर साहब आ पहुंचे। डॉक्टर साहब ने जांच की और नर्स ने सारी सूचनाएँ स्वास्थ्य कार्ड पर लिख डालीं। बीच-बीच में मैंने भी अपने अवलोकन बताएँ ताकि डॉक्टर साहब अधिक सावधानी से जांच लें और उनकी पुष्टि करें। मैं बच्चों के अभिभावकों के साथ इन शारीरिक कमियों पर काम करूंगी ताकि ये तकलीफें जल्द से जल्द दूर हो सकें।

आज बच्चों ने अपनी नई प्रगति पुस्तकें बनाना प्रारंभ किया वे उन्हें खूबसूरत बनाना चाहते थे, सो हमने किनारों के बेल-बूटे बनाने का अभ्यास किया।

स्कूल के बाद लड़कियाँ पड़ोस के घर में बचे हुए पर्दे सीने गईं, क्योंकि हमारी सिलाई मशीन खराब है। एन्ड्रू, गस, एलेक्स और मैं लकड़ी की दुकान पर गए ताकि लकड़ी का ऑर्डर दे दें और उनके सुझाव भी ले सकें। दुकान मालिक श्री ओक्स ने हिसाब जोड़ने वाली मशीन पर बिल बनाया जिसे देख लड़कों की रुचि जगी। लौटते समय एन्ड्रू ने कहा “सत्ताईस डॉलर बहुत होते हैं इतना पैसा इकट्ठा करने के लिए हमें कम से कम दो नाटक करने होंगे।” हम निकले उसके पहले मैं काम शुरू करने में लड़कियों की मदद कर रही थी। मैंने देखा कि लड़कों ने बाकायदा हाथ-मुंह धोए, बाल संवारे और अपने जूते चमकाए।

आज सुबह फ्रैंक एक भारी पत्थर दो मील तक उठाकर लाया। वह पत्थर जीवाश्मों से भरा था। बच्चों ने लैंस से उसे देखा और साफ दिखाई देने वाली कई आकृतियाँ एक दूसरे को दिखाई। हमारे संग्रहालय में कछुए के कुछ अंडे भी रखे हैं। आज उनमें चार अंडों में से कछुए उस वक्त निकले जब बच्चे उन्हें देख रहे थे। बच्चे भौंचक्के देखते रहे। जॉर्ज दो गिलहरियाँ लाया है, हम उनका भी अवलोकन कर रहे हैं।

### **सोमवार, 20 सितम्बर**

आज सुबह हम घूमने गए ताकि यह देख सकें कि बीज कैसे बिखरते हैं। विभिन्न प्रकार के बीजों की पहचान की और अलग-अलग तरह से फैलने वाले बीजों के नमूने अपने संग्रहालय के लिए लेते आए। स्वास्थ्य के घण्टे में हमने यह बात की कि घूमना आनंदायक क्यों बन जाता है। हमने गति, ताल, पैरों की स्थिति, वजन, शरीर की भंगिमा, आरामदेह जूते और आस-पास जो कुछ दिखाई दे उसका मज़ा लेने की क्षमता पर बात की। सुबह भ्रमण के समय रूथ के पैर दुखने लगे थे सो हमने उसके पैर की बाहरी रेखा खींची, और पाया कि दरअसल उसका जूता उसके पांव के लिए छोटा है आज रात सभी बच्चे यह जाँच खुद करेंगे।

आज दोपहर लड़कों ने तय किया कि वे जंगल में एक लट्टों का केबिन बनाएंगे। मैंने इसका खुलकर स्वागत किया, क्योंकि यह इस साल उनकी पहली योजना थी। छोटे बच्चों ने गेंद लपकने का खेल खेला। दोपहर का घण्टा आज सुख से और जल्द ही कट गया।

### **गुरुवार, 23 सितम्बर**

स्कूल के बाद वानिकी क्लब की बैठक हुई जिसमें हमने गर्मियों में

एकत्रित नमूने मंढ़ने का काम किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि बड़े लड़के केबिन स्कूल के बाद रुककर बनाने का इरादा त्याग वानिकी क्लब की बैठक में आ गए। रैल्फ के अपने नमूने नहीं थे सो उसने सोमवार को इकट्ठा किए गए बीजों को सजाने और मंढ़ने में मदद की। रूथ, कैथरीन, सोफिया और वर्ना कीड़ों की पहचान कर रही थीं। एल्बर्ट ने सभी कीट कोषों के लिए पिंजड़ा बनाना शुरू किया। रूथ ने चिड़ियों के पंखों का चार्ट बनाया। वॉरेन ने चौकोर टुकड़े काटे जिन पर वह घोंसले मंढ़ेगा।

### **शुक्रवार, 24 सितम्बर**

आज सुबह विज्ञान के कालांश में हमने यह चर्चा की कि जब कोई बीज मिट्टी में गिरता है तो क्या होता है? पेड़ बीज कैसे बनाते हैं और फूलों का क्या उपयोग है? हमने परागण और प्रकाश संश्लेषण पर बातचीत की। मेरी और हेलन वृक्षों के जीवन-चक्र का एक चार्ट बनाएंगी।

लड़के शारीरिक शिक्षा के घण्टे में अपना केबिन बनाना चाहते हैं, सो उन्होंने मुझसे अनुमति माँगी। मैंने कहा यह निर्णय लड़कियाँ लेगी क्योंकि खेल तो उनका ही बिगड़ेगा। लड़कियों का कहना था कि वे न्याय करना चाहती हैं, पर लड़कों को भी तो सामूहिक खेल की दरकार है। आखिरकार इसका समाधान निकाल लिया गया। लड़के सुबह शारीरिक शिक्षा के घण्टे में तब तक अपना केबिन बनाने का काम करेंगे जब तक काम सही तरह शुरू नहीं हो जाता। इस बीच लड़कियाँ छोटे बच्चों के साथ खेलेंगी। पर दोपहर को सभी बच्चे पहले की ही तरह साथ-साथ खेलेंगे। इन लड़के-लड़कियों को समस्या पर यो शांतिपूर्वक विचार कर विवेकपूर्ण समाधान तलाशते देखना मुझे बेहद अच्छा लगा। यह सच है कि हमें इस साल फिर से शुरूआत करनी पड़ी है, पर बिल्कुल शुन्य से नहीं।

### **शनिवार, 25 सितम्बर**

लड़के और कुछ लड़कियाँ आज भी स्कूल आए ताकि खेल घर पर काम कर सकें। काम सच में बड़ा है और हमें उसकी नींव बनाने में ही काफी समय लग गया। पूरी सुबह और आधी दोपहर तो हमें पत्थरों से नींव बनाने और उसे सीध में लाने में ही लग गई। हमने चारों कोनों पर दोहरे खम्भे गाड़े उपरी बल्ले लगाए और बीच का सहारा देने वाला खम्भा लगाया। बच्चों ने घर बनाने के विभिन्न चरणों के बारे में सीखा और तलमापी का इस्तेमाल सीखा। एन्ड्रू का कहना था कि उसे पता ही न था कि एक खाती को इतनी मेहनत करनी पड़ती है।

### **बुधवार, 29 सितम्बर**

सामाजिक अध्ययन के घण्टे में प्राथमिक वर्ग के बड़े लड़के खेल घर



बनाने के लिए लकड़ी के तख्ते ठोकते हैं और छोटे लड़के संतरों की पेटियों से फर्नीचर बना रहे हैं। लड़कियाँ लीरियों की दरियां बुन रही हैं, पालने का विछौना बना रहीं हैं अल्मारियों के लिये पर्दे और कुर्सियों के लिए कुशन और गिलाफ तैयार कर रही हैं। मैं उनके साथ तकरीबन आधा घन्टा बिताती हूँ ताकि क्या-क्या करना है यह स्पष्ट हो जाए और तब मैं बड़े बच्चों के साथ काम करती हूँ। अमूमन वर्ना छोटे बच्चों की जिम्मेदारी ले लेती है। प्राथमिक वर्ग के बड़े लड़के भी छोटे लड़कों पर नज़र रखते हैं।

इस बीच बड़े बच्चे जानकारियाँ इकट्ठा करते हैं, जिस पर हम बाद में चर्चा करते हैं। फिलहाल हम अपनी तीसरी समस्या पर काम कर रहे हैं, वह यह कि उत्तर-मध्य के राज्यों में मक्की व गेहूँ की इतनी फसल कैसे होती है। बच्चों की विशेष रुचि उन नई मशीनों में है जिनसे गेहूँ की फसल काटी जाती है।

आज हमने स्वास्थ्य के घण्टे में शरीर की भंगिमा पर बात की हमने बैठने, खड़े होने और चलने के तौर-तरीकों पर बातचीत की। हमने सही भंगिमाओं का अभ्यास किया और एक-दूसरे को सुझाव दिए। समेटिस बच्चों की भंगिमाएं गलत हैं। कैथरीन ने बच्चों से कहा कि अगर वे उसे उँकड़ू, बैठे या झुकता देखें तो उसे टोक कर याद दिलाएँ। स्कूल के बाद लड़कियों ने सिलाई क्लब को फिर से व्यवस्थित किया, सिर्फ पांच ही लड़कियां मौजूद थी। अधिकांश लड़कियों को सीना पसन्द नहीं आता। उन्होंने अपने पदाधिकारी चुने और गुरुवार को अपनी बैठक का दिन चुना और कुछ आगामी सत्रों की योजना बनाई।

### **शुक्रवार, 1 अक्टूबर**

स्कूल के बाद वानिकी क्लब की बैठक थी। केवल रैल्फ वॉरेन, सोफिया, कैथरीन और रूथ ही रुके इस साल हमारे क्लबों में सदस्यता बेहद कम है। शायद बच्चों को लगता है कि क्लब भी एक बला है। फिर भी उन्हें इस तरह की गतिविधियों की कितनी ज़रूरत है। जो बच्चे बैठक के लिए रुके उन्हें बड़ा मज़ा आया क्योंकि वे सच में कुछ करना चाहते थे। रैल्फ टहनियों के नमूनों का संकलन तैयार कर रहा है।

### **शनिवार, 2 अक्टूबर**

आज मेरे पिता हमारी मदद करने आए। उन्होंने चारों बड़ों लड़कों को बताया कि खेल घर के किनारे वाले लट्टों और बीच का खम्भा कैसे लगाया जाएगा। सभी काम कर सकें इतना काम भी नहीं था, सो बाकि बच्चों ने खेल मैदान की सफाई की और सूखे झाड़-झंखाड़ और कचरे को जलाया। बड़े लड़कों को मेरी पिता के साथ काम करना पसन्द आया। दरअसल मैंने उन्हें कल समझाया था कि छोटे बच्चों से छत नहीं बन सकेगी और उन्हें बड़े

लड़कों की मदद चाहिए होगी। उनका जबाव था “ठीक है, हम कर देंगे।”

### **मंगलवार, 5 अक्टूबर**

आज फ्रैंक मुस्कराता हुआ आया और उसने जानना चाहा कि क्या वह खेल घर में मदद कर सकता है। चारों बड़े लड़कों ने तुरन्त नाप-जोख लिया और तख्तों को चीरना शुरू किया ताकि छत बनाई जा सके। नन्हे बच्चों ने अब तक खेल घर बनाने के अपने अनुभवों को दर्ज करने सम्बन्धी किताब के बारे में कुछ भी नहीं कहा है। सो आज मैंने खुद यह बात छेड़ी। केवल एल्बर्ट ने कहा कि वह लिखना नहीं चाहेगा। पर जब बच्चों ने किताबों की जिल्द के लिए रंग-बिरंगे कागज़ चुनना शुरू किया तो उसका मन बदल गया। पांच-सात साल वाले बच्चों ने चित्र बनाए जिसमें यह दर्शाया कि हमने खेल-घर का स्थान कैसे साफ किया। जॉयस ने अपने चित्र के नीचे लिखा हम एक घर बनाएंगे। बाकि बच्चों ने खेल घर बनाने की योजना की बात पर अपनी-अपनी मौलिक कहानियाँ लिखीं।

### **बुधवार, 6 अक्टूबर**

लड़के सुबह-सबेरे, पूरी तरह चटक हो खेल-घर में मदद करने आ पहुंचे। वे अपने लट्ठे और लट्ठे केबिन की बात मानो बिसरा ही चुके हैं और छोटे बच्चों के खेल-घर में समूची ऊर्जा झोंक रहे हैं।

इस बार बच्चे कठपुतली प्रदर्शन के लिए रॉबिन हुड का नाटक तैयार करना चाहते हैं। वे मरे आस-पास घिर आए और अच्छा समय बिताया। रैल्फ मेरी कोहनी के पास रखी कुर्सी पर जम गया। उसे कहानी बेहद पसन्द आई है।

जब छोटे बच्चे सुस्ता रहे थे तो मैंने अंकल की कहानी पढ़ कर सुनाई। उन्होंने एक कविता भी सीखी। जो समय बचा उसमें रैल्फ, मार्था और एलिस ने अपनी कहानियाँ सुनाईं। एल्बर्ट ने जो सुनाया वह तो मानो कविता ही थी। स्कूल के अखबार के लिए बच्चों की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ लिख ली जाएंगी।

### **बुधवार, 13 अक्टूबर**

आज हमने कला का घण्टा रखा जिसमें बच्चों ने चारकोल से पेड़ों के स्कैच बनाए। पर्ल और हिल लड़के चित्र बनाने के लिए चारकोल का इस्तेमाल बाखूबी समझ गए हैं।

बच्चों ने ऑइलक्लॉथ पर दुनिया का नक्शा उतार लिया है यह नौ फीट चौड़ा कपड़ा है। बच्चों ने उसे आज कीलों के सहारे एक लकड़ी के तख्ते पर ठोका और दीवार पर टांग दिया।

बच्चे तमाम नए खेल सीख रहे हैं और शारीरिक शिक्षा का घण्टा

खुशी-खुशी गुज़रता है।

### **गुरुवार, 14 अक्टूबर**

बच्चे कमरे के लिए जो चीज़ें बना रहे हैं उसमें काफी समय लग रहा है। उन्होंने एक पूरा दिन चाहा जिसमें वे इन चीज़ों को तैयार कर लें और अपनी कॉपियाँ भी व्यवस्थित कर लें। हरेक ने उन कामों की सूची बनाई जो उसे करने थे। तब कुछ सामाजिक अध्ययन पर काम करने लगे। कुछ पठन का बचा हुआ काम सलटाने में जुट गए। कुछ लड़कियों ने पर्दे किए। दो लड़कों ने रसोई की अल्मारी की टांडों पर मोमजामा लगाया। जॉर्ज ने तेल के स्टोव को रंगा। एलैक्स, गस और एन्ड्रू खेलघर के बच्चे काम में जुटे। कैथरीन और सोफिया ने हॉल के परदे पर चित्र बनाए। और मैंने लगभग पूरा दिन छोटे बच्चों के साथ, पठन, वर्तनी और गणित में उनकी मदद करते बिताया।

स्कूल के बाद बच्चे वानिकी क्लब के लिए रुके और यों पुराने दिनों की याद ताज़ा हो आई। बच्चे अब भी अपने नमूने मढ़ रहे हैं।

### **शुक्रवार, 15 अक्टूबर**

कल का कार्यक्रम इतना सफल रहा कि हमने वही तरीका आज भी अपनाया क्योंकि अब भी तमाम काम पूरी तरह समेटे नहीं जा सके थे। लकड़ी कम्पनी के मालिक श्री ओक्स इस दिशा से जा रहे थे, सो वे खेल-घर की प्रगति देखने रुके। वे हमारे कक्ष में दसक मिनट चुपचाप अवलोकन करते रहे, तब जाकर हमें पता चला कि वे आए हैं। उन्होंने जो कुछ देखा वह उन्हें इतना भाया कि हमारे काम में बाधा डालना उन्हें उचित नहीं लगा। वे मुस्कुराए और बोले “बढ़िया अनुशासन है।” इस टिप्पणी ने मुझे खुश कर दिया, लगा पिछले बसंत की हमारी भावना लौट आई है। यह भावना क्रमशः फैल भी रही है क्योंकि आज शाम सिलाई क्लब में हाई स्कूल की तीन लड़कियाँ आ जुड़ीं। हमने सीयर्स व रोबक कम्पनी की सूची को ध्यान से देखा ताकि फ्रॉकों के कपड़े के नमूने मंगवा सकें। लड़कियाँ अपने सिलाई के डब्बों की सामग्रियाँ इकट्ठा करने लगी हैं।

### **शनिवार, 16 अक्टूबर**

आज सुबह मैं कुछ लड़कियों को वेस्टन ले गई ताकि फ्रॉकों के नमूने-पैटर्न चुन सकें। एक बार फिर मुझे बच्चों के अनुभवों की सीमा का अहसास हुआ। उन्होंने आज से पहले स्वचालित सीढ़ियाँ या घूमने वाले दरवाज़े नहीं देखे थे। वे सब कुछ देखने के लिए बार-बार रुकतीं और ढेरों सवाल पूछती गईं। जो महिला हमें नमूने दिखा रही थी वह बच्चों को समझती भी होगी, क्योंकि उसने बड़े धीरज से हमारी मदद की।

## सोमवार, 18 अक्टूबर

फ्रैंक जैसे ही स्कूल पहुंचा उसने तुरन्त जानना चाहा कि वह क्या कर सकता है। वह अगले दो सप्ताह के लिए स्कूल का जनरल मैनेजर है, सो मैंने उसे वह सब दिखाया जिस पर उसे नज़र रखनी होगी। हमारी दोपहर पर्दे टाँगने और कमरे को व्यवस्थित करने में बीती। लड़कियाँ हॉल के स्क्रीन-पर्दे को पूरा करना चाहती थीं। सो वे शाम को रुकीं और उन्होंने मलमल पर क्रेयॉन से चित्र बनाए और उन्हें स्क्रीन के खँचे पर लगाया। हम साढ़े छह बजे तक स्कूल में थे। मैं समझदार और सहृदय माताओं के लिए ईश्वर का आभार मानती हूँ। मेरे पिता ने आज छत बनाने में लड़कों की मदद की। काम इतना कठिन है कि वे अकेले उसे नहीं कर सकते। फ्रैंक ने उन्हें चुपचाप एक सेब दिया, ठीक उसी तरह जैसे वह मुझे भी अक्सर इतना दिया करता है। मेरे पिता के साथ काम करने पर रैल्फ इतना खुश हुआ कि उसने बाद में रुककर कैथरीन सोफिया और रूथ की फ्रेम में मलमल के पर्दे ठोकने में मदद की।

## मंगलवार, 19 अक्टूबर

आज सुबह जब लड़कियाँ आईं, तो वे आलोचनात्मक नज़र से कमरे को देख यह जाँचने लगीं कि सब कुछ ठीक-ठाक है या नहीं। कमरा बड़ा अरामदेह लग रहा है। अलाव के पास हमारा कठपुतली मंच है, जिसका उपयोग फिलहाल काम करने की मेज़ के रूप में किया जा रहा है। उस पर भूरा लाइनोलियम लगा है। उसके पैर भूरे, संतरी व क्रीम रंग के छापे वाली झालर से ढके हैं। इस मेज़ के नीचे हम वह सामग्री रख देते हैं जिस पर काम चल रहा है। जैसे संतरों की पेटियाँ और लकड़ी के फंटे व तख्ते। कमरे के अगले भाग में एक ओर हमारा पियानो है, जो दीवार से कुछ हटकर रखा गया है। इससे हमारा संग्रहालय का कोना बन जाता है। पियानो के ऊपर एड़ काले बड़े कटोरे में पतझड़ की रंग-बिरंगी पत्तियाँ हैं। कमरे के सामने ही दो चित्र-फलक भी हैं जो अपने इस्तेमाल होते रहने का प्रमाण भी देते हैं। कमरे की दीवारों पर ने तमाम चित्र टंगे हैं, जो बच्चों ने बनाए हैं। काले सूचना पट्ट पर चारकोल से बने पेड़ों के चित्र हैं जिन्हें तरतीब से मंदा भी गया है। पिछले साल एना व सोफिया ने जो दीवार लटकनें बनाई थीं, वे भी दीवार पर टंगी हैं। कमरे के एक ओर खिड़कियों के नीचे सामाजिक अध्ययन की समस्याओं और शब्दावली की चार्ट और उत्तर मध्य राज्यों के कुछ नक्शे भी हैं। रसोई घर के आलों पर भूरे, हल्के भूरे व क्रीम चौखटों वाला मोमजामा बिछा है। नया स्क्रीन, जिस पर पतझड़ सर्दियों व बसंत के दृश्य अंकित हैं, हमारी रसोई और कपड़े टाँगने वाले कक्ष को जुदा करता है। नारंगी, हरी व क्रीम धारियों के जाली वाले पर्दे बुझे-बुझे रंगहीन दिन में भी समूचे कमरे में

“ ”

एक गुलाबी आभा बिखेरते हैं। लड़कियाँ यह सब देख संतोष की साँस भरती हैं और कहती हैं “कितना अच्छा लग रहा है ना मिस वेबर।”

### **बुधवार, 20 अक्टूबर**

स्कूल के बाद प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को ईरीन ने अपने जन्मदिन की दावत में बुलाया था। उसकी मित्र श्रीमती टेमसे और मैं बच्चों को लेकर पहाड़ी के बाद जंगल में उनके पत्थर से बने खूबसूरत से घर तक ले गए। हमने वहां आइसक्रीम और केक खाया। अल्पाहर के बाद हम सब जंगल में घूमने गए। लौटने पर हम फर्श पर गोलधरे में बैठे और गीत गाए। विलियम ने कहा कि वह ‘एमेरिलिस’ के तीनों भागों को गाना चाहता है। इस पर मैं बोली यह कैसे होगा, बड़े बच्चे तो हैं ही नहीं। पर वे गा सके। उन्हें बड़े बच्चों की मदद की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। मैं भौंचक थी, श्रीमती रमसे भी। ज़ाहिर है बच्चों की क्षमताओं के बारे में लगातार नई-नई बातों का पता चलता रहता है।

घर लौटते समय भी बड़ा मज़ा आया। मेरी गाड़ी में एल्बर्ट, फ्लोरेंस जॉयस, वॉल्टर, विलियम, एरिक, पर्ल और एलिज़ाबेथ थे। चाँद निकल आया था और हमारा ध्यान अपनी ओर खींच रहा था। विलियम ने जानना चाहा कि क्या चाँद भी गर्म होता है। एल्बर्ट को परावर्तित प्रकाश के बारे में पता था। उसने यह भी बताया कि चंदा मामा के चेहरे पर पहाड़ और गड्ढे भी हैं। उन्हे चाँद पर बात कर मज़ा आया जब चाँद पर कुछ बादल आ गए तो फ्लोरेंस बोली “देखिए चंदा मामा ने टोपी पहन ली है।” अरे, अब तो उसने मूँछें लगा ली हैं। “अब वह जेल में बन्द है।” “अब तांक-झांक कर रहा है।” एल्बर्ट और फ्लोरेंस को आखिर में उतारना था। एरिक को उतारने के बाद एल्बर्ट बोला कि चलो गाएँ और देखें कि थॉमसन परिवार के घर से हमारा घर कितने गीत दूर है। हमने पाया कि यह दूरी तीन गीतों की थी।

### **शुक्रवार, 22 अक्टूबर**

आज स्वास्थ्य के घण्टे में नियमित नहाने पर बात हुई। हमारे समूह के कई बच्चों को यह सीखने की ज़रूरत है। इन बच्चों को नहाने का पानी दूर से लाना पड़ता है, सो इन बच्चों के लिए नहाने का मतलब होता है श्रम। हमने स्पन्ज से नहाने पर बात की। यह समझा कि पूरा शरीर पानी में न डुबोया जाए तो भी उसे साफ किया जा सकता है।

आज शाम सिलाई क्लब की बैठक में चौदह सदस्य उपस्थित थे। जिसमें आस-पास की लड़कियाँ भी शामिल हैं। सीयर्स व रोबक के नमूने आ चुके थे। हमने कपड़े की गुणवत्ता और उनकी कीमतों पर बात की। हमने उन्हें रगड़ कर देखा कि कहीं मांड तो नहीं लगी है, तब उन्हें धोया ताकि यह भी

जांच ले कि कहीं छापों का रंग तो नहीं निकलता और कपड़ा कितना सिकुड़ता है। फिर हमने हमारे चमड़ी और बालों के रंग के हिसाब से कपड़े का कौन सा रंग उचित होगा, उस पर बात की। समय खत्म हुआ उसके पहले हम अपना ऑर्डर का फॉर्म और मनी ऑर्डर के पर्चे भर चुके थे ताकि कपड़ा मंगवाया जा सके।

### **शनिवार, 23 अक्टूबर**

आज मैं उन लड़कियों को वेस्टन ले गई जो पिछली बार नहीं जा सकी थीं। उन्होंने भी ब्लाउजों और फ्रॉकों के नमूने चुन लिए।

### **सोमवार, 25 अक्टूबर**

आज सामाजिक अध्ययन के कालांश में हमने उत्तर मध्य के राज्यों की तुलना न्यू जर्सी और उत्तर पूर्वी राज्यों से की। बच्चों ने नौ अंतर पहचाने। बच्चों ने उत्तर मध्य राज्यों पर अच्छी कितबियाएँ तैयार की हैं और उसमें जो कुछ लिखा है, उसे वे ठीक से समझे भी हैं।

### **बुधवार, 27 अक्टूबर**

आज माताओं के साथ इस सत्र की पहली बैठक हुई। स्कूल के बाद तीन समितियों के बच्चे रुके ताकि बैठक में मदद कर सकें। पहली समिति ने उन छोटे बच्चों के लिए चाय नाश्ता बनाया जिन्हें अपनी माताओं के लिए रुकना पड़ा। दूसरी समिति ने इन बच्चों को खेल व गतिविधियों में व्यस्त रखा। तीसरी समिति ने माताओं की सुविधा का ख्याल और उन्हें स्कूल के काम के बारे में बताया। आठ माताएं आई थीं। जब रैल्फ श्रीमती थॉमस, श्रीमती विलियम्स और श्रीमती हिल को हमारे काम के बारे में बता रहा था तो इनेज़ की नज़र उस पर गड़ी थी। वह बाद में बोली “रैल्फ यह सब करेगा यह उम्मीद तो मैंने कभी उससे नहीं की थी।”

### **सोमवार, 1 नवम्बर**

जब से हमारी शाला में करंट इवेन्टस व “माय वीकली रीडर” आने लगा है बच्चों की रुचि दुनिया की घटनाओं में बढ़ी है। हम जिन स्थानों के बारे में पढ़ रहे हैं, वे उनको नक्शे पर चिन्हित करते जा रहे हैं। आज हेलेन ने चीन और जापान की सीमाएं चिन्हित की और हमें समझाई। फिलिपीन्स जापान के इतना पास है कि हमारी चर्चा अमरीका और फिलीपीन्स के रिश्तों की ओर बढ़ी। बच्चों को लगा कि अच्छा हो अगर हम नक्शे पर उन स्थानों पर संख्याएं लिख दें जिनके बारे में हम जान रहे हैं। तब एक कितबिया बना लें जिसमें नक्शे की प्रत्येक संख्या की कहानी हो।

### **गुरुवार, 4 नवम्बर**

इस सप्ताह लड़कों ने खेल-घर की छत पर तारकोल वाला कागज़ विपकाया ताकि अंदर पानी न रिसे साथ ही खिड़कियों पर जाली भी लगाई। आज फ्रैंक और जॉर्ज ने खेलघर का फर्श लगाने में एन्ड्रू की मदद की। उन्होंने दरवाज़ा भी लगा दिया वॉल्टर और विलियम ने सभी लट्टों को मज़बूती से बांधा और तब लड़कों ने उसे रंगना शुरू किया। यह सप्ताह शांति से गुज़रा है। सभी बच्चे विभिन्न कामों और खेलों में व्यस्त रहे। रैल्फ सफल अध्यक्ष सिद्ध हो रहा है बच्चे उसकी बात सुनते हैं। मेरी कुशल है। वह हर दिन छोटे बच्चों को कुछ न कुछ पढ़ कर सुनाती है और उन्हें कविताएं सिखा रही है। प्राथमिक स्तर के बच्चे उस मिट्टी के खिलौने बनाते हैं जो हम हिल परिवार के घर के पास की नहर से लाए थे। वे चित्र-फलक का उपयोग कर चित्र भी बना रहे हैं। वे अपनी कहानियों को नाटकीय रूप भी देते हैं। सप्ताह में दो बार वे कविताएं सुनते-सुनाते हैं। वे अपने खेलघर पर नज़र रखे हुए हैं और आतुरता से उस दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जब वह तैयार हो जाएगा। इन नन्हो पर पिछले साल जितना ध्यान दिया गया था, उससे अधिक ध्यान देना इस बार सम्भव हो रहा है।

### **शुक्रवार, 5 नवम्बर**

आज दोपहर हुई सहायक क्लब की बैठक बड़ी रोचक रही। बच्चों का कहना था यद्यपि वे कोशिश तो यही करते हैं कि नाहक बोल कर वे दूसरों के काम में बाधा न डालें फिर भी कक्षा में काफी शोर रहता है। स्थिति सुधारने के बारे में उन्होंने कई सुझाव दिए। प्राथमिक कक्षा में नए आए बच्चे जब मिट्टी कूटते हैं तब काफी शोर मचता है। सुझाया यह गया कि मेरी उन्हें मिट्टी तैयार करना सिखाए ताकि शोर कम हो। यह भी तय किया गया कि उनकी मेज़ कुछ दूर सरका दी जाए ताकि अन्य कामों में लगे बच्चे परेशान न हों। बच्चों ने पेंसिलें छीलने के घण्टे भी तय कर दिए ताकि यह गतिविधि पूरे दिन न चले। रूथ ने सबको बताया कि कम शोर किए मेजें कैसे खोली और बन्द की जा सकती हैं। फ्रैंक को उस टोली का अध्यक्ष चुना गया जो कुर्सियों को तेल पिलाए ताकि वे चरमरा कर आवाज़ न करें।

स्कूल के बाद सिलाई क्लब मिला। हाई स्कूल के दो लड़कियाँ फ्रॉक बनाने का कपड़ा लाई थीं। मार्था और पर्ल ने गमलों की लटकनें बनाना शुरू किया क्योंकि उन्होंने पहले कभी सिलाई नहीं की थी।

### **सोमवार, 8 नवम्बर**

आज सुबह मुझे बाज़ार से खेलघर के लिए और रंग खरीदना था इससे मुझे देर हो गई। मैं समझ गई कि स्कूल शुरू होने से पहले सारे काम मैं कर नहीं सकूंगी। रैल्फ और एडवर्ड बाहर खड़े थे, मैंने उन्हें हाँक लगाई।

“बच्चों, आज क्या अलाव तुम लोग जला लोगे ताकि स्कूल समय पर शुरू हो सके। मुझे ढेरों दूसरे काम भी करने हैं।” एडवर्ड कुछ बड़बड़ाया, पर उसने आकर राख साफ की। तब बुदबुदाया “मैंने अपने हिस्से का काम कर दिया है।” और बाहर निकल गया। रैल्फ अंदर आया ही नहीं। दूसरे लड़कों के आ पहुंचने पर रैल्फ ने राय दी “मिस वेबर के लिए लकड़ियाँ न जलाना, उन्हें खुद करने दो।” इसके बावजूद पांच लड़के आए और उन्होंने आग जला दी। इस सब के कारण स्कूल दस मिनट देर से शुरू हुआ। पर यह कमी हमने दोपहरी के घण्टे में दस मिनट की कटौती कर पूरी कर ली। बड़े लड़कों को बात पसंद नहीं आई। पर मैंने भी इस मसले को अनदेखा कर दिया। संभव है यह रुख अस्थाई हो।

### **मंगलवार, 9 नवम्बर**

लड़के आज खुश थे, सो दोपहर तक का समय चैन से गुज़रा। कुछ बच्चे अपना खाना खाने खेलघर में बैठे। कुछ ही देर में जोसेफ रोता-रोता बाहर आया उसे फ्रैंक ने जाली की तरफ धकिया दिया था, जिसका कोना उखड़ आया। फ्रैंक ने कहा कि जोसेफ ने जानबूझकर किया है। पर कार्टराइट और वॉरेन का कहना था कि फ्रैंक झूठ बोल रहा है। मैंने यथासंभव धीरज भरी आवाज़ में फ्रैंक से कहा कि उसे जाली ठीक करनी होगी और कुछ समय तक वह खेलघर में ब्रैठ खाना नहीं खाएगा। मेरे जाने के बाद फ्रैंक और रैल्फ ने खेलघर पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। मुझे बेहद गुस्सा आया और मैं आपा खो बैठी। यह तो याद नहीं आता कि मैंने क्या-क्या कहा पर उम्मीद यही लगाए बैठी हूँ कि दूसरों को भी वह सब भूल गया होगा। जब मैं शांत हुई तो अपने इर्दगिर्द स्मृत और चकित बच्चों को पाया। शेष बच्चों को खेलने भेज मैंने फ्रैंक और रैल्फ को बिठाकर बात की। मैंने उनसे माफी मांगी कि मैं नाराज़ हो गई थी और तब जानना चाहा कि हमें क्या करना चाहिए। लड़कों ने कहा कि वे तोड़फोड़ की मरम्मत कर देंगे। शेष दोपहर शांति से कटी। पर मैं अपनी भूल से परेशान रही। दोपहर चुपचाप और उदास थी। अब पलटकर घटनाक्रम पर नज़र डाल रही हूँ तो लगता है कि मैंने लड़कों के आचरण को अकृतज्ञता मान लिया था। लड़के जानबूझकर अकृतज्ञता नहीं दर्शाते। उनका जो आचरण है उसकी वजह कुछ और ही है।

### **बुधवार, 10 नवम्बर**

शिकार के मौसम का आज पहला दिन है। श्री जोन्स रैल्फ को आज अपने साथ ले गए हैं। रैल्फ की अनुपस्थिति में फ्रैंक को दूसरे किसी से सहारा नहीं मिला सो आज गड़बड़ नहीं हुई। वह चुपचाप रहा पर उसकी चुप्पी विद्रोह की चुप्पी नहीं थी। उसे जो काम मैंने बताए उसने चुपचाप कर डाले।



कई बच्चों ने बताया कि कल शाम घर लौटते समय फ्रैंक चीखता रहा था कि अगर मैंने फिर कभी उसके घर जाने की जुर्रत की वह मेरी गाड़ी के सभी पहियों पर गोली चलाएगा। काश कोई तरीका होता जिससे मुझे वह बात पता चल जाती जो उसे परेशान कर रही है। समूह का नज़रिया सहानुभूतिपूर्ण है। जानती हूँ कि रैल्फ को किसी भी बात का भरोसा दिलाना असम्भव है।

### **शुक्रवार, 12 नवम्बर**

आज सुबह मैंने रैल्फ से बाल्टी भर कोयले लाने को कहा। लौटने पर उसने पूछा “मिस वेबर क्या मैं खाली समय में कोयला घर साफ कर दूँ। कोयले निकालने हो तो उसमें घुसा ही नहीं जाता।” दोपहर खाने के पहले जब हम हाथ धो रहे तो फ्रैंक लाइन से हट गया ताकि लड़कियाँ पहले हाथ धो सकें। तब उसने मुझे भी कहा “आप भी हाथ धों लें, मिस वेबर, मैं इंतजार कर सकता हूँ।” आज दोपहर उसने पूछा “उस नन्हे घर पर हम फिर से काम कब शुरू करेंगे?”

मैं फिर से खुश हो चली थी कि जोन्स परिवार की दो सबसे बड़े लड़कियाँ मिलने आ गईं। वे जब आई तो हम बाहर खेल रहे थे। फिर क्या था मार्था और रैल्फ शान दिखाने में लग गए, इससे सबका खेल खराब हो गया। जोन्स लड़कियों को उनकी करतबों में मज़ा आया वे हंस-हंस कर बेहाल हो गईं। रैल्फ ने कोयला घर की सफाई शुरू कर दी थी। पर छुट्टी होते ही वह अपनी बहनों के साथ घर चलता बना और कोठार में रखी लकड़ियों और बक्सों को बाहर छोड़ गया। यह सब सोमवार तक बाहर नहीं छोड़ा जा सकता था, सो जो लड़कियाँ स्कूल में छुट्टी के बाद रुकी हुई थीं, उन्हें ही अटाला वापस रखना पड़ा।

श्रीमती ओलसेउस्की स्कूल के बाद मिलने आईं और प्रिन्लैक परिवार की शिकायत करने लगीं। उन्होंने कहा कि पिछले सप्ताह भर से वे असह्य गाली-गलौज करते रहे हैं और बेहद बुरा बर्ताव भी। उन्होंने धमकी दी कि वे चली जाएंगी। एक और पड़ोसी भी कह रहा है कि अगर यह सब जारी रहा तो वह पुलिस में शिकायत करेगा।

### **शनिवार, 13 नवम्बर**

आज मैंने पूरी गम्भीरता से सोच-विचार किया। इस साल स्कूल की हमारी कई समस्याएं हमारे आस-पास पड़ोस की अधिक व्यापक समस्याओं से उपजी हैं। लगता यह है कि अगर स्कूल को अपने बच्चों के स्कूली जीवन में कोई वांछनीय बदलाव लाना है तो उसे समुदाय में भी बदलाव लाना होगा।

एक एकाकी दूर-दराज स्थित एकल शिक्षक विद्यालय की भूमिका

दरअसल है क्या? उसका पहला और मेरी नज़र में सबसे महत्वपूर्ण काम है पाठ्यचर्चा को ऐसी शकल देना कि उससे वहां पढ़ने आने वाले बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। ऐसा कर पाने के लिए ज़रूरी होगा कि स्कूल युवाओं और वयस्कों की आवश्यकताओं को भी पूरा करे। इन आवश्यकताओं में स्वास्थ्य, मनोरंजन और अध्ययन के अवसर, व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्वास्थ्य के बेहतर मानदण्ड, बेहतर घरेलू वित्त व्यवस्था व कृषि के नए उपाय सीखने के अवसर, जीवन में आध्यात्मिक ताज़गी व सौंदर्य, प्रस्तुत सभी समस्याओं का समाधान तलाशने के लिए परस्पर सहकार आदि शामिल हैं।

ज़ाहिर है कि ये तमाम काम स्कूल अकेले नहीं कर सकता, पर आस-पड़ौस के जीवन को सुधारने के लिए जो कुछ वह कर सकता है उसे करना चाहिए, क्योंकि बाहरी ताकतें इतनी सशक्त होती हैं कि वे स्कूल के काम में बाधक बन सकती हैं। फिर मुझे शुरूआत भला कहां से करनी चाहिए?

युवा वर्ग बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम के प्रति असंवेदनशील है, इसलिए क्योंकि उसे इसकी समझ ही नहीं है। वे, खासकर रैल्फ की बहनें इस छोटी सी शाला पर छींटाकशी करती रहती हैं। इन नवयुवक-युवतियों को मनोरंजन का एक ही साधन पता है, वह है सड़कों पर डोलना और एक-दूसरे से मसखरी करना। अगर स्कूल में हम सामाजिक अवसर पैदा कर आपस में मिल सकें तो सम्भवतः उनका नज़रिया भी बदले। और कुछ नहीं तो इस बिन्दु से शुरूआत तो की ही जा सकती है।

### **शुरूवार 18 नवम्बर**

आज शाला भवन में युवाओं के साथ पहल बैठक आयोजित की गई। इसमें दस युवा आए थे। मैंने उन्हें तीन लोकनृत्य सिखाए। वे सामाजिक नृत्य भी सीखना चाहते हैं। हमने एक समिति चुनी जो विकट्रोला रिकॉर्ड व सूइयों की व्यवस्था की। सभी खुश नज़र आ रहे थे, यद्यपि शोरगुल काफी मचा।

### **बुधवार, 24 नवम्बर**

पिछले तीन दिन में हमने पूर्व के काम सलटाने में लगाए। लड़कों ने खेलघर की रंगाई पूरी की। छोटे बच्चों ने फर्श पर लाइनोलियम की दरी लगाई, चिन्दियों वाली दो दरियां बिछाईं, संतरों के बक्सों से बनी चार कुर्सिया रखीं, जिन पर कुशन हैं, गुड़ियों का एक पालना, एक संदूक, एक अल्मारी भी सजा दी गई। खेलघर बनाने के बारे में वे जो कितबियाएँ तैयार कर रहे थे, पूरी हो चुकी हैं, और अब कक्षा में प्रदर्शित हैं। बड़े बच्चों ने उत्तर-पूर्वी राज्यों की किताबें तैयार कर ली हैं। उन्होंने अपना काफी समय अखबार के लिए लेख लिखने और चित्र बनाने में भी लगाया है।

### **सोमवार, 29 नवम्बर**

आज की सुबह बंसत की सुबह सी थी। कल रात गर्म बरसात हुई और दलदल के झिंगुर गुनगुनाने लगे। मेरे चेहरे पर गर्म हवा का स्पर्श हुआ और मेरी आँखे खुल गई, मैं जग चुकी थी, तरों-ताजा और काम के लिए तैयार। छुट्टियाँ सुखद होती हैं। शायद यही कारण था कि हमारा दिन इतना अच्छा गुज़रा। एरिक ने पहली बार शर्माया सा 'सुप्रभात' कहा। सुबह के काम में कई बच्चों ने स्वेच्छा से हाथ बंटाय़ा।

छोटे बच्चों ने आज लगभग दो घण्टे खेलघर में बिताए। उनका सामूहिक रूप से खेलना बेहद ज़रूरी है, क्योंकि ये बच्चे इतनी दूर-दूर रहते हैं कि स्कूल के बाद एक-दूसरे से मिलने का उन्हें कोई मौका ही नहीं मिलता। फ्लोरेंस मां बनी और रिचर्ड पिता। जॉयस और एलिज़ाबेथ बड़ी बहनें। एरिक जंगलो में स्थित एक दुकान वाला बना। इरीन मिलने आई कोई रिश्तेदार बनी। उन्होंने गुड़िया के कपड़े धोए और उन्हें एक रस्सी पर सुखाया। रिचर्ड पानी लेकर आया। दोपहर को बच्चे मेरे पास आए और कहने लगे कि उन्हें एक स्टोव, थालियां और सफाई करने की चीज़ें चाहिए। हम जो चीज़ें खुद बना सकते हैं, बनाएंगे और बाकि स्कूल कोष से खरीद देंगे। स्कूल के बाद वॉरेन, रैल्फ और मैं मिले ताकि अखबार की तैयारी कर लें। लड़कों ने अच्छा संपादकीय लिखा। काम खत्म हुआ तब रैल्फ ने कहा कि मैं बच्चों की कविताएं पढ़ूँ। सो हम तीनों ने हमारे नन्हे समूह के रचनात्मक प्रयासों को पढ़ा और उनका आनंद लिया।

## अध्याय 5

### हमें रचनात्मक शक्ति का अनुभव हुआ

मंगलवार, 30 नवम्बर

पहले की ही तरह दिसम्बर माह में सामाजिक अध्ययन के घण्टे का उपयोग हम क्रिममस पर खेले जाने वाले नाटक की तैयारी के लिए करेंगे। हम एक सतत बदलती दुनिया में निवास करते हैं। ऐसी दुनिया में बने रहना हो तो हमें बदलाव से उपजी चुनौतियों का सामना रचनात्मक तरीकों से करना होगा। हम सबके अंतर्गत में रचनात्मक शक्ति के ऐसे सन्साधन हैं, जिन्हें हमने टटोला तक नहीं है। इस रचना शक्ति को मुक्त करने के पहले हमें उन तमाम बन्धनों को तोड़ना होगा जो हमने खुद अलोचना के डर से या हीनबोध के कारण बनाए हैं। पाठ्यचर्या के निर्माण में कुछ चीज़ें चुननी पड़ती हैं। और चुनाव की यह महती ज़िम्मेदारी स्कूलों की होती है।

इन शर्मीले, झिझक से भरे लड़के-लड़कियों को स्वयं को रचनात्मक व्यक्तियों के रूप में पहचानने की ज़रूरत है। आवश्यकता है कि उनमें आत्मविश्वास व सन्तुलन विकसित हो और वे मुक्त हो जाएँ। यह काम हम

रचनात्मक नाटकों के माध्यम से करेंगे क्योंकि मैं स्वयं को इस माध्यम में सहज पाती हूँ।

### **बुधवार, 1 दिसम्बर**

आज सुबह मैंने बच्चों को एक फ्रांसीसी किंवदन्ति 'नन्हे वॉल्फ का काठ का जूता' सुनाई। मैंने उसमें यथासम्भव बारीक वर्णन जोड़ा सभी दृश्यों के बारे में विस्तार से बताया और रोचक वार्तालाप सुनाए। बच्चों को कथा पसन्द आई। कुछ देर हमने यह चर्चा भी की कि इस कहानी को कैसे बढ़ाया जा सकता है, उसके कौन-कौन से दृश्य हो सकते हैं।

पहला दृश्य वह होगा जिसमें नन्हो वॉल्फ अपनी मौसी के साथ एक असज्जित टूटे-फूटे कमरे में रात का खाना खा रहा है। समूचे दृश्य में वॉल्फ की मौसी उसे ताने मारेगी, क्योंकि वह उससे नफरत करती है और उसे एक बोझ मानती है। नन्हा वॉल्फ बारबार मौसी से आग्रह करता है कि उसे भी उसके स्कूली साथियों के साथ कैरल गीत (क्रिसमस के गीत) गाने जाने दिया जाए। आखिरकार मौसी उसे अनुमति दे देती है। एल्बर्ट व कैथरीन को इस दृश्य के संवाद लिखने के लिए चुना गया। उनका प्रयास बेजान व बेरंग रहा। बच्चों को लगा कि कैथरीन अपने चरित्र को कुछ ऐसा रूप दे रही है जो वास्तविक नहीं लगता। एल्बर्ट तो वॉल्फ में ढल ही नहीं पाया वह एल्बर्ट ही बना रहा। इसके बाद हमने मेरी और विलियम के साथ यह कोशिश दोहराई। विलियम के संवाद से बच्चे चटक हो ध्यान देने लगे।

उन्होंने उसी वक्त यह तय कर लिया कि विलियम ही वॉल्फ की भूमिका के लिए सही रहेगा। शेष बच्चों ने भी इन भूमिकाओं को अदा करने की कोशिश की, और क्रमशः संवाद जुटने लगे और पात्रों का चरित्र विकसित होने लगा। मैं बच्चों के चेहरों पर आतुरता व तन्मयता के भाव दोखती रही। कोई शर्मा कर ठिठिया नहीं रहा था और कई बच्चे भूमिका पाने की इच्छा को आक्रमक रूप में दर्शा रहे थे।

### **गुरुवार, 2 दिसम्बर**

हमने नाटक रचने का काम जारी रखा और पात्रों के चरित्रों पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान देने की कोशिश की। वॉरेन वॉल्फ बना और यों अभिनय करने लगा मानो वह बिगडैल भिखरी हो। बच्चों को लगा कि यह सही नहीं है। वॉल्फ भला कैसा लड़का है? कोई लड़का अपनी मौसी से क्या कहेगा? यह वह कैसे कहेगा? ठीक इसी तरह के प्रश्न वॉल्फ की मौसी के बारे में भी पूछे गए। हमने कुछ देर इस पर भी बातचीत की कि कोई अभिनेता या अभिनेत्री किस प्रकार किसी चरित्र को इतनी अच्छी तरह समझने लगते हैं कि खुद को भुला कर वह पात्र ही बन जाते हैं। बच्चे 'करेंट इवेन्ट्स' में

पिछले दिनों यह पढ़ते रहे हैं कि पॉल म्यूनी जब अभिनय करता है तो पहले काफी समय उस चरित्र के विषय में शोध करने में बिताता है। अगली बार जब कैथरीन और विलियम अपनी-अपनी भूमिकाएँ करते हैं तो इतना अच्छा प्रदर्शन करते हैं कि तालियाँ बज उठती हैं। भावनाओं की अभिव्यक्ति अच्छी होने के बावजूद संवाद की भाषा अनगढ़ है। हम कुछ समय इस चर्चा में बिताते हैं कि दर्शकों तक सही भावनाएँ संप्रेषित करने के लिए सटीक शब्दों का उपयोग ज़रूरी होता है। हम वाक्यों की लम्बाई पर चर्चा करते हैं। बच्चे इतने छोटे वाक्यों का इस्तेमाल कर रहे हैं कि संवाद ही टूटा-बिखरा बन जाता है।

### **शुक्रवार, 3 दिसम्बर**

आज हम दूसरे दृश्य पर पहुंचे और कथानक पर ध्यान देने की चेष्टा की। हमने सोचा है कि यह सड़क का दृश्य होगा जहाँ वॉल्फ अपने सहपाठियों से मिलता है। मास्टरजी का इंतज़ार करते हुए बच्चे वॉल्फ पर छींटाकशी करते हैं। मास्टर साब के आते ही सब गिरजे की ओर बढ़ जाते हैं और वॉल्फ को पीछे-पीछे आने के लिए छोड़ देते हैं। रैल्फ ने मास्टरसाब बनने की इच्छा जताई, और भूमिका में काफी कुछ जोड़ा। एडवर्ड और जॉर्ज ही दो लड़के थे जिन्होंने योगदान से अनिच्छा जताई। मुझे लगता है कि यह झिझक के कारण है, न कि अरुचि के कारण। जब हमने कथानक पर बातचीत कर स्थिति समझ ली तब कई लड़के कमरे के अगले भाग में खड़े हो गए और उन्होंने संवादों पर काम किया। यह सब धीमी रफ़्तार से चला क्योंकि लड़के भाषण देने लगे और एकालप में उलझने लगे। इस पर रूथ ने सुझाया कि वे एक दूसरे की बात सुनें और अपना संवाद पिछले सूत्रों से जोड़ें। दूसरी बार चेष्टा करने के पहले हमने यह विचार किया कि वे क्या-क्या कह सकते हैं। इस बार वार्तालाप बेहतर रहा।

### **सोमवार, 6 दिसम्बर**

बच्चे तीसरे दृश्य के बारे में बड़े उत्साहित हैं। यह गिरजाघर का दृश्य है और बच्चों को उम्मीद है कि वे इसे बेहद खूबसूरत बना सकेंगे। हमें गिरजे का बाहरी हिस्सा दर्शाना होगा क्योंकि गिरजे की सीढ़ियों पर ही एक छोटा बच्चा सोता हुआ दिखाया जाना है। बच्चों को लगा कि दर्शकों को लगातार प्रार्थना के दौरान पत्थरों से बनी गिरजे की दीवार देखना पसन्द नहीं आएगा, सो उन्होंने रंगीन कांचों की खिड़की की योजना बनाई है ताकि दर्शक उसके पीछे प्रार्थना करते लोगों की छाया देख सकें।

गिरजे से निकलने के बाद लड़कों की जो बातचीत होती है, हम उस पर काम करने लगे। वॉल्फ जो सबसे अंत में गिरजे से निकलता है, यह गौर करता है कि सीढ़ियों पर सोए बच्चे के पैर नंगे हैं। वह अपना एक जूता बच्चे के पास छोड़ देता है ताकि जब क्रिसमस की पूर्व संध्या पर बाल यीशु वहां

से गुज़रे तो वह उस बच्चे के लिए भी कोई तोहफा छोड़े। बच्चों को अपने-अपने चरित्र के अनुरूप संवाद बोलने में कठिनाई हुई। जो बच्चे वॉल्फ को ताने मार रहे थे उनकी प्रतिक्रिया सीढ़ी पर सोए बच्चे के प्रति कैसे होगी? क्या वे उदासीन रहेंगे? उनमें उत्सुकता जगेगी या फिर वे क्रूरता दर्शाएंगे? क्या सभी लड़कों की प्रतिक्रिया समान होगी? हमने तब हरेक लड़के की पृष्ठभूमि की कल्पना की, उसकी एक जीवन कथा बना डाली। इसमें बड़ा मज़ा आया। हरेक लड़के ने उस लड़के की भूमिका चुनी जिसे वह ठीक से समझ सका हो। तब हमने फिर से दृश्य खेला। इससे इतना फर्क पड़ा कि बच्चे अपने काम से खुश हो गए। वे नाटक को लेकर बेहद उत्साहित होते जा रहे हैं और दिन भर नए-नए सुझाव रखते गए। उन्होंने काम के दौरान इतनी बार टोकाटाकी की कि अततः मुझे कहना पड़ा कि वे अपने विचार लिख डालें और तब दें जब हम नाटक का अगला सत्र करें।

आजकल दिन का कार्यक्रम सीधा-सरल है। सुबह तकरीबन घण्टे भर हम नाटक पर काम करते हैं। इस दौरान हमारे छोटे बच्चे लगभग आधे घंटे साथ रहते हैं। वे योगदान करते हैं या सिर्फ देखते-सुनते हैं। इसके बाद कोई बड़ा बच्चा उन्हें सभाकक्ष में ले जाता है। वे बच्चों को बाइबल के ल्यूक अध्याय में दी गई क्रिसमस कथा सिखा रहे हैं, जो बच्चे नाटक में गिरजे के दृश्य के समय सुनाएंगे। जब वे थकने लगते हैं तो उनका प्रभारी उन्हें या तो कुछ पढ़ कर सुनाता है या वे कैरल गीतों का अभ्यास करते हैं।

सुबह के शारीरिक अध्ययन कक्षा के बाद कमरे में शांति छा जाती है और सभी पठन का काम करते हैं। पठन समाप्त करने के बाद वे क्रिसमस उपहार बनाने में जुटते हैं। बड़े बच्चे पिन-ट्रे या सिलाई टोकरियाँ और रूमाल रखने के डब्बे बना रहे हैं। छोटे बच्चे कनस्तरो या माचिस के डब्बों के लिए टिन पर चित्रकारी कर रहे हैं। कुछ छोटे लड़के प्लाई लकड़ी से ब्रेड-बोर्ड भी बना रहे हैं।

सप्ताह में दो दिन साढ़े ग्यारह बजे स्वास्थ्य की कक्षाएं होती हैं और शेष तीन दिन भूगोल और इतिहास की ताकि ताज़ा घटनावृत्त पर जो चर्चाएँ हों वे ठोस जानकारी पर आधारित हों। स्वास्थ्य के पाठों के दौरान छोटे बच्चे चर्चा सुनते भी हैं और उसमें भाग भी लेते हैं। पर शेष तीन दिन, अगर मौसम साथ दे तो वे खेलघर में खेलते हैं। बड़े बच्चे बारी-बारी उनके साथ खेलघर में समय बिताते हैं। वे नन्हो की मदद करते हैं ताकि वे अपनी योजना बना लें, पर उनके खेल में हस्तक्षेप नहीं करते। वे पढ़ते हैं या अपना कोई काम करते रहते हैं, पर एक नज़र नन्हो पर भी रखते हैं ताकि गलत आदतें न पड़ें।

दोपहरी के खाने के बाद सब पन्द्रह मिनट आराम करते हैं और तब

आधे घण्टे के लिए कैरल गीतों का अभ्यास करते हैं। जिस समय नन्हे वर्तनी और गणित का अभ्यास करते हैं, बड़े बच्चे स्वास्थ्य या समसामायिक घटनाओं पर काम करते हैं और उसके समाप्त होने पर अपने क्रिसमस उपहारों पर काम शुरू करते हैं। दिन का अंत हमेशा की तरह बड़े बच्चों के वर्तनी व गणित के अभ्यासों से होता है।

### **मंगलवार, 7 दिसम्बर**

आज, हमने नाटक के अंतिम दो दृश्यों की रूपरेखा बनाई। चौथे दृश्य में वॉल्फ को उसकी मौसी से फटकार सुननी पड़ती है क्योंकि वह एक जूता किसी अजनबी बच्चे को दे आया है। मौसी कहती है कि बाल यीशु उसके बच्चे हुए एक जूते में कुछ ऐसा छोड़ जाएगा जिससे उसकी पिटाई की जा सके। अंतिम दृश्य में वॉल्फ और उसकी मौसी सुबह उठने पर पाते हैं कि उनके अलाव के पास ढेरों उपहार रखे हैं, और साथ हैं वॉल्फ के दोनों जूते। उनके घर के बाहर, गाँव के चौक में शोरगुल मचा है, क्योंकि पूरा गाँव उन लड़कों पर हंस रहा है, जिन्होंने बेहतरीन उपहारों की उम्मीद की थी, पर जिन्हें सिर्फ एक-एक छड़ी मिली थी। ऐसे में पादरी आता है और सबको बताता है कि पिछली रात उसने गिरजे की सीढ़ियों पर एक बच्चे को सोते पाया था जो एक सोने व रत्नों से जड़े गोल घेरे के बीच पड़ा था। गांववासी चमत्कार की बात सुन श्रद्धानत होते हैं। बच्चों को अंतिम दृश्य अच्छा लग रहा है, उनमें से किसी ने इसकी विश्वसनीयता पर सवाल नहीं उठाया है। फ्रैंक ने पादरी बनने की इच्छा जताई और भूमिका समझदारी के साथ अदा की। अब पूरे नाटक की रूपरेखा तैयार है। हमें उसकी बारीकियों में जाकर सावधानी से उन पक्षों को जोड़ना है।

### **बुधवार, 8 दिसम्बर**

हमारा ज़्यादातर समय अंतिम दृश्य के संवादों को बनाने में लगा। जॉर्ज को छोड़ सभी नाटक में भाग ले रहे हैं। जॉर्ज ने कहा कि वह दृश्यों की सज्जा का काम करेगा। हमने उसे मंच प्रबंधक बना दिया है।

हवा में क्रिसमस की भावना घुल गई है। हम सब इससे प्रफुल्लित हैं। लड़के आज दोपहर बाज़ार गए ताकि खिड़कियां की झालरों की सामग्री ला सकें। लौटने पर काम करते समय वे दबे स्वरों में बातचीत करते रहे। अमूमन दोपहर का घण्टा गुल-गपाड़े से भरा होता है, पर आज की शांति उसके विपरित थी।

### **गुरुवार, 9 दिसम्बर**

फिलहाल, नाटक बच्चों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। आज कैथरीन एक पुरानी काली ड्रेस लेकर आई जो वॉल्फ की मौसी के लिए,

उसके अनुसार, बिल्कुल सही थी। उसने दूसरे पात्रों की पोशाकों पर भी बात की। उसमें अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए। बड़ी समस्या तो दृश्य सज्जा की है। बच्चों ने विभिन्न दृश्यों के चित्र बनाए ताकि यह समझ आए कि हमें किन-किन चीजों की ज़रूरत है, और उन्हें कैसे सजाना होगा।

### **शुक्रवार, 10 दिसम्बर**

हमने अपनी मेज कुर्सियाँ सामने से हटा, एक किनारे रख दीं ताकि नाटक के अभ्यास और मंच पर रखी जाने वाली वस्तुओं के लिए जगह बनाई जा सके। लड़के लकड़ी की कुछ पट्टियाँ लाए और एक बड़े से अलावा का खाका बनाने लगे। हमारा अधिकांश समय पहले दृश्य पर खर्च हुआ। आज हमने तय किया कि विलियम और कैथरीन, वॉल्फ और उसकी मौसी की भूमिकाएँ निभाएंगे। बच्चे अपने संवाद याद नहीं कर रहे हैं। जब वे उन पर बातचीत कर निर्णय लेते हैं तो मैं उन्हें लिख डालती हूँ और अब तक उनका जो स्वरूप बना है उसे पढ़ कर सुना देती हूँ, तब वे शुरू करते हैं और अभ्यास के दौरान उन्हें सुधारने की कोशिश भी करते हैं।

बड़े लड़के अभिनय को बड़े गौर से देखते रहे, विचार कर रहे थे कि आलाव किस स्थान पर रखा जाएगा। आखिरकार उन्होंने तय किया कि वे उसे पीछे की ओर कुछ तिरछा कर लगाएंगे ताकि दर्शकों को अलाव व लोहे की केतली साफ दिखाई दे। इससे मंच पर एक मेज़ की जगह बची रहेगी।

### **सोमवार, 13 दिसम्बर**

लड़कों ने अलाव के खाके को भूरे कागज से ढका ताकि उस पर पत्थरों को चित्रित किया जा सके और वह सचमुच का अलाव लगे। कुछ दूसरे बच्चे मेज़ बनाने के काम में जुट गए। बच्चों ने अब तक पांच फ्रेंच कैरल गीत सीख लिए हैं जो दो गुटों द्वारा गाए जाएंगे। वे इन्हें नाटक के दौरान गाएंगे। 'चरवाहों, नींद से जागो', 'गैस्टकॉन कैरल', 'पहाड़ी पर गाते फरिश्ते', 'जैनेट इसानेल एक मशाल लाओं और नोएल आओ अब हम गाएं।' हमने परिचित कैरल गीतों का भी काफी अभ्यास किया जो हमारे दर्शक हमारे साथ गाएंगे। मेरे एक संगीतज्ञ मित्र हमारे साथ अभ्यास के लिए आने वाले हैं, सो हम उनके लिए तैयार रहना चाहते हैं।

### **मंगलवार, 14 दिसम्बर**

आज काफी समय गाने में बीता। हम केवल कुछ देर सुस्ताने भर को रुके। बच्चे चैलो वाद्य से मोहित थे। श्री रैपल ने बच्चों को सरल व मज़ाकिया लहज़े में बताया कि चैलो भी एक तार वाद्य है और उसे कैसे बजाया जाता है। बच्चों ने तमाम सवाल दागे। लड़कों ने ही अधिक रुचि जताई।

हमने नौ केरल गीत पियानो व चैलो की संगत में गाए और तब हमें



उन्हें फिर से दोहराना भी पड़ा। बच्चे गाने-बजाने से बिल्कुल नहीं उकताए। कुछ समय मेरी ने छड़ी पकड़ संगीत निर्देशन किया और तब सोफिया ने और जब दोपहर बाद काउन्टी सुपरिन्टेडेन्ट श्री एटवुड आए तो हम उनके लिए भी कैरल गाना चाहते थे। हमने कुछ गीत हार्मोनिका पर बजाए जिस पर श्री एटवुड ने कहा कि यह उनके पसंदीदा वाद्यों में एक है। हम स्कूल खत्म होने के बाद हार्मोनिका बजाने का अभ्यास करते रहे हैं।

नन्हे बच्चे दो बजे बाद घर लौटना ही नहीं चाहते थे। उन्होंने चिरौरी की, बड़े बच्चे जितनी देर रुकते हैं उन्हें भी तब तक रुकने दिया जाए। छोटे बच्चे संगीत सभाओं के शिष्टाचार को तो समझते नहीं हैं, सो अगर वे इतनी देर चुपचाप, बिना कुर्सियाँ सरकाए अगर बैठे रहते हैं तो सिर्फ इसलिए कि उनकी रुचि वास्तविक है। रैल्फ की नज़र श्री रैपल पर लगातार गड़ी रही। जैसे ही एक गीत खत्म होता वह अपनी सबसे अच्छी मुस्कान चेहरे पर लाता और कहता एक और बजाइए ना मुझे लगा मानो नई सहस्राब्दी का आगमन हो गया हो।

### **बुधवार, 15 दिसम्बर**

आज बच्चों को शांत-स्थिर रखना कठिन रहा। वे लगातार गाते रहना चाहते थे। मैंने उन्हें लैटिन शब्दों वाला एक पुराना लैटिन कैरल सिखाया। हमें लगा कि गिरजे के दृश्य के साथ यह सटीक रहेगा। गिरजे की प्रार्थना कैसे होगी यह भी हमने तय किया।

इस दृश्य की मंच सज्जा की सामग्री की तैयारी लड़कियों ने शुरू कर दी है। उन्होंने हमारे कठपुतली मंच को भूरे कागज से लपेटा और उसमें दो खिड़कियों का चित्र बनाया। लड़के दूसरे दृश्य के लिए सड़क-बस्ती बना रहे हैं। उनकी योजना है कि दूसरे दृश्य में मंच पर पूरा अंधेरा होगा और सिर्फ खंभे से लटका कैरोसीन का लालटेन टिमटिमाएगा।

### **गुरुवार, 16 दिसम्बर**

लड़कियों ने खिड़कियों का आकार भूरे कागज पर काट लिया और उस जगह अलग-अलग रंग के सेलोफेन कागज के टुकड़े चिपकाने लगीं हैं। छोटे बच्चे इस प्रक्रिया को अचरज और प्रशंसा से देखते रहे। सोफिया कुछ कदम पीछे हटी और बोली “ज़रा सोचिए, मिस वेबर इतनी सारी मेहनत की जा रही है और लोग इसे सिर्फ पांच या दस मिनट ही देखेंगे।” इस पर पास खड़ी डॉरिस ने तल्खी से जवाब दिया “हाँ, पर इसे आसानी से भूलेंगे नहीं” अपने अंतस में कहीं गहरे मुझे सिद्धत से यह लगता है कि हमारा इस महीने का काम बेकार नहीं जाएगा।

### **सोमवार, 20 दिसम्बर**

बच्चे आज क्रिसमस का पेड़ लेने गए और एक बारह फुटा देवदारु लेकर लौटे छोटे बच्चों ने उसे सजाने के लिए तमाम चीजें बनाई हैं और हमने दोपहर उन्हें लगाया। बच्चों ने अपने माता-पिता के लिए जो उपहार बनाए हैं उन्हें हमने रंगीन कागजों में लपेटा और पेड़ के नीचे रखा।

मंच सामग्री को अंतिम रूप दिया गया और नाटक के कुछ हिस्से और मांज दिए।

### **मंगलवार, 21 दिसम्बर**

आज हमने समूचे कार्यक्रम को ठीक उसी क्रम में किया जिस क्रम में गुरुवार रात वह प्रस्तुत किया जाएगा। सामान हटाने-धरने में काफी अटकाव आए क्योंकि हमारा कक्ष इतना छोटा है। हरेक दूसरे की राह में अटकता रहा, पर मैंने एक भी नाराज़गी भरी शिकायत न सुनी। वे कहते रहे “हेलेन, मेहरबानी से एक ओर सरक जाओ” या “ज़रा सावधानी से, कहीं गिरजे की खिड़की पर तुम्हारी कोहनी न लग जाए।” इसके बाद हम सबने तसल्ली से बैठकर योजना बनाई कि मंच सज्जा की चीजें कैसे उठाई-धरी जाएंगी। हरेक बच्चे को बताया गया कि उसकी ज़िम्मेदारी क्या है। आज दोपहर हमने पूरा प्रदर्शन फिर से दोहराया और मैं दर्शक बन आराम से बैठी सब कुछ देखती रही।

### **बुधवार, 22 दिसम्बर**

आज हमने अपनी आवाज़ों पर ध्यान दिया। हमने नाटक के कुछ संवादों का अभ्यास किया ताकि कुछ शब्दों पर बल दिया जाए और उसके अर्थ रेखांकित हों। हमने कोशिश की कि हम सही भावनाएं संप्रेषित कर सकें। हमने “डाउन” जैसे शब्द में स्वर तथा “नथिंग” जैसे शब्द में व्यंजन के उच्चारण का अभ्यास किया। जिन संवादों से क्रोध, आश्चर्य, मखौल उड़ाना आदि दर्शाना था उनका अभ्यास किया ताकि वे वास्तविक लगें।

### **गुरुवार, 23 दिसम्बर**

सुबह हमने एक बार फिर से कार्यक्रम का अभ्यास किया और तब कमरे की सफाई कर उसे रात के लिए व्यवस्थित किया। रात को हमारा नन्हा कक्ष गर्वीले माता-पिता व मित्रों से भर गया। नौजवान कमरे के पिछवाड़े श्रृंखला सी बनाए थे। वे प्रत्येक गुरुवार को शालाभवन में अपनी बैठक करते हैं। हमारी पिछली बैठक में मैंने उन्हें बताया था कि बच्चों ने नाटक की तैयार में कितनी मेहनत लगाई है, और उनके लिए इसका क्या मतलब है। मैंने उनसे मदद मांगी कि वे नाटक वाले दिन कक्ष में कोई गड़बड़ न होने दें। क्योंकि सभी बच्चों को यह पक्की तरह पता था कि उन्हें क्या-क्या करना है, मैं भी दर्शकों के बीच बैठ गई और यों मुझे नौजवानों की शकलें देखने का

मौका भी मिला। वे बच्चों का प्रदर्शन देख आश्चर्य चकित हुए, खुश हुए और कई बार उनके चेहरों पर विस्मय का भाव भी नज़र आया कि उनके ही छोटे भाई बहन वास्तव में यह सब कर रहे थे।

नाटक के बाद जब सामूहिक गायन हो रहा था, तब एडवर्ड का बड़ा भाई, जो किसी समय स्कूल के कार्यक्रमों में खलल डालने में नेतृत्व करता था, बाहर गया और सैंटा क्लॉज़ की पोशाक पहन ली। वह घंटियां बजाता अंदर घुसा। बच्चे उसे फौरन पहचान गए। सभी उपस्थित लोगों को उपहार बांटते उसे देख बच्चे बेहद खुश हुए। डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने बच्चों को मीठी गोलियां और संतरे बांटे।

बेहद खुशगवार शाम बीती। सभी उपस्थित स्त्री, पुरुष बच्चे ने कार्यक्रम में खुलकर शिरकत की।

कार्यक्रम खत्म होने के बाद, एडवर्ड के भाई (सांता क्लॉज़) और मैं कुछ दूसरे बड़े बच्चों के साथ मेरी स्टेशन वैगन में टुंस लिए और समूची बस्ती के हरेक घर गए व हमने कैरल गाए। हमें सभी घरों में अंदर आमंत्रित किया गया और खाने को केक व मिठाइयां दी गईं। न जाने कैसे यह राज सभी को पता चल गया कि हम आने वाले हैं सो बच्चों के माता-पिता पूरी तैयारी से हमारी बाट जोह रहे थे।

## अध्याय-6

### हम करते हैं हमारे ही समुदाय का अध्ययन

**शनिवार, 12 फरवरी**

क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान बच्चों और मुझे अपने क्षेत्र के रोमांच को अनुभव करने का मौका मिला। यह साल 1787 के आदेश की 150 वीं जयन्ती का वर्ष है जब उत्तर-पश्चिम सीमा को खोला गया था। इस अवसर का उत्सव मनाने के लिए नौजवानों की एक टोली मैसाच्यूसेट से ओहायो तक ठीक पायेनियरों की तरह यात्रा कर रही है। वे यात्रा के दौरान जगह-जगह रुकते हैं और अपनी प्रस्तुति देते हैं। श्री हिल ने बड़े बच्चों को यह सब दिखाने के लिए वाहन व्यवस्था कर दी। उस नाट्य प्रस्तुति में हमने देखा कि नौजवानों ने कायदे-कानून बनाए ताकि नए क्षेत्र में पहुंच कर वे उनके अनुसार कामकाज चलाएं। बच्चे नए कानूनों को बनाने के प्रति उत्साह और उनको लेकर हुए वाद-विवाद से प्रभावित हुए। कैथरीन बोली “अरे यह सब तो ठीक वैसा ही है जैसे हम अपने सहायक क्लब को बैठकों में अपने नियम बनाते हैं।”

बिचले समूह के बच्चे नौजवानों के कपड़ों और उनके यात्रा के तौर तरीकों से, यात्रा के दौरान आने वाली कठिनाइयों से प्रभावित हुए। उन्होंने

उत्तर पश्चिमी हिस्से को नक्शे में देखा और वह राह देखी जिस पर ये नौजवान चल रहे हैं। एल्बर्ट जानना चाहता कि पायोनियरों ने इस भू-भाग को क्यों चुना? क्या वे पहले से मैसाच्युसेट्स के बारे में जानते थे? पर बड़े बच्चों की रुचि कानूनों और उन्हें बनाने की प्रक्रिया में अधिक थी।

बच्चे इस सब पर अधिक जानकारी एकत्रित करने के लिए रुचि अनुसार दो दलों में बंट गए। दोनों समूह चर्चाओं और रिपोर्टों के लिए साथ-साथ मिलते भी रहे।

बिचले समूह के बच्चों ने उत्तर पश्चिम में आ बसने पर एक चलचित्र बनाया। जिस समय वे इस विषय पर पढ़ रहे थे, शोध कर रहे थे, उन्होंने महत्वपूर्ण तथ्य दर्ज कर लिए थे। चलचित्र बनाते समय उन्होंने इन्हीं नोट्स का उपयोग किया। बड़े बच्चों ने 1787 के अध्यादेश का अध्ययन किया। हमने कुछ समय इस तथ्य पर सोचने-विचारने में लगाया कि मुट्ठी भर साधारण लोग किस प्रकार एकत्रित हुए ताकि यह तय कर सकें कि वे कैसे जीना और शासित होना चाहते हैं। जो नियम-कानून उन्होंने बनाए थे हमें विवेकपूर्ण लगे। मैंने बच्चों से पूछा “उन्हें अपने विचार भला कहाँ से मिले होंगे? बच्चों का जवाब था कि शायद उनके पिछले अनुभवों से उन्होंने यह अंदाज़ लगाया होगा कि उन्हें यह सब चाहिए। तब हमने मेफ़लावर कॉम्पैक्ट, वर्जिनिया, मैसाच्युसेट्स, बे कॉलोनी, मेरीलैण्ड, कैरोलीना, जॉर्जिया व कनेटिकट की सरकारों का अध्ययन किया। हमने इन बसावटों की सरकारों और 1787 के अध्यादेश की तुलना की। हमने पाया कि अध्यादेश ऐसा दस्तावेज़ था जिसमें उपरोक्त उपनिवेशों के श्रेष्ठतम बिन्दुओं का समावेश करने के साथ अनेक लोकतांत्रिक उपाय भी शामिल कर लिए गए थे।

हमने मौजूदा सरकार की तुलना भी उस सरकार से की जो अध्यादेश के तहत बनाई गई थी। तब हमने उन तमाम पक्षों की सूची बनाई जो 1787 की प्रारंभिक सरकार में नहीं थी। कैथरीन ने कहा कि संविधान ने हमें पयोनियरों से बेहतर सरकार दी है। रैल्फ ने कहा ऐसा इसलिए हुआ होगा क्योंकि उपनिवेशों को अपने इलाके के मामलों को चलाने की योजना बनानी पड़ी होगी। मैंने उन्हें बताया कि उपनिवेशों के पास पहले ही एक योजना थी। क्या व संघटन के अनुच्छेदों (आर्टिकल्स ऑफ कॉन्फेडरेशन) को भूल रहे हैं? उन्हें इनके विषय में कोई जानकारी नहीं थी, सो हमने इन्हें देखा। हमारी इतिहास की पुस्तक में उन तमाम कमियों का उल्लेख था जो संघटन अनुच्छेदों में मानी जाती हैं। रूथ ने इस पर टिप्पणी की कि शायद यही वजह थी कि सैनिकों को उत्तर-पश्चिम की ओर जाना पड़ा। सरकार तब इतनी मज़बूत नहीं थी कि वह कर एकत्रित कर सके और उसके पास अपने कर्ज़ चुकाने लायक पैसे भी नहीं थे। मैंने जानना चाहा कि क्या संविधान उन

कमियों को पूरा करता है। बच्चों का कहना था कि संविधान ने देश का एक प्रमुख बनाया जिसे कानून लागू करने शक्ति दी गई। संविधान ने एक कानून बनाने वाली प्रतिनिधि संस्था का गठन किया और मामलों की सुनवाई के लिए अदालतें बनाई। हमने हमारी राष्ट्रीय सरकार के तीनों अंगों के दायित्वों को तथा उन्हें नियंत्रित व संतुलित करने की व्यवस्था को देखा-जाँचा।

अपने अध्ययन के दौरान बच्चों को पता चला कि प्रारम्भ में संविधान को स्वीकारा ही नहीं गया था। वह इसलिए क्योंकि उसमें उन अधिकारों का कोई उल्लेख ही न था, जिनके लिए लोगों ने संघर्ष किया था। अतः संविधान में बाद में अधिकारियों का विधेयक (बिल ऑफ राइट्स) जोड़ा गया। बच्चों ने इस विधेयक का उसका ध्यान से अध्ययन किया और उसके तहत दिए गए अधिकारों की सूची बनाई। इसके फलस्वरूप उन्होंने यह पड़ताल करने की कोशिश की कि राज्य व राष्ट्रीय सरकारों के क्या-क्या काम हैं। हमने एक सूची बनाई जिसमें उन तमाम चीजों को सूचीबद्ध किया गया जिनके द्वारा राज्य व राष्ट्रीय सरकार हमारे कस्बे की व्यवस्था से संपर्क में आती है। हमारे कस्बे की सरकार को समझने के लिए हमने टाउनशिप समिति के प्रमुख व शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से साक्षात्कार किए। हम कोर्ट हाउस भी गए और वहां स्कूलों के निरीक्षक से भेंट। की काउंटी जेल के वॉर्डन बच्चों को जेल के दौरे पर ले गए। हमने काउंटी क्लर्क के कार्यालयों को देखा और काउंटी सरकार के बारे में जानकारी ली। इन प्रयासों से बच्चों को सरकार क्या होती है, इसका अंदाज़ लगा। हमारे प्राथमिक समूह के बच्चे इस दौरान समुदाय का अध्ययन करते रहे हैं। इस काम के लिए हम न्यू-जर्सी हैण्डबुक ऑफ सोशल स्टडीज़ की रूपरेखा का उपयोग करते रहे हैं। इसमें स्कूल तथा पर्यावरण के भौतिक पक्षों का अध्ययन भी शामिल है। बच्चों ने अपने मोहल्ले का एक नक्शा बनाया और उसका उपयोग कैसे करना है, यह भी सीखा सीखा। बच्चों ने समुदाय के कामगारों के बारे में पढ़ा और यह जाना कि वे कौन-कौन सी सेवाएं उपलब्ध करवाते हैं। उन्होंने आवासों का अध्ययन किया और इस अध्ययन को विस्तृत करते हुए उसमें पशुओं व पक्षियों के आवासों को भी जोड़ा। उन्होंने चिड़ियों के लिए काठ के घर बनाए उनके दाने-पानी के स्थान बनाए ताकि सर्दियों-भर इस इलाके में आकर रहने वाले पक्षियों को खिला-पिला सकें। किसी एकल शिक्षक शाला में बच्चों के साथ क्या किया जा सकता है, यह मैं धीरे-धीरे सीखने लगी हूँ। बड़े बच्चे तो शिक्षक न हो तो भी किसी उद्देश्य के लिए काम में जुटे रहते हैं, पर छोटे बच्चों को अकेले अधिक समय गुज़रना इसलिए मुश्किल लगता है क्योंकि उनका ध्यान अधिक समय तक किसी एक विषय पर टिक नहीं पाता। अतः मैं अब छोटे बच्चों के साथ समय बिताने के लिए बड़े बच्चों का ऐसा उपयोग करती हूँ जिससे दोनों को

लाभ हो। इस प्रक्रिया से क्रमशः एक प्रभावी दैनिक कार्यक्रम उभर सका है।

हमारे स्वास्थ्य के पाठों में हमने पदार्थों के खाद्य मूल्य का सघन अध्ययन किया। इन पाठों का बच्चों की खाने-पीने की आदतों पर प्रभाव नज़र आने लगा है। अधिकांश भरपेट नाश्ता करके ही स्कूल आते हैं और शायद ही कोई खाली पेट आता है। जब मैं श्रीमती सेमेटिस से मिलने गई तो उन्होंने बताया कि उनकी बेटियां हरे पत्तों की सब्जियां खाने लगी हैं, जो वे पहले छोड़ देती थीं। वे पत्तों को पौष्टिक व स्वादिष्ट तरीके से पकाने में माँ की मदद भी करती हैं।

हमारे दोपहरी के गरम भोजन का कार्यक्रम एक अर्से से निर्बाध चल रहा है। रसोई में काम करना अब बच्चों को अच्छा लगता है। पाक दल ने इस सप्ताह बड़े भगोने का नामकरण “श्रीमान” किया और छोटे का “श्रीमती”। सारे प्याले उनके एक कर्णी बच्चे बन गए। वे हरेक को बखुशी अंदर-बाहर रगड़ कर साफ करते हैं। उन्हें अपनी साफ-सुथरी रसोई पर नाज़ है और इस बात पर भी कि दोपहरी के सत्र के पहले वे अपना सारा काम खत्म कर लेते हैं। इस सप्ताह रैल्फ को बर्तन माँजने थे पर चूंकि वह अनुपस्थित रहा, फ्रैंक ने स्वेच्छा से बर्तन माँजने की ज़िम्मेदारी ली। यह प्रमाण है कि रसोई में काम करना भी मज़ेदार लग सकता है।

हमारे चित्र-फलक सतत उपयोग में रहते हैं। बच्चों ने बर्फबारी के इतने दृश्य बनाए कि उन्हें टांगने की जगह ही नहीं थी। हमने उन सबको बाकायदा कागज़ों पर चिपकाया और ‘शीत दृश्य’ शीर्षक से एक किताब बना डाली। इस माह मैंने हर दिन स्कूल के काम समाप्त होने पर रैल्फ और कैथरीन की अंग्रेजी व्याकरण में मदद करने का समय निकाला। हाई स्कूल में कुछ चीज़ों की जानकारी ज़रूरी होगी और मैं कोशिश यह कर रही हूँ कि उनको वह सब ज़रूर आ जाए। उन्होंने मेरे साथ काम तो किया ही है, घर पर भी अतिरिक्त काम किया है।

इस सबके बावजूद पिछले माह के काम ने मुझे उतना संतोष नहीं दिया जितना पिछले दिसम्बर में हुआ था। सुश्री एवर्ट और मैं पिछले सप्ताह साथ काम करते रहे हैं और क्योंकि बच्चों ने संतोषप्रद व्यवहार सीख लिया है. और उनकी ओर से नई-नई समस्याएं पैदा नहीं हो रही हैं स्कूल का काम सही ढंग से चल रहा है। पर परेशानी यह है कि हम एक स्तर पर आकर मानो ठहर से गए हैं। मनोवैज्ञानिक कहेंगे कि हम सीखने की प्रक्रिया के वक्र में एक समतल पठार पर पहुंच चुके हैं। मुझे पता है कि उम्दा शिक्षण के बारे में मैं जो कुछ जानती हूँ उसका उपयोग नहीं कर पा रही हूँ। सच, बड़ा कठिन है यह कर पाना। शब्दों को जानना एक बात होती है, पर शब्दों को

कर्म में उतारना मुश्किल है।

सुश्री एवर्ट और मैंने इस बात पर काफी विचार-विमर्श किया कि हम बच्चों के जीवन को अधिक प्रभावी रूप से किस प्रकार दिशा दे सकते हैं। हमें लगता है कि तात्कालिक वातावरण में उनके अनुभवों को समझने में हमें उनकी मदद करनी चाहिए। क्योंकि उन्हें आगे वास्तविक परिस्थितियों का सामना करना है। अतः यह ज़रूरी है कि वे सीख लें कि परिस्थितियों से न केवल आवश्यक तालमेल बैठाना होगा बल्कि उनमें वांछनीय बदलाव भी लाने होंगे। इस प्रकार वे जो कुछ सीखेंगे उससे वे काउन्टी के, राज्य के व दुनिया के व्यापक समुदायों को भी समझ सकेंगे।

समुदाय में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर मैं बच्चों को विविध शैक्षिक अनुभव उपलब्ध करवा सकी हूँ। हमने साथ-साथ अपने आस-पड़ौस की छानबीन की है, इलाके की भौतिकी को, पेड़-पौधों को, जाना-समझा है। हमने रेड इण्डियनों की जनश्रुति, उनके इतिहास की छानबीन की। अपने सरकार को स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक समझने के लिए हमने तमाम कोशिशें की हैं क्योंकि इसका हमारे रोजमर्रा के जीवन पर असर पड़ता है। सुश्री एवर्ट का सुझाव था कि शायद बच्चों को अब समसामयिक समुदाय के बारे में अधिक जानने की कोशिश करनी चाहिए। शायद समुदाय के विश्लेषण से हमें उसके सदस्यों की ज़रूरतों को पूरा करने का कोई उपाय मिले। सुश्री एवर्ट ने एक रूपरेखा बनाई ताकि शुरुआत करने में मुझे मदद मिले। उन्होंने जनगणना के कुछ आंकड़े भी उपलब्ध करवाए।

### **मंगलवार, फरवरी 15**

समकालीन समुदाय के अध्ययन की शुरुआत करने के लिए मैंने बोर्ड पर प्रश्न लिखा कि “आज का वैली व्यू औपनिवेशिक युग के वैली व्यू से किस तरह भिन्न है?” कई बच्चों के पास हमारे कस्बे के प्रारंभिक इतिहास पर बनाई गई किताब की प्रतियां मौजूद थीं। बच्चों की टिप्पणियों को मैंने बोर्ड पर दर्ज किया।

“पहले लोग कम थे।” (रूथ)

“आज के घर आधुनिक हैं।” (मेरी)

“आजकल गाड़ियाँ हैं, यातायात के बेहतर साधन भी हैं, खासकर सड़कें पहले से बेहतर हैं। काम करने के वास्ते हमारे पास बेहतर उपकरण हैं।” मैंने वॉरेन ने पूछा कि इसका मतलब क्या है? उसने खुलासा किया

“असल में चीजें आसानी से मिल जाती हैं क्योंकि वे मशीनों से बनती हैं और कुछ लोग सबके लिए काम करते हैं।”

“आजकल सरकार को हमारी मदद करनी पड़ती है।” (थॉमस)

“लोग दूसरों की मदद करते हैं, वे सिर्फ अपने लिए चीज़े नहीं बनाते।”  
(हेलेन)

“हम अपना दूध मक्खन केंद्र पर ले जाते हैं, केवल अपनी ज़रूरत लायक उत्पादन नहीं करते।” (कैथरीन, हेलेन के बिन्दु को बिस्तार देते हुए)

मैंने बताया कि जब ऐसा किया जाता है तो इसे विशिष्ट कृषि (स्पेश्येलाइज्ड फार्मिंग) कहा जाता है। पहले लोग सामान्य खेती करते थे। इस पर हमने अपने इलाके के सामान्य व विशिष्ट खेतों की पहचान की।

“जहाँ आजकल सिर्फ खेत और जंगल हैं, पहले वहाँ गाँव और कस्बे थे। लोग यहाँ से चले गए हैं।” (सोफिया)

“पहले यहाँ चमड़े और अनाज की मिलें हुआ करती थीं, पर अब वे यहाँ नहीं हैं।” (वॉरेन)

तब मैंने जनगणना के कुछ आंकड़े बोर्ड पर लिखे:

वर्ष	आबादी
1810-1820	3360
1820-1830	1962
1830-1840	1957
1840-1850	727
1850-1860	792
1860-1870	638
1870-1880	538
1880-1890	503
1890-1900	400
1900-1910	405
1930	331

1810 से 1930 के दौरान वैली व्यू की आबादी में ज़ाहिर तौर पर कमी आई है, जबकि काउन्टी के आबादी 13,170 से बढ़कर 43,187 हो गई है। सोफिया ने सवाल किया कि ऐसा भला क्यों हुआ होगा। मैंने सवाल समूह पर उछाला। बच्चों ने जो टिप्पणियाँ की उनमें से कुछ थीं:

“हमने पढ़ा है कि पहले लोग अपनी ज़मीन के बारे में इतने सचेत नहीं होते थे क्योंकि ज़मीन की कोई कमी नहीं थी। जैसे ही उसका उपजाऊपन कम होता वे कहीं और चले जाते थे। हो सकता है कि वैली व्यू



की ज़मीन भी कम उपजाऊ हो गई हो और इसलिए लोग बेहतर ज़मीन की तलाश में दूर चले गए हों।” (मेरी)

“शायद वे पश्चिम की ओर फैल गए हों, जैसे पूर्व में बसे कई लोगों ने भी किया था।” (एल्बर्ट ने पश्चिम की ओर पलायन के अपने हालिया अध्ययन पर सोचते हुए कहा)

“1840 से 1850 के बीच आबादी में भारी कमी आई। शायद ऐसा गोल्ड रश के कारण हुआ हो।” (वॉरेन)

“खेतीबारी से अधिक फायदा नहीं होता है क्योंकि पश्चिम से, जहां ज़मीन उर्वरक और यातायात बेहतर है, चीजें सस्ती मिल जाती हैं। (सोफिया ने वैली व्यू पर कितबिया को पढ़ते हुए टिप्पणी की)

क्योंकि समय हो चुका था मैंने इस चर्चा से उभरे कुछ सवाल बोर्ड पर लिख डाले ताकि उनके जवाब हम तलाश सकें:

1. वैली व्यू में लोग इतने कम क्यों हैं?
2. क्या आगामी वर्षों में उनकी संख्या और घटेगी?
3. जो लोग यहां पले-बढ़े उन नौजवानों का क्या हुआ?
4. आज कौन से ऐसे काम उपलब्ध हैं जो पहले नहीं थे?
5. कौन से ऐसे काम हैं जो प्रारंभिक निवासियों को उपलब्ध थे, पर हमें उपलब्ध नहीं है?
6. क्या आज हमारे कुछ काम ऐसे भी हैं जो प्रारंभ में यहाँ आकर बसने वालों के सामने भी थे?

मैंने वॉरेन से कहा कि वह सचिव बने और हमारी चर्चा को दर्ज करे। उसे लिखने के अभ्यास की ज़रूरत है।

## बुधवार, फरवरी 16

बच्चों ने कल जो कुछ चर्चा हुई थी उसकी समीक्षा की। हमने अपने सवालों को फिर से देखा और यह सोचने की कोशिश करने लगे कि उनके जवाब कैसे मिलेंगे। फ्रैंक ने समझाया कि चौथे सवाल का जवाब पाने के लिए हमें दो सूचियाँ बनानी होंगी, पहले में आज जो कुछ काम होते हैं उन्हें दर्ज करना होगा और दूसरी में पहले जो काम होते थे उन्हें लिख डालना होगा। उसका कहना था कि इससे हम दूसरे सवालों के उत्तर भी ढूँढ़ सकेंगे। मैंने समूह को सुझाव दिया कि चित्र व ग्राफ आदि भी हमें चीज़ों को साफ-साफ समझने में मदद करते हैं। वैली व्यू की आबादी के साथ उसका आकार भी घटा है। मेरी, हैलेन, जॉर्ज और एडवर्ड विभिन्न समय पर इलाके के नक्शे

बना रहे हैं। सोफिया, रूथ, थॉमस और वॉरेन आज के समुदाय के काम-धन्धों की सूची बना रहे हैं। मेरी, एल्बर्ट और डॉरिस वैली व्यू की कितबिया को पढ़ रहे हैं ताकि वे प्रारंभिक बांशियों के काम धन्धों की सूची बना सकें।

### गुरुवार, फरवरी 24

प्राथमिक समूह के बच्चे उपलब्ध सामुदायिक सेवाओं के अध्ययन में जुटे हुए हैं। आज विलियम ने पूछा कि क्या हम पोस्ट ऑफिस बनाने वाले हैं। जब मैं बड़े बच्चों के साथ काम कर रही थी, प्राथमिक समूह के बच्चों पुस्तकालय की किताबों से पोस्ट-ऑफिस की जानकारी इकट्ठी करने की कोशिश की।

बड़े समूह की समितियों ने अपनी छानबीन की जानकारी दी और उन्होंने जो सूचियाँ बनाई थीं उनके बारे में बताया। रूथ के समूह ने बताया कि आज के उद्योगों में हमारे कस्बे का सबसे प्रमुख धंधा डेयरी का है। मैंने इस सूत्र को आगे बढ़ाना उचित समझा क्योंकि डेयरी उद्योग के सघन अध्ययन में सीखने की तमाम सम्भावनाएँ नज़र आती हैं। इस अध्ययन से हमारे समुदाय के मौजूदा रुझान समझ आ सकते हैं, और वे यह भी जान सकते हैं कि समुदाय जैसा है वैसा क्यों कर बना। मैंने बच्चों से पूछा कि क्या प्रारंभ में भी यहां बसा समुदाय ऐसा ही था। रैल्फ ने कहा “नहीं, पहले हरेक परिवार अपनी ज़रूरत खुद पूरी करता था।” “क्या उनके पास कुछ भी नहीं था? मैंने जानना चाहा। “हाँ,” रैल्फ ने जबाब दिया “उनके पास दूध बच जाता था, जिससे वे मक्खन बनाते थे और अपने अतिरिक्त फसल के साथ बाज़ार में बेचने ले जाते थे।” वॉरेन ने मेरे सवाल के जवाब में जोड़ा कि दूध के बदले मक्खन इसलिए बेचा जाता था क्योंकि जब तक वे शहर पहुंचते थे दूध फट जाता था। इसी चर्चा के दौरान उन्होंने तमाम कारण बताए जिनके चलते वैली व्यू में डेयरी उद्योग विकसित हुआ:

पथरीली भूमि खेती के लिए कम उपयोगी है, पर चरागाह के लिए यहाँ खूब जमीन है।

पास ही बाज़ार भी थे; न्यू-यॉर्क व नेवार्क के लोगों को दूध की ज़रूरत थी पर वे शहरों में पशु नहीं रख सकते हैं।

अच्छी सड़कें और बेहतर यातायात के कारण बड़े शहरों में दूध सही-सलामत पहुंचाया जा सकता है।

दूध को सही रखने के साधन विकसित कर लिए गए हैं, जिससे दूध का उत्पादन लाभदायक है।

हमारी चर्चा में हमारे लिए कुछ सवाल भी उभरे, जिन्हे मे सवालों की सूची

में जोड़ देगी। ये सवाल थे:

- . वैली व्यू के प्रारम्भिक दिनों में एक विशिष्ट उद्योग में डेयरी उद्योग इतना महत्वपूर्ण क्यों नहीं था?
- . तब से आज आते-आते, डेयरी उद्योग एक विशिष्ट उद्योग कैसे बन चला हैं?
- . आज डेयरी उद्योग कैसे चलता है?
- . डेयरी फार्मों में कौन से आधुनिक तरीके काम में लिए जाते हैं?
- . कुछ इलाकों में डेयरी उद्योग अधिक विकसित है, क्या भूमि की सतह और वातावरण का इससे कोई जुड़ाव है?
- . वैली व्यू और न्यू जर्सी के दूसरे भागों में जो दूध उत्पादन होता है उसके बाज़ार कहाँ-कहाँ हैं?

अच्छी सड़कें इस उद्योग में कैसे मदद करती हैं?

### **मंगलवार, 1 मार्च**

प्राथमिक समूह ने कस्बे के पोस्ट ऑफिस जाने की योजना बनाई। एलिस ने सलाह दी कि वे जाएं तो अपनी आँखें और कान खुले रखें ताकि, ज्यादा से ज्यादा जान सकें। जो प्रश्न वे पोस्ट मास्टर से पूछना चाहते थे, उनकी एक सूची बच्चों ने बनाई। उन्हें पुस्तकालय में पोस्ट ऑफिस के बारे में जो कुछ सामग्री मिली है उसे वे पढ़ने लगे हैं। मैंने हरेक बच्चे को पढ़ने के लिए कुछ चुनने में मदद की। डेयरी उद्योग के इलाकों का वहाँ की भौतिक परिस्थितियों व बाज़ारों से क्या रिश्ता है, यह जानने के लिए बड़े बच्चों को पहले यह जानना था कि दरअसल कौन-कौन से इलाकों में डेयरी उद्योग विकसित है। बच्चों ने कुछ समूह बना लिए ताकि वे हमारी काउन्टी, राज्य और दुनिया के ऐसे इलाकों को नक्शों पर दर्शा सकें, जहाँ डेयरी उद्योग पनपा है।

### **बुधवार, 2 मार्च**

आज बड़े बच्चों को नक्शों का काम करते छोड़ शेष सब कस्बे के पोस्ट ऑफिस गए। पोस्ट मास्टर ने बच्चों को पूरा डाकघर दिखाया और उनके सवालों के जवाब दिए। उन्होंने बच्चों को मनीऑर्डर के खाली फॉर्म दिए और टिकटों के ठप्पों के नमूने भी। बच्चों ने देखा कि डाक कैसे छाँटी जाती है, थैलों में बन्द की जाती है और रेलगाड़ी तक पहुंचाई जाती है। बच्चों ने डाक डालने के लिए बनी अलग-अलग खांचों और खिड़कियों को देखी, और उनके उद्देश्यों के बारे में पूछताछ की।

लौटने पर बड़े बच्चों ने खुश होते हुए बताया कि उन्होंने जिम्मेदार

बच्चों का सा आचरण किया और खूब काम किया। उनकी टोली के प्रमुख ने सगर्व बताया “हम पूरे समय व्यस्त रहे, मिस वेबर!”

### **गुरुवार, मार्च 3**

आज सुबह नन्हों ने अपना डाकघर बनाने की योजना बनाई। उन्हें इसके लिए वह कोना चाहिए जहाँ चित्र-फलक रखे हैं। वे अपना डाकघर संतरे के डब्बों से बनाना चाहते हैं। एलिस ने समूह का सचिव बन किए जाने वाले कामों की सूची बनाई।

### **शुक्रवार, मार्च 4**

आज बच्चों ने बेहतरीन क्लब बैठकें कीं। आजकल चर्चा में मैं कम हिस्सा लेती हूँ और बच्चे भी प्रस्ताव रखते समय या टिप्पणी करते समय पलटकर मुझे संबोधित नहीं करते। सच तो यह है कि वे शायद यह भी भूल जाते हैं कि मैं वहाँ हूँ। सिलाई क्लब की बैठकें खुशनुमा होती हैं हर सप्ताह हम सिलाई करते समय बातचीत भी करते हैं, और मुझे वे अपने तमाम राज़ बताते हैं। मुझे अब यह मालूम कि हर लड़की की अपने परिवार के शेष सदस्यों के प्रति क्या भावनाएँ हैं, उन्हें क्या पसंद या नापसंद है, उनके भावी सपने क्या हैं, वे विवाह, तलाक, दोस्ती, प्रेम और बच्चों के लालन-पालन के विषय में क्या सोचती हैं, उन्हें कौन सी किताबें पढ़ना पसंद हैं, पैसों और तमाम दूसरी चीज़ों के बारे में वे क्या सोचती हैं। मुझे उन्हें स्वस्थ यौन शिक्षा उपलब्ध करवाने के कई मौके मिले हैं।

### **सोमवार, 7 मार्च**

जॉर्ज और एडवर्ड डाकघर बनाने में कुछ छोटे बच्चों की मदद कर रहे हैं। शेष छोटे बच्चों ने भी सूची से अपनी पसंद के काम चुन लिए हैं। बड़े बच्चों ने अपने नक्शे पूरे कर लिए हैं, उन पर दुनियाभर के ऐसे इलाके दर्शाए गए हैं, जहाँ दूध उत्पादन प्रमुख गतिविधि है। अब वे उनका बारीकी से अध्ययन कर रहे हैं ताकि यह समझ सकें कि, भूमि, जलवायु, बाज़ारों संख्या व निकटता, सड़कें व यातायात के साधन व डेयरी उद्योग का क्या रिश्ता है।

### **मंगलवार, 8 मार्च**

आज अब तक वैली व्यू पर किए गए काम की समीक्षा की गई। इसके लिए हमने अपनी सूची में दर्ज सभी सवालों के यथा सम्भव जवाब तलाशे। दूध उत्पादन के आधुनिक तरीकों पर चर्चा के दौरान दो सवाल उठाए गए:

दूध निकालने की मशीन कैसे काम करती है?

दूध को पाश्च्युरीकृत कैसे किया जाता है?

### गुरुवार, 10 मार्च

आजकल डेयरी फार्मों में कौन से आधुनिक तरीके अपनाए जाते हैं यह जानने के लिए बच्चों ने कस्बे की सबसे बढ़िया डेयरी देखने की योजना बनाई। हम वहाँ क्या-क्या जानना चाहेंगे उसे हमने सूचीबद्ध कर लिया:

दूध की जाँच कैसे की जाती है?

दूध निकालने की मशीनें कैसे काम करती हैं?

दूध को ठण्डा कैसे किया जाता है?

श्री रेमण्ड को हर दिन कितना दूध मिल पाता है?

उनके पास कितनी गाएँ हैं?

दूध को क्रीम कारखाने में भेजने के पहले उसे कैसे तैयार किया जाता है?

दूध निकालने में उन्हें कितना समय लगता है?

दूध बेचने के पहले उन्हें क्या-क्या करना पड़ता है?

क्या गायों की एक निश्चित संख्या ज़रूरी होती है?

क्या क्रीम कारखाना किसी खास स्तर का दूध ही स्वीकारता है? गाय की टी.बी. की जाँच कैसे होती है?

अगर गाय इस जाँच में खरी न उतरे तो क्या होता है?

अधिक दूध पाने के लिए किसान को गाय की कैसी देखभाल करनी चाहिए?

रेमण्ड साहब का दूध जाँच में कैसा निकला?

क्या वे दूध उत्पादक संघ (डेयरीमैनस् लीग) के सदस्य हैं?

अगर हैं, तो संघ उनके लिए क्या करता है?

स्कूल के बाद रैल्फ और मैं श्री रेमण्ड के पास साक्षात्कार की तारीख तय करने गए। हमने अपने सवालों की सूची उनके पास छोड़ दी, ताकि वे तैयारी कर सकें।

### गुरुवार, 17 मार्च

पिछले तीन दिन से सड़कों पर बिछी बर्फ के कारण कई बच्चे स्कूल नहीं आ पा रहे। मैं हर बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों पर काफी समय लगा सकी, इससे उनकी कई परेशानियाँ भी दूर हो पाईं। पहले दो दिन तो बच्चों को यह सब बड़ा अच्छा लगा और वे बार-बार कहते रहे “काश, हमेशा ही ऐसा हो सके।” पर कल उन्हें अपने साथियों की कमी अखरने लगी, सामूहिक चर्चाओं का जोश याद आने लगा। कैथरीन फूट पड़ी “यह तो सन्यासियों

जैसी हालत है, बस अकेले काम करते रहना पड़ता है। मुझे तो सन्यासी बनना पसंद भी नहीं है; क्या आपको पसंद आएगा सन्यासी बनना?”

घनघोर बारिश और आंधी-तूफान का मुझ पर बुरा असर पड़ता है और मेरा मिजाज़ बच्चों को प्रभावित करता है। आज हम सब तनाव में थे। मैंने शांत रहने की खूब कोशिश की पर पाया कि मैं रूखे, असम्बद्ध वाक्यों में बोल रही हूँ। जब हम गाने लगे तो मेरा आंतरिक तूफान मानो गुज़र गया। आज रात हम 'स्नोव्हाइट और सात बौने' फिल्म देखने गए। बच्चों ने जब तक उसे दो बार न देख लिया, वे लौटने को तैयार ही न हुए। फिल्म की डायन से उन्हें डर तक नहीं लगा। छोटे बच्चे जानवरों को देख बेहद खुश हुए। हेलेन तो मानो आपा ही खो बैठी। वह बारबार दोहराती रही, “ओह, मुझे ये बहुत प्यारे लग रहे हैं।”

### **सोमवार, 21 मार्च**

बसंत का पहला दिन बेहद खूबसूरत और गर्म था। स्कूल के पहले हम अनौपचारिक रूप से बैठे और बसंत के जो लक्षण हमें नज़र आए थे उन पर बातचीत की। दोपहर को खाते वक्त मैंने कहा “बसंत आ गया है और आज मैं शिला-बाग (रॉक गार्डन) में काम करूंगी। कौन मेरा साथ देगा?” सोफिया और रूथ ने हामी भरी। बाग में जाकर देखा कि तमाम नन्हे पौधे धरती से झाँक रहे थे। वर्ना इससे उत्तेजित हो उठी कूद-कूद कर चीखने लगी “आओ, आकर देखो तो सही हमारे बाग में क्या-क्या है!” मे, विलियम और मेरी भागे आए। कुछ देर बाद कैथरीन, एलिस और शेष नन्हे भी आ जुड़े। दोपहरी का घन्टा पूरा हुआ और कक्षा में लौटने का समय आया तो हम सभी को अफसोस हुआ।

नन्हे फिर से अपने खेल घर में खेलने लगे हैं। आज उन्होंने मार्था की मदद से एक कठपुतली नाटक तैयार किया। उन्होंने हाथ से लिखा आमंत्रण पत्र बड़े बच्चों को दिया और उन्हें नाटक देखने अपने घर न्यौता। पत्र की वर्तनी सुधारने में मार्था ने मदद की। एन्ड्रू, एलेक्स, गस, वर्ना, पर्ल और मे भी घर-घर खेलती हैं। एन्ड्रू को खेलना पसंद है पर वह शिकायत यह करता है कि लड़कियाँ कभी-कभार बड़ी दादागीरी छँटती हैं।

### **मंगलवार, 22 मार्च**

हम सब बसंत-रोग से त्रस्त हैं। आज काउन्टी की छह शिक्षिकाएं मिलने आई थीं और हममें से किसी से काम नहीं किया जा रहा था। हमने खेलने के घण्टों का समय बढ़ाया और काम व पढ़ाई का घटा दिया, फिर भी राहत न मिली। थोड़ी-थोड़ी देर में कोई न कोई बच्चा चुपचाप उठता और कक्षा के बाहर चक्कर काट आता, ताकि उनींदा न रहे और लौटकर काम कर

सके। पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। हमारे मेहमानों के जाने के बाद हमने यह कोशिश त्याग दी और बगीचे का काम करने बाहर निकल आए। बड़े बच्चों ने कंदों की क्यारी से घासपात हटाई और शेष बच्चों ने रॉक गार्डन की खरपतवार साफ की, पगडन्डियों और सपाट पत्थरों को साफ किया।

### **बुधवार, 23 मार्च**

कल की कमी पूरी करने के लिए आज बच्चों ने बेतहाशा काम किया। श्री रेमण्ड के साथ साक्षात्कार पूरा हुआ। बच्चों के साथ वे बड़े आराम से मिले। हम उनकी बैठक में बैठे और उन्होंने बच्चों के सवालों के उत्तर दिए। हरेक बच्चे को कुछ प्रश्नों के उत्तर दर्ज करने थे। वे हमें गौशाला ले गए और मशीन से दूध निकालने का तरीका दिखाया, मशीनों की देखभाल वे कैसे करते हैं यह बताया, गायों को चारा आदि कैसे खिलाया जाता है, उनकी देखभाल कैसे की जाती है, यह सब भी बताया। मार्था, हेलेन और वॉरेन लगातार सवाल दागते रहे।

### **गुरुवार, 24 मार्च**

आज सुबह हमने उस जानकारी की समीक्षा, जो हमें श्री रेमण्ड से मिली थी। रैल्फ को यह जानना था कि जब श्री रेमण्ड का दूध मक्खन कारखाने में पहुँचता है तो उसका क्या होता है? अतः हमने योजना यह बनाई कि हम क्रमरी (मक्खन बनाने का कारखाना) जाएंगे ताकि हमें निम्नोक्त सवालों के उत्तर मिल सकें:

वे दूध से दूसरा कुछ (मक्खन, चीज़ आदि) कैसे बनाते हैं?

क्या वे दूध को पाश्च्युरीकृत करते हैं?

दूध में वसा की मात्रा जाँच कैसे होती है?

दूध बोतल बन्द कैसे किया जाता है?

दूध का वज़न कैसे लिया जाता है?

### **सोमवार, 28 मार्च**

बड़े बच्चे अपना काफी समय दुनिया के दुग्ध उत्पादन संभागों की तलाश में बिताते रहे हैं। आज हम एक सुविधाजनक समूह में अपनी नोट्स व अपने नक्शों को फैला कर बैठे। हमने अपनी शोध के नतीजों पर बातचीत कर उन्हें सूचीबद्ध किया। वॉरेन ने जो सूची मुझे दी उसमें निम्नोक्त बातें थीं:

1. दुग्ध उत्पादन के अधिकांश संभाग उत्तरी-शीतोष्ण भाग में स्थित हैं।
2. दक्षिणी शीतोष्ण भाग में कुछ दुग्ध उत्पादन संभाग हैं, पर उनकी संख्या कम है।
3. दुनिया में जो सूखे प्रदेश हैं, उनमें डेयरी संभाग नहीं हैं, पर इसमें एक

अपवाद भी है। दक्षिण अमरीका में जहाँ बरसात कम होती है और जो काफी गर्म भी है, वहाँ इतना दुग्ध उत्पादन होता है कि वहाँ की गोरी आबादी को दूध उपलब्ध हो सके।

4. डेयरी संभाग उच्चभूमि व जंगलों वाले इलाकों में स्थित हैं। अक्सर इन स्थानों में खेती करना काफी कठिन होता है, पर धरती इतनी उपजाऊ है कि कुछ फसलें और चारा पैदा हो सके।

5. दुग्ध उत्पादन निचली सपाट भूमि में भी किया जाता है जहाँ ज़मीन खेती के लिए माकूल है। यहाँ कुछ लोग खेतीबारी करने के बनिस्बत दुग्ध उत्पादन का काम इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि (1) ये छोटे देश हैं और अनाज पैदा कर फायदेमंद खेतीबारी के लिए ज्यादा ज़मीन की ज़रूरत होती है। अपने पशुओं के लिए सिर्फ चारा उगाना अधिक आसान पड़ता है। (2) अनाज वे उन देशों से पा लेते हैं, जहाँ उसे उगाना अधिक आसान और सस्ता पड़ता है।

बच्चों ने अपने देश में गेहूँ पट्टी और मक्का पट्टी की भी तुलना की, ताकि उपरोक्त कथनों की पुष्टि हो सके। इस चर्चा से एक सवाल भी उठा-अगर हमारे भोजन में दूध इतना महत्वपूर्ण है, तो फिर उन देशों के लोग क्या करते होंगे जहाँ दूध उत्पादन नहीं होता?

### **मंगलवार, 29 मार्च**

बड़े बच्चे उन सवालों के जवाब तलाशने लगे हैं जो उन्होंने कल उठाए थे। दोपहर के खाली घण्टे में बच्चे कज्वों की प्रतियोगिता में व्यस्त हो गए जो उन्होंने खुद आयोजित की थी। हेलेन और रैल्फ ने जोड़ियाँ बनाई जो जीते, उनकी फिर से जोड़ियाँ बनाई गईं। यह क्रम तब तक चलेगा जब तक सिर्फ एक जोड़ी बच जाएगी और तब विजेता चुना जाएगा। जैस-जैसे बच्चे प्रतियोगिता से बाहर होते गए उन्होंने अपने खेल आयोजित किए। कभी-कभी लगता है कि इन बच्चों को किसी शिक्षक की दरकार ही नहीं है, वे स्वयं ही इतने ढेर काम कर लेते हैं!

### **बुधवार, 30 मार्च**

नन्हो ने अंततः अपना डाकघर बना डाला है। आज उन्होंने चिट्ठी की रूपरेखा सीखी और एक-दूसरे को अपना पहला खत लिखा। उन्होंने एक बच्चे को पोस्टमास्टर के पद पर चुना जो टिकटें बेचे, चिट्ठियों पर ठप्पे लगाए और डाक डब्बों से एकत्रित चिट्ठियों को बाँटे। बड़े बच्चे सामूहिक चर्चा में पिछली बार उठे सवाल कि 'जिन देशों में दुग्ध उत्पादन नहीं होता वहाँ लोग दूध के लिए क्या करते हैं?' पर अपने-अपने नोट्स लेकर आए। हमने अरब देशों के ऊंट, भारत के पहाड़ी इलाकों के याक, लैपलैण्ड के



रेनडियर, इटली की बकरियों की और इन स्थानों में बसे लोगों की जीवन शैली की बात की। बच्चों ने इन देशों की भूमि की विशेषताओं की, वहां की जलवायु, कितनी फसल उगती है, देश की समृद्धि (जिन पशुओं को श्रम के लिए काम में लिया जाता है उन्हीं से दूध भी मिलता है) यह निर्धारित करती है कि वहाँ कौन से पशु पाले जाते हैं। आदि की जानकारी साझा की हमें पता चला कि हम आज मक्खन कारखाने नहीं जा सकते क्योंकि वह मरम्मत के वास्ते बन्द है। सो हमने अपने सवाल वॉकर गॉर्डन फार्म पर कल पूछे जाने वाले सवालों की सूची में जोड़ दिए।

### **गुरुवार, 31 मार्च**

प्रेन्सबरी में हमारा गाइड हमें दूध को बोटलबन्द करने वाला संयन्त्र, गोशालाएँ, दूध सुखाने वाला संयन्त्र और रोटोलेक्टर दिखाने ले गया। हमने अपने दोपहर का भोजन यहीं किया और हरेक बच्चे को पाव-पाव दूध दिया गया। हमारे गाइड ने बताया कि जब उनके कुछ अमरीकी खरीददार यूरोप-यात्रा पर जाते है तो उन्हें इस दूध की इतनी याद सताती है कि वे वॉकर गॉर्डन कम्पनी से वहाँ भी दूध मंगवाते हैं। बच्चों ने फौरन यह जानना चाहा कि यह कैसे सम्भव होता है। इस पर उन्हें छपी सामग्री दी गई। मार्था बोली कि वह सब कुछ पढ़ कर अपनी दादी को सुनाएगी। अगर इस यात्रा से मार्था और उसकी दादी के बीच केवल बेहतर सम्बन्ध मात्र बन पाते हैं; तो भी यह फलदाई सिद्ध होगी।

### **सोमवार, 4 अप्रैल**

आज बच्चों जो कुछ गॉर्डन डेयरी में देखा था उस पर बातचीत की। हमने पहले तो यह दोहराया कि वहाँ जाने का हमारा उद्देश्य क्या था। तब हमने उन कारणों की सूची बनाई जिससे यह सिद्ध हो सके कि यह डेयरी दुनिया की सबसे बेहतरीन डेयरी क्यों मानी जाती है:

हर चरण में पूरी सफाई बरती जाती है।

उनके दुधारू पशु बढ़िया हैं जो सही चारा-पोषण व देखभाल के कारण अच्छा दूध देते हैं।

वहाँ के कामगारों के बीच उम्दा सहकार है जिसके चलते सब काम सुचारू रूप से सम्पन्न होते हैं।

फ्रैंक इस तथ्य से प्रभावित था कि वहाँ पशुओं को उनका आहार तोल कर, विटामिन व अन्य पोषक तत्वों के साथ मिलाकर दिया जाता है। उसका कहना था कि हम अपनी गायों कि जितनी बढ़िया देखभाल करते हैं, उससे भी बढ़िया देखभाल वहाँ की जाती है। मुझे वॉरेन को यह कहते सुन अच्छा लगा कि श्री रेमण्ड भी ठीक ऐसे ही काम करते हैं, यद्यपि उनका स्तर छोटा

है।

### **मंगलवार 5 अप्रैल**

हमने अब तक डेयरी उद्योग के बारे में जो कुछ जाना-सीखा था उसकी समीक्षा हमने की। बच्चों को यह बात समझ आने लगी है कि हमारा इलाका भौगोलिक रूप से डेयरी के उद्योग के लिए सही क्यों है। मैंने उनसे पूछा कि क्या उनकी राय में हमें अपनी आय में इज़ाफ़ा करने के लिए अधिक दूध उत्पादन करना चाहिए? पर इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर हमें नहीं मिला। मैंने सुझाया कि शायद काउन्टी के कृषि एजेंट श्री रॉब हमारी मदद कर सकें। समूह के सचिव के रूप में काम कर रही रूथ उन्हें एक पत्र लिखेगी और उन्हें स्कूल आने को आमंत्रित करेगी।

### **सोमवार, 11 अप्रैल**

हमने श्री राब के आगमन की तैयारी शुरू कर दी है। जिन सवालों पर हम उनसे बातचीत करना चाहते हैं उसकी सूची भी बना ली है। ये सवाल हैं:

हमारे संभाग में कौन-कौन सी डेयरियाँ हैं? क्या वे सहकारी समितियों की हैं? पर्यावरण के संरक्षण की दृष्टि से क्या वैली व्यू में अधिक डेयरियाँ बनाना उचित होगा?

अगर वैली व्यू में अधिक डेयरियाँ हों तो क्या सारे दूध की खपत यहीं हो जाएगी, या वह बचेगा?

क्या दुग्ध उत्पादन संघ का सदस्य बनना अच्छा होता है?

निजी क्रीमरी (मक्खन कारखाने) और दुग्ध उत्पादन संघ की क्रीमरी में क्या फर्क होता है?

दूध की कीमत कैसे तय होती है?

राज्य दुग्ध नियंत्रण बोर्ड क्या है और वह क्या करता है?

मैंने बच्चों को सुझाव दिया कि अगर वे दुग्ध विपणन के बारे में कुछ पढ़ डालें तो शायद श्री राब की बात ज्यादा समझ आए।

इस सप्ताह मान नामक जर्मन परिवार हमारे इलाके में आ बसा है। उस परिवार का बच्चा हेनरी आज स्कूल आया। वह अच्छा लड़का लगता है और समूह ने उसे दिल से स्वीकार लिया है। वॉरेन और हेनरी में गहरी दोस्ती हो गई। मैंने हेनरी के साथ कुछ काम किया और पाया कि वह हमारे प्राथमिक समूह के बड़े बच्चों के साथ काम कर सकेगा।

### **मंगलवार, 12 अप्रैल**

आज हमारी चर्चा अतिरिक्त दूध से शुरू हुई। हमें पता चला कि हमारा इलाका जिस न्यू-यॉर्क दूध पट्टी में आता है, वह पट्टी दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार है। पर वहां अतिरिक्त दूध की मात्रा सबसे कम है। इसके बावजूद हम अधिक दूध पैदा नहीं कर पाते क्योंकि यहां श्रम बेहद महंगा है। औद्योगिक श्रम से स्पर्धा करनी पड़ती है, चारा खरीदना पड़ता है, क्योंकि ज़मीन की कमी है, और स्वास्थ्य बोर्ड के कठोर नियमों के कारण डेयरी व पशुओं के रख-रखाव पर खर्च भी अधिक होता है। समूह के तीन बच्चों ने अपने माता-पिता का उदाहरण देते हुए, बताया कि वे मज़दूर रख ही नहीं सकते क्योंकि मज़दूरी दरें उनकी पहुंच से बाहर हैं, उन्हें कुछ चारा भी खरीदना पड़ता है, और कई इंतज़ाम करने पड़ते हैं, जैसे बिजली से दूध ठण्डा करने वाली मशीनें। इन कारणों से उनकी कुल आय बहुत कम रह जाती है।

एक अखबार में यह छपा था कि कुछ किसानों के पास अतिरिक्त दूध इसलिए बच जाता है क्योंकि वे मौसमी उत्पादन को बाजार की जरूरतों के हिसाब से नियंत्रित नहीं करते। अगर ये किसान परस्पर सहकार करें तो उत्पादन नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे सबको लाभ हो सकता है। एडवर्ड ने कहा कि बात सच है क्योंकि उसके पिता को अपने अतिरिक्त दूध की आधी कीमत ही मिल पाती है। उसके पिता के पास जून के महीने में अधिक अतिरिक्त दूध होता है क्योंकि लगभग उस समय गायों के बछड़े होते हैं। साथ ही गायें जून में चरागाहों में चरने जाती हैं और बेहतर चारे के कारण अधिक दूध देती हैं। मैंने पूछा कि वॉकर गॉर्डन डेयरी क्या करती है? बच्चों का कहना था कि वे पूरे साल भर गायों को एक सा चारा देते हैं और पुरानी गायों को हटा नई रखने की व्यवस्था करती है। इससे दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों, हमेशा समान बनी रहती है। श्री रेमण्ड भी ठीक यही करते हैं।

समेटिस बच्चों का कहना था कि अतिरिक्त दूध की बात ही उन्हें समझ नहीं आती। लोग कम कीमत पर अधिक दूध बेच क्यों नहीं देते? पिछली सर्दियाँ उन्होंने शहर में बिताई थीं जहाँ उन्हें पीने को दूध ही नहीं मिल पाया क्योंकि वहाँ दूध खरीदना भारी पड़ता था। उनके लौटने के कारणों में एक यह भी था कि वे यहाँ एक गाय रख पाते हैं।

### **बुधवार, 13 अप्रैल**

अतिरिक्त उत्पादन की चर्चा आज भी जारी रही। एडवर्ड ने बताया कि मक्खन कारखाने में उस सारे के सारे दूध को अतिरिक्त माना जाता है जो अपने तरल रूप में बेचा नहीं जा सकता हो। हमने कुछ देर यह बातचीत की कि अतिरिक्त दूध का क्या किया जाता है, कैसे मक्खन, चीज़ (एक तरह का

पनीर) व दूध के अन्य उत्पाद बनाए जाते हैं। जब मार्था ने पढ़ कर यह सुनाया कि मक्खन में लैक्टिक एसिड बनाने वाले जीवाणु मिलाए जाते हैं ताकि उसमें खमीर “उठे” तब हम एक रोचक चर्चा की दिशा में मुड़ गए। बच्चों को यह तो पता था कि लैक्टिक एसिड का मतलब है जीवाणुओं को पैदा करना पर यह किया कैसे जाता है यह कोई नहीं जानता था। सोफिया ने कहा कि शायद वे पुराना मक्खन ताज़े में डाल देते होंगे। क्योंकि उसकी माँ जब चीज़ बनाती है तो दूध में हमेशा पुरानी चीज़ का टुकड़ा डालती है। मेरी और एडवर्ड ने बताया कि उनकी माँ, नई डबल रोटी बनाते समय खमीर उठाने के लिए पिछली बार के आटे में से बचा कर रखे गए खमीरी आटे को मिलाती है।

कल बच्चों को अपनी पुस्तकों में चीज़ के इतिहास के बारे में, वे कितने प्रकार के होते हैं, उसे कैसे बनाया जाता है, कुछ रोचक कहानियाँ मिलीं। वॉरेन सबको चखाने के लिए कुछ एडाम चीज़ लेकर आएगा।

### **गुरुवार, 14 अप्रैल**

आज तो सुबह-सुबह दावत हो गई। सबको एडाम चीज़ की छोटी-छोटी लाल गेंदे मिलीं जो समूह को बड़ी अच्छी लगीं। कल सवाल यह उठा था कि “प्रारंभिक दिनों में यहां आकर बसने वाले लोग अपने अतिरिक्त दूध का क्या करते थे?” प्रश्न के जवाब में हमने प्रथम दूध रेलगाड़ी और रिफ्रिजरेशन की प्रारम्भिक तरीकों के बारे में जाना। तब आधुनिक यातायात व्यवस्था और दूध ठण्डा करने की आधुनिक व्यवस्था के विषय में भी जानकारी ली। डेयरी उद्योग के लिए रेलगाड़ी का आना महत्वपूर्ण रहा है।

### **बुधवार, 20 अप्रैल**

स्कूल शुरू होता उसके पहले सोफिया और कैथरीन, खुशी से लबरेज मेरे पास आईं। क्यारी में लगाए कंदों में बेहद सुंदर फूल जो खिल आए हैं। वे दोनों रूथ के साथ छुट्टियों में जंगली फूलों वाला रॉक गार्डन देखने गई थीं। इन्होंने कुछ जंगली पौधों की सूची बनाई थी, जो उसमें उग रहे हैं। लड़कों के पास आज एक लंबी रस्सी थी और वे जी भरकर कूद रहे थे “साथ-साथ कूदें हम लड़के।” भी कहते जा रहे थे। मैंने फ्रैंक और डॉरिस से बात की ताकि उन्हें यह पता रहे कि नन्हों की मदद के लिए उन्हें आज क्या-क्या करना है।

नौ बजे डॉरिस और मैं छोटे से खेलघर में पांच-छह वर्षीय बच्चों के साथ गए। हमने योजना बनाई कि खेल-घर के सामने कहाँ आहता बनेगा, कितना बड़ा बनेगा। हम यह कर ही रहे थे कि एरिक बोला “मिस वेबर मेरे पिता आज बागीचा गोड़ रहे हैं।” इरीन फौरन बोली “क्या हम भी बाग लगा

सकते हैं? चीजों को उगते देखने में बड़ा मज़ा आएगा।” फ़्लोरेंस ने बताया कि उसकी माँ रॉक गार्डन बना रही है। रिचर्ड ने जोड़ा कि ऐसा करना मुश्किल नहीं होगा, क्योंकि खेलघर के पिछवाड़े में पत्थरों का ढेर पड़ा है। मैंने जानना चाहा कि वे पहले क्या करना चाहेंगे। उन्होंने योजना यह बनाई कि वे पहले बिखरी टहनियाँ, कागज़ आदि की सफ़ाई करेंगे, तब बड़े पत्थरों से आहता बनाएंगे और सपाट पत्थर ठेठ दरवाजे तक बिछा कर रास्ता बना लेंगे। इसके बाद डॉरिस की देखभाल में उन्हें छोड़ आई। पर उसे चेता भी दिया कि वह नन्हों को बड़े-भारी पत्थर न उठाने दे और उन्हें उनकी ही योजना के अनुसार काम करने दे।

प्राथमिक समूह के शेष बच्चों ने पहले दस मिनटों में वॉल्टर और जॉयस को ख़त लिखा जो यहाँ से चले गए हैं और जिन्होंने पत्र से हमें अपनी नई शाला के बारे में बताया था। दस बजे तक पत्र लिख डाले गए, पर सब बच्चे उन्हें साफ अक्षरों में उतार नहीं सके। कई चिट्ठियाँ रोचक और लम्बी थीं।

दस बजे हम खेल के लिए तैयार थे बड़े बच्चों ने लकड़ियों व पत्थर का खेल खेला और मैंने छोटों के साथ “मैं तेरे पाले में।” पर खेला तब जब मैं उनके काम को ठीक से देख चुकी। खेलघर के सामने तरतीब से पत्थर लगा आयताकार आहता बन चुका था। वहाँ से टहनियाँ, पत्ते, कागज़ साफ किए जा चुके थे। मेहनत मशक्कत के बाद वे हाथ-मुँह धोने और अपनी कारगुज़ारी को देखते हुए सुस्ताने के लिए दस मिनट रुके थे। डॉरिस बोली “उन्हें लगता है कि यह बड़ा अच्छा लग रहा है।”

खेल घण्टे के बाद समूची शाला पढ़ने में जुटी। पाँच और छह साल के बच्चों ने मेरे साथ बैठ किताबें देखीं और उन पर बातचीत की।

जिस समय मैं प्रथम समूह के साथ थी, द्वितीय समूह ने बड़ी सावधानी से तैयारी की और अपनी कहानियाँ सुंदर तरीके से पढ़ कर सुनाईं। पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी कार्य-पुस्तिकाओं में कुछ अनुवर्तन का काम किया। तब फ्रैंक उन्हें बाहर ले गया ताकि वे खिड़कियों वाला डब्बा (विन्डो बॉक्स) बना सकें। एन्ड्रू और गस को आरी चलाने और कीले ठोकने का कुछ अनुभव था। वर्ना वे फट्टों की नाप-जोख की। इन तीस के मिनटों दौरान पाँच और छह साल के बच्चे अपने खेलघर में खेलते रहे।

ग्यारह बजे वर्ना और गस हमारे साथ रॉबिन हुड के अभ्यास में जुड़े। एन्ड्रू, एल्बर्ट, एलिस और मेरी के साथ ‘विनी द फू’ का अभ्यास करने लगा। प्राथमिक समूह की प्रस्तुति में यही मुख्य नाटक होगा। 12 मई को कठपुतली प्रदर्शन के पूर्व हम हर रोज़ आधा घण्टे अभ्यास करना चाहते हैं। यह समय हम अपनी पठन कक्षा से निकाल रहे हैं। इसका मतलब होगा कि मैं तीसरे,

चौथे, पांचवे और छठे समूह से सप्ताह में दो बार के बदले एक ही बार मिलूंगी दूसरी बार वे खुद बैठेंगे और मन ही मन पढ़ेंगे। इस प्रयास से वे कितना समझ पाते हैं, यह बाद में जाँच लिया जाएगा। हमने जो कार्यक्रम तय किया है वह यह है:

सोमवार: तीसरा समूह मेरे साथ बैठेगा, चौथा आपस में, पाँचवा और छठा समूह मन ही मन मौन वाचन करेगा, जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

मंगलवार: पांचवा समूह मेरे साथ बैठेगा, तीसरा आपस में, पाँचवा और छठा समूह मौन वाचन करेगा जिसे समझ के लिये जाँचा जाएगा।

बुधवार: चौथा समूह मेरे साथ बैठेगा, तीसरा आपस में, पाँचवा छठा समूह मौन वाचन करेगा जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

गुरुवार: छठा समूह मेरे साथ बैठेगा, पाँचवा आपस में; तीसरा और चौथा मौन वाचन करेगा जिसे समझ के लिए जाँचा जाएगा।

साढ़े ग्यारह बजे प्राथमिक समूह के बच्चों ने पुस्तकालय में आसान किताबें चुनीं और वॉरेन के साथ बाहर चले गए। उन्होंने पहले मन ही मन किताबें पढ़ीं और जब उनकी तैयारी हो गई तब एक दूसरे को पढ़ कर सुनाई।

विश्राम के घण्टे के बाद छोटे बच्चों ने ताल का अभ्यास किया। वे दरियों पर बैठे और मैंने गेंद उछालने की धुन बजाई। उन्होंने पहले ताल की पहचान की और तब बारीबारी संगीत के ताल के अनुसार गेंद उछाली। बाद में ताल अनुसार विभिन्न जानवरों की चाल को भी प्रस्तुत किया। इस दौरान बड़े बच्चे अपने विविध काम करते रहे। वॉरेन और रैल्फ ने कठपुतली मंच के लिए दृश्यों की चर्चा की उन्हें बनाने की योजना बनाई। रूथ ने ताजा घटनाक्रम वाली किताब में जोड़ने के लिए एक लेख लिखा जो दुनिया के नक्शों के साथ छापा जाएगा। हेलेन, मार्था और एल्बर्ट ने कठपुतलियों की डोर लगाईं। कैथरीन ने उल्लू की पुतली बनाने के लिए उसके चेहरे की कढ़ाई की। कुछ बच्चों ने साल भर की ज़िम्मेदारियाँ आवंटित करने वाली समिति की बैठक की। ये सब काम बच्चों ने तब शुरू किए जब वे अपने नियमित काम से फारिग हो चुके थे।

दोपहर डेढ़ से दो बजे तक पाँच व छह साल वाले नन्हे अपने खेलघर में खेले। ईरीन कुछ शब्दों की वर्तनी का अभ्यास कर रही थी, काम पूरा करते ही वह खेलने भागी। ईरीन की दिली इच्छा है कि वह लिख सके। शेष प्राथमिक समूह को मैंने कुछ नए शब्दों का श्रुतिलेख दिया। उन्होंने सूची को ध्यान से देखा ताकि पता चले कि किन शब्दों को उन्हें याद करना होगा।

जो थोड़ा सा समय बचा उसमें मैंने कुछ बच्चों को गणित में व्यक्तिगत मदद दी। दो बजे प्राथमिक समूह घर गया और मैंने बड़े बच्चों के साथ बेसबॉल खेला। तब बड़े समूहों की गणित में मदद की।

4-एच. वानिकी क्लब की मार्गदर्शिका में एक अध्ययन का वर्णन है जिसमें तकरीबन चौथाई एकड़ भूमि का अध्ययन किया जाता है। बच्चे उस भूमि को बारीकी से जाँचते-परखते हैं ताकि वहाँ के पेड़-पौधों, जानवरों व जलचरों सभी के बारे में जान सकें। हमें भी जंगल में एक ऐसा हिस्सा मिला जिसमें सब कुछ था। पर बरसात शुरू हो जाने के कारण हम ठीक से उसकी छानबीन न कर सके। पर एक पुरस्कार हमें जरूर मिला। बारिश थमने पर हमें दोहरा इंद्रधनुष नज़र आया। जो हमने पहले कभी नहीं देखा था। बच्चों ने जानना चाहा कि इंद्रधनुष कैसे बनता है। वॉरेन को इसका पता था, सो उसने समूह को बताया। पर हममें से कोई यह नहीं जानता था कि दो-दो इंद्रधनुष क्योंकर बने। मैंने सुझाया कि समय मिलने पर हम उत्तर की तलाश करें।

बारिश थमने का इंतज़ार करते हुए हमने यह चर्चा कर ली कि जंगल के उस हिस्से का अध्ययन हम कैसे करेंगे। कैथरीन ने कहा कि पहले हमें वहाँ वह सब देख लेना चाहिए जिसे हम पहचानते हैं। वॉरेन को लगा कि हमें उस भूखण्ड का नक्शा बना कर जहाँ जो मिले उसे चिन्हित करना चाहिए। मैंने जानना चाहा कि 'जो चीज़ें मिलें' से उसका क्या अर्थ है। उसने समझाया कि अगर ऐसे गढ़े मिलें जिसमें जानवर हों, या पेड़ों पर कोटर मिलें, दलदल हों, खेत दिखें या जंगल, सब नक्शे पर दर्शाए जाएँ। मैंने पूछा कि क्या हम पशु भी दर्शाएंगे, उत्तर नकारात्मक था। "नक्शा इतना बड़ा थोड़े ही होगा!" इस पर रैल्फ ने जोड़ा "तो बड़ा नक्शा भी तो बनाया जा सकता है।" एल्बर्ट का कहना था कि हमें बड़ा नक्शा लेकर नहीं जाना चाहिए, बल्कि अपने-अपने छोटे नक्शे लेकर निकालना चाहिए और बड़े नक्शे पर स्कूल लौटने पर ही काम करना चाहिए।

### **गुरुवार, 21 अप्रैल**

रैल्फ जून बेरी फूलों का एक बेहद खूबसूरत गुलदस्ता लेकर स्कूल आया। उसने सोफिया से कहा कि वह उन फूलों को गुलदान में सजा दे। गुलदान भी वह लेकर आया था। हम सब बाहर बाग में यह देखने निकल आए कि इस बीच कौन से नए फूल उग आए हैं। जंगली जर्मेनियम, दलदली गेंदा, लेडी स्लिपर सिर उठाए खड़े हैं। मैंने कुछ समय मे के साथ बिताया जिसे आज नन्हे बच्चों के साथ काम करना है।

प्राथमिक समूह के बच्चों ने फ्रैंक के साथ खिड़की बक्सों पर काम किया। वर्ना और एलिस ने एक बक्सा रंगा और हेनरी ने आरी चलाई, हथौड़े

से कीलें ठोकीं, नाप-जोख कर एक दूसरा बक्सा बना डाला। फ्रैंक नन्हे बच्चों के साथ बड़े सलीके से काम करता है। उनके वे काम वह कभी नहीं कर डालता जो वे खुद करते हुए सीख सकते हैं।

बड़े बच्चों ने अपने अखबार पर बातचीत की। बच्चों का मानना था कि उनका पहला अखबार, दूसरे वाले से बेहतर था क्योंकि पहले अखबार के लिए अपने लेख उन्होंने काफी पहले से लिखने शुरू कर दिए थे। साथ ही हमारे पास तमाम रोचक विषयों पर कहने को बहुत कुछ मसाला भी था। तीसरी बात यह थी कि तब सबने सहयोग किया था और योगदान दिया था। उनका सुझाव था कि तीसरे अखबार का काम फौरन शुरू कर दिया जाना चाहिए। मेरी ने कहा कि यह बात हर दिन याद दिलानी चाहिए। वॉरेन को लगा कि अगर सूचना पट्ट पर सबके नामों की सूची लगा दी जाए तो बेहतर होगा। जैसे-जैसे हम अपना योगदान करें, वह नाम के आगे दर्ज होता चले। मेरी का कहना था कि अगर ढेरों लेख तैयार हो जाते हैं तो हम उनमें से सबसे बढ़िया लेख चुन सकते हैं ताकि अखबार सच में अच्छा बने। मे ऐसी सूची बना देगी।

अखबार में लिखने के लिए हमने स्कूल की रोचक घटनाओं की सूची बनाई। जब सूची बन चुकी तो रूथ ने टिप्पणी की “हमें अच्छी पुस्तक समीक्षा लिखना आना चाहिए।” “हाँ, और लेख भी” वॉरेन ने हंसते हुए जोड़ा। “यह कल करेंगे” मेरी ने कहा। स्कूल के बाद सोलह उत्साही बच्चे भू-अध्ययन के लिए रुके। कल की तुलना में आज संख्या अधिक थी। एल्बर्ट ने नवागंतुकों को संक्षेप में हमारी योजना बताई। हमने अपनी तख्तियाँ और पेंसिल उठाई और रैल्फ की अगुवाई में जंगल की ओर बढ़ चले। चयनित भू-खण्ड को हमने होर दिया। इलाके का नक्शा बनाते समय वे बतिया रहे थे। “मिस वेबर क्या हमारे अपने-अपने भूखण्ड भी हो सकते हैं?” सवाल रैल्फ का था। “शायद मेरे पिता इस गर्मियों में हमें पैदल यात्रा पर ले जाएँ। वे प्रकृति के बारे में बहुत कुछ जानते हैं” वॉरेन विचार करने लगा। जब रैल्फ ने कहा कि “शायद मेरे पिता भी ले जाएँ। मैं पूछूंगा!” यह सुन मेरी तो मानो सांस ही बन्द हो गई।

### **शुक्रवार, 22 अप्रैल**

बड़े बच्चों ने अच्छे आलेख के कुछ मानक तय किए। रूथ जो हमारी सचिव है, उसकी एक सूची तैयार कर रही ताकि सूचना पट्ट पर लगाई जा सके। उसे सब अपनी सुविधा से अपनी प्रगति पुस्तिका में उतार लेंगे। आज जो मानक बनाए गए उनके आधार पर, गत कल लिखे गए आलेखों को जाँचने में बचा हुआ समय लगाया गया। पठन के कालांश के बाद छोटे बच्चों ने



स्वेच्छा से खेलघर में अपनी क्लब बैठक की। एलिस ने उनकी मदद की और खुद उनके द्वारा बनाए गए नियमों की निम्नोक्त सूची मुझे थमाई:

1. सीढ़ियाँ पूरी करो।
2. खिलौने मत तोड़ो।
3. सीढ़ियों के लिए लगाए गए हमें पत्थर उखाड़ने नहीं हैं।
4. हमें खाट नहीं तोड़नी है।
5. गंदे शब्द नहीं बोलने हैं।
6. अंदर घुसो तो जूते साफ करके घुसो।

### **मंगलवार, 26 अप्रैल**

मैं नन्हों के साथ कक्ष से बाहर आई। फ़्लोरेंस ने उन्हें जिंजरब्रेड मानव की कहानी सुनाई। आज उसे नाटक में बदलने में मज़ा आया क्योंकि हमारे पास भाग दौड़ के लिए पूरा मैदान था। मुझे आश्चर्य हुआ कि इरीन ने कहा कि वह गाय बनेगी। उसे हमेशा मुख्य पात्र ही बनने की इच्छा रहती है। इस दौरान बड़े बच्चे अखबारों के आलेखों पर काम करते रहे। जब मैं कक्ष में लौटी तो डॉरिस ने अपना लेख थमाते हुए कहा “मिस वेबर मैंने नियमों के हिसाब से लिखा है और लगता है कि यह ठीक ही है।” लेख में एक भी अशुद्धि नहीं थी! इतना बढ़िया लिखा गया था।

### **बुधवार, 27 अप्रैल**

फ्रैंक ने प्राथमिक समूह के साथ खिड़की-बक्सों का काम किया। वह अपनी ज़िम्मेदारी गंभीरता से लेता है और मुझे प्रगति की सूचना भी देता है। आज उसने टिप्पणी की “मिस वेबर कभी-कभार जब वे एक-दूसरे के काम में बाधक बनते हैं तो ज़ोर से चीखते-चिल्लाते हैं। मैंने उनसे कहा कि यह बात ठीक नहीं है। विलियम आज काफी देर रुठा रहा, क्योंकि वनी ने उसे धक्का लगाया था। मैंने वर्ना से माफी माँगने को कहा, तब उन्हें हाथ मिला दोस्ती करनी पड़ी। अब सब ठीक है।”

### **गुरुवार, 28 अप्रैल**

आज नन्हे बच्चे कक्ष में आकर दिन की योजना नहीं बनाना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि वे अपने बाग का काम फौरन शुरू कर दें। हमने उन्हें अनुमति दी और एडवर्ड ने खोदने, गुड़ाई करने, और फूलों के बीज बोने में उनकी मदद की। हमारे सवालों के उत्तर देने श्री राब आए। उन्होंने बच्चे को वैली व्यू में दूध उद्योग के बारे में बताया और तब दूसरी काउन्टियों से यहाँ की स्थिति की तुलना की। उन्होंने सहकारी समितियों और उनके महत्व की बात समझाई। यह बताया कि न्यू जर्सी स्थित दुग्ध नियंत्रण बोर्ड दूध की

कीमत कैसे तय करता है। बच्चों को पता चला कि अगर खेती के लिए जुताई कम की जाए और घास बने रहने दी जाए तो वैली व्यू में दूध उत्पादन वांछनीय बन सकता है। ऐसा करने पर भूमि खराब नहीं, बल्कि बेहतर बनेगी। पर अगर हमें गायों की संख्या बढ़ानी हो तो हमें मक्का उगाने के लिए ज्यादा ज़मीन को जोत कर खेती लायक बनाना होगा, इससे हमारी भूमि को नुकसान होगा

जहाँ तक अतिरिक्त दूध का सवाल है, ब्यू जर्सी में वैसे भी दूध पर्याप्त नहीं है। राब साहब ने बताया कि काउन्टी में कुल दूध खपत का मात्र चालीस प्रतिशत ही होता है। पर उसे शेष दूध उत्पादक इलाकों के साथ होड़ भी करनी पड़ती है। इन इलाकों में पैनसिल्वेनिया के कुछ भाग और न्यू यॉर्क भी शामिल हैं। इनका कहना था डेयरी फार्म शुरू करने की लागत इतनी ज्यादा है कि हमारे कस्बे में नए फार्म खुलें इसकी संभावना भी कम है। आज जितनी डेयरियाँ हैं वे सालों पहले शुरू की गई थीं। इस अध्ययन के दौरान बच्चे कुछ सामान्य नतीजों तक पहुंचे हैं। ये हैं:

1. सहकारी दूध उत्पादन बाज़ार सुनिश्चित करना है।
2. सहकारी दूध उत्पादन से दूध की उच्च गुणवत्ता बनाए रखी जा सकती है।
3. वैली व्यू के लिए दूध उत्पादन, आय व संरक्षण, दोनों ही दृष्टि से फायदेमंद है।
4. ऐसी ज़मीन भी जोती जा रही है जिसका उपयोग दरअसल चरागाह या जंगल के रूप में होना चाहिए।
5. बेहतर यातायात; यंत्रों व वैज्ञानिक तौर-तरीकों के कारण खास प्रकार की खेती सम्भव हुई है।
6. वितरण व्यवस्था में ज़रूर कुछ कमी है, क्योंकि शहरों में कई लोगों को खरीद न पाने के कारण पीने तक के लिए दूध नहीं मिल पाता और किसानों के पास अतिरिक्त दूध बचता है जिसे वे बेच नहीं पाते।
7. दूध हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
8. गायों को अगर सही चारा मिले, उनकी बढ़िया देखभाल हो तो वे बेहतर और अधिक दूध देती हैं।
9. दूध जब हमारे घरों तक पहुंचता है, वह साफ व सुरक्षित होता है, यह स्थिति बनी रहनी चाहिए।

राब साहब खेल घंटी के दस मिनट पहले आए थे, सो बच्चों को दोपहर बाद ही खेलने का मौका मिल पाया। पर इस पर किसी भी बच्चे ने कोई टिप्पणी नहीं की। पर जैसे ही उन्होंने बात खत्म करते हुए कहा “लगता है इतना भर

काफी है” कि रॉल्फ पूछ बैठा कि क्या वे भी हमारे साथ खेलना पसन्द करेंगे। श्री राब बोले कि एक उनके पास सिर्फ पन्द्रह मिनट हैं। बच्चों ने कक्ष से बाहर होने में पल भर भी नहीं गंवाया। आम सहमति से राब साहब को उस दल में शामिल किया गया जिसमें खिलाड़ी कम थे। थॉमस ने उन्हें लॉग बेस के पास यह कहते हुए खड़ा किया कि “आप लंबे हैं, सो बॉल को पकड़ लेंगे और हमें हर बार सड़क की ओर दौड़ कर उसे पकड़ना नहीं होगा।” सबने खुशी-खुशी समय बिताया।

मैंने दूध उत्पादन के हमारे अध्ययन के विश्लेषण की चेष्ट की। लगा कि बच्चे हमारे समुदाय के जीवन और उससे जुड़ी समस्याओं के प्रति जागरूक बने हैं। उन्होंने इन समस्याओं पर अपने माता-पिता से भी बातचीत की है, उन्हें भी जागरूक बनाया है। इस कदर कि एडवर्ड के पिता ने काउन्टी कृषि सलाहकार को सुझाव देने के लिए बुलाया। वे यह कभी समझने लगे हैं कि कुछ आर्थिक समस्याएं हैं जो सहकारी गतिविधियों के अभाव से उपज रही हैं, तो कुछ ऐसी भी हैं जो हमारे देश के इतिहास के क्रमिक विकास से उपजी हैं। बच्चों को अतिरिक्त उत्पादन और घोर अभाव की असंगतियाँ, श्रम के संघर्षों व मूल्य नियंत्रण आदि समझ आ रहे हैं। उन्हें पता चला कि दुनिया में बसा विशाल समुदाय, हमारे छोटे से मुहल्ले को कैसे प्रभावित करता है।

वे यह देख-जान रहे हैं कि आबोहवा, भूमि की सतह, हमारे देश के अन्य भागों व दुनिया के यातायात के साधन हमारे समुदाय के उद्योग-धन्धों को कैसे प्रभावित करते हैं। यह भी वे देख-समझ रहे हैं कि हमारे देश का विकास हम पर क्या असर डाल रहा है। वे जन-स्वास्थ्य, खेतीबारी, उद्योग व परिवहन के क्षेत्र में हो रही वैज्ञानिक प्रगतियों को भी समझ रहे हैं।

यह सच है कि वे इस वक्त इन स्थितियों के बारे में कुछ खास कर नहीं सकते, पर इन विषयों पर जो कुछ वे सीख रहे हैं उनसे उनका नज़रिया बनेगा जो बड़े होने पर उनके काम को दिशा देगा। इस प्रकार के ‘बौद्धिकरण’ को बच्चों की वास्तविक समझ के परे भी नहीं बढ़ने देना चाहिए क्योंकि अन्यथा वह महज प्रचार या मौखिक अभिव्यक्ति बन जाता है, जो खतरनाक साबित हो सकता है। जिन विषयों का बच्चे अध्ययन कर रहे हैं, उन्हें वे अपने समुदाय में खुद देख भी सकते हैं। स्कूल में वे जो समय पढ़ने-चर्चा करने में लगाते हैं, वह उन्हें पैसे अवलोकन के लिए तैयार करता है। बाद में वे जो कुछ उन्होंने देखा उसे समझने की कोशिश करते हैं। किताबों का उपयोग वे अपने अनुभवों के निहितार्थ निकालने और उन्हें विस्तार देने के लिए करते हैं।

बच्चों के सामाजिक संपर्क बेहद सीमित हैं। इस अध्ययन के दौरान

की गई यात्राओं ने उन्हें सार्वजनिक शिष्टाचार का अभ्यास करने का अवसर दिया है। नक्शों का उपयोग, यात्राओं की योजना बनाना और यात्राएँ करने के अनुभव ने उन्हें अधिक सचेत व सतर्क बनाया है। वे अपने तात्कालिक वातावरण का अर्थ तो तलाश ही रहे हैं पर साथ ही उसे विस्तृत भी कर रहे हैं।

### **शुक्रवार, 29 अप्रैल**

विज्ञान के कालांश का उपयोग जंगल में चिन्हित भू-खण्ड में हमने जो कुछ कल देखा था उसे फिर से देख जाने के लिए किया। बच्चों को वहां उन्नीस गढ़दे मिले थे जो चूहों, सांपों, गिलहरियों या अन्य छोटे जानवरों या कीड़ों के हो सकते हैं। हेलेन ने कहा कि हम उनके चित्र बनाएँ क्योंकि सही चित्र बनाने के लिए हमें यह भी जानना होगा कि वे जन्तु चौपाए हैं या शल्क वाले। वॉरेन ने कहा कि अगर हम किताबों की छानबीन करें तो हमें पता चल सकता है कि दरअसल हमें क्या तलाशना है। उन्होंने तय किया कि वे सारी सूचनाएँ कॉपियों में लिखेंगे। इस पर मैंने जानना चाहा कि “भूखण्ड का अध्ययन कैसे किया जाएगा? क्या सभी लोग सभी चीजों को देखेंगे या फिर तुम लोग छोटी समितियों में काम बाँट लोगे?” कैथरीन का मानना था कि बेहतर यही होगा कि एक-एक चीज़ का बारीबारी अध्ययन किया जाए। इससे सभी हरेक वस्तु के बारे में जान सकेंगे। हेलेन ने कहा जिसे जो पसंद आए वह उसी का अध्ययन करे। इस पर एल्बर्ट उठा और उसने बाकयदा एक लम्बा भाषण दिया “मुझे लगता है, हमें समूहों में बंट जाना चाहिए। हरेक सब कुछ का अध्ययन करे इतना समय बचा ही नहीं है। अगर हम समूहों में कार करें तो हम काफी तेज़ी से अधिक चीजों का अध्ययन कर सकेंगे।” इतना कह वह बैठा पर तुरंत फिर से खड़ा हो बोला “जब दूसरे हमें उनके द्वारा तलाशी गई चीजों के बारे में बताएंगे जिसे हम सुनेंगे और उनकी कॉपियों में जो वे लिखेंगे उसे पढ़ेंगे, तो हम उनके विषय में भी सीख लेंगे।” मेरी ने जोड़ा “ऐसे में हरेक वह कर सकेगा जो वह करना चाहता है और हमारा समय बरबाद नहीं होगा। इससे हमें अपने भूखण्ड में गर्मियों में जो कुछ दिखेगा उसके बारे में सब जान सकेंगे”। और तब बच्चों ने तय किया कि वे क्या जाँचना-तलाशना चाहते हैं।

### **गुरुवार, 5 मई**

पिछले सप्ताह बने समूहों ने अध्ययन के संबंध में जो योजनाएं बनाई थीं, उन्हें भूखण्ड में जाकर लागू किया गया जल जीव समूह ने धब्बेदार सरटिका को देखा उसके चित्र बनाए, उनके बारे में पढ़ा और उनकी आदतों के बारे में सूचनाएँ इकट्ठी कीं। फूल समूह ने उन तमाम फूलों की सूची बना डाली जिन्हें वे पहले से पहचानते थे। मेने पांच प्रकार के पेड़ों की विशेषताओं

का अध्ययन किया। अब वह दो प्रकार के सफेद बलूतों में, जंगली चेरी और चेरी भुर्ज में अंतर पहचान लेती है।

### शुक्रवार, 13 मई

सत्र समापन का समय हमेशा व्यस्ततम लगता है। एकल शिक्षक शाला चलाने वाले प्रत्येक शिक्षक को दरअसल एक बढ़िया निजी सचिव की ज़रूरत है जो सब कुछ दर्ज करती जाए। और तब शिक्षक को कार्य की समीक्षा व योजना की फुरसत हो। कल और आज रात बच्चों ने 'विनी द फू' और 'रॉबिन हुड' के कठपुतली नाटक किए। दोनों ही दिन दर्शक ठसाठस भरे थे। पिछले साल के नाटकों की चर्चा कस्बे तक फैल चुकी थी, सो वहाँ से भी अच्छी संख्या में लोग आए। हमें संतोष यह था कि हमने ऐसा प्रदर्शन किया जिसे कस्बे वाले भी देखने के लिए इतनी दूर आए। कई आगन्तुकों ने इस तथ्य की प्रशंसा की कि बच्चों ने खुद सारा बन्दोबस्त बखूबी संभाला था। मंच, प्रकाश, व साजो-सामान का लाना ले जाना इतनी सहजता से हुआ कि नाटक का मंचन प्रभावी बन सका। हर बच्चे को पुख्ता तौर पर यह पता था कि उसे कब और क्या करना है।

हमें पंक्तियाँ याद दिलाने के लिए प्रॉम्पटर की दरकार भी नहीं पड़ी क्योंकि जहाँ कहीं वे अटके, उन्होंने स्वयं शब्द गढ़ लिए। इससे उन्होंने नाटकों को और मज़ेदार बना दिया। रॉबिन हुड के दूसरे दृश्य में जहाँ रॉबिन हुड और नन्हा जॉन संकड़े से पुल पर मिलते हैं और उनमें बहस होती है कि किसे रास्ता देना चाहिए, रॉबिन हुड कुछ पल के लिए पुल से गायब होता है ताकि वह लट्ठ काट लाए। पर्दे के पीछे बच्चे रॉबिन हुड के हाथों में लट्ठ पकड़ाने की कोशिश करते रहे जो पुतली के हाथों में ठहर ही नहीं रहा था। सो नन्हा जॉन उम्मीद से अधिक समय तक अकेला खड़ा था। पर रैल्फ ने, जो जॉन को पुतली चला रहा था, स्थिति संभाली। पहले उसने जॉन को पैर ठकठकाते दिखाया, तब सिर खुजलाते। और तब पुल पर इतनी जीवन्तता से आगे-पीछे चलते दिखाया कि दर्शक तो पगला गए। रैल्फ को एक भी शब्द नहीं बोलना पड़ा। पुतली के हावभाव पूरी बात कह रहे थे। इसके बाद तो दर्शकों की ऐसी भागीदारी हुई कि पूछिए मत। ज़ाहिर था कि बच्चों ने भी इसे भांप, जी जान से मंचन किया। कस्बे में लोहे-लकड़ वाली दुकान का मालिक तो उत्साह में अपनी जांघें ठोकने लगा, हंसी से लोटपोट हुआ, और पास बैठे दर्शक को कहने लगा कि इतना उम्दा प्रदर्शन उसने अपनी ज़िंदगी में पहली बार देखा है।

बच्चों रॉबिन हुड के युग के पाँच गाथाएँ भी गाईं। ये गीत बड़े लोकप्रिय हो गए हैं। नाटक समाप्त हुआ तो सभी दर्शक पर्दे के पीछे बढ़ गए और बच्चों

ने उन्हें कठपुतलियाँ चला कर दिखाईं। उन्होंने शान नहीं बघारी और तारीफ को सौम्यता से स्वीकारा। पर ज़ाहिर था कि वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। और तो और हमने साठ डॉलर बना लिए।

### **सोमवार, 16 मई**

कठपुतली मंचन सलटने के बाद हम वार्षिक कस्बाई नाटक दिवस की तैयारी में जुट गए। हमने रिप वैन विन्कल की कहानी को नाटक की शक्ल देने की सोची। यह कहानी खुले में मंचन के लिए सही है क्योंकि इसमें काफी हिस्सा मूकाभिनय ने प्रस्तुत किया जा सकता है। साथ ही गीत-संगीत नृत्य, खेल-कूद और करतबों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इस सबका बच्चों ने सालभर अभ्यास किया ही है, और सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें सभी बच्चे शिरकत कर सकते हैं। इस बंसत छोटे बच्चे अपने लिए नए खेल ईजाद करते रहे हैं। आज उन्होंने अपने ताज़ा खेल के बारे में बताया, जो मुझे बड़ा अच्छा लगा। “पेड़ के तने के इर्दगिर्द” का नाम दिया है उन्होंने अपने नए खेल को।

### **गुरुवार, 19 मई**

आज भाग्य ने अचानक साथ दिया। हम अपने भूखण्ड के अध्ययन में मशगूल थे, कि वॉरेन उत्तेजना में लगभग कांपता सा दौड़ा आया और बोला “जल्दी से आइए। आकर देखिए तो सही कि एल्बर्ट को क्या मिला है।” हम उसके पीछे-पीछे दौड़े। देखा कि एल्बर्ट जंगल में एक खुली सी जगह पर खड़ा है और उसके पास कुछ है जो पंखों का ढेर सा लग रहा है। हम ठीक से देखने और पास गए। वह पक्षी शिशु ही था पर काफी बड़ा सा था, एल्बर्ट के दोनों हाथों के बराबर। पंख उसके काले और सफेद थे और उसकी कलंगी लाल थी। उसकी जीभ पूंछ और पंखों से लगा कि वह कठफोड़वा है। पर ऐसे कठफोड़वे को हमने पहले कभी देखा नहीं था। हम ऊपर से आती ज़ोरदार चीखों से चौंक पड़े। उसकी माँ हमें डांटती और अधिक निकट आने से बरजती सी आगे-पीछे उड़ रही थी। एल्बर्ट ने पक्षी शिशु को सावधानी से धरती पर रखा और हम सब आगे क्या होता है देखने पीछे हट गए। नन्हा पक्षी फुदकता हुआ एक टेढ़े उगे पेड़ के तने पर चढ़ा और धीमे-धीमे ऊपर बढ़ने लगा। उसकी माँ उसके पीछे थी। कुछ देर बाद हम चिड़ियों को उनके आश्रय स्थल में शांति से छोड़ लौट आए। शाला भवन लौटते ही हमने अपनी पक्षी पुस्तक निकाली और तलाश करने पर पाया कि हमारा परिचय शिखायुक्त कठफोड़वे से हुआ था जो काफी बिरला पक्षी है।

### **सोमवार, जून 6**

अंतिम दो सप्ताह मानो फुर्र से उड़ गए। हमारी काफी समय नाट्य

दिवस के लिए रिप वैन विन्कल की तैयारी में लगा। नाटक अब खासा चुस्त बन पड़ा है। पिछले सप्ताह हमने अपनी मेजों की मरम्मत का काम शुरू किया। बच्चों ने काँच के टुकड़ों को टेप से चिपकाया ताकि हाथ न कटें, और वार्निश की पुरानी सतह खुरच डाली और तब लकड़ी की सतह के पूरी तरह सपाट बना डाला। तब खुरदुरे बलुआ कागज़ व बारीक बलुआ कागज़ से उसे रगड़ा। हमने इस बार गहरे रंग का वार्निश लगाया। अधिकांश मेज़ें पूरी हो चुकी हैं और बिल्कुल नई-ताज़ा लग रही हैं। बच्चों को अपने कौशल पर बड़ा गर्व हो रहा है।

जब हम मेज़ों को रंग रहे थे उस वक्त बच्चे हमारे कक्ष में और आवश्यक सुधार-मरम्मत की बात भी कर रहे थे। उन्हें लगता है कि सबसे पहले तो उन्हें किताबों की अधिक अल्मारियों की ज़रूरत है। पुस्तकालय प्रभारियों को उन्हें व्यवस्थित रखने में बेहद परेशानी होती है क्योंकि किताबों को तरतीब से रखने की कोई जगह ही नहीं है साथ ही हमें अपने संग्रहालय की वस्तुओं को करीने से सजाने और बच्चों के खिलौने रखने की जगह भी चाहिए। लड़कों का कहना था कि यह सब स्कूल के समय में नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे शेष गतिविधियों में बाधा आएगी, कमरा देर तक अस्तव्यस्त रहेगा। और सच तो यह है कि ऐसे काम के लिए लम्बे समय तक निर्बाध जुटे रहना पड़ता है। हमने तय किया कि स्कूल खुलने पहले अगस्त में यह किया जाए जब मैं भी ग्रीष्म शाला से लौट आऊँ।

### **शुक्रवार, 10 जून**

कस्बाई नाट्य दिवस पर हमारा रिप वैन विन्कल का नाटक लोगों को पसन्द आया। बाहर खुले में मंचन बड़ा सटीक था। सारे बौने पात्र अपनी रंग-बिरंगी लम्बी टोपियों में जंगल से निकले, बाड़ लांघ कर आए और व्यस्त चूहों से इधर उधर घूमते रहे। श्रीमती वैन विन्कल के रूप में कैथरीन ने अपनी कलाकारी फिर से दर्शाई। रिप के साथ खेलते नन्हे बच्चे अपने स्वाभाविक रूप में थे। और थॉमस ने रिप को प्यारे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया। यों स्कूल सत्र को समाप्त करना सुखद लगा।

इस वर्ष की मेरी दैनंदिनी साफ दर्शाती है कि सभी लड़कियों-लड़कों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मुझे कितना जूझना पड़ा है। परन्तु मिस एवर्ट की मदद से स्थिति का विश्लेषण व मूल्यांकन करते समय लगा कि मैंने काफी कुछ सीखा और मैं यह भी जान सकी कि हमने काफी कुछ हासिल भी किया है। मेरा पक्का विश्वास है कि तमाम बाधाओं के बावजूद, लोकतांत्रिक व्यवस्था लागू करना, अन्य सभी सामाजिक व्यवस्थाओं की तुलना में अधिक सटीक रहा है। हमारे सामूहिक दैनिक जीवन में लोकतांत्रिक तरीके से सोचना

और काम करना सही रहा है। लगता है हम इस दिशा में कामयाब भी रहे हैं। विगत साल के हमारे काम पर नज़र डालने पर लगा कि हममें सामूहिकता की भावना पनपी है। लोकतांत्रिक भागीदारी भावना की भी लगातार सुदृढ़ हुई है। बच्चे यथासम्भव स्कूली जीवन के तमाम दायित्वों और ज़िम्मेदारियों को निभाने लगे हैं। हार्प ने कहा था कि “दुनिया के काम को सहकार के साथ करने की क्षमता व रुचि तलाश पाना और उसमें आनंद लेना।” मुझे लगता है कि हम वास्तव में इस दिशा में बढ़ रहे हैं।

### तीसरा वर्ष

#### अपने दर्शन को सतत् लागू करते जाने के मेरे प्रयास

**गुरुवार , 18 अगस्त 1938**

ग्रीष्म शाला से घर लौट एक बार फिर से जम चुकी हूँ। अब जाकर कुछ शांति और एक अलग कमरा उपलब्ध हुआ है सो मैं अपने विचारों को शब्दों में बांध सकूँ। ये विचार इस सम्बन्ध में हैं कि हमारे समाज को किस दिशा में बढ़ना चाहिए; समाज में स्कूल का क्या स्थान है; जिन बच्चों को हम पढ़ाते हैं उनके बारे में हमारा क्या सोच है; वे कैसे हैं, कैसे सीखते हैं और उनके प्रति स्कूल का क्या दायित्व है?

मुझे लगता है कि सिखाते समय हमें कुछ सामाजिक लक्ष्य अपने समक्ष रखने चाहिए, और ये लक्ष्य इस तथ्य से उपजने चाहिए कि हम किस प्रकार का समाज चाहते हैं। हम शिक्षकों के मन में एक चित्र होना चाहिए, जो हमारे अनुभवों के व्यापक होते जाने के साथ विस्तृत हो, कि आखिर लोगों के लिए जीवन जीने का एक अच्छा तरीका क्या है। तब इन मूल्यों के प्रकाश में हमें अपने बच्चों का अध्ययन करना चाहिए ताकि यह समझ आए कि उनके जीवन इन वांछनीय दिशाओं में किस प्रकार सुधारे जा सकते हैं। जैसे-जैसे यह स्पष्ट होने लगे कि हमारे बच्चों को किन चीजों की आवश्यकता है, हमें ऐसे कार्यक्रम रचने चाहिए जिनसे उन ज़रूरतों की पूर्ति हो।

**शुक्रवार, 19 अगस्त**

आज मैं बच्चों के घरों में गई ताकि फिर उनसे मिल लूँ और उनके द्वारा भेजे गए सुंदर पत्रों के लिए धन्यवाद भी दे डालूँ। पता चला कि थॉमस ने गर्मियों में घर के बड़े कमरे के दरवाज़े को खुरचा और उसे फिर से रंग डाला। जब एन्ड्रूज़ परिवार के यहां पहुंची तो पाया कि लड़कियाँ अपनी मेज़ कुर्सियों को रंग रहीं थीं। श्री जोन्स मार्था और रैल्फ को सर्कस व चिड़ियाघर दिखाने ले गए थे और इतवार को घुमाने भी। हिल परिवार समुद्र किनारे और न्यू यॉर्क घूमने गया था। मान व हिल लड़कों ने अपना समय दुकान-दुकान



और सर्कस-सर्कस खेलने में बिताया था। समेटिस बच्चों ने दो फिल्में देखी थीं। वे तारामण्डल और प्राकृतिक इतिहास का अजायबघर, भी देखने गए थे। लगभग सभी बच्चों ने अपनी रुचियों के अनुसार कुछ करने का समय निकाला था। मनोरंजन की इन तमाम गतिविधियों में स्कूल का प्रभाव साफ-साफ नज़र आया। लगा कि नए वर्ष के लिए अधिकांश संकेत शुभ हैं।

### **गुरुवार, शुक्रवार व शनिवार, 25,26 व 27 अगस्त**

सभी बड़े लड़के इन तीनों दिन स्कूल में मिले ताकि वे उन अल्मारियों को बना सकें, जिनकी हमने सत्र समापन के पहले योजना बनाई थी। रैल्फ भी आया, यद्यपि वह इस वर्ष हाई स्कूल जाएगा और अपनी मेहनत का लाभ खुद नहीं उठा पाएगा। उसका दृष्टिकोण कितना बदल गया है। इसी रैल्फ ने पिछले सत्र की शुरुआत में नन्हों के लिए खेलघर बनाने में मदद करने से इनकार कर दिया था, क्योंकि वह उसमें खेलने नहीं वाला था। लकड़ी के आने का इंतज़ार करते समय हमने अल्मारियों के स्थान व आकार तय किए। आठों बड़े लड़के तीन समूहों में बंट गए। एक समूह को पुस्तकालय के आले बनाने थे एक को संग्रहालय के और आखिरी समूह को खिलौनों की अल्मारी। हरेक समूह ने योजना के हिसाब से लकड़ी नापी, उसे काटा और आले बनाए, रंदे और बलुआ कागज़ घिस सतह को सपाट किया और तब उन्हें रंगा और दीवारों पर लगाया। जब हम इस सब में जुटे थे, उस दौरान मुहल्ले के कई पुरुष काम देखने आए। उनका कहना था कि लड़के बढ़िया काम कर रहे हैं। लड़कों को बड़ा फ़क्र हुआ क्योंकि उन्हें लगा कि वे हमारे कक्ष के आर्कषण और कुशलता में इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

### **शुक्रवार व मंगलवार, 2 व 6 सितम्बर**

बड़ी लड़कियां स्कूल प्रारंभ होने के पहले सफ़ाई करने व कक्ष को तैयार करने आईं।

### **बुधवार, 7 सितम्बर**

औपचारिक रूप से आज स्कूल खुला है, यद्यपि अधिकांश बच्चे पहले ही आने लगे थे। इस वर्ष इकतीस बच्चे हैं। नए नन्हों में क्लैरेंस कार्टराइट और चार्ल्स विलिस हैं। बर्था श्मिट शहर की नई लड़की है जो प्राथमिक समूह में शामिल होगी। सैली लेनिक भी प्राथमिक समूह में होगी। उसके माता-पिता कस्बे के किसी भवन की देखभाल करने आए हैं। सैली, थॉमस की चचेरी बहन है।

आज दोपहर जब बच्चे आराम कर रहे थे मैंने उन्हें, फर्डिनैन्ड नामक साँड की कहानी सुनाई। बच्चों को बेहद अच्छी लगी, उन्हें लगा कि कठपुतली प्रदर्शन के लिए यह कहानी ठीक रहेगी। एल्बर्ट का मानना था कि

कहानी बड़ी छोटी है। इस पर वॉरेन बोला कि हम इस साल एक बड़ी कहानी के बदले चार-पाँच छोटी कहानियाँ भी प्रस्तुत कर सकते हैं। बच्चों ने आज काफी समय मैदान से कागज़, टूटी शाखाएं और पिकनिक मनाने आए लोगों द्वारा छोड़े गए खाली डब्बों को साफ करने में बिताया।

### गुरुवार, 8 सितम्बर

आज सुबह नियोजन के कालांश में मैंने बच्चों का ध्यान स्कूल के पिछवाड़े की ज़मीन की ओर आकर्षित किया। मेरा सुझाव था कि अगर हम वहां भी सफाई कर घास लगा दें तो शाला भवन बेहतर लगेगा। जब एलैक्स और गस छोटे बच्चों के साथ काम कर रहे थे, और एन्ड्रू व एडवर्ड खेलघर के बाहर छाया करने के लिए लगाई कपड़े की छतरी की मरम्मत कर रहे थे, हम सब स्कूल के पिछवाड़े गए। और खरपतवार हटाई, जंगली पौधों की सफाई की। लड़कियों ने अपने टॉयलेट के इर्दगिर्द खरपतवार हटाई और लड़कों ने अपने पेशाबघर के पास सफाई की। काम करते-करते किसी ने सुझाया कि इसे एक स्पर्धा में बदल कर देखा जाए कि लड़कियाँ बेहतर काम करती हैं या लड़के।

देखते ही देखते दस बज गए और बाच्चे अपने-अपने समूहों में खेलने की तैयारी करने लगे। बाच्चे अब-मान कर चलते हैं कि वे साथ-साथ खेलेंगे। हेनरी ने मुझे बताया कि उसे अब तक अक्षर नहीं आते हैं, जो दरअसल उसे सीख लेने चाहिए थे। इस पर कुछ दूसरे बच्चों ने जोड़ा कि जब वे शब्दकोश देखने लगते हैं तो उन्हें देर तक सोचना पड़ता है कि 'पी' अक्षरमाला के पूर्वार्द्ध में आता है या फिर उत्तरार्द्ध में, 'टी' अंतिम अक्षरों के कितने आसपास है। सो वर्तनी के कालांश में हेनरी वर्णमाला को पक्की तरह याद करने बैठा, जबकि शेष बच्चों ने शब्दकोश से अर्थ तलाशने का काम किया। बिचले समूह के बच्चों ने बोर्ड पर लिखे कुछ शब्दों के अर्थ तलाशे। उन्होंने उस पृष्ठ संख्या को दर्ज किया जिस पर उन्हें वे शब्द मिले। साथ ही उन्होंने शब्दों को वर्णक्रम में लिखा। बड़े बच्चों को ऐसे अभ्यास की दरकार नहीं थी अतः उन्होंने कुछ मुख्य या मार्गदर्शक शब्दों के सहारे शब्दकोश में शब्दार्थ तलाशने का काम किया। उन्होंने उन तमाम बातों को कभी दर्ज किया जो शब्दार्थ के अलावा शब्दकोश हमें शब्द के बारे में बताता है।

पिछले बसंत के बाद जब स्कूल की छुट्टियाँ हो गई थीं, तो बाच्चे खिड़कियों में लगे काठ के बक्सों को घर ले गए थे, ताकि उनमें उगे फूलदार पौधों की देखभाल की जा सके। आज स्कूल के बाद मैं उन्हें वापस लाई और उन्हें यथास्थान लगाया। बच्चों ने उनकी बढ़िया देखभाल की है। उनमें बेहद खूबसूरत पेट्यूनिया के फूल खिले हैं।

### शुक्रवार, 9 सितम्बर

आज जब हम जंगली खरपतवार से भरे पिछवाड़े के हिस्से में गए तो लड़कियों ने अपनी प्रगति की तुलना लड़कों के काम से की, और खुद को पीछे पाया। डॉरिस ने स्पष्टीकरण दिया “हमारा काम तेजी से नहीं बढ़ पाता क्योंकि कांटे हमारी खुली टाँगों को छील देते हैं। लड़के लंबी पतलून पहनते हैं, सो उन्हें परेशानी नहीं होती।” इस पर इस पर थॉमस ने सुझाया कि अगर वे चाहें तो लड़के यह कर दें और लड़कियाँ उनके हिस्से की खरपतवार उखाड़ दें। मे बोली “हम एक दूसरे की मदद करेंगे तो प्रतियोगिता कैसे होगी भला।” “क्या फर्क पड़ता है” थॉमस ने ज़ोर से कहा “काम तो बेहतर होगा ना।” बच्चों आज एक बेहद ज़रूरी पाठ सीख लिया।

खेल के कालांश के बाद नन्हे बच्चों और मैंने खेलघर में खेलने की योजना बनाई। पाँच मिनट में हमने माँ पिता, बच्चे, टीचर जी, और संबंधियों को चुन लिया और खेल कार्यक्रम बना डाला। मे उनके साथ बाहर गई ताकि ज़रूरत पड़ने पर उपलब्ध रहे। वह उनके साथ चुप रहती है और कोमल बर्ताव करती है। पिछले दो वर्षों से हम कोशिश करते रहें हैं कि हमारे मैदान के गद्दों को कोई भर दे ताकि हम उस पर दूबा उगा सकें। हम सफल नहीं हो सके हैं क्योंकि लगता है कि यह काम किसी को अपना नहीं लगता है। बच्चों के माता-पिता बेहद व्यस्त रहते हैं, सो वे भी मदद नहीं कर सके हैं। आज सुबह हमें सूझा कि हम अपने कस्बे के डब्ल्यू पी ए प्रमुख को पत्र लिखें और उनसे मदद पाने के सुझाव माँगें।

आज हमारी सुंदर जिल्द बंधी कॉपियाँ आ पहुंची। पिछले साल कई इतनी ढेर पतली-पतली कॉपियाँ भर गई थीं कि बच्चों ने कहा कि वे एक ही मोटी सजिल्द कॉपी रखें जिसके अलग-अलग हिस्से कर, एक ही में काम करें, जैसे मैं करती हूँ।

### **बुधवार, 14 सितम्बर**

प्राथमिक समूह के आधे बच्चे खेलघर में खेल रहे थे और शेष आधे चित्र-फलकों पर चित्रकारी में व्यस्त रहें। कुछ समय बाद इन समूहों ने अपनी गतिविधियों की अदला-बदली कर ली। सैली को अपने चित्र में बेहद आनंद आया उसने अपनी नीग्रो गुड़िया का चित्र बनाया। उसने बताया। “पता है इसकी दो चोटियाँ हैं और मैं इसे सनशाइन कहती हूँ। मेरे पास एक बत्तख भी है वह सीना तान लेता है और सोचता है कि वह बॉस है।” इस पर बच्चों ने उसकी गुड़िया देखने की माँग की। वह कल गुड़िया लाएगी। एरिक छोटे बच्चों के साथ नहीं खेलता, वह उन्हें नोचता है और उनकी बाहें मरोड़ता है। चार्ल्स के प्रति वह खासतौर से बेरहम है। पहले यह सब देख मैं सोचती थी कि ज़रूर दूसरे बच्चे एरिक को छेड़ते होंगे इसलिए वह अपनी नाराजगी और कुण्ठा छोटे बच्चों पर निकालता होगा। पर अब मुझे इस स्पष्टीकरण पर शंका

है। पर अगर यह सच है तो उसे अपना गुस्सा निकालने का कोई ऐसा रास्ता चाहिए जो दूसरों को चोट न पहुंचाए।

साढ़े ग्यारह बजे डॉरिस नन्हों को उस वक्त बाहर कहानी सुनाने ले गई जब बड़े बच्चे पाण्डुलिपि लेखन का अभ्यास कर रहे थे। वे अपनी मौलिक कविताओं का संकलन करना चाहते हैं। बाद में मैंने उन्हें मोत्ज़ार्ट की जीवन कथा सुनाई और जानना चाहा कि अक्टूबर के मनोरंजन कार्यक्रम के लिए क्या वे उसका नाट्य रूपान्तर प्रस्तुत करना चाहेंगे। एल्बर्ट का कहना था कि वे पहले अन्य महान संगीतकारों की जीवनियाँ सुनना चाहेंगे, और तब इस बारे में निर्णय लेंगे।

### **गुरुवार, 15 सितम्बर**

मैंने बड़े बच्चों को बाख़ और हेडन की जीवन गाथाएँ सुनाई। उन्हें इनमें मोत्ज़ार्ट की कथा ही सबसे अच्छी लगी है।

प्राथमिक समूह के बच्चों ने सैली की गुड़िया पर बातचीत की और हमने एक चार्ट कथा बनाई। सभी बच्चों ने इस कहानी को पढ़ने का अभ्यास किया। जब मैं समूह चार और पाँच के साथ पठन का अभ्यास कर रही थी, नन्हे बच्चे खेलघर में खेलने गए।

साढ़े ग्यारह बजे रुक कर हमने “बयार में वर्षा की ध्वनि है” नामक कविता सीखी। हमने कविता के अर्थ पर बात की और तब उस अर्थ को संप्रेषित करते हुए कविता पढ़ने की कोशिश की। वॉरेन ने टिप्पणी की, कहा कि यह कविता पिछले सप्ताह की कविता से अलग है। क्योंकि वह तूफानी और उदास है।

हेनरी का कहना था कि यह कविता “चिंताओं से भरी है।” छोटे बच्चे इस साल सीखने को लेकर बड़े उत्साहित हैं। अक्सर उनमें से कोई खेलना बन्द कर बैठ जाता है और अपना नाम लिखने की कोशिश करता है। आप किसी एक को पुस्तकालय कोने में बैठ किसी सचित्र किताब के पन्ने पलटते देख सकते हैं। चार्ल्स हर दिन पूछता है “मैं कब पढ़ूंगा?”

### **शुक्रवार, 16 सितम्बर**

श्री राइली ने आज हमारे पत्र का जवाब भेजा जिसमें कहा कि स्कूल मैदान की भराई के लिए एक वैध परियोजना बनाकर शिक्षा बोर्ड की अनुमति लेनी होगी।

### **सोमवार, 19 सितम्बर**

स्वास्थ्य कालांश में हमने गत वर्ष अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए जो कुछ किया था, उसे संक्षेप में दोहराया। हम एक सूची बनाएंगे जिसमें उन तमाम बातों को दर्ज कर लेंगे जिनका हमें इस वर्ष खास ख्याल रखना है। ऐसा हम तब तक सायास करेंगे जब तक कुछ चीज़ों को करने की

नई और बेहतर आदतें न बन जाएं। यह कर पाने के लिए हम नए तरीकों के कारण समझेंगे और उन पर विचार-विमर्श करेंगे।

आज मैंने गौर किया कि यद्यपि बच्चे लगातार काम करते रहे पर उनका काम समय पर पूरा नहीं हो पाया। ज़रा सी तहकीकात करने पर पता चला कि वे उन कामों को भी करते रहे थे जिनका समय आया नहीं था। दर-असल वे उस काम को पहले करना पसंद करते हैं, जो उन्हें अच्छा लगता है। कल मैं उन्हें उनके अध्ययन की योजना बनाने में मदद करूंगी। लगता है इस विषय में हर साल उनसे बातचीत करना ज़रूरी है।

### **मंगलवार, 20 सितम्बर**

आज कुछ समय हमने समय-सारिणी बनाने में लगाया। हरेक ने अपने हिसाब से स्वयं के अनुकूल सारणी बनाई है। इसे वे अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेंगे ताकि ज़रूरत पड़ने पर उन्हें देख सकें।

### **सोमवार, 26 सितम्बर**

बड़े बच्चों को मैंने आज फल-उद्योग से परिचित करवाया। हमारी काउन्टी में क्रमशः सेव उत्पादन महत्वपूर्ण व्यवसाय बना है। हमारे कस्बे में सेवा का बागान भी है, मुझे लगा कि हम इस माध्यम से उन पक्षों को समझ सकेंगे जो दूध उत्पादन के अध्ययन के दौरान संभव नहीं हो सका था। समुदाय की वित्तीय समस्याओं में से कुछ का समाधान सेव उत्पादन को बढ़ा कर किया जा सकता है।

सो हमने मार्था की दादी के बागान की चर्चा की और यह समझा कि सेव का उत्पादन कैसे एक विशिष्ट उद्योग का रूप ले रहा है। हमने भोजन में फलों के महत्व पर बात की। यह देखने की कोशिश की कि पहले फलों के पेड़ों और फलों की देखभाल कैसे की जाती थी और आज कैसे की जाती है। मैंने जानना चाहा कि क्या पूरे साल ताज़ा फल मिल सकते हैं? वॉरेन ने कहा कि दुकानों में तो वे उपलब्ध होते हैं, पर सर्दियों में उनकी कीमत इतनी अधिक होती है कि उसे खरीदना कई परिवारों के लिए मुश्किल होता है। इस पर मैंने पूछा कि क्या डिब्बा बन्द फल भी उतने ही पौष्टिक होते हैं। इस बारे में कोई नहीं जानता था। सोफिया का कहना था कि पिछले साल संतरे बड़े सस्ते थे, पर इसका कोई कारण वह नहीं बता सकी। वॉरेन को इस बात में असंगति नज़र आई क्योंकि संतरे तो काफी दूर से हमारे पास पहुंचते हैं। उसने यह भी पढ़ रखा था कि संतरों को हाथों से एक-एक कर तोड़ना पड़ता है, जिससे समय ज्यादा लगता है। मैंने पूछा “संतरों की एक पेटी अगर पचास सेंट में बिकती है तो क्या उन्हें तोड़ने वालों को काफी मजदूरी मिलती होगी?” पर इस बात की गहराई में हम नहीं गए। आज कोशिश इतनी भर

थी कि फल उद्योग के तमाम पहलुओं को हम खोल दें। सो हमने फलों की पौष्टिकता, फल उद्योग के विकास, फलों के दाम और कीमत व मजदूरों के बीच रिश्ता, ताज़ा और डिब्बा-बन्द फलों की पौष्टिकता, फलों को सही तरह से डिब्बा-बन्द करना व फलों की देख रेख को छुआ।

### **मंगलवार, 27 सितम्बर**

गत कुछ दिनों से बच्चे यूरोपीय संकट की खबरें लाते रहे हैं, जो उन्हें अखबारों या रेडियो से मिलती हैं। हम सुबह पंद्रह-बीस मिनट इन पर बातचीत करते हैं। सबसे बड़े बच्चों के समूह ने फल अध्ययन से संबंधित पुस्तकों की सूची बनाई है। समूह के बड़े बच्चे स्वयं काम करने में जुट गए हैं, क्योंकि वे गत वर्ष यह करना सीख चुके हैं। जो बच्चे कुछ छोटे हैं, उनकी मैं मदद कर रही हूँ।

### **मंगलवार, 4 अक्टूबर**

आज सुबह बड़े बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताना पड़ा ताकि उन्हें बता सकूँ कि वे अपने समय का बेहतर उपयोग कैसे कर सकते हैं।

दिन के अंतिम कालांश में गणित करने के बदले एक समिति ने विशेष बैठक बुलाई और थॉमस से त्यागपत्र चाहा। समिति सदस्यों का कहना था कि वह अध्यक्ष बनने लायक नहीं हैं क्योंकि वह किसी की मदद ही नहीं करता। इस्तीफे की यह मांग कई घटनाओं की लंबी कड़ी का नतीजा है। दरअसल थॉमस केवल तब खेलता है जब खेल उसे अपने अनुकूल लगता है। और जब खेलता है तब उसके निर्णय न्यायपूर्ण नहीं होते। वह अध्ययन कक्ष में ऊंची आवाज़ में बोलता है। एन्ड्रू ने थॉमस से त्यागपत्र माँगने का प्रस्ताव रखा जिस पर सबने सहमति जताई। अपनी रोज़मर्रा की समस्याओं से निपटने की दिशा में बच्चों ने काफी प्रगति की है और वे विवेकवान निर्णय लेने में सक्षम हैं।

एक नई समस्या उभर रही है, जिससे सावधानी से निपटना होगा, इसे बच्चे बिना मदद स्वयं नहीं सलटा सकेंगे। रूथ, डॉरिस, मेरी, मे और सोफिया पिछले साल में तेज़ी से परिपक्व हुई हैं। रूथ और में काफी समय लड़कों के बारे में बातचीत करने में गुज़ारती हैं। दोपहर के समय खेलने के बदले ये सभी लड़कियाँ फिल्मों की बातें करती हैं। उनका काम असावधानी और अकुशलता से किया गया होता है। मे मुझ पर आरोप लगा चुकी है कि मैंने उसके कागज़ खो दिए हैं, जो बाद में उसे अपनी ही किताबों के बीच मिले। लड़कियाँ तेज़ी से बढ़ और विकसित हो रही हैं।

लगता है कि रूथ उनकी नेत्री है। मैं स्वयं को यह विश्वास कभी नहीं

दिला पाई हूँ कि बच्चों को रोकना सही कदम है। जब रूथ पिछले साल प्रारंभिक स्कूल के अंतिम वर्ष की ओर बढ़ रही थी तो उसकी माँ को उसकी तेज़ प्रगति देख लगा था कि अगर उसे हाई स्कूल में अच्छी छात्रा बनाना हो तो उसे प्रारंभिक शाला में एक साल और बिताना चाहिए, क्योंकि रूथ भी अपनी माँ से सहमत थी हमने यही किया। पर इस वर्ष मुझे पुख्ता तौर पर लग रहा है कि हमसे गलती हुई है। यद्यपि रूथ ने काफी सीखा है, पर उसे शारीरिक व भावनात्मक रूप से अपने हमउम्र बच्चों के साथ होना चाहिए था।

### **शुक्रवार, 7 अक्टूबर**

जब हम सेवों को बाज़ार पहुंचाने की बात कर रहे थे, मार्था ने बताया था कि उसकी दादी अपने सेव स्कॉट साहब को बेचती हैं, जो काउन्टी के अधिकांश सेव खरीद लेते हैं और तब आगे बेचते हैं। मैंने सुझाया कि हम स्कॉट साहब से मिलें। आज हमने उन सवालों की सूची बनाई जो उनसे पूछे जाने हैं।

### **बुधवार, 12 अक्टूबर**

आज साढ़े ग्यारह बजे बड़े समूह के बच्चे स्कॉट साहब के फार्म की दिशा में निकले। स्कॉट साहब ने उन्हें फलों का बागान दिखाया। लौटने पर बच्चों ने सेव का रस निकालने, छानने, उसे ठंडा रखने के यंत्र देखा हमने उनका भण्डार भी देखा जिसमें विभिन्न आकारों के सेव, छांटे और बन्द किए जाते हैं। स्कॉट फार्म के बाद हम वैली झील के किनारे पिकनिक करने गए। थॉमस की टिप्पणी थी कि काम और मस्ती को साथ मिला लिया गया है। हमने कुछ देर गीत गाए, बेसबाल खेली और जब अंधेरा होने लगा, घर की ओर लौटे। यह आनंददायक व फलदाई दिन रहा।

### **गुरुवार, 13 अक्टूबर**

मैं अपनी दैनंदिनी में लिखी टिप्पणियाँ पढ़ रही थी, मुझे वे अपर्याप्त और मूल्यांकन में कमज़ोर लगीं। फल उद्योग का अध्ययन बच्चों के लिए वास्तविक चुनौतियाँ नहीं रख रहा। मैं किशोरियों के लिए कुछ भी संतोषजनक नहीं कर पा रही हूँ। पढ़ाने के अलावा मुझे हर सप्ताहान्त अपने कोर्स के लिए न्यू यॉर्क भी जाना पड़ता है। अभी तो साल शुरू ही हुआ है, पर मैं थकी-थकी हूँ, मेरी महत्वाकांक्षा भी क्षीण हो रही है। लगता है अपनी ऊर्जा को सही दिशा नहीं दे रही हूँ।

### **शनिवार, 15 अक्टूबर**

हमेशा की तरह, निराशा व उदासी के दौर में मैं सुश्री एवर्ट से मिलने गई। उनसे चर्चा करने से समस्याएं मानों खुद ब खुद छँटने लगती हैं। उनका कहना था कि मैं जो पाठ्यक्रम कर रही हूँ वह मुझे अधिक प्रभावी और

कम बोझिल तब ही लगेगा जब उसका रिश्ता मेरे काम के साथ होगा। हमने इस मसले पर विचार किया कि अध्ययन के लिए मैं किस समस्या को चुनूँ। हमने यह विचार विमर्श इस प्रश्न के साथ शुरू किया कि “बच्चों के लिए आगे क्या हो?” उन्होंने समुदाय के कृषि पक्ष का कुछ अध्ययन किया है। उन्होंने उन परिवर्तनों पर गौर किया है जो शुरुआत से अब तक स्थानीय समुदाय में आए हैं। ये बदलाव किन कारणों से आए यह प्रश्न कई बार उठता है, पर उसका सटीक उत्तर नहीं मिला है। हमें लगा कि अगर बच्चे इन कारणों पर सोचें तो उन्हें फायदा होगा। बदलती दुनिया की समझ उनमें पनपेगी। औद्योगिक क्रांति के कारण जीवन शैली में जो बदलाव आए उन्हें भी वे समझ सकेंगे।

किशोर बालिकाओं की स्वास्थ्य समस्याओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को संबोधित करने की ज़रूरत है।

लगता है कि इन तमाम आवश्यकताओं की पूर्ति कपड़ा उद्योग के अध्ययन से की जा सकती है। इस अध्ययन की योजना बनाते समय बच्चे और मैं कुछ नई तकनीकों के साथ प्रयोग भी कर सकते हैं। मुझे भी इसमें कुछ मदद मिल सकती है और जो समस्याएँ मेरे पाठ्यक्रम के प्रोफेसर के साथ उठ रही हैं, उनका समाधान भी हो सकता है। तब मुझे अपने पाठ्यक्रम के लिए जो पर्चा लिखना है वह बच्चों की परियोजना की कहानी और परियोजना के मूल्यांकन के विषय में लिखा जा सकता है।

सुश्री एवर्ट का कहना था, क्योंकि बच्चों की फल उद्योग में खास रुचि नहीं है, उसे तेज़ी से समाप्त कर संतोषजनक निष्कर्ष तक ले जाना चाहिए। जिन पाठों को सिखाने की उम्मीद हमने फल उद्योग के अध्ययन से रखी थी, वे कपड़ा उद्योग के अध्ययन से भी सीखे जा सकते हैं।

### **सोमवार, 26 दिसम्बर**

गत दो माह से मैं अपनी दैनंदिनी नहीं लिख पाई हूँ क्योंकि तमाम दूसरे कामों के बीच इसके लिए समय निकालना संभव ही नहीं रहा। पर आज इन दो महीनों के अनुभवों की मेरी छवि दर्ज कर लेना चाहती हूँ।

इस दौरान हमने जो किया:

1. सेव उद्योग का अध्ययन पूरा किया।
2. अखबार का पहला अंक निकाला।
3. मोटज़ार्ट के जीवन पर एक नाटक रचा और मंचित किया।
4. रेडियो पर गाया।
5. क्रिसमस मनोरंजन कार्यक्रम के लिए डिकन्स की कहानी क्रिसमस कैरल



का मंचन किया।

6. पोलिश, स्वीडिश, फ्रेंच, इतालवी, रूसी हंगेरियन व जर्मन भाषाओं में कैरल गीत सीखे व गाए।

7. कई उपयोगी क्रिसमस उपहार बनाए।

## स्थिति

अक्टूबर माह के अंत स्थिति में कुछ तनाव था पर दिसम्बर के आते-आते तनाव गायब हो गया। परेशानी दरअसल यह थी कि मैं खुद थकी होने के कारण जो कुछ घट रहा था, उसके प्रति संवेदनशील न रह पाई थी। विभिन्न क्लबों की बैठकों में मेरा नज़रिया झलकने लगा। बच्चे एक दूसरे में मीनमेख निकालने लगे। तब नवम्बर में एक दिन मैंने रूथ को टोका क्योंकि वह बच्चों से तीखी आवाज़ें में बोल रही थी। इस पर उसने कहा “पर आप तो खुद हमसे ठीक ऐसे हो बोलती हैं।” मैं सकते में आ गई, पर मुझे तत्काल समझ आ गया कि हो क्या रहा था। अगली क्लब बैठक में इस पर खुली बातचीत हुई। हमने यह समझने की कोशिश की कि हम जैसा आचरण कर रहे हैं उसका कारण क्या है। हममें से कई भी यह कह नहीं कि यह सब शुरू कैसे हुआ, पर एक कठोर शब्द की प्रतिक्रिया में दूसरे कठोर शब्दों ने हमारे पारस्परिक सहकार को छिन्नभिन्न कर दिया और यों स्थिति बद से बहतर होती गई बैठक के अंत में मेरी ने प्रतिवेदन पुस्तिका में लिखा “यह निर्णय लिया गया कि हम सब एक दूसरे के प्रति अधिक सहृदयता से पेश आने की कोशिश करेंगे।”

बच्चों के विषय में

रूथ, सोफिया, में व डॉरिस ने ठेठ किशोरियों सा आचरण करते हुए अपना गुट बना लिया है। उनकी पहली रुचि तो खुद में, अपने कपड़ों, अपने बालों में है, और तब फिल्मों में और फिल्मी सितारों में। उनके लिए स्कूल महत्वपूर्ण नहीं है। अक्टूबर के अंत में रूथ हर उस काम की आलोचना करने लगी जो मैं कर रही थी। उसने कमरे को व्यवस्थित करने में मदद करने से मना कर दिया। 2 नवम्बर को हम बाहर घास पर बातचीत करने बैठे। हमारी बातचीत कुछ वैसी ही थी जैसी पहले साल हमारे बीच हुई थी। प्रारंभिक शाला के लड़के-लड़कियाँ वैसा युवा क्लब के सदस्य नहीं बन सकते, पर उस दिन मैंने अपवाद स्वरूप रूथ को उसकी सदस्यता का न्यौता दिया। दूसरे बच्चों को यह समझाना आसान था कि अगर रूथ ने साल भर प्रारंभिक शाला में रुकना न चुना होता, तो वह हाई स्कूल की छात्रा होती। इसके बाद अचानक रूथ में सारी व्यवस्थाएं करने की इच्छा जगी। हमने उसे अल्पाहार

और मोल्ज़ार्ट नाटक की जिम्मेदारियाँ लेने के पूरे अवसर दिए। उसने खुद एक समिति चुनी अल्पाहार के लिए आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाई हरेक समिति सदस्य को क्या लाना है बताया और बिना मेरी मदद के नाटक की संध्या को अल्पाहार की बिक्री की व्यवस्था की। जैसे ही रूथ ने सहयोग करना शुरू किया, दूसरी लड़कियों का आचरण भी बदल गया।

मे क्रमशः अपनी बहन जैसी बनती जा रही है, उसे भी स्कूल पसंद नहीं आता। मुझे इससे दुख होता है क्योंकि अब तक वह एक अच्छी व संतुलित बच्ची रही है। लगता है मैंने उसके समूह के शेष बच्चों की जितनी मदद की उनकी तुलना में उसकी ही सबसे कम की। उसकी बहन डॉरिस एक शांत लड़की से शोर-शराबा करने वाली लड़की बनती जा रही है। मैं 10 नवम्बर को उनके घर गई तो उन्होंने बुझा-बुझा सा स्वागत किया। याद आता है कि जब उनकी माँ जीवित थी तो वे बड़े उत्साह से मेरा स्वागत करती थीं।

मैंने उनकी बड़ी बहन एडना को, जो परिवार को सम्भाल रही है, बैठकों में जुड़ने का निमंत्रण दिया। वह एक युवा मण्डल बैठक में आई थी। उनकी सबसे बड़ी बहन ब्लॉश, जो नर्स है, क्रिसमस की छुट्टियों में उनके पास आई और एडना उसे हमारे मनोरंजन कार्यक्रम में साथ लेती आई। ब्लॉश कार्यक्रम के बाद मेरे पास आई और बोली कि बच्चों द्वारा इतना उम्दा प्रदर्शन उसने कभी देखा ही नहीं है। लगता है ब्लॉश ने एडना को नए तरीके से देखने में मदद की है।

सोफिया अपनी शेष तीन सहेलियों जितनी परिपक्व नहीं है, पर उनकी नकल करती है ताकि समूह में खप सके।

यह गुट मेरी को पसंद नहीं करता, क्योंकि वह मुंहफट्ट है और उन्हें उनके बारे में अपनी राय साफ बता देती है। पर मेरी काफी अकेली पड़ जाती है, सो कभी-कभार वह उनके साथ जुड़ती भी है, पर उसे तब यह नाटक करना पड़ता है मानो अब कोई मतभेद न हो। सतही तौर पर यह सब चल जाता है पर मेरी ने मुझे बताया कि उसे यों नाटक-सा करना पसंद नहीं आता। पर लड़के मेरी को पसंद करते हैं, उन्हें गुट की लड़कियाँ बेवकूफ लगती हैं। छोटे बच्चों में मेरी खासी लोकप्रिय है।

थॉमस में स्कूल आने के बाद से काफी सुधार आया है। जब आया था तब वह दबा-सहमा सा लड़का था, जो ज़रा-ज़रा सी बात पर अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार रहता था। पिछले साल उसने समूह के सभी लड़कों, खासकर रैल्फ, से भिड़ने की पेशकश की थी। इस साल भी वह यदा कदा भड़कता है, पर ऐसी घटनाएँ काफी कम हो गई हैं। वह समूह से

तालमेल बैठाने लगा है, योगदान करने लगा है। गत अक्टूबर बच्चों ने थॉमस को उसके पद से हटा दिया था, पर नवम्बर में उसे फिर से मौका देने को अध्यक्ष के रूप में चुना। थॉमस ने भी पूरी कोशिश की और दिसम्बर में फिर से चुना गया।

दिसम्बर में कॉलेज का एक छात्र स्कूल देखने आया। वह हमारे काम का अवलोकन करने कई बार आएगा। जब थॉमस ने यह सुना तो उसे लड़कों के शौचालय में हाल में लिखी गई अश्लील इबारतों से शर्म आई। मुहल्ले के बाहर के कुछ बड़े लड़कों ने यह काम किया है। उसने अपनी टोली को एक जुट किया, चंदा कर इक्कीस सेंट इकठ्ठे कर मुझे दिए ताकि मैं उन्हें रंग ला दूँ और वे इन इबारतों को पुताई कर हटा सकें।

हेनरी को हमेशा चिन्ता रहती है कि वह कोई छोटी-मोटी गलती कर डालेगा। वह घड़ी देखता रहता है क्योंकि उसे डर रहता है कि वह समय पर काम खत्म नहीं कर पाएगा। वह इतनी धीमी गति से काम करता है कि अक्सर उसके पास दूसरी गतिविधियों का मज़ा लेने का समय ही नहीं बचता। वह चाहता है कि समूह उसे स्वीकारे। इस पतझड़ में एक दिन खाने के कालांश में उसे लड़कों ने छेड़ना शुरू किया तो वह अपनी माँ का दिया ढेर सा खाना तक नहीं खा सका। वह यह नहीं चाहता था कि इस बारे में उसकी माँ मुझसे कुछ कहे, उसे डर था कि ऐसा करने पर लड़के उसे नापसंद करने लगेंगे। श्रीमती मान ने हेनरी की मौजूदगी में मुझसे बात की। मैंने हेनरी से कहा कि लड़के उसे पसंद करते हैं, और अगर वह साहस दिखाए, प्रतिवाद करे तो नाराज़ नहीं होंगे बल्कि उसकी कद्र करेंगे। अगली क्लब बैठक में हेनरी ने मामला उठाया इस पर चर्चा हुई और मामला सुलट गया। श्रीमती मान और उनकी सास दोनों ही हेनरी से हर क्षेत्र में बढ़िया प्रदर्शन की उम्मीद रखती हैं। उस पर भारी दबाव है। हम इस मुद्दे पर मिलजुल कर काम करने की कोशिश कर रहे हैं।

वॉरेन एल्बर्ट, मार्था, मेरी, थॉमस व हेनरी चर्चा में सबसे ज्यादा योगदान करते हैं और अमूर्त विचारों का उपयोग करते हैं। हमारे नन्हे बच्चे बेहद सक्रिय हैं। वे अपनी झिझक को पीछे छोड़ चुके हैं। हर तरह की गतिविधि में उनकी रुचि है। उन्हें खेलना पसंद है और ढेरों सवाल पूछते हैं। उनकी हमेशा आपस में नहीं बनती। एरिक व इरीन को चार्ल्स नापसंद है और कभी-कभी वे उसका जीना हराम कर डालते हैं। इरीन को स्कूल में काम करना नापसंद है। मुझे अंदेशा यह है कि उसकी माँ घर में उसे काफी ठेलती रहती है कि वह हर क्षेत्र में उम्दा प्रदर्शन करे।

इस समूह को सैली की मौजूदगी से लाभ हुआ है। वह बेहद

बेतकल्लुफ बच्ची है और जीने का इतना मज़ा लेती है कि उसके चहरे पर हमेशा खुशी झलकती है। वह कविताएं, गीत और नाच रचती रहती है और हमेशा ही करने को कुछ ऐसा तलाश लेती है जो उसे मोहता हो।

कार्टराइटर बच्चे आधे समय अनुपस्थित रहते हैं, क्योंकि उनके पास पहनने को ढंग के कपड़े नहीं हैं। स्कूल आने पर वे खूब मेहनत करते हैं पर बेहद शरमीले हैं। क्रिसमस उपहार बनने वाले कालांश में मैंने उन पर खास ध्यान दिया। एलैक्स ने बंधेज का एक स्कार्फ बनाया, जिसकी किनारे उसने खुद सिए। और गस ने दीवार पर लटकाने के लिए बाटिक का चित्र बनाया। मेरा विश्वास है कि उनके घर की सबसे खूबसूरत वस्तुएँ यही होंगी। वर्ना भी कुछ दिन आई थी जब उसने बाटिक का काम किया था पर उसे किनारे सीने का समय नहीं मिल पाया। रिचर्ड और क्लैरेंस ने स्टेन्सिल की मदद से कुछ टेबल मैट्स और सूई रखने का होल्डर बनाया।

अभिभावकों के विषय में:

श्रीमती थॉमसन रूथ के प्रति सहयोगी भाव व समानुभूति रखती हैं और हम एरिक की उन कामों के लिए तारीफ करते हैं जो वह अच्छी तरह संपादित करता है। हमारी कोशिश यह भी है कि हम लगातार उसकी गलतियाँ न निकालें।

श्रीमती हिल व श्रीमती लेनिक (थॉमस की माँ) मुझे बारबार धन्यवाद देती हैं क्योंकि स्कूल ने उनके बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है। मैं श्रीमती लेनिक को थॉमस का प्रगति का ग्राफ दिखाती रही हूँ और उन्हें यह भरोसा हो चला है कि थॉमस भी कुछ सीख रहा है। श्रीमती सेमेटिस हमेशा सलाह माँगती रहती हैं, क्योंकि अपने बच्चों के आलोचनात्मक रुख से वे आहत रहती हैं। उन्हें समझ ही नहीं आता कि उनकी बेटियों को क्या हो रहा है, सो वे ज़रूरत से ज्यादा फिक्रमंद रहती हैं।

श्रीमती ओलसेउस्की यथासंभव मदद करने को तैयार रहती हैं। श्रीमती डुलियो दोपहरी के गर्म भोजन के वास्ते उदारता से सहयोग देती हैं।

प्रिन्लैक दंपति अपने बच्चों को हर गतिविधि में सहयोग करने और अपनी टीचर की मदद करने को प्रेरित करता है। और वे सच में मदद करते हैं! मैंने श्रीमती रैमसे के साथ दो खुशनुमा दोपहरें बिताईं, उन्हें अधिक करीब से जाना। उन्होंने अपनी जीवन गाथा सुनाई कैसे उनके माता-पिता रूसी क्रांति के दौरान रूस से भागे, कैसे उन्होंने फिनिश किसानों की नर्स के रूप में तब तक सेवा की जब तक परिवार को अमरीका लाने के पैसे न जुट गए। उन्होंने अपने खुशगवार बचपन और रसायनशास्त्र में मेजर करते समय कॉलेज के जीवन के बारे में बताया, अपनी जुड़वाँ बहन की बात बताई जो

अब एक फिलहार्मोनिका संगीत मण्डली के निर्देशक की पत्नी है।

मुझे सैली की माँ को भी जानने का मौका मिला। सैली के विषय में वे बेहद महत्वाकांक्षी हैं। उन्हें इस बात की तकलीफ है कि सैली को इस ग्रामीण शाला में पढ़ना पड़ता है, क्योंकि उनके अनुसार सैली खिलंदड़ी छोरे सी बनती जा रही है। पहले सैली शहर के एक निजी स्कूल में पढ़ती थी जहां वह एक शिष्ट नन्ही महिला बनना सीख रही थी। मैंने उन्हें बताया कि सैली जो कुछ भी कर रही है, उसमें उसे बड़ा मज़ा आ रहा है और वह एक स्वस्थ व अनुकूलित बच्ची हैं। सैली को अपना चचेरा बड़ा भाई थॉमस बेहद प्यारा लगता है। थॉमस उससे सहृदयता से पेश आता है।

यों देखें तो माता-पिता का दृष्टिकोण सकारात्मक ही हैं। वे सहयोग करते हैं, उनका आचरण मित्रवत व संवेदनशील है, मुझे उनके प्रति आभार की गहन अनुभूति होती है।

सेव उद्योग संबंधी अध्ययन के बारे में:

हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सेव बागान हमारे कस्बे के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। यहां की आबोहवा में नरम, खुशबूदार सेव उगते हैं जिनकी अच्छी मांग है। उस मांग को पूरा करने लायक उत्पादन हम कर नहीं पाते। सड़कें व बाज़ार की सुविधाएं भी पर्याप्त विकसित हैं। सेवों का उत्पादन कैसे किया जाए इसकी जानकारी भी है। साथ ही छोटा-मोटा बागान लगाने में खर्च भी बहुत नहीं आता, पर हाँ, उससे आय पाने के लिए तकरीबन सात साल इन्तज़ार करना पड़ता है। इस अध्ययन ने बच्चों को उतना नहीं बाँधा, जितना दूध उत्पादन के अध्ययन ने बाँधा था। कहते हैं “स्वास्थ्य शैक्षणिक अनुभव का मर्मस्थल वास्तव में उद्देश्य में स्थित होता है।” पर इस कथन को काम में उतारने के लिए मुझे शायद बहुत कुछ सीखना बाकि है।

मोत्ज़ार्ट के जीवन संबंधी नाटक के विषय में:

बच्चों को अब तक जितनी कथाओं का नाट्य रूपान्तर करने में मैंने मदद की, उनमें यह सबसे रोचक कथा थी। इससे पूर्व क्रिसमस के दौरान प्रदर्शन के लिए जितनी रचनात्मकता से हमने नाटक बनाए, उतनी ही रचनात्मकता का हमने यहाँ भी उपयोग किया था। कई बच्चे इसमें भाग ले पाए और उन्होंने मोत्ज़ार्ट के तीन से चौदह वर्ष तक के जीवन के विभिन्न चरणों को प्रस्तुत किया। सैली तीन वर्षीय मोत्ज़ार्ट बनी थी। नाटक की प्रारंभ लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट को चालसवीं वर्षगांठ से हुआ यह वह दृश्य था जिसमें मोत्ज़ार्ट का तीन वर्षीय बेटा वे प्रसिद्ध वाक्य कहता है- “पापा, मैं तुम्हें बहुत, बहुत प्यार करता हूँ, ईश्वर के बाद मेरे लिए तुम ही हो।” सैली कुर्सी पर खड़ी हुई और उसने अपनी बाहें थॉमस के गले के इर्दगिर्द डालीं और पूरी भावना के से ये

पंक्तियों कहीं, उसके दोनों गालों को चूमा। दोनों बिल्कुल भी असहज नहीं थे। वे थॉमस और सैली भी नहीं थे वे तो लियोपोल्ड मोत्ज़ार्ट और उसका तीन साल का बेटा वॉल्फगैंग ही थे। यह प्रदर्शन इतना वास्तविक था कि दर्शकों में कोई भी नहीं हंसा।

ईरीन छह वर्षीय वॉल्फगैंग बनी। दूसरे दृश्य में लियोपोल्ड और उसके मित्र मोत्ज़ार्ट को लिखने में व्यस्त देखते हैं और उनके बीच यह बातचीत होती है:

लियोपोल्ड: और तुम क्या कर रहे हो वॉल्फगैंग?

नन्हा वॉल्फ पापा, पियानो सोनाटा लिख रहा हूँ, पर अभी यह अधूरा ही है।

लियोपोल्ड: कोई बात नहीं, ज़रा देखें तो। ज़रूर बड़ा अच्छा होगा शाख्टनर, ज़रा देखो तो सही, कितना सही और व्यवस्थित है। बिल्कुल नियमानुसार लिखा हुआ। पर इसे कोई बजा नहीं सकेगा क्योंकि यह बंदिश बड़ी कठिन लगती है।

मैं वह क्षण कभी नहीं भूलूंगी जब ईरीन ने अपना छोटा सा सिर उठाया और बड़ी गंभीरता से थॉमस को कहा “यह तो एक सोनाटा है, इसका अभ्यास करना पड़ता है, पर देखिए यह ऐसे बजेगा।” तब ईरीन ने “ए” सप्तक में सोनाटा का प्रारंभिक भाग बजाया। पहली बार दर्शकों के सामने। सच उस पल लग यह रहा था कि वह खुद को मोत्ज़ार्ट ही मान रही हो। नाटक में मोत्ज़ार्ट के संगीत को शामिल करने के कई अवसर थे, सो बच्चों ने सावधानी से उन्हें सीखा, उन धुनों पर कई गीतों को अभ्यास किया। बच्चों ने बड़ी मेहनत से नाटक किया और श्रोताओं को वह पसन्द भी आया।

रेडियो पर गीतों की प्रस्तुति:

हर माह वेस्ट रेडियो स्टेशन आधे घन्टे का शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करता है। इसकी सामग्री कस्बे के विभिन्न भागों से संकलित की जाती है। दिसम्बर में हमारे बच्चों से गाने को कहा गया था। उन्होंने यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया:

समवेत पाठ:

साबुन के बुलबुले

हवा में वर्षा की ध्वनि

नन्हे श्वेत घोड़े

द मेन डीप

लोकगीत:

आइरिश - द गैलवेपेपर

इतालवी - इटली के लिए

रूसी- कौसक घुड़सवार

शास्त्रीय संगीतज्ञों की प्रस्तुतियाँ:

ब्राह्मस् - पोलेण्ड में है एक सराय

हेडन - हवाएँ

मोत्ज़ार्ट - निद्रा व विश्राम

बीथोवन - रात्रि व दिन

बाख़ - अष्टम् साल्म

क्रिसमस कैरल्स:

साइलैन्ट नाइट

ब्रिंग ऊ टॉर्च, जैनेट इसाबैलाओ, सैंक्टिसिमा

उन्हे बधाई के कई तार मिले जिनमें उनकी प्रस्तुतियों की प्रशंसा थी। घर बैठे रेडियों पर उनको सुन रहे अनेक अभिभावक भी बेहद प्रसन्न थे। बच्चे रेडियो स्टेशन पर फिदा हो गए उन्होंने उसके बारे में तमाम सवाल दागे, जिनके जवाब वहां के कर्मियों ने धीरज से दिए। बच्चों के लिए यह एक बेहद सार्थक अनुभव रहा।

क्रिसमस नाटक के बारे में:

क्रिसमस कैरल नामक कहानी के नाट्य रूपान्तर में थॉमस ने स्क्रज का किरदार इतनी रचनात्मकता से निभाया कि सबने उसे बधाईयाँ दीं। डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने उससे हाथ मिलाया। अगली सुबह जब हम सफाई कर रहे तो वह मेरे पास आया और काफी विनम्रता से बोला “रात मेरा काम काफी अच्छा रहा होगा।” और सच उसने कमाल किया था! समूचा समुदाय उसे आदर से, नई दृष्टि से देख रहा है और थॉमस खुद को!

दूसरे दृश्य में फेज़िविग की पार्टी के लिए मैंने बच्चों को एक खास नृत्य सिखाया था। जहां तक बड़ी लड़कियों को सवाल था यही समूचे नाटक का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था। उन्होंने अपने पुरुष साथियों पर खूब चर्चा की। हेनरी इसलिए पसंद किया जाता था क्योंकि वह सबसे सुंदर नाचता था। दिसम्बर माह में आप अक्सर यह देखते कि कोई लड़की अपने साथी को हॉल में अभ्यास के लिए ले जाती क्योंकि वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि उसका पद संचालन बिल्कुल सही हो।

एल्बर्ट और वॉरेन ने क्रिसमस कैरल का फिल्म-रूपान्तर देखा था और उन्होंने काफी मदद की। वॉरेन ने कई दृश्यों का निर्देशन किया।

नाटक में सभी बच्चों ने शिरकत की, ठेठ क्लैरेन्स के आकार के

बच्चों तक, ने। क्लैरेन्स अच्छा नन्हा टिम बना। नाट्य प्रदर्शन के बाद दर्शकों ने हमारे साथ कैरल गाए और नाटक की खूब तारीफ की।

**बुधवार, 28 दिसम्बर**

अब शेष सत्र की योजना बनाने का समय आ गया है। मुझे अपने कोर्स के लिए पाठ्यक्रम की रिपोर्ट भी लिखनी होगी ज़ाहिर है कि अच्छी रिपोर्ट लिखने में काफी समय लगाना होगा, सो शायद बेहतर यही रहे कि उसी पर ध्यान केंद्रित करूँ और दैनंदिनी या अन्य टिप्पणियाँ लिखना अगले कुछ महीनों के लिए स्थगित करूँ। सत्र के लिए नया लिए नया कार्यक्रम मैंने तैयार कर लिया है।

## अध्याय 8

### सीखीं नई तकनीकें

धन्यवाद-पर्व थैंक्सगिविन्ग के बाद हमने वस्त्र उद्योग का अध्ययन शुरू किया। दिसम्बर में बच्चों ने लाइनोलियम के ठप्पों से छपाई करने का अनुभव किया था। उन्होंने इन ठप्पों से क्रिसमस कार्ड्स मेज़पोश व अन्य कपड़े छापे थे। उन्होंने कपड़े पर बाटिक व बंधेज का काम सीखा, स्कार्फ, मेज़पोश, व परदे बनाए थे। बच्चों ने उपहार बनाने शुरू किया उसके पहले मैंने कुछ समय उन्हें डिज़ाइन के विषय में कुछ सिखाने में लगाया। पर मुझे पता चला कि ऐसा करना गलत था क्योंकि इससे सिखाने की प्रक्रिया ही उलट गई। बच्चों के पल्ले कुछ पड़ा ही नहीं। जब मैं अपनी व्यवस्थित, क्रमबद्ध सामग्री को परोस रही थी, तो मैंने इस बात पर विचार ही नहीं किया कि बच्चे दरअसल सीखते कैसे हैं। मैंने उन्हें यह मौका ही नहीं दिया कि वे खुद प्रयोग करते हुए, डिज़ाइन के बारे में कुछ जानें। मैंने उनकी डिज़ाइन की समझ को विस्तार देने के बदले उसे सीमित कर डाला। यह समूचा काम पूरी तरह फिस्स इसलिए नहीं हुआ क्योंकि बच्चों को अपने हाथों से काम करना पंसद है, खासकर तब जब वे कुछ शुरू कर दें। फिर तो वे करते हुए सीखने का भी मज़ा लेते हैं। पर अगला चरण क्या हो? क्रिसमस की छुट्टियों के बाद काम को कैसे बढ़ाया जाए?

शायद मुझे पहले यह विचार कर लेना चाहिए कि कपड़ों के इस अध्ययन से उनकी कौन सी जरूरतें पूरी होंगी। उनमें यह समझ तो विकसित होनी ही चाहिए कि अलग-अलग मौसम व आयोजनों में वे कैसे कपड़े पहनें। नए कपड़े चुनने में अभिरुचि का होना भी ज़रूरी है। कपड़ों पर खर्च करने के लिए जितनी भी राशि उनके बजट में हो, उसका सही उपयोग करना उन्हें आना चाहिए। कपड़े खरीदते समय उपभोक्ता किन समस्याओं का सामना



करते हैं यह भी और उन्हें मालूम होना चाहिए। उन्हें विभिन्न मार्कों और उनसे वस्त्र की गुणवत्ता, कारीगरी किन परिस्थितियों में वह कपड़ा या वस्त्र बना है, की जो जानकारी मिलती है यह भी पता होना चाहिए। उन्हें विज्ञापनों को विवेक से पढ़ना-समझना आना चाहिए। अविष्कारों जैसे कपड़ा व वस्त्र उद्योग के अविष्कारों, से दुनिया और जीवन शैली में बदलाव कैसे आते हैं।

किशोरी बालिकाओं की एक दूसरी ज़रूरत भी है, जो आकर्षक दिखने में उनकी रुचि से पैदा होती है। बड़े लड़कों, खासकर जो कुछ सुस्त हैं, को अपने हाथों से कुछ करने की ज़रूरत भी है। इससे उनके समक्ष एक व्यापक दुनिया खुलेगी।

शायद मुझे स्कूल में कुछ सामग्री ले जानी चाहिए। अगर हम उन सामग्रियों और अपने वस्त्रों को जांचें और यह जानने की कोशिश करें कि वे किनसे बने हैं, तो बच्चों की जिज्ञासा जग सकती है।

### **मंगलवार, 3 जनवरी 1939**

आज मैंने शुरूआत बच्चों से यह पूछ कर की कि क्या वे यह जानते हैं कि उनके कपड़े किससे बने हैं। हमने पाया कि सूत, ऊन, रेशम, व रेयॉन का उपयोग तो वस्त्रों के लिए होता है, पर लिनेन का नहीं। बच्चों ने डब्बे में रखे कपड़े के टुकड़ों के बड़ी सावधानी से जाँचा और पूछते रहे “क्या यह लिनेन है?” कई बार गलत पहचान करने के बाद उनकी ओर से पहला सवाल आया, “पहचान कैसे की जाती है?” मैंने प्रश्न समूह की ओर ही उछाल दिया हेलेन बोली “लिनेन आसानी से मुस जाता है।” इस पर दूसरे बच्चों ने कहा कि दूसरी तरह के कपड़े भी मुसते हैं। ज़ाहिर था इस रास्ते पहचान करना कठिन था। एल्बर्ट का कहना था कि उसका भाई छूकर विभिन्न प्रकार के कपड़ों को पहचान सकता है। इस पर बच्चों ने टुकड़े उठा लिए और स्पर्श से जानने की कोशिश करने लगे। इस दौरान वॉरेन बोला कि ऊन की पहचान जलाने पर उससे निकलने वाली गंध से हो सकती है। हमने यह करके देखा। बच्चे फौरन जलते ऊन से निकलती पशु-गंध को पहचान गए। कुछ कपड़े ऐसे भी थे जो देखने में ऊनी लगते थे पर जलाने के परीक्षण में उनकी गंध फर्क थी। मार्था ने कहा कि कपड़े का अधिकतर भाग शायद सूती है और उसमें कुछ ऊन मिलाई गई है। उसने बताया कि उसके पास भी एक स्वैटर था जो सूत और ऊन के मिश्रण से बना था।

अब बच्चों ने दूसरी तरह के नमूनों को जलाना चाहा। जॉर्ज ने रेशम का एक टुकड़ा जलाया। बच्चों ने देखा कि ऊन की तरह रेशम भी जलने पर एक परत छोड़ देता है, पर उसकी गंध बिल्कुल फर्क होती है। कुछ कपड़े जो स्पर्श से रेशम से लग रहे थे, पर दरअसल थे नहीं, फर्क तरह से जले। रूथ

ने टिप्पणी की “यह जरूर रेयॉन होगा।” इस पर इस पर जॉर्ज ने सूती कपड़ा जलाया जो रेयॉन सा जला। “ना, जला कर अंतर हम नहीं जान पाएंगे” एलबर्ट बुदबुदाया। पॉल बोला “खैर सूती कपड़े और रेयॉन में अंतर करना आसान है, एक चमकीला होता है, दूसरा नहीं ना, ऐसा भी नहीं है। सिलाई क्लब में मैं अपनी ड्रेस बना रही हूँ। यह ड्रेस एक खास तरह के सूती कपड़े की है, जो चमकीला है।” “पर वह रेयॉन से कहीं भारी है,” पर्ल ने पलटकर जवाब दिया। “मिस वेबर के पास एक नायलॉन की ड्रेस है जो सूती कपड़े जितनी ही भारी है, और देखने में भी वैसी ही लगती है” रूथ ने बड़े विश्वास से जोड़ा। समय प्रायः खत्म हो चला था। सो मैंने सुझाया कि वे घर पर भी सामग्री देखते रहें और माता-पिता से भी इस बारे में पूछें।

#### **बुधवार, 4 जनवरी**

आज मैंने जानना चाहा कि बच्चों ने घर पर कपड़ों के बारे में क्या सीखा। वॉरेन ने बताया कि उसकी माँ का कहना था कि ऊन और रेशम पशुओं से प्राप्त होते हैं इसलिए उनकी अपनी गंध होती है, जैसे चिड़ियों के पंख में भी होती है। पर सूती और लिनेन के कपड़े वनस्पति से प्राप्त तंतुओं से बनते हैं। रूथ ने भी कहा कि रेयॉन वनस्पति से बने धागों से बुना जाता है “क्या पेड़ों से नहीं मिलता उसका तंतु?” पर वॉरेन बोला कि रेयॉन कृत्रिम तंतु से बनता है।

बच्चों को सूझा कि वे अपनी-अपनी कॉपियों में हर तरह की सामग्री के नमूने लगाएंगे। सो हमने कपड़ों को सूती, ऊनी रेशमी, रेयॉन, लिनेन व अज्ञात की ढेरियों में छांटना शुरू कर दिया। “लाइनिंग स्टोर ने सिलाई क्लब के लिए हमें जो कपड़ों के नमूने भेजे थे, क्या उनको काम में नहीं लाया जा सकता। उनमें हरेक के पीछे लिखा है वह किस तरह का कपड़ा है”, मेरी ने सुझाया। मेरी उन्हें ले आई और बच्चों ने देखा कि उन्हें किस तरह काट कर लगाया गया था।

वे यह सब कर ही रहे थे कि सोफिया ने गौर किया कि सूती कपड़ों के ढेरों प्रकार हैं और डेनिम और दूसरे सूती-कपड़े में कितना भारी अंतर है। मैंने बच्चों को बताया कि रेयॉन के भी तमाम नाम हैं, पर क्योंकि रेयॉन उद्योग अभी नया है, हम उनसे परिचित नहीं हैं। इस पर डॉरिस ने दो तरह के ऊनी कपड़े उठाकर कहा “ऊनी कपड़ों में भी अंतर होता है। दुकान वालों ने उनमें से एक को ऊनी क्रेप कहा है।”

वॉरेन काफी देर से चुपचाप कपड़े छांट रहा था, पर अब ऊपर सिर उठा बोला “हम कभी भी पक्के भरोसे से यह नहीं कह पाएंगे कि हम सही हैं। जिन वस्त्र कारखानों में कपड़े सीने के लिए हर तरह की सामग्री मंगवाई

जाती है, वे भला क्या करते हैं? क्या उनके पास निश्चित तौर पर फर्क करने का कोई खास तरीका है?” मैंने उसे बताया कि आजकल माइक्रोस्कोप के बिना विभिन्न सामग्रियों में साफ अंतर करना लगभग असम्भव हो चला है। मेरे मुंह से शब्द निकले न थे कि मुझे सूझा कि हम डॉ. ब्रीड के स्कूल से माइक्रोस्कोप का जुगाड़ बैठा सकते हैं। लड़के-लड़कियों के लिए यह बड़ा रोचक अनुभव रहेगा।

### **सोमवार, 9 जनवरी**

शनिवार को डॉ. ब्रीड से माइक्रोस्कोप मिला जिसे मैं आज स्कूल ले आई। माइक्रोस्कोप ने दिन भर का कार्यक्रम गड़बड़ा दिया। छोटे बच्चों को भी यह देखना था कि आखिर हो क्या रहा है। मैंने सबसे पहले कपास का तंतु लगाया और हरेक बच्चे ने उसकी बड़ी छवि को ध्यान से देखा। आश्चर्य और उत्साह की तरह-तरह की ध्वनियाँ सुनाई दीं। बच्चों ने तब विभिन्न प्रकार के तंतुओं में अंतर करना सीखा। उनकी योजना यह है कि वे इनके चित्र अपनी कॉपियों में बनाएं।

दोपहर को बच्चों ने माइक्रोस्कोप से तमाम दूसरी चीजें भी देखीं वॉरेन ने अपने खाली समय एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के बाल संस्करण को पढ़ने में बिताया। उसने माइक्रोस्कोप और उसके सभी भागों के बारे में पढ़ा।

### **मंगलवार, 10 जनवरी**

आज सुबह हमने “अज्ञात” कपड़ों के ढेर में से कपड़े जाँचने शुरू किए। जैसा बच्चों को पहले ही लग रहा था, इनमें से कई मिश्रित तंतुओं से बने थे।

अब तक मैं ही माइक्रोस्कोप में नमूने लगाती रही थी। दोपहर को वॉरेन ने अनुरोध किया कि उसे इसकी इजाज़त दी जाए। उसने कहा कि उसे पता है कि सावधानी से माइक्रोस्कोप का उपयोग कैसे किया जाए और वह कैसे काम करता है। मैंने कुछ देर उसे काम करते देखा और तब रुचि ले रहे बच्चों के समूह के साथ उसे काम करते छोड़ चली आई। मैं जहां काम करने बैठी वहां तक उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह कह रहा था “याद है पिछले साल हमने मैग्नेफाइंग ग्लास का उपयोग कर चीजों को असल आकार से बड़ा देखा था। माइक्रोस्कोप भी ठीक वैसे ही काम करता है। फर्क इतना है कि यह और शक्तिशाली होता है, क्योंकि इसमें अक्सर दो या अधिक लैन्स होते हैं।” ज़ाहिर था कि वह जो कुछ कह रहा था, पूरी तरह समझ कर कह रहा था, इसलिए बच्चे भी उसकी बात समझ पा रहे थे।

दोपहर के कालांश में बच्चों ने माइक्रोस्कोप से कपड़ों के टुकड़े

जाँचने शुरू किए ताकि वे बुनाई के नमूनों को देख सकें। उनकी रुचि बुनावट की खूबसूरती में ही थी।

### **बुधवार, 11 जनवरी**

आज सुबह मैंने बुनावट को बारीकी से देखने को कहा। उन्होंने तमाम तरह के नमूने जाँचे और पाया कि तीन तरह की बुनावट ही दोहराई गई है। मैंने मे को बुनने की किताब पकड़ाई और उससे कपड़े बुनने के बारे में जानकारी इकट्ठी करने को कहा। मे ने पता लगाया कि वे तीन मुख्य प्रकार की बुनावटों को देख रहे हैं। बच्चों ने उनके नमूने अपनी कॉपियों में उतारने का फैसला किया। बाद में जब हम साटिन के कपड़े को देख रहे थे, मार्था ने पूछा “इसे कैसे बुना जाता है?” मैंने बच्चों से जानना कि क्या वे करघों पर खुद कुछ कपड़े बुनना चाहेंगे। उन्होंने उत्साह जताया।

### **सोमवार, 16 जनवरी**

हमने डॉ. ब्रीड को माइक्रोस्कोप के लिए धन्यवाद देने को एक साझा पत्र लिखने की योजना बनाई। पत्र बड़े स्नेह भरे शब्दों में लिखा गया, जो साफ जताता था कि माइक्रोस्कोप उनके लिए क्या मायने रखता है। डॉरिस, जो फिलहाल सचिव है, ने पत्र सुंदर अक्षरों में उतारा और तब उसे भेज दिया।

### **मंगलवार, 17 जनवरी**

मैंने रूथ, डॉरिस, में और सोफिया को किताबें दीं और कहा कि वे नवाजो इण्डियन करघे, बॉक्स करघे, गोद करघे, बड़े फ्रेम वाले खटका खींचकर चलाए जाने वाले करघे के बारे में पता लगाएं। तब मैंने उनकी मदद की ताकि वे अपनी रिपोर्ट समूह के सामने व्यस्थित रूप से रख सकें। इस दौरान समूह के शेष बच्चे अपनी कॉपियों में काम करते रहे।

### **बुधवार, 18 जनवरी**

आज लड़कियों ने अपनी रिपोर्ट सुनाई, बच्चों ने ध्यान से सब कुछ सुना ताकि वे यह तय कर सकें कि वे किस तरह का करघा बनाना चाहेंगे। प्राथमिक समूह के बच्चों ने भी सुना। उनमें से कई ने इच्छा जाहिर की कि वे भी करघे बना कपड़ा बुनना चाहेंगे। रूथ का कहना था कि छोटा नवाजो इण्डियन करघा बनाना मुश्किल नहीं है, सो प्राथमिक समूह के बच्चे उसे बना सकते हैं। इस पर पाँच-छह साल के बच्चों को लगा कि वे तो छूट ही गए। मैंने वादा किया कि वे कार्डबोर्ड के छोटे करघे बना सकते हैं, जिससे वे पतली पट्टियाँ बुन सकेंगे और उनसे गमला टांगने के छींके बनाए जा सकेंगे।

### **शुक्रवार, 20 जनवरी**

लड़कों ने विभिन्न करघों को बनाने के लिए आवश्यक लकड़ी की सूची बनाई। स्कूल के बाद हम लकड़ी की टाल पर गए ताकि ज़रूरी सामग्री खरीदी जा सके। डॉरिस ने न्यू यॉर्क स्थित औद्योगिक कला सहकारी सेवा को सूती व ऊनी धागों के लिए पत्र लिखा। बच्चों ने तय किया कि वे पॉकेट बुक्स और बेल्ट बनाएंगे। नन्हे बच्चे नवाजो करघों पर मोटी पट्टियाँ बुनेंगे।

### **शुक्रवार, 3 फरवरी**

पिछले दो हफ्तों से हम करघे बनाने में जुटे रहे हैं। मैंने निर्देश सावधानी से नहीं पढ़े थे जो ठीक ही रहा क्योंकि बच्चों को खुद अपनी योजना बनानी और बारबार निर्देश पढ़ने पड़े। इससे वे और भी आत्मनिर्भर बने हैं। मेरा विश्वास है कि हरेक बड़ा बच्चा अब, बिना किसी दूसरे की मदद लिए, खुद एक और करघा बना सकता है। एडवर्ड जो खुद पढ़ने में कुछ कमज़ोर है, उसने भी बिना मेरी मदद के एक बॉक्स करघा बना डाला उसने तीन दूसरे बच्चों की भी खूब मदद की जिन्हें अपने बॉक्स करघे बनाने में दिक्कतें आ रही थीं। जॉर्ज ने नवाजो करघा बनाना सीखा और तब प्राथमिक समूह के बच्चों को सिखाया कि उसे कैसे बनाया जाए। उसने इस पूरे उपक्रम पर नज़र रखी।

हमारे अध्ययन के इस पक्ष ने बच्चों, खासकर बड़े लड़कों की एक भारी ज़रूरत पूरी की है। यह ज़रूरत है अपने हाथों से कुछ करने-बनाने की। क्योंकि वे अपने लक्ष्य के प्रति कटिबद्ध थे, उन्होंने निर्देश भी बड़ी मेहनत और सावधानी से पढ़े।

अंततः मे की किसी ऐसी चीज़ में रुचि जगी है, जो हम स्कूल में कर रहे हों। उसने एडवर्ड की थोड़ी बहुत मदद से एक बॉक्स करघा बनाया और अब एक पॉकेटबुक के लिए बुनाई कर रही है। शेष लड़कियों तो तब से ही रुचि लेने लगीं थीं, जब हमने कपड़े जाँचने शुरू किए थे।

### **शुक्रवार, 17 फरवरी**

फिर दो हफ्ते गुज़र गए हैं। बच्चे बुनने में व्यस्त रहे हैं और जैसे ही दूसरे काम खत्म होते हैं फौरन उस पर लौटते हैं। इस दौरान मैं यह सोचती रही हूँ कि अब आगे क्या करना है। बच्चों की ओर से कोई संकेत नहीं मिल पाया है। वे तो कपड़े बुनने को ही मगन और संतुष्ट हैं। और मैं कपड़ों के बारे में लगातार इतना-इतना पढ़ती रही हूँ कि ऊब चुकी हूँ। अध्ययन के इस पक्ष पर लगभग सात सप्ताह खप चुके हैं। लंबा समय है ना। पर हम इस पर फैसला कैसे लें। जैसे-जैसे अध्ययन आगे बढ़ेगा, उसके ऐसे नतीजे भी सामने आ सकते हैं, जिनको मैंने अपनी सूची में शामिल नहीं किया है। ये नतीजे शायद ऐसे हों जो अब तक ज़ाहिर नहीं हुए हैं पर जो शायद बच्चों को वह सब समझने में मदद करें जो हम भविष्य में पढ़ें। यही इस बात की असली

जाँच होगी कि हमने अब तक जो समय लगाया है वह सार्थक था, या नहीं। इस दौरान हमने कोई औपचारिक चर्चा नहीं की है। हमने हरेक कालांश में केवल काम ही किया है। हमें जब कुछ जानना होता तो हम रुकते, जानकारी लेते और आगे बढ़ जाते। यह तकनीक अब तक सही लगती रही है, पर मुझे लगातार इसका मूल्यांकन करना होगा। अधिकतर समय बच्चों ने ही कुछ ऐसे सवाल उठाए जिनसे अध्ययन आगे बढ़ा। जब बच्चों का उत्साह चढ़ाव पर दिखा तब मैंने कुछ दिशाएँ सुझाईं। यह तकनीक और इससे मिले अवसर बच्चों और मेरे लिए नए हैं। संभव है भविष्य में वे ही सवाल उठाएँ। जैसे-जैसे काम बढ़ता है मुझे इस पर खास नज़र रखनी होगी।

आगामी चरण क्या हों? विभिन्न प्रकार के तंतुओं से कपड़ा बनाने की प्रक्रिया के अध्ययन से, उदाहरण के लिए ऊन से, हम ऊन की प्रकृति, उसकी देखभाल, उससे ऊनी कपड़ा बनाने की समूची प्रक्रिया, वह गरमी को कैसे रोकता है, क्या ऊनी कपड़े को आसानी से धोया-साफ किया जा सकता है, वह कितना मंहगा होता है आदि जान सकते हैं। मुझे लगता है कि इस प्रकार के अध्ययन से हम बालक-बालिकाओं के स्वास्थ्य, वित्तीय व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं।

शायद वह समय आ चुका है जब मुझे कपड़े बुनने में उनकी रुचि को, कपड़ा निर्माण के गहन अध्ययन की और मोड़ना चाहिए। अध्ययन के प्रारम्भ में मैंने जो गलती की थी, उससे बचने के लिए शायद मुझे कुछ कच्ची ऊन स्कूल ले जानी चाहिए। बच्चों को उसे धोने को कहना चाहिए। बच्चों ने पड़ोस के पशुपालक की भेड़ों की ऊन उतरते देखी है। वे जानते हैं कि ऊन कहाँ से मिलती है। ऊन से शुरुआत इसलिए करने चाहिए क्योंकि उसे कातना सबसे आसान है और कपास से कहीं ज्यादा आसानी से उससे काम किया जा सकता है।

बच्चों को ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव देना अच्छी शुरुआत होगी। मैं तब तक इसी तरीके को काम में लूंगी जब तक इसे छोड़ने का कोई ठोस कारण न उभरे। ज़ाहिर है कि ऐसे अनुभवों को आँख मूंद कर चुना नहीं जा सकता। अनुभव ऐसा होना चाहिए जो विकास और अन्य अनुभवों की संभावनाएँ खोलता हो। उससे जिज्ञासा जगती हो, ऐसे मजबूत उद्देश्य उभरते हों जो बच्चों को सीखने पर बाध्य करें।

मुझे कुछ सवाल खुद से पूछने चाहिए। क्या बच्चों की वास्तव में गहरी रुचि है? क्या वे समझ रहे हैं? क्या वे सोचने के आधार के रूप में सही और विविध तथ्यों को काम में ले रहे हैं? क्या वे एक-दूसरे के साथ जीना सीख रहे हैं? जो कुछ वे सीख रहे हैं, उस बारे में क्या वे खुद कुछ निर्णय

ले सकते हैं (फिर चाहे वह निर्णय कितना भी छोटा क्यों न हो), जिस दुनिया में वे जीते हैं, क्या उसकी, उनकी समझ, कुछ बढ़ रही है?

### **मंगलवार, 21 फरवरी**

आज मैं औद्योगिक कला सहकारी सेवाओं द्वारा भेजी गई कुछ अनधुली ऊन स्कूल ले गई और बच्चों से पूछा कि क्या वे उससे कपड़े का एक टुकड़ा बुनाना चाहेंगे। तुरंत सवाल दागा गया “यह भला कैसे होगा?” क्योंकि ऊन बहुत ज्यादा नहीं थी, मैंने सुझाया कि लड़कियाँ उसे धो डालें। उन्होंने समूह बना पहले तो पढ़ कर यह जाना कि धुलाई कैसे की जाए। लड़कों को मैंने ऊन धुनकने का यंत्र दिखाया, जो मुझे अपने घर में मिला था। जॉर्ज और एडवर्ड ने दो और धुनकियाँ बना डालने की पेशकश की। उन्होंने औज़ार निकाले और काम करने हॉल में चले गए। शेष लड़कों को मैंने तीन तकलियाँ दी जिनमें वज़न लटका था और उन्हें सिखाया कि उससे सूत काता कैसे जाता है। यह काम मुझे मेरी माँ ने सिखाया था। इस सब में बड़ा मज़ा आया।

### **गुरुवार, 23 फरवरी**

छुट्टी के पहले हम जो कुछ कर रहे थे, उसी स्थिति में वापस लौटने के प्रयास में प्रत्येक समूह ने शेष समूहों को बताया कि मंगलवार को वे क्या कर रहे थे। सोफिया ने हमें साफ कच्ची ऊन दिखाई और बताया कि उसे उलझने से बचाने के लिए क्या सावधानियाँ बरती गईं। जॉर्ज और एडवर्ड ने धुनकी का उपयोग समझाया और उनके द्वारा बनाई गई धुनकियाँ दिखाई एल्बर्ट ने तकली से कताई की विधा का प्रदर्शन किया। बचे हुए समय हमने उनको धुनने और उससे सूत कातने में लगाया। मैंने सुझाव दिया कि ऊन से बने एक छोटे से टुकड़े को बनाने में, धुनने, सूत कातने और बुनने में जितना समय हमें लगे, उसका हम रिकॉर्ड रखें। उम्मीद है कि हम इससे कुछ महत्वपूर्ण सामान्यीकरणों तक पहुंच सकेंगे।

बच्चों में कुछ ऐसी रुचि जगी कि वे दिन भर, अपना काम खत्म होते ही, कतलियों से धागे कातने लौटते रहे। हर बार वे ब्लैकबोर्ड पर उतने मिनट दर्ज करते जितना समय उन्होंने बिताया होता। स्कूल खत्म होने के पहले ही उन्होंने सारी ऊन खत्म कर डाली थी।

### **शुक्रवार, 24 फरवरी**

रूथ के पास एक धातु का बना छोटा, करघा है, जिसकी चौड़ाई, लंबाई घटाई-बढ़ाई जा सकती है। समूह ने सुझाया कि हम ऊन से एक टुकड़ा बुनने के लिए इसी करघे का उपयोग करें। रूथ अपने करघे को चलाना जानती थी सो उसने ताना के धागे डाले और शेष बच्चों को बताया

कि बाना कैसे बुना जाए। बच्चों के रिकार्ड के अनुसार सत्ताइस गज़ ऊन के धागे कातने में और उसे पाँच इंच लंबे व पाँच इंच चौड़े दो टुकड़े बुनने में उन्हें पूरे चार घण्टे लगे थे। कपड़ा अनगढ़ सा था, कहीं मोटा तो कहीं पतला। समान मोटाई का सूते कातने में अभ्यास की ज़रूरत होती है। बच्चों की टिप्पणियाँ ठीक वैसी थीं, जिनकी मैंने उम्मीद की थी। “हाथ से बुनना कठिन है, इसमें काफी समय लगता है।” “हमें तो मज़ा आया, पर अगर पूरे परिवार के लिए कपड़े बनाने हों तो जान ही निकल जाए।” “एक पूरी ड्रेस या सूट इस तरह बनाना हो तो बहुत समय लगेगा। पहले के लोगों को भी क्या कातने बुनने में इतना ही समय लगता होगा?” जॉर्ज को एक छोटे चरखे का चित्र मिला। उसने तय किया कि वह भी एक चरखा बनाने की कोशिश करेगा।

### **मंगलावार, 28 फरवरी**

मिस मोरान ने हमें रेयॉन बनाने की समूची प्रक्रिया की एक प्रदर्शनी भेजी। बच्चों ने उसे बड़ी रुचि से देखा। इसके बाद मार्या ने “पूछा हम ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया को ठीक ऐसे ही क्यों नहीं दर्शा सकते?” रूथ ने सुझाया कि हम अपने हाथों से बुने टुकड़ों में से एक को रंग डालें। हमने कुछ समय तक अपने संग्रहालय के लिए प्रदर्शनी बनाने पर बात की। बच्चों का कहना था कि हम इसमें अनधुला ऊन, धुली, ऊन, हाथकता धागा, हाथबुना कपड़ा और रंगा हुआ कपड़ा लगाएँ और सबके नीचे यह लिखें कि वह क्या है। मैंने सलाह दी कि हम अपने टुकड़े को रंगने के पहले देशी रंगों से कुछ प्रयोग कर लें।

### **बुधवार 1 मार्च**

हमने औद्योगिक कला सहकारी सेवा के बुलेटिन में देसी रंगों सम्बन्धी जानकारी पढ़ी। बुलेटिन में लिखा था कि विभिन्न चीजों का जैसे एसेटिक एसिड, सोडा, लम, लोहा, सल्फेट आदि, उपयोग, सूती, ऊनी, लिनेन, रेशम आदि के कपड़ों पर किया जा सकता है। बच्चों ने अपनी कॉपियों के लिए ऐसी चार्ट बनाई और हरेक के सामने एक चौकोर स्थान छोड़ दिया ताकि उसमें रंगे हुए नमूने लगा सकें। कल बच्चे मेपल, सफेद व लाल बालूत, जंगली चेरी, अखरोट के पेड़ों की छालें और प्याज़ के छिलके लाएंगे। जॉर्ज, एडवर्ड और थॉमस ने अपना छोटा चरखा तैयार किया और उससे ऊन कातने की कोशिश की। चरखा ठीक से चल नहीं पाया और हमें तो लगा कि तकली से सूत कातने में कम समय लगता है। पर लड़के इस मशक्कत से कताई की प्रक्रिया को अधिक अच्छी तरह समझ पाए।

### **गुरुवार, 16 मार्च**



पिछले सप्ताहों में हम रंगाई के प्रयोग करते रहे। रंगे टुकड़े जब सूख गए तो बच्चों ने अपनी-अपनी कॉपियों में उन्हें चिपका लिया। रंगाई प्रक्रिया और अपने प्रयोग के नतीजे भी उन्होंने दर्ज कर लिए हैं। मे और डॉरिस की रुचि काफी है पर हमारी मुख्य रंगरेज़ तो पर्ल है। वह और एलिस घर पर अपने आप भी कुछ प्रयोग करती रही हैं।

सामाजिक अध्ययन के अधिकांश कालांशों में हम मौजूदा घटनाओं पर चर्चाएँ करते रहे हैं। जब किसी घटना की पृष्ठभूमि को समझ विगत परिस्थितियों को जानने की जरूरत होती है तो बच्चे अपनी इतिहास और भूगोल की किताबों को संदर्भ पुस्तकों के रूप में पढ़ते हैं। इन घटनाओं की जानकारी उन्हें 'करेंट इवेन्ट्स' व 'वीकली रीडर' नामक पत्रिकाओं से मिलती है। उनकी कॉपियों में ताज़ा घनावृत्त वाला भाग सबसे बड़ा है। दीवार पर टंगे दुनिया के नक्शे पर वे उन स्थानों को दर्ज करते हैं जिनके बारे में उन्होंने पढ़ा हों।

आज सुबह रूथ ने मुझसे कहा "आपका नया स्वेटर बड़ा अच्छा है, क्या यह अंगोरा ऊन का है?" मेरा जवाब था "ना, यह एल्पाका है।" "एल्पाका क्या होता है", रूथ ने जानना चाहा। मेरे बताने पर रूथ बोली, "मुझे नहीं पता था कि भेड़ और बकरियों के अलावा दूसरे पशुओं से भी ऊन मिलता है।"

सामाजिक अध्ययन के कालांश में मैंने समूह को सुबह की इस बातचीत के बारे में बताया। मैंने बच्चों को अपने स्वेटर का लेबल दिखाया। वे भी अपने कोट और स्वेटर कक्षा में ले आए और जानने की कोशिश करने लगे कि उन पर लगे लेबलों से ऊन के अन्य स्रोतों का पता चल सकता है या नहीं। बच्चों को अपने लेबलों में "ऊन," "वस्टेड" और एक पर 'उपभोक्ता संघ' लिखा मिला।

इस बीच रूथ को एक किताब मिल गई जिस में लिखा था कि ऊन याक, लामा, ऊंट, एल्पाका, भेड़ और बकरी से पाया जाता है। "अरे हाँ, ऊंट" वह बोली "मुझे याद आना चाहिए था। मेरी बहन के पास एक कोट है जो ऊंट की ऊन से बना है।" इस पर एन्ड्रू ने सुझाया कि अच्छा हो अगर हम दुनिया के एक बड़े नक्शे पर उन पशुओं के चित्र लगाएँ जिनसे ऊन मिलती है। उसी सांस में वह बोला "मैं यह करूँगा।" यह विचार उसे न्यू जर्सी के उद्योगों के एक सचित्र नक्शे को देख आया था। यह नक्शा बच्चों को खूब पसंद है।

कालांश खत्म हुआ उसके पहले मैंने बच्चों को याद दिलाया कि उन्होंने आज तमाम प्रश्न उठाए हैं जिन्हें हमें भूलना नहीं है। वस्टेड व ऊनी

कपड़े में क्या अंतर है? उपभोक्ता संघ के लेबल का क्या मतलब है? ऊन किन-किन पशुओं से मिलता है? हमने इन सवालों को चार्ट पर लिख लिया ताकि बाद में उनके बारे में अध्ययन किया जा सके।

### **शुक्रवार, 17 मार्च**

हम समूह में रंगाई के साथ जिस हद तक प्रयोग करना चाहते थे, कर चुके हैं। फिटकरी के साथ प्याज का चित्र एक खूबसूरत पीले रंग में तब्दील हुआ, जो ऊन के लिए सबसे बढ़िया था। सो हमने हाथ से बुने एक ऊनी टुकड़े को इसी में रंगा। पर्ल को यह सम्मान दिया गया। शेष प्रयोगों के मटमैले नतीजों को देख वॉरेन ने टिप्पणी की “तभी हमारे शुरूआती बारिशदे इतने बदरंग से कपड़े पहना करते थे।”

### **सोमवार, 20 मार्च**

लेबलों को पढ़ने के प्रति रुचि बनी हुई है। आज सुबह एक व्यक्ति ने विलियम और हेनरी को स्कूल तक छोड़ा। इन दोनों ने अनुरोध किया कि क्या वे उसके कोट का लेबल देख सकते हैं। उसका कोट लामा ऊन से बना था। उस व्यक्ति ने बताया कि उसका कोटा महँगा है। जब स्कूल आए तो दोनों बड़े उत्साह से यह किस्सा सुनाने लगे। हेनरी ने जानना चाहा “कुछ ऊनी कपड़े दूसरे ऊनी कपड़ों की तुलना में इतने महँगे क्यों होते हैं? हमने गुरुवार को प्रश्नों की जो चार्ट बनाई थी,” उसमें यह सवाल भी जोड़ दिया।

एन्ड्रू ऊन के स्ट्रोतों वाले नक्शे पर काम करना चाहता था। बच्चों को लगा कि इसके पहले “कौन-कौन से पशुओं से ऊन मिलती है?” के सवाल के उत्तर है पर शोध करनी चाहिए। जब एन्ड्रू बड़े कागज़ पर दुनिया के नक्शे की रेखाएं बनाने लगा, तब शेष बच्चे अपनी भूगोल की किताबें व अन्य संदर्भ पुस्तकों की और मुड़े। मैंने सुझाया कि जब वे पढ़ ही रहे हैं तो वे हमारे दूसरे सवालों के जवाब भी ढूँढें। जानकारी मिलने पर वे इनके संदर्भ की सूचना बिबलियोग्राफी कार्डों पर दर्ज कर लें, जैसा हम पहले भी कर चुके हैं। बच्चे काम में लग गए और मैंने नोट्स लेने में उनकी मदद की। संदर्भ पुस्तकें चुनने में भी मैंने छोटे बच्चों की मदद की।

### **मंगलवार, 21 मार्च**

बच्चों ने जो सूचनाएँ एकत्रित की थीं उस पर चर्चा शुरू की। वे ऊन वाले पशुओं की सूची बना चुके थे। सो हमने बातचीत, उनके क्षेत्र में वे कैसे जीते हैं, विषय पर की। उन्होंने एन्ड्रू के लिए अच्छे चित्र चुने थे और उसे यह भी बताया कि वे किस इलाके पर बनाये जाएँ।

डोरिस को पता चला कि भेड़ों के कई प्रकार होते हैं। उसकी टिप्पणी थी “इसीलिए शायद उनकी कीमतें भी अलग-अलग होती हैं।” वॉरेन ने

जोड़ा “भेड़ों की देखभाल भी तो काफी करनी पड़ती है ताकि उनकी ऊन बिल्कुल साफ रहे। इसका भी तो कीमतों पर असर पड़ता होगा।” जल्दी ही हमें इसकी रूपरेखा दिखाई देने लगी:

ऊनी कपड़ों की कीमतें नीचे दर्ज की गई बातों पर निर्भर करती हैं:

1. भेड़, बकरी या दूसरे ऊन वाले पशुओं की गुणवत्ता।
2. पशुओं की देखभाल।
3. जिस प्रक्रिया से ऊनी कपड़ा बनाया जाए।
4. मज़दूरी।

अब हमारा अध्ययन और चर्चाएं अधिक केंद्रित हो सकते हैं। यह नई तरह की तकनीक है। हमने तय किया कि हम इस रूपरेखा के पहले प्रश्न पर कल विचार-विमर्श करेंगे।

### **बुधवार, 22 मार्च**

हमने इस प्रश्न पर चर्चा की “जिस प्रकार के पशु से ऊन प्राप्त हुआ हो, उसका कीमत पर क्या असर पड़ता है?” हम इस सवाल पर बात कर रहे थे कि सोफिया ने हमें ऊनी और वर्स्टेड कपड़े का अंतर बताया। यह अंतर बच्चों के कपड़े में साफ नज़र आ रहा था। चर्चा बहुत सहज नहीं रही। लगता है कि बच्चों को फिर से चर्चा के तरीकों पर बातचीत करनी होगी।

### **गुरुवार, 23 मार्च**

हमने कल की चर्चा पर विचार किया और बच्चों ने निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखने के वास्ते सूचीबद्ध किया।

1. बातचीत को विषयवस्तु पर ही केंद्रित रखा जाए।
2. सबकी बात ध्यान से सुनी जाए ताकि हम उन सवालों को वापस न दोहराएँ जिनके जवाब मिल चुके हैं।
3. पूरे समूह को सम्बन्धित किया जाए।
4. अपनी सूचना इस रूप में हो जिसे आसानी से बांटा जा सके।
5. सब बारी-बारी बोलें। कोई बोले तो दूसरे ध्यान से सुनें और अपनी बारी का इन्तज़ार करें।
6. किसी को सुधरना हो या कोई सुझाव देना हो तो शिष्टता बरती जाए।

### **मंगलवार, 28 मार्च**

“ऊनी कपड़ा बनाने की प्रक्रिया का उसकी कीमत पर क्या असर पड़ता है?” इस प्रश्न के बारे में बच्चों को कुछ रोचक तथ्य मिले। थॉमस को

पता चला कि मशीनों से कीमत काफी कम हो जाती है। उसने बताया कि 1700 में जब कपड़ा बुनने की मशीन काम में ली जाने लगी तो कीमत 30 सेंट प्रति गज़ से 9 सेंट प्रति गज़ हो गई।” सोफिया ने इस पर जानना चाहा कि ये मशीनें आखिर किस तरह ईजाद की गईं? हमने इस सवाल को अपनी सूची में जोड़ लिया।

### **शुक्रवार, 31 मार्च**

चर्चाओं की वजह से कॉपियों का काम काफी पिछड़ गया था, सो हमने पिछले तीन दिनों के सामाजिक अध्ययन और अंग्रेजी के कालांशों का उपयोग, एकत्रित सामग्री को व्यवस्थित करने और अपनी कॉपियों में लिखने में किया। हमने शब्दावली की सूची को देखने में भी समय लगाया ताकि हरेक बच्चा सभी शब्द का मतलब समझे कुछ शब्दों के हिज्जे भी बच्चों ने सीखे।

### **सोमवार, 3 अप्रैल**

बच्चों ने उन कपड़ा मशीनों के बारे में पढ़ा जिनके कारण ऊनी वस्त्र इतना सस्ता हो सका, यह भी कि उनका आविष्कार कैसे हुआ। उन्होंने स्पिनिंग जैनी (कताई मशीन) और आर्कराइट द्वारा बनाए चरखे के बारे में पढ़ा और कार्डराइट की बुनाई मशीन के बारे में जाना। मैं सबके पास जाकर मदद कर रही थी कि वे एक-एक कर सवाल पूछने लगे। ये सारी, मशीनें इंग्लैण्ड में ही क्यों बनीं? लोग इनसे इतनी घृणा क्यों करते थे? आर्कराइट को ‘औद्योगिक युग का जनक’ क्यों कहा जाता है? उन दिनों के कारखाने कैसे होते थे? उनमें औरतें और बच्चे क्यों काम करते थे? आज भी कारखानों की स्थिति क्या ऐसी ही है? ये तमाम सवाल भी हमने अपने सूची में जोड़ लिए।

### **बुधवार, 5 अप्रैल**

कल भी हम आगे पढ़ते और जानते रहे। हमें सामग्री तो खूब मिल रही है, पर ज्यादातर ऐसी जिसे बच्चे समझ नहीं पा रहे। मैंने उनकी मदद की ताकि वे केवल ऊन सामग्रियों का ही उपयोग करें जिसे समझने और जजब करने की क्षमता उनमें हो। जिस पर वे अपने शब्दों में बातचीत कर सकें। आज हमने अपने सवालों के जवाब ढूँढने की कोशिश प्रारम्भ की। हेनरी, विलियम और एल्बर्ट ने कताई मशीनों, आर्कराइट व कार्टराइट के आविष्कारों की कहानियाँ सुनाईं। मैंने समूह को बताया- क्योंकि इंग्लैण्ड में ही सबसे पहले कपड़ा उद्योग उभरा था इन आविष्कारों का वहीं होना स्वाभाविक था। इंग्लैण्ड में लोगों के समूह कताई और बुनाई के लिए संगठित हो चुके थे। वहाँ श्रम विभाजन भी था। इस पर हमने विस्तार से श्रम विभाजन के फायदे और नुकसानों की बात की। मैंने पाया कि बच्चे इस बात को सच

में समझ सके। क्रिसमस के समय हमने ब्लैक फॉरेस्ट के घड़ीसाज़ के बारे में पढ़ा था। डॉरिस ने आज टिप्पणी की “आज के बड़े घड़ी कारखानों में काम करने वाले को उतना संतोष नहीं मिलता जितना ब्लैक फॉरेस्ट के उस घड़ीसाज़ को मिलता होगा।” थॉमस बोला “मुझे एक कपड़ा मिल देखने जाना है। एक बड़ी भारी बुनाई मशीन देखना चाहता हूँ। जो बड़ी तेज़ी से काम करती ऐसी मशीन।”

अंग्रेज़ी के कालांश में थॉमस ने पासाइक चेम्बर ऑफ कॉमर्स को पत्र लिखकर कपड़ा मिल के भ्रमण के बारे में पूछा।

### **गुरुवार, 6 अप्रैल**

मार्था ने समूह को बताया कि शुरुआत में लोगों ने ऐसी मशीनों को इसलिए तोड़ा क्योंकि उन्हें डर था कि उनके काम छिन जाएंगे। उत्पादकों को भी ये आविष्कार पसंद नहीं आए क्योंकि इसका मतलब था कि उन्हें नई मशीनों की खरीद करनी पर और अपने कारखानों को आधुनिक बनाने पर बाध्य होना पड़ेगा। “आधुनिक मशीनों का आविष्कार आज भी बेरोज़गारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, ना?” रूथ जानना चाहा। “हमारे कस्बे के तमाम लोग भी पश्चिम में खेती-बारी की नई मशीनों के आने के बाद बेरोज़गार हुए थे। क्योंकि इससे पश्चिम के अनाज की कीमतों में कमी आई थी। है ना?” वॉरेन ने अगली कड़ी जोड़ते हुए कहा “रेलगाड़ी का आने का भी तो इससे रिश्ता था।” “हमने कुछ ही समय पहले करेंट इवेन्ट्स में पढ़ा था कि दक्षिण के लोग कपास चुनने वाली मशीनों का विरोध कर रहे हैं क्योंकि इससे लाखों लोग बेरोज़गार हो जाएंगे” थॉमस ने याद दिलाया। हमारे प्रयास से बच्चों को वह दुनिया समझ आने लगी है, जिसमें वे जी रहे हैं!

मेरी ने प्रारम्भिक कारखानों की बात बताई। उसने कहा कि आर्कराइट ने अच्छे कारखाने लगाए, जिनमें स्वास्थ्य संबंधी सावधानियाँ और बेहतर कार्य स्थितियाँ थीं। उस समय के लिए वे उचित थीं। पर बाद में इन कारखानों में बच्चों को लगाया जाने लगा, क्योंकि मिल मालिकों को यह पता चला कि, बच्चे भी इन मशीनों को चला सकते हैं और उन्हें नहीं बराबर मज़दूरी ही देनी पड़ती है। उस समय औरतों और बच्चों को पुरुषों से कम मज़दूरी देनी पड़ती थी। काम के अधिक घण्टे, कम मज़दूरी और अस्वास्थ्यकार कार्यस्थितियाँ, इन कारखानों की विशेषताएं बन गईं। और इनसे बने कपड़े घरों में बने कपड़ों की तुलना में काफी सस्ते थे। कारखानों में मशीनों के कारण उत्पादन बढ़ गया, इससे भी कपड़े की कीमतों में गिरावट आई।

### **मंगलवार, 11 अप्रैल**

हम इस सवाल का जवाब तलाश रहे हैं कि “क्या कपड़ा मिलों की

पहले सी स्थितियाँ आज भी मौजूद हैं?” पर्ल अखबारों में छपी कुछ तस्वीरें लाई जिसमें कारखानों में काम करने सा कपास चुनने के कारण विकलांग हुए बच्चे दर्शाए गए थे। मैंने गौर किया है कि समूह, कारखानों के कारण जो समस्याएँ मजदूरों को झेलनी पड़ रही हैं, उनमें बड़ी रूचि रखता है। हमने उन कानूनों को पढ़ा जो महिला और पुरुष कामगारों की स्थितियाँ सुधारने और बालश्रम समाप्त करने के लिए बनाए गए। हमने यह चर्चा भी की कि न्यू जर्सी राज्य बालश्रमिकों के लिए क्या कर रहा है। हमने उपभोक्ता सहकारी समितियों, महिला संघ व ऐसी ही दूसरी संस्थाओं पर चर्चा की जो उन स्थितियों को सुधारने के प्रयास कर रही हैं, जिनमें उत्पादन होता है। वॉरेन कुछ उपभोक्ता पत्रिकाएँ लाया और सोफिया ने हमारा परिचय एक रेडियो प्रसारण से करवाया। उसने रेडियो पर “उपभोक्ता क्विज” खोज निकाली थी। हमारी शाला में इसी महीने बिजली आई है, और हमने पहला काम जो किया, वह था एक रेडियो की खरीददारी।

जब हम बाल श्रम पर बातचीत कर रहे थे, मे ने एक पुरानी किताब से बालश्रम कानून पढ़ सुनाया, जिसे बाद में बीसवाँ संशोधन बनना था। उसने कहा ज़ाहिर है कि वह अब कानूनी संशोधन बन गया होगा। रूथ ने संविधान संशोधनों को देखा तो पाया कि बीसवें संशोधन का बालश्रम से कोई लेना देना ही नहीं था। ज़ाहिर है कि वह संशोधन पारित ही नहीं हुआ होगा।

थॉमस ने आज बताया कि कपड़ों की कीमतों में कुछ वृद्धि तो शायद इसलिए भी हुई होगी कि अब कपड़ा मिलों के मजदूरों को कुछ बेहतर भुगतान होता है। मैंने बच्चों को बताया कि जब वे लेबलों पर ध्यान देते हैं तो हम मजदूरों की बेहतर कार्यस्थितियों के मुद्दे में मदद भी करते हैं और हमें बेहतर उत्पाद भी मिलते हैं।

### **बुधवार, 12 अप्रैल**

बड़ी लड़कियाँ सिलाई क्लब में कपड़ों की देखभाल का अध्ययन कर रही हैं। पिछली बैठक में हम सर्दियों के कपड़ों को सहेज कर रखने पर विचार कर रहे थे। मुझे लगा कि यह बातचीत तो स्कूल के समूह में भी होनी चाहिए। सो आज हमने इस विचार पर बातचीत की। मैंने यह भी जोड़ा कि अच्छा हो अगर हम स्वेटर को धोना और ऐसे जैकेट की सफाई करना सीखें जिसे पानी से नहीं धोया जा सकता। “हम ऊन के बारे में क्या जानते हैं जिससे हमें ऊनी कपड़ों की सफाई में मदद मिले?” मैंने पूछा। बच्चों ने ऊन की विशेषताएँ बताईं, जिन्हें मैंने श्यामपट्ट पर लिख डाला। हमने माइक्रोस्कोप के नीचे देखा था कि ऊन के तंतु एक दूसरे से गुंथे होते हैं और उनमें से बाहर की ओर रेशे से निकले होते हैं। अगर सावधानी न बरती जाए तो धुलने पर

तंतु सिकड़ते हैं और आपस में गड्ढमड्ढ हो जाते हैं। ऊन, सूत से कमज़ोर होता है। गरम पानी से धोने और रगड़ने पर ऊनी धागे कमज़ोर पड़ टूट जाते हैं। ऊन को रंगना आसान होता है। अगर वह बदरंग हो जाए तो उसे फिर से रंगा जा सकता है। गरमी और तापमान में अचानक बदलाव का ऊन पर असर पड़ता है। ऊन गरमी को बाहर नहीं निकलने देता इसलिए वह सर्दियों में बड़ा मूल्यवान होता है। पर गर्मियों के लिए यह सही नहीं रहता क्योंकि इसमें पसीने और शरीर का गंध बस जाती है। ऊन नमी सोखता है, इससे उसे सूखने में ज्यादा समय लगता है। बच्चों ने ये सभी बातें अपने अनुभवों के आधार पर बताईं, रट या पढ़ कर नहीं। ऊन की इन विशेषताओं को बच्चों ने अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेनी चाहिए।

### **बृहस्पतिवार, 13 अप्रैल**

मेरी ने न्यू जर्सी कृषि विस्तार महाविद्यालय की कपड़ों की देखभाल शीर्षक वाली कितबिया में छपे निर्देशों के हिसाब से अपना स्वेटर धोया। उसने हल्के साबुन का घोल बनाना बताया, स्वेटर कैसे धोया और सुखाया जाए यह भी दिखाया। बच्चों ने इन निर्देशों को भी अपनी कॉपियों में दर्ज कर लिया।

### **शुक्रवार, 14 अप्रैल**

मैंने निर्देशों के हिसाब से घोल बनाया और विलियम की जैकेट साफ की। मैंने ऊनी कपड़ों पर इस्त्री करना भी दिखाया। बच्चों ने इन निर्देशों को भी दर्ज कर लिया। डॉरिस और मे ने बचे हुए धोल को घर ले जाने की अनुमति माँगी, ताकि वे अपने कुछ ऊनी कपड़े धो सकें। आज यह जवाब आया है कि बच्चों को स्थित कारखानों में जाने की अनुमति नहीं मिली है।

### **रविवार, 22 अप्रैल**

पिछले सप्ताह हमने कपड़ों के अध्ययन को छोड़ा और अगले गुरुवार तथा कल रात को होने वाले कठपुतली प्रदर्शन की तैयारी में जुट गए। वही प्रदर्शन आज रात फिर से होना है। पूरे साल लोग पूछते रहे थे कि हम इस साल भी कठपुतली प्रदर्शन करेंगे या नहीं। इस बार हमने प्रदर्शन की तारीखें पहले से बताईं ताकि वे सब लोग आ सकें, जो उसे देखना चाहते थे। गुरुवार रात हमारी नन्ही शाला में इतने लोग आ गए कि कई पुरुषों को जिन्होंने टिकट के पैसे भी दिए थे, बाहर खड़े हो खिड़कियों से झाँककर नाटक देखना पड़ा। दरअसल हमने उन्हें कहा था कि वे दोनों में से किसी एक रात नाटक देख सकते हैं। लोग हमारे पंद्रह मील दूर स्थित कस्बे से और बाइस मील दूर स्थित काउन्टी मुख्यालय से, पैनसिल्वेनिया और न्यू यॉर्क तक से आए थे। आज भी नेवार्क से एक समूह आने वाला है।

बच्चे बेहद खुश हैं, पर उन्होंने आपा नहीं खोया है। नाटक के बाद बच्चों ने मेहमानों से उन लोगों की तरह बात की जिन्हें यह भरोसा हो कि उन्होंने अपना काम बखूबी किया है। उन्होंने जो छोटी नाटिकाएं प्रस्तुत की थीं वे निकोडेमस, फार्डिनेंड, चीनी बुलबुल और विनी द फू की कहानियों का नाट्य रूपान्तर थीं। बच्चों ने हर बार अपनी प्रस्तुतियों में कुछ नया जोड़ा।

इन नाटकों ने मेरे शरमीले बच्चों के लिए जो किया वह हमारी किसी भी दूसरी गतिविधि की तुलना में कहीं अधिक है। उनकी विवेकशीलता और चतुर प्रबंधन में भारी इज़ाफा हुआ है। और नाटकों के दौरान सभागार के पिछले हिस्से में बैठ मैं न केवल उनकी प्रस्तुतियों का आनंद ले पाई हूँ, बल्कि दर्शकों की प्रतिक्रियाओं का मज़ा भी ले सकी हूँ। मैं समझ रही हूँ कि इस माध्यम में कितनी संभावनाएँ हैं। बच्चे पर्दे के पीछे चुपचाप व्यवस्थित रूप से अपना-अपना काम करते हैं। उनका आपसी सहकार इतना सघन है कि ज़रूरत पड़ने पर वे किसी दूसरे साथी का काम भी पूरी सहजता से कर डालते हैं। यहाँ समूचे समूह में ऐसा सामाजिक नियंत्रण दिखता है जो साझे काम पर आधारित हो और जिसमें सबको अवसर और योगदान का मौका मिले।

ऐसे सहकार का विकास महज इत्तफाक नहीं है बल्कि सचेत योजना का नतीजा है। मैंने लगातार ऐसी परिस्थितियों बनाई जहाँ बच्चे नेता का अंधानुकरण नहीं करते बल्कि सामने आ रही समस्याओं को सुलझाने में विवेक का उपयोग करते हैं। उन्हें योजना बनाने के, फैसले करने के, अपने निर्णयों के मूल्यांकन के अवसर लगातार मिलते रहे हैं। इससे उनकी चतुराई में भी इज़ाफा हुआ है। यही तो लोकतंत्र की नींव है।

विभिन्न नाटिकाओं के बच्चों ने वे गाने भी प्रस्तुत किए जो उन्होंने क्रिसमस के बाद सीखे हैं। वे इतना सुंदर गाने लगे हैं कि डॉ. व श्रीमती ब्रीड ने उन्हें इतवार की एकेडमी के चार्च में गाने को निमंत्रित किया। हमने वहाँ जो कार्यक्रम किया उसमें ये गीत शामिल थे:

महान संगीतकारों की रचनाएँ:

बाख़ - एक कैरल

बीथोवन - साँग ऑफ़ डे (दिवस गीत)

हैडन - एकोस (प्रतिध्वनियाँ)

मोत्ज़ार्ट - स्प्रिंग इज़ कर्मिंग (आ रहा है बसंत)

मोत्ज़ार्ट - इन टायरोलियन हिल्स (टायरोलियन पर्वतों पर)

लोकगीत:

दक्षिणी अपलाचियन - द फ़ॉग वेन्ट अकोटिंग (मेंढक चला प्रेम करने)

अंग्रेज़ी - फ़ॉग इन द वैल (कुंए का मेंढक)



अंग्रेज़ी - द लिटिल ओल्ड वुमन (नन्ही वृद्धा)  
 आयरिश - द मेडो (बाग)  
 रूसी - फायरफ्लाइज़ (जुगनू)  
 रूसी - कैनोइंग (नौका-चालन)  
 फिनिश - डस्क (गोधूलि वेला)  
 इतालवी - स्ट्रीट फेयर (गली मेला)  
 हंगेरियन - कैरावे एण्ड चीज  
 डच - इन द पॉपलर्स (वृक्ष)  
 डच - द सिंगिंग बर्ड  
 स्लोवाकियन - मॉनिंग कमस् अर्ली (जल्द आता है प्रभात)

लोहे के दुकानदार श्री एलेन जिनसे हमने पिछले वसंत वार्निश रंग खरीदे थे प्रदर्शन के बाद मुझसे मिले और बोले आपको “पता है मिस वेबर मैं यहाँ सारी मेज़ों को देखता रहा हूँ, और मुझे उन पर एक भी निशान नहीं मिला है! यह आपने कैसे किया?”

वस्त्र उद्योग के अध्ययन के इस हिस्से ने बच्चों के लिए क्या किया उसका मूल्यांकन करने का समय आ चुका है। उनकी स्वास्थ्य संबंधी कुछ आवश्यकताएँ इससे पूरी हुई हैं। उन्होंने अपने गरम बाहरी कपड़ों को ब्रश से झाड़ना सीखा है। कल रात नाटक देखने आई श्रीमती समेटिस ने मुझे बताया कि जब से मैंने विलियम की जैकेट स्कूल में साफ की, तब से वह उसे हर दिन झाड़ता और सावधानी से टाँगता है। बच्चों ने बुने हुए ऊनी स्वेटरों को धोना और उन पर लगे दाग-धब्बों को हटाना सीखा है। एन्ड्रूस परिवार की लड़कियाँ अपने ऊनी कपड़ों को संदूक में रखने के पहले साफ कर रही हैं। सभी लड़कियाँ अपनी ड्रेसों को टांगने के पहले ढकती हैं और सूती फ्राकों को जल्दी-जल्दी धोती हैं।

अध्ययन उनकी आर्थिक ज़रूरतों की भी कुछ हद तक पूर्ति कर रहा है। उन्होंने यह सीखा है कि ऊनी कपड़ों को अधिक समय तक चलाने के लिए उनकी देखरेख कैसे की जाए। उन्होंने हर तरह के कपड़े में अंतर करना भी सीख लिया है, इससे वे उनकी उचित देखभाल कर सकेंगे। वे कपड़ों खरीददारी भी सोच-समझकर कर रहे हैं। इससे उनकी सामाजिक ज़रूरतें भी पूरी हो रही हैं। कपड़ों की खरीद में उपभोक्ता जिन समस्याओं का सामना करते हैं उनको वे समझने लगे हैं। सिलाई क्लब की लड़कियाँ कपड़ों के वर्णन पर खास ध्यान देने लगी हैं, वे उनके तानो-बानों की संख्या, धागे आदि पर विचार करती हैं। सभी बच्चे लेबलों को ध्यान से पढ़ते हैं इससे उन्हें कपड़े की विशेषताएँ उसके धागे में कितने बल हैं, उन्हें साफ करने की विधि आदि के बारे पता चला है। वे अब कुछ-कुछ यह भी समझने लगे हैं कि कपड़ा व

वस्त्र उद्योग के लिए जो आविष्कार हुए हैं, उनका दुनिया पर क्या असर पड़ा है। उनके साथ कौनसी नयी समस्याएँ उपजी हैं। कुछ बच्चों को अपने अर्जित ज्ञान को अपने कपड़ों को चुनने में, इस्तेमाल करने के अवसर भी मिले हैं। अधिकांश बड़े बच्चे अपने वस्त्र खुद ही चुनते हैं। विलियम और हेनरी ने तो इस विषय में अपने माता-पिता की रुचि भी जगा दी है।

यह अध्ययन कुछ दूसरी ज़रूरतों की आपूर्ति भी कर रहा है। किशोरियाँ इससे प्रेरित हो कपड़ों की देखभाल में रुचि लेने लगी हैं। उन्होंने बुलेटिन का उपयोग न सिर्फ कपड़ों की देखभाल के लिए करना शुरू किया है बल्कि वे बालों और नाखूनों की देखभाल में रुचि लेने लगी हैं। वे साफ-सफाई के प्रति सचेतन हुई हैं। बड़े लड़कों को हाथों से काम करने के, नए प्रयोग करने के अवसर मिले हैं। इसके ही साथ सभी बच्चों को चर्चा करने की विधि सीखने के मौके मिले हैं। वे महत्वपूर्ण बिन्दुओं को चुनना और चर्चा के दौरान समूह को समक्ष उन्हें प्रस्तुत करना सीख चुके हैं। वे अब इसलिए प्रश्न करते हैं क्योंकि कुछ बातें जानने में उनकी रुचि है। और इसलिए भी क्योंकि वे जो कुछ कर रहे हैं, वह उन्हें सार्थक लग रहा है। अखबारों व रेडियों का विवेकपूर्ण उपयोग भी उन्होंने सीखा है।

परन्तु सवाल यह है कि अगले चरण क्या हो? सूती वस्त्रों के अध्ययन में तमाम संभावनाएँ हैं। इससे उनकी कुछ ज़रूरतें पूरी होंगी और वे कुछ सामान्यीकरणों तक पहुंच सकेंगे। इन सामान्यीकरणों में कुछ महत्वपूर्ण सामान्यीकरण हैं: वस्त्र निर्माण के तरीके उसकी कीमत पर असर डालते हैं। कच्चे माल के लिए देश एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। मशीनों व बिजली के आविष्कार के चलते काम करने और जीने के तौर तरीकों में भारी बदलाव आए हैं। देश आपसी व्यापार इसलिए करते हैं, क्योंकि अन्य देशों के पास उनकी ज़रूरत की वस्तुएं होती हैं। बच्चे इन सामान्यीकरणों की दिशा में बढ़ रहे हैं, इसके कुछ संकेत नज़र आने लगे हैं।

### **मंगलवार, 25 अप्रैल**

मेरी एक सखी ने मुझे फोटो चित्रों की एक किताब दी। शीर्षक था “यू हैव सीन देयर फेसेस।” (इन चेहरों को आपने देखा है)। पुस्तक दक्षिण की समस्याओं की ऐसी खूबसूरती के साथ प्रस्तुत करती थी कि मैंने उसे समूह को दिखाने की बात सोची। मुझे विश्वास था कि उन चित्रों को देख बच्चे तमाम प्रश्न भी पूछेंगे क्योंकि पुस्तक विचारोत्तेजक थी।

पिछले दो दिनों से हम इनके चित्रों और उनके नीचे लिखी इबारतों को ध्यान से पढ़ते रहे हैं। ये इबारतें दरआसल उन लोगों के ही कथन थे जो उन्होंने फोटोग्राफर से कहे थे। कहने वाले लोग किसान, नीग्रो मज़दूर और

दूसरे स्थानीय लोग थे। उदाहरण के लिए उनके कुछ कथन थे “मैंने हमेशा खूब मेहनत की, पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ, मैं वहीं का वहीं रहा।” और “नीलामी करने वाला बॉस इतनी तेज़ी से बोलता है कि निगर (अश्वेत) किसान के पल्ले यह बात पड़ती ही नहीं कि उसकी तम्बाकू की फसल कितने में बिक रही है।” किताब को देखते-पढ़ते समय बच्चों ने सवाल पूछे: दक्षिण के किसान इतनी गरीबी में क्यों रहते हैं? क्या ऐसे रहना उनके लिए जरूरी है? वे इस बारे में कुछ करते क्यों नहीं? वे और ज्यादा कमा क्यों नहीं पाते? मैं इन सवालों को उनके बीच खुला रखना चाहती थी, सो मैंने कहा हमें पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए। मैंने सुझाया कि हम सारे सवाल लिख डालते हैं ताकि हम उन्हें भूल न जाएं। हेलेन ने सचिव की भूमिका निभाई और उन्हें दर्ज कर लिया। बच्चों ने काफी समय अकेले या छोटे समूहों में पुस्तक देखी और उस पर चर्चा करने में बिताया।

### **गुरुवार, 27 अप्रैल**

कल का दिन समूह ने दक्षिण के बारे में और जानकारी इकट्ठा करने में बिताया ताकि हमारे सवालों के जवाब ढूंढे जा सकें। आज मार्था ने चर्चा शुरू करने के मकसद से कहा “मैं बता सकती हूँ कि कपास कैसे उगाई जाती है।” मेरी ने जोड़ा कि जब एली व्हिटनी ने कपास पिंदाई की मशीन ईजाद कर दी तो अधिक कपास उगाना संभव हुआ। इस मशीन ने आखिर ऐसा क्या किया? इतनी कपास क्यों उगाई जाने लगी? ये सवाल मेरी की टिप्पणी के बाद उठे थे, उन्हें भी हमारी सूची में जोड़ लिया गया। एन्ड्रू ने कहा कि वह अपने नक्शे पर कपास उपज के स्थानों पर निशान लगाने को तैयार है। बच्चे समूहों में बंट गये और कुछ इन सवालों की जानकारी पाने के लिए पढ़ने लगे, तो दूसरे अन्य सवालों के जवाब तलाशने लगे।

### **बुधवार, 3 मई**

आज हमने अपनी चर्चा ठीक उसी जगह से शुरू की जहाँ पिछले गुरुवार को रोकੀ थी। थॉमस ने बताया कि कपास पिंदाई और सफाई की मशीन का आविष्कार कैसे हुआ। हाथ से ढेरों लोग जितनी कपास एक दिन में साफ करते थे, उतनी कपास एक मशीन से आसानी से साफ हो जाती थी। क्योंकि कपास को साफ करना आसान हो गया तो दक्षिण के किसान और अधिक कपास उगाने लगे। कपास की फसल बढ़ी तो उसे चुगने के लिए अधिक मज़दूरों की जरूरत पड़ी। कपास सस्ती थी और मज़दूरों की संख्या भी अधिक थी। शायद इसलिए वे मज़दूरी की दरें कम दे पाते थे। इस पर मैंने थॉमस से पूछा कि ‘वे’ से उसका क्या मतलब था। वह बोला “जो लोग अपनी जमीन और औज़ार खेती करने वालों को देते थे, उनके लिए मैंने ‘वे’ शब्द का उपयोग किया है।” इस पर सस्ते मज़दूरों और नीग्रो मज़दूरों पर

और वे कैसे खेत मालिकों के फायदे के लिए काम करने पर बाध्य हुए पर, लम्बी चर्चा छिड़ गई बच्चों को यह भी समझ आने लगा कि जिस मशीन ने लोगों को हाड़तोड़ मेहनत से बचाया, उसी के साथ तमाम दूसरी समस्याएँ उपजीं। कपास चुनने वालों और उनसे जुड़ी समस्याओं पर वे पहले ही बातचीत कर चुके थे। आज उन्होंने फिर से उस पर चर्चा की। उन्हें अहसास हुआ कि समस्या का निदान आसान नहीं है।

#### **गुरुवार, 4 मई**

मेरी ने आज एक कथन पढ़कर सुनाया कि एक प्रकार की इल्लियां दरअसल आर्शीवाद हैं। हमारे नए लड़के डेनियल ने इस वक्तव्य को चुनौती दी। “कोई छोटा सा कीट आर्शीवाद कैसे हो सकता है?” मेरी ने जवाब दिया “क्योंकि उनके कारण कुछ किसानों को कपास उगाना बन्द कर देना पड़ा।” मैंने पूछा “तो क्या यह अच्छी बात है?” “हाँ” कई बच्चों ने कहाँ। “अगर कपास न हो तो यह कीट मर जाता है क्योंकि वह उसी को खाता है। इससे जमीन खाली पड़ी रहती है, ज़मीन सुस्ताती है। बार-बार कपास उगाने से उसका उपजाऊपन खत्म हो जाता है। साथ ही इससे कपास की फसल में जो अतिरिक्त उपज होती है, उसमें भी कमी आती है।” मेरे ‘क्यों’ के ये जवाब उन्होंने दिए थे जिस पर मैंने जोड़ा कि “क्या कोई दूसरे कारण भी हो सकते हैं?” उत्तर की तलाश में हमने किताबें टटोली। हमने पाया कि उस कीट के कारण कुछ बदलाव ज़रूर आए पर वे छोटे थे और दूरगामी भी नहीं थे।

#### **सोमवार, 15 मई**

दक्षिण के किसान कपास की खेती कैसे करते हैं, कैसे फसल उगाते हैं और कपास की सफाई से लेकर बाजार में उसकी बिक्री और उत्पादित वस्त्र तक की समूची प्रक्रिया किन चरणों से गुज़रती है, आदि के बारे में बच्चे पढ़ते और सोचते रहे हैं। उन्होंने इन विषयों पर अपनी कॉपियों में छोटी-छोटी कहानियाँ भी लिखीं हैं।

आज जब बच्चे लिखने में व्यस्त थे तो एडवर्ड बोला, “हमारे पास सूती कपड़े पहेंचें उसके पहले कपड़े के साथ कितना कुछ घट चुका होता है, है ना।”

#### **मंगलवार, 16 मई**

मैंने समूह को एडवर्ड की टिप्पणी की याद दिलाई और पूछा कि क्या इसका रिश्ता उन समस्याओं के साथ भी है, जो हमने शुरूआत में उठाई थीं। इस पर अच्छी चर्चा हुई। कपास तमाम लोगों के हाथों से गुजरता है और हरेक व्यक्ति जो उसके साथ कुछ काम करता है, उससे कुछ न कुछ कमाना चाहता है। जिस व्यक्ति ने पहले-पहल पैसा लगाया होता है, वही उससे

सबसे ज्यादा कमा पाता है। जबकि बंटार्ड-किसान को, जिसने अपनी मेहनत के अलावा कोई पूंजी नहीं लगाई होती और जिसे समूची प्रक्रिया से भी अनभिज्ञ रखा जाता है, कमाने का कोई मौका ही नहीं मिलता। उत्पादक हमेशा भारी मुनाफा कमाना चाहते हैं, फिर चाहे वह कमाई किसी भी तरीके से हो। शिक्षा का अभाव भी लोगों को अनभिज्ञ बनाए रखता है। बच्चों ने नतीजा यह निकाला कि दक्षिण में श्रमिकों की समस्याएं ठीक वैसी ही हैं, जैसी उत्तर में। पर शायद उत्तर के कारखानों में इन समस्याओं को सुलझाने की दिशा में अधिक ध्यान दिया गया है। उन्होंने ऊन के अध्ययन के समय जो जानकारी जुटाई थी, उसका उपयोग किया। उनका कहना था कि उत्पादन की श्रृंखला में जो सबसे पहले होता है, वही सबसे अधिक परेशानियां भी झेलता है। उन्होंने इन किसानों की स्थिति की तुलना हमारे क्षेत्र के दुग्ध उत्पादकों से की जिनके बारे में उन्होंने पिछले साल अध्ययन किया था। चर्चा के दौरान यह बात भी हुई कि कपास उगाने वाले किसान को कितनी कम कीमत मिलती है। वॉरेन ने जानना चाहा कि “कपास की कीमत कितनी हो यह भला कौन तय करता है? उन्हें यह कैसे मालूम होती है?” यह जानने के लिए हम और पढ़ेंगे।

### **बुधवार, 17 मई**

जिन्सों के आदान-प्रदान की बात समझना बच्चों के लिए कठिन है। हम जितना समझ पाए उसी को लेकर हम आगे बढ़ें। हमने पाया कि कपास की कीमत तय करने में एक महत्वपूर्ण घटक है। संयुक्त राज्य अमरिका क्योंकि दुनिया भर में उगने वाली कुल कपास की उपज की आधी यहीं उगती है। इंग्लैण्ड के कारखानों में कपास की जितनी खपत होती है उसकी आधे से भी अधिक संयुक्त राज्य से भेजी जाती है। लिवरपुल और न्यू यॉर्क में बड़ी मंडियाँ हैं। इन मंडियों में अनुबंध के हिसाब से कपास खरीदी और बेची जाती है। कपास की कीमतें तय करने वाले मौसम और कीड़ों की महामारी पर कड़ी नज़र रखते हैं। मौसम, माँग और आपूर्ति, यातायात की सुविधा इन सबका कपास की कीमत पर असर पड़ता है। इंग्लैण्ड और जर्मनी इस कोशिश में लगे हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका से खरीदी जाने वाली कपास में कमी आए। इंग्लैण्ड कपास के साथ प्रयोग कर मिस्त्र और भारत में बेहतर कपास पाने की चेष्टा कर रहा है। जर्मनी में कपास के विकल्पों की तलाश हो रही है।

### **गुरुवार, 18 मई**

‘करैंट इवेन्ट्स’ और ‘वीकली रीडर’ के हालिया अंकों में हमने पढ़ा कि वस्त्र उद्योग में कपास अब “बादशाह” नहीं रहा है। यूरोप में अमरीकी कपास की मांग घट रही है। रेयॉन अब तेज़ी से कपास की जगह लेने लगा

है। बच्चों के मन में सवाल यह उठा कि क्या इससे दक्षिणी अमरीकी कपास किसानों की समस्याएँ बढ़ेंगी और उन समस्याओं का दूर करने के क्या उपाय हो सकते हैं। उन्होंने कपास की अतिरिक्त उपज की चर्चा की और उसकी तुलना दूध के अतिरिक्त उत्पादन से की। उन्होंने पाया कि किसी भी उत्पाद की ज़रूरत और उस आवश्यकता से अतिरिक्त उत्पादन की परिस्थिति में साम्य होता है।

चर्चा में उन्हें यह भी लगा कि कम कपास उगाना गलत है, पर इस मुद्दे पर सवालिया निशान था। उन्हें लगा कि शायद बेहतर यह हो कि किसानों को सिखाया जाए कि वे केवल कपास उगाने के बदले विविध प्रकार की फसलें लें।

### **शनिवार, 20 मई**

अध्ययन का यह चरण कई कारणों से रोचक रहा। यहाँ प्रत्यक्ष अनुभव के नाम पर हमने केवल ढेरों चित्र देखे और खूब पढ़ा। बच्चों ने अपने पिछले अध्ययनों के अनुभव और सामग्री से लगातार सीखें निकाली। हमारे सभी प्रश्न और अध्ययन की दिशा भी खुद बच्चों ने ही तय की। और अंततः पहली बार सामान्यीकरण स्पष्ट नज़र आने लगे।

अध्ययन का यह भाग काफी कठिन भी था। हमने जिस समस्या का अध्ययन शुरू किया वह एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या है जो सभी लोगों की जिन्दगियों को छूती भी है। फिर भी बच्चे इसके सीधे संपर्क में नहीं आते और जहां तक मुझे लगता है, हम सब इस बारे में कुछ कर भी नहीं सकते। मुझे तो यह भी लगता है कि शायद बच्चों की दृष्टि से इसका मूल्य उतना नहीं है जितना ऊन के अध्ययन का था। इसका सबसे बड़ा फायदा तो यही था कि हम इनसे कुछ सामान्यीकरणों तक पहुंच सके जिनसे बच्चों को अपनी खुद की परिस्थितियों को समझने में मदद मिलेगी। अध्ययन प्रारंभ करने के पहले कुछ सामान्यीकरणों को मैंने भी सूचिबद्ध किया था वे शुरू से सामने थे यद्यपि ठीक उस रूप में नहीं जिसमें मैंने उन्हें रखा था। बाद में जिन सामान्यीकरणों तक हम पहुंचे थे:

किसी भी समुदाय के जीवन और काम में वहाँ की जलवायु बेहद महत्वपूर्ण है।

किसी एक फसल की खेती करने के कुछ नुकसान होते हैं।

विविध प्रकार की फसलें ज़मीन, उपज और लोगों के लिए फायदेमंद होती हैं!

निर्माताओं, उत्पादकों और मज़दूरों के हित भिन्न होते हैं, और अक्सर आपस में टकराते हैं, जिससे समस्याएँ भी पैदा होती हैं।

यद्यपि कई चीजों का “अति उत्पादन होता है” परन्तु वितरण की समस्याओं के कारण इस अतिरिक्त उत्पादन का उपयोग वहाँ नहीं हो पाता जहाँ उसकी आवश्यकता या कमी हो।

बच्चों द्वारा उठाए गए सवालों और जवाबी सामग्री तलाशने में उत्साह से यह स्पष्ट था कि उनकी इस विषय में गहरी रुचि थी। यह रुचि एक हद तक इसलिए भी थी कि सामग्री में नाटकीय द्वैत भाव भी था। मुझे सावधानी बरतनी पड़ी ताकि उनकी चर्चा तथ्यात्मक अधिक हो, केवल भावनात्मक नहीं। यह भी बेहद ज़रूरी था कि अध्ययन की ज़िम्मेदारी बच्चों के हाथों में हो ताकि उनकी रुचि सतत् बनी रहे। अन्यथा इतना पढ़ना, इतनी बातचीत और विमर्श करना ऊबाऊ और कठिन बन जाता।

### **बुधवार, 24 मई**

पिछले तीन दिन हमने एन्ड्रू की मदद करने में बिताए और नक्शे पर कपास, प्लैक्स, रेशम, रेयॉन आदि के स्रोत चिन्हित किए। बेहद सुन्दर नक्शा बन पड़ा है। हल्के जल रंगों से बना। एन्ड्रू को उस पर बड़ा नाज़ है। बच्चों ने अपनी कॉपियों में चार्ट बना कर कपास, लिनेन, रेशम, रेयॉन आदि तन्तुओं की विशेषताएं भी दर्ज कर ली हैं।

इस लाभदाई अध्ययन को हमने यहाँ लाकर छोड़ा। लाभदाई इस अर्थ में कि बच्चों की कई ज़रूरतें इससे पूरी हो पाईं। लाभदाई इसलिए भी कि मैंने सीखा कि अगर शिक्षा को बच्चा की जिन्दगी में कोई बदलाव लाना है तो पुरानी तकनीकों से काम नहीं चलेगा। हमें नई परिस्थितियों के लिए लगातार शिक्षा की नई तकनीकें ईजाद करनी होंगी। गत वर्ष मैंने शैक्षिक प्रक्रिया और पाठ्यचर्या निर्माण के बारे में जो कुछ लिखा था, उन शब्दों को मैं अब और अधिक स्पष्टता से समझ पा रही हूँ।

### **बुधवार, 31 मई**

इन सर्दियों में विज्ञान शिक्षण के एक सत्र के दौरान मुझे पता चला कि हिल बच्चों के अलावा शेष बच्चों ने कभी समुद्र देखा ही नहीं है। मुझे लगा कि समुद्र तट की यात्रा बच्चों के लिए एक सार्थक अनुभव रहेगा। मैं इस बात का ज़िक्र अपनी मित्र श्रीमती कोलमार से कर रही थी, जो हमारी नन्ही सी शाला में रुचि लेती रही हैं। उन्होंने कहा “तो फिर तुम उन्हें हमारे घर क्यों नहीं नहीं ले जाती।” उनका घर ऐन समुद्रतट पर है, जो नितांत निजी तट है। यही कारण था कि स्कूल के बाद आज शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष से मिलने गईं। उन्हें यह समझाने कि इस भ्रमण का बच्चों के लिए क्या मतलब होगा, और यह अनुमति लेने भी की क्या हम इसके लिए दो दिन काम में ले सकते हैं, क्योंकि बच्चों को कुछ गाड़ियों में भर कर ले जाने का

काम सप्ताहान्त के बदले सप्ताह के दौरान करना अधिक आसान होगा। उनका कहना था कि क्योंकि हमने काफी अतिरिक्त समय लगाया है, हम दो दिन की छुट्टी आराम से ले सकते हैं। उन्होंने यह भी समझा कि ऐसे अनुभव से बच्चे खूब सीखेंगे और हमें अनुमति दे दी

### **गुरुवार, 1 जून**

आज पहला काम जो बच्चों ने किया वह था भ्रमण में शामिल होने के लिए माता-पिता की लिखित अनुमति पाने के लिए पत्र लिखना। कल रात घर लौटने से पहले मैं न्यू जर्सी के कई रोड-मैप लेती आई थी ताकि हरेक बच्चे को एक-एक मिल सके। सो पत्र लिख डालने के बाद हमने नक्शे पर देखा कि भ्रमण का सीधा रास्ता क्या रहेगा। रास्ते में पड़ने वाले ऐतिहासिक स्थानों के चित्रों को भी देखा, ताकि कहाँ-कहाँ जाना है यह तय कर सकें।

### **सोमवार, 5 जून**

पिछले सप्ताह हमारा लगभग पूरा समय उन ऐतिहासिक स्थानों का अध्ययन करते बीता, जहाँ हम भ्रमण के दौरान जाने वाले हैं। बच्चे अमरीकी क्रांति के युग और न्यू जर्सी की उस गृह युद्ध में क्या भूमिका रही के इतिहास में डुबकी लगाते रहे हैं।

कल ही वह बड़ा दिन है। मुझे नहीं लगता कि बच्चों में से कोई भी आज रात सोएगा। हम केवल बड़े समूह के बच्चों को ले जा रहे हैं क्योंकि नन्हों की देखभाल मुश्किल होगी। हमने उनसे वादा किया है कि हम उनके लिए जितनी संभव होगी उतनी समुद्र किनारे की रेत ले आएंगे।

### **गुरुवार, 8 जून**

आज यात्रा समाप्त हुई और हम सब असामान्य रूप से शांत हैं। पिछले दो दिनों का हमारे लिए क्या अर्थ रहा है उसे अभिव्यक्त करने के हमारे पास शब्द ही नहीं हैं। पर जब-जब बच्चों की आँखें एक दूसरे की, या मेरी आँखों से मिलीं, मैंने उनमें समझ की अजीब सी गर्माहट झलकते देखी।

हम मंगल की सुबह सात बजे निकले थे और हमारा पहला पड़ाव प्रिन्स्टन था जहाँ हमारे प्रिन्स्टन अध्यक्ष का बाग, गिरजा, नासाऊ हॉल देखा, जहाँ अमरीकी क्रांति के समय सैनिकों के बैरक थे। हमने प्रिन्स्टन को छात्रावास और कक्षाओं वाले भवन भी देखे। यहाँ से हम टैनेन्ट चर्च गए। बच्चों ने वहाँ 250 पुराना शाल वृक्ष देखा और यह कल्पना करने की कोशिश की कि जब वह एक नन्हा पौधा रहा होगा तो वह स्थान कैसा दिखता होगा। चर्च के पास स्थित मॉली पिचर के दोनों कुंए भी देखे। कुछ आगे हम लताओं से घिरे एक भोजनालय में रुके, जहाँ हमने दूध खरीदा और, घर से साथ लाए खाने को खाया।



दोपहर तीन बजे हम बारनेगाट रीफ पहुंच गए। समुद्र हमारे बाईं तरफ था और खाड़ी दाहिनी और बीच में थी मंद बयार। बच्चों का आपा खोने लगा। तट पर पहुंचते ही वे समुद्र में तैरने को छटपटाने लगे। श्रीमती कोलमार का एक बेटा जो समुद्री मछली सा है, ने हर बार समुद्र में उतरते ही उन पर नज़र रखी।

स्वादिष्ट रात्रि भोज के बाद कुछ लड़कों ने बर्तन साफ किए और बाकि आग जलाने की लकड़ियाँ बीनने में जुटे। गोधूलि वेला में बाहर तट पर अलाव जलाया गया और कुछ बच्चे रेत में कुश्ती लड़ने लगे तो कुछ रेत के ढेरों के बीच छुपम-छुपाई खेलने भागे। क्रमशः वे खेलने से थककर आग के चारों ओर आ बैठे और तब गीत गाए गए। एल्बर्ट ने पूछा “क्या हम आज रात जितनी देर चाहे जगे रह सकते हैं?” मेरा जवाब था “जब तक इच्छा हो।” “रात बारह बजे तक भी?” “हाँ रात बारह बजे तक भी?” “वाह!” सब चीखे। पर साढ़े नौ भी न बजे थे कि रूथ ने सवाल किया “क्या बारह बजे तक जगना जरूरी है?” हम सब खूब हंसे क्योंकि सभी उनींदे हो चले थे। लड़कों ने तय किया कि वे सुबह वे जल्दी उठेंगे ताकि मछुआरों की नौकाओं को लौटते देख सकें।

अगली सुबह साढ़े पांच बजे मुझे टॉम का कंठ सुनाई पड़ा “ओ वॉरेन, तू उठ गया है?” वॉरेन बोला “हाँ भई, तुमने वह आवाज़ सुनी? लगता है मछुआरों की नांवे लौटने लगी हैं। चलो देखने चलते हैं।” मैंने सीढ़ियों पर उनकी पदचाप सुनी, तब दूसरे, व तीसरे, चौथे बच्चे को उतरते सुना। छह बजे तक हम सब समुद्र तट पर थे। हमने देखा कि मछुआरे अपनी नावें समुद्र में ले जा रहे थे ताकि अपने जालों को संभालें और उनमें फंसी मछलियों को ले आएँ। हम उनके लौटने की राह तकने लगे और इस बीच बच्चों ने ज़िंदगी में पहली बार रेत के किले बनाए। उन्हें रेत में कई केंकड़े रेंगते दिखे। उन्हें तेज़ी से रेत खोद वापस दबने में जुटे देखने के लिए, बच्चों ने उन्हें कई बार खोदकर बाहर निकाला।

लौटने पर मछुआरे मछलियों को छाँटने लगे। बच्चों ने देर तक उन्हें “अजीब-अजीब” सी मछलियां छांटते देखा। मछुआरों का रवैया दोस्ताना था, उन्होंने बच्चों से बात की। वॉरेन जब नाश्ता करने लौटा तो बोला “पता है मिस वेबर वे बिल्कुल असली मछुआरों की तरह बातचीत करते हैं।” उसे इस बात से मज़ा आ रहा था कि उसने किताबों में जिस तरह के मछुआरों के बारे में पढ़ा था, वैसे मछुआरे वास्तव में होते हैं। नाश्ते का समय मौजमस्ती का था। बच्चों ने ठूस-ठूस कर खाया। उन्होंने दलिये पर दूसरी चीजें डालीं और उसे दूध में डुबा डाला। इसके बाद संतरे का रस, अंडा, माँस, टोस्ट और जितना वे पी सकते थे उतना दूध लिया। लॉयड जो सोमवार को पहली बार

हमारे स्कूल आया था, हमारे बीच बिल्कुल सहज था। नाश्ता पूरा होने के बाद उसने छाती फुलाई, और अपने पेट को थपथपाते हुए बोला “श्रीमती कोलमार शायद टैक्सीडर्मिस्ट है, क्योंकि उन्होंने आज ढेरों जानवरों को ठूस कर भर दिया है।”

बर्तन साफ करने की इस बार लड़कियों की बारी थी। क्योंकि मैं बच्चों को कह चुकी थी कि नाश्ते के बाद दो घण्टों से पहले वे समुद्र में तैर नहीं सकते उन्होंने समय बिताने के दूसरे रास्ते तलाशे। वॉरेन और एन्ड्रू अपने स्कैचपैड ले तट पर गए और दोनों ने दो-दो सुंदर दृश्य आँके। बाकि लड़के आंगन में चाइनीज चैकर के बोर्ड के इर्दगिर्द-लोट गए। लड़कियाँ बर्तन साफ करने के बाद तट पर लंबी सैर को निकलीं। सुबह भाटा था सो बच्चों को तैरने में मज़ा आया।

दिन का खाना खाने के बाद श्रीमती कोलमार की माँ श्रीमती अटर ने हमें गृह युद्ध की और कैलिफोर्निया में आए भूकम्प की अपनी स्मृतियाँ सुनाईं। श्रीमती अटर वास्तव में बेहतरीन किस्सागो हैं, बच्चे मुग्ध हो उन्हें सुनते रहे।

जिस समय हम श्रीमती कोलमार से विदा ले रहे थे, उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने कभी इतने शिष्ट बच्चों का समूह नहीं देखा था। किसी शिक्षिका का इससे बड़ा इनाम भला और क्या होगा?

घर लौटते समय हम न्यू बर्नस्विक रुके ताकि हम कृषि प्रयोग स्टेशन देख सकें। उसी इलाके में हम न्यू जर्सी महिला महाविद्यालय ओर रूटगर्स के परिसरों के भी गाड़ी में बैठे-बैठे देख पाए। बाउन्ड ब्रुक के फूल बागान देखने को भी हम कुछ देर रुके। शाम सात बजे तक हम घर पहुंचे ही थे कि बरसात शुरू हो गई। मेघराज की मेहरबानी से हमें दो गुनगुनी धूप से भरपूर दिन मिल चुके थे।

### **शुक्रवार, 9 जून**

आज हम अपनी सामान्य दिनचर्या पर लौट आए, और पिछड़े कामों के बोझ तले खुद को दबा पाया। हमें अपने अखबार का तीसरा अंक निकालना है। हमने फिलहाल उसका रूप तय करना टाला, ताकि समुद्र तट की यात्रा सम्बन्धी आलेखों को भी शामिल कर सकें।

हमें बसंतोत्सव की योजना भी बना डालनी थी। सर्दियों में जब भी बाहर खेल पाना असंभव हो जाता है, मैं बच्चों को लोकनृत्य सिखाती रही थी। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि मौसम गर्माने के बाद भी हमने बाहर नाचना जारी रखा। स्कूल में बिजली आने के कुछ दिनों बाद मार्या एक शाम अपने भाई के साथ युवा मंच की बैठक में आई। जब उसने पोर्च की बत्ती

से जगमग खेल मैदान देखा तो उसे एक विचार सूझा। “कितना अच्छा रहे, अगर हम हमारी बिजली आने का जश्न मना सकें? हम बाहर लोक नृत्य कर सकते हैं और मेरे पास फ्लड लाइटें आदि भी हैं।” यह बात तय हुई और युवा मंच के सदस्यों ने मदद करने का वादा किया। हमारे अच्छे दोस्त-ब्रीड दम्पति हमें फ्लड लाइटें और लंबे तार उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

आज हमने तय किया कि उत्सव में कौन-कौन से नृत्य शामिल किए जाएंगे। हेनरी को समुदाय को उत्सव की सूचना देने की समिति का अध्यक्ष चुना गया। यह सामुदायिक उत्सव ही होगा और कोई शुल्क नहीं रहेगा। सोफिया जलपान व्यवस्था समिति में अन्य सदस्यों को खुद चुनेगी। रूथ की जिम्मेदारी होगी कि वह देखे कि कार्यक्रम सुचारु रूप से चले और अंत में वह सामाजिक नृत्य के लिए रेडियो चालू करे। एडवर्ड और जॉर्ज, नैपकिन और कागज़ के कर्पों को फेंकने के लिए कई कूड़ेदानों को लगाने का जिम्मा उठाएंगे और मे ने स्वेच्छा से कहा कि हमारी रसोई से लिए गए बर्तनों और रसोई घर की सफाई की जिम्मेदारी वह लेगीं। हमने काफी समय नृत्यों को तय करने में बिताया। पहले प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों और तब बड़े बच्चों से बातचीत की गई। अब कार्यक्रम तय हो गया है।

### **गुरुवार, 15 जून**

सोफिया, रूथ, डॉरिस और मे ने आते ही रसोई की सफाई शुरू कर दी। शेष लोग कल रात के सफल उत्सव की चर्चा करने लगे। रंगीन रोशनी में हमारे नृत्य सच में बड़े अच्छे लगे थे। हमारा कार्यक्रम था

1. यूरोपीय लोक-नृत्य-बड़े बच्चों द्वारा:

बच्चों का पोल्का नृत्य

रोवेनोका - बोहिमियन नृत्य

सेबोगार - हंगेरियन नृत्य

आओ खुशी मनाएँ - जर्मन नृत्य

पर्वत मार्च - नोर्वेजियन नृत्य

रिश रैश

2. प्राथमिक समूह के बच्चों के नृत्य:

हम चले शिकार पर

जूते बनाने वालों का नृत्य

मेरा कुत्ता कहाँ गया

3. बड़े बच्चों द्वारा अमरीकी लोक नृत्य:

कैप्टन जिंक्स  
पीछे छूट गई जो लड़की  
पॉप गोज़ द वीज़ल  
वर्जिनिया रील

#### 4. सामाजिक नृत्य

युवा लड़कों ने पियानो को बाहर लाने और कार्यक्रम की समाप्ति पर उसे अंदर ले जाने में मदद की। सभी किशोर-किशोरी नाचे और उनके अभिभावकों को अच्छा लगा। वे तसल्ली से उन्हें नाचते देखते रहे और बाद में आपस में बतियाते रहे। बच्चे उनके बीच शिकंजी और अंगूर के रस के गिलास और घर में बनाए गए बिस्कुटों की ट्रे घुमाते रहे। कल से छुट्टियाँ शुरू हैं, हमने आज स्कूल को गर्मियों के सत्र के लिए तैयार करने से अधिक कुछ नहीं किया।

### चौथा वर्ष

9

### लोकतंत्र में जीना सीखना

#### रविवार, 3 सितम्बर 1939

इस वर्ष की गर्मियाँ सुकून देने वाली रहीं। मैंने अपना अधिकांश समय बाहर लंबी सैरों पर जाते और तैरते बिताया और अब स्वयं को स्वस्थ और तरोताज़ा महसूस कर रही हूँ। मैंने कई शांत घण्टे पहाड़ की चोटी पर, अपने पसंदीदा सेव के पेड़ तले बैठ घुमावदार नदी को बहते देखा। अक्सर मेरी आँखें पढ़ते-पढ़ते थक जातीं तब मैं घास पर पीठ के बल पसर सेव की आंकी-बांकी शाखाओं की बीच से आसमान को ताकती जहाँ बादल अलस गति से गुज़रते। मैं खुद के बारे में सोचती, उन अदभुत बातों पर भी, जो मेरे साथ घट रही थीं। वे तमाम बातें जो मैं अपने लड़के-लड़कियों को सिखाना चाहती हूँ, वे भी मुझे सूझती रहीं। मैं अपनी क्षमताओं, इस दुनिया में अपने स्थान को लेकर सचेत हो चली हूँ। मैं खूब मेहनत से पढ़ रही हूँ और उन सबकी बातें ध्यान से सुनती हूँ, जिन्हें मुझसे भिन्न और अधिक अनुभव हुए हैं। लगता है जो कुछ वे कहते हैं उसका हरेक शब्द मैं समझ पा रही हूँ। मैं अक्सर काफी कठिनाई उठा, हताशा झेलते हुए भी उन शब्दों को अपने कर्म में उतारने की चेष्टा करती हूँ। एक बार नहीं कई-कई बार और तब अचानक वे शब्द नए अर्थ ले लेते हैं। तब लगता है कि मैं दरअसल पहले वह सब समझती और

जानती ही न थी, पर अब जानती हूँ। मैं यह भी महसूस करती हूँ कि तमाम ऐसी चीजें भी हैं, जिनको मैं मानती हूँ कि मैं समझ गई हूँ वे चैतन्य अनुभव की चेष्टाओं से आगे चल कर किसी दिन अचानक ही एक नया और अधिक समग्र अर्थ ले लेंगे। मैंने पाया कि मैं तमाम ऐसे काम करना सीख सकती हूँ जिन्हें पहले मैंने कभी नहीं किया है। मैं भी जीवन का सामना रचनानात्क तरीके से कर सकती हूँ, अपने और अपने साथियों के लिए एक बेहतर स्थान बना सकती हूँ। यह अहसास अद्भुत है, उत्साहवर्धक है, नई आशा जगाता है। लगता है कि आज समझ पाई हूँ कि वाल्ट व्हिटमैन क्यों हमेशा, हरेक चीज़ के विषय में गीत गाना चाहता था।

मैं स्कूल के आगामी सत्र और विकास की नई संभावनाओं पर भी सोचती रही हूँ। एक-एक बच्चे के बारे में सोचती रही हूँ। साल भर उनके साथ बिताना अच्छा लगेगा। हम साथ-साथ काम करेंगे, हमारे साझे जीवन को बेहतर बना सकेंगे। रास्ता कितना भी असंभव क्यों न लगे, अगर हम उतना सा करें जितना हमें समझ आ रहा हो, तो अगला चरण अधिक साफ हो जाता है। जीवन के शुरूआत में नन्हे बच्चे खोजी इंसान होते हैं। वे अपनी समस्त इन्द्रियों की मदद से दुनिया की अनूठी-अनोखी चीजें तलाशते हैं। वे समग्रता में जीते हुए सीखते हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने जो कुछ सीखा होता है उसे वे अपने कर्म में उतारते हैं। जो सीखा होता है उसका उपयोग वे उस जैसी या नई स्थितियों में करते हैं। तब वे स्कूल आते हैं और स्कूल उनकी इन्द्रियों को “बांधता” है। हम स्कूल में उनके बोलने पर पाबन्दी लगाते हैं। उन्हें हिलने-उछलने को रोकते हैं। हम उन्हें महसूस नहीं करने देते। वे केवल वहीं देख सकते हैं जो उनके शिक्षक चाहते हैं कि वे देखें। गत तीन वर्षों से मैंने बच्चों की सीखने की सहज-नैसर्गिक इच्छा को वापस लाने की कोशिश की है। जैसी वृत्ति उनके जीवन के प्रारंभिक वर्षों में थी और जिसे उनके माता-पिता व शिक्षकों, जिसमें मैं भी शामिल हूँ, ने व्यवस्थित रूप से उनसे छिनी है। मुझे स्वयं को पुराने तौर-तरीकों से पढ़ाया गया था। अगर मैं हर पल चौकन्नी न रहूँ तो बड़ी आसानी से उन्हीं विधियों पर लौट सकती हूँ। लगता यह है कि मैंने क्रमशः बच्चों में भी सीखते रहने की इच्छा जगाई है। यह दृष्टिकोण सबसे ज़रूरी है, क्योंकि इसके अभाव में बच्चे न केवल तैयारी करना बन्द कर देते बल्कि वे उन नैसर्गिक क्षमताओं को भी खो देते हैं जो उन्हें जीवन स्थितियों से निपटने में मदद करती हैं। बच्चे अब वास्तव में सीखना चाहते हैं। और उन्हें सिखाने का, उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने का, सबसे अच्छा तरीका यही है कि मैं उनको मौजूदा अनुभवों से उपयोगी अर्थ निकालने में उनकी मदद करूँ। वर्तमान को समग्रता से जी पाना ही उन्हें भावी व्यापक अनुभवों के लिए तैयार करेगा।

## सोमवार, 4 सितम्बर

आज आठ माताएँ और छह हाईस्कूल छात्राएँ शाला भवन में एकत्रित हुईं ताकि सुश्री मोरान से सब्जियों को सही तरह से डिब्बा-बन्द करना सीख सकें। श्रीमती प्रिन्लैक तो अपने नन्हे शिशु को अपने पति की देखरेख में छोड़कर आईं। श्री पिन्लैक ने खुशी-खुशी उन्हें आने दिया। लगता है श्री प्रिन्लैक शिक्षा के बारे में अपने विचार बदल रहे हैं, खासकर जब उसमें प्रौढ़ शिक्षा भी शामिल है!

दरअसल पिछले वसंत के समय कुछ अभिभावकों ने यह इच्छा जताई थी कि वे यह सीखें कि अपने बाग-बगीचे का बेहतर उपयोग कैसे किया जा सकता है। मैंने सुश्री मोरान व श्री लोरेंजो से मदद मांगी। उन्होंने राज्य कृषि महाविद्यालय की विशेषज्ञ सुश्री डोएरमैन और उद्यान विशेषज्ञ श्री निसले की सेवाएं हासिल कीं। 28 अप्रैल को हुई बैठक में चौदह माता-पिता, युवा व बच्चे जो इलाके में बसे आधे परिवारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, शाला भवन में एकत्रित हुए ताकि राज्य स्तरीय विशेषज्ञों व काउन्टी के कृषि विस्तार कर्मियों के मार्गदर्शन में अपने बागों की योजना बना सकें। हमने अपनी समस्याओं पर चर्चा की, उनसे सलाह ली और उपयोगी छपी सामग्री पाई। तभी दो भावी बैठकों की भी योजना बनी, पहली जिसमें डिब्बाबन्दी के बेहतर तरीके सीखने थे और दूसरी जिसमें भारी मात्रा में उगने वाली सब्जियों के भण्डारण के गुर।

## बुधवार, 6 सितम्बर

आज सभी बच्चों ने उत्साह से एक दूसरे का और अपनी शिक्षिका का अभिवादन किया। श्रीमती लेनिक ने बताया कि सैली से तो नाश्ता तक नहीं खाया जा रहा था क्योंकि वह स्कूल आने को बेताब थी। नए साल के प्रारंभ में अमूमन जो झिझक बच्चों में दिखती रही है, लगता है उसे ये बच्चे भूल चुके हैं।

इस साल स्कूल में तीस बच्चे हैं। इन्डर परिवार गत क्रिसमस के बाद शहर रहने चला गया और जोसेफ को मनोरोगियों की संस्था में भर्ती करवा दिया गया है। बर्था स्मिथ भी स्कूल छोड़ गई क्योंकि उसकी माँ वापस शहर चली गई। ओल्सेउस्की परिवार विलियम्स के घर के पास जा बसे ताकि प्रिन्लैक परिवार से दूर रह सकें। इससे दोनों ही परिवार शांति से रहे। पिछले बसंत दो नए लड़के स्कूल में दाखिल हुए। डेनियल कोल के माता पिता ने अप्रैल में ओल्सेउस्की परिवार का खेत खरीदा। श्री कोल पहले शहर में कार मैकेनिक थे, पर गिरते स्वास्थ्य के कारण उन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा। श्रीमती कोल खुलापन लिए दोस्ताना महिला हैं। उनके कारण सोमवार को

डिब्बाबन्दी सीखने के सत्र में मज़ा आया।

लॉयड मैथ्यूस जून में आ गया था। जब हमने सुना कि पड़ोस में एक नया लड़का आ बसा है हमने उसे सत्र के अंतिम दिनों के लिए स्कूल आने का न्यौता दिया। उसकी मां तब से कई बार धन्यवाद दे चुकी हैं। उनका कहना है कि लॉयड बड़ा घबराता है और अगर वह हम सबसे पहले न मिल लेता तो पूरी गर्मियों इसी चिंता में घुलता कि नया स्कूल कैसा होगा, वह हमें और हम उसे पसंद करेंगे या नहीं। लॉयड हमारे साथ समुद्र तट के भ्रमण पर भी चला था, जहाँ उसे बेहद मज़ा आया था। नए सत्र में वह “नया लड़का” रहा ही नहीं वह तो हममें से एक बन चुका है। उसके पिता श्री मैथ्यूस् लैण्डस्केप बागवान हैं जो खेती के लिए ज़मीन तलाश रहे हैं। श्रीमती मैथ्यूस् को सोमवार के सत्र में आकर अच्छा लगा था।

श्री रेमसे ने कुछ लॉग केबिन बनाए जिन्हें वे गर्मियों में सैलानियों को किराए पर देते हैं। इनमें से एक केबिन में मूडी परिवार गर्मियों के दौरान वैली व्यू में रहा। तब उन्होंने तय किया कि सर्दियाँ भी यहीं बिताएँ ताकि उनका छह वर्षीय बेटा आर्थर हमारे स्कूल में पढ़ने का अनुभव ले सके। रेमसे साहब को लगता है कि स्कूल में उनकी बेटी ईरीन को काफी मदद दी है। श्रीमती मूडी को उम्मीद है कि उनके बेटे आर्थर को भी मदद मिलेगी। आर्थर के पिता इन्श्योरेंस एजेन्ट हैं, सो उन्हें हर दिन न्यू यार्क तक जाना पड़ेगा।

इस बार तीन नन्हे भी आ जुड़े हैं एक और प्रिन्लैक, एक और मान और रॉबर्ट लिन्डन। लिन्डन परिवार लड़कों के शिविर की देखभाल करता है। हमने दिन की शुरुआत व्यवस्थित रूप से क्लब बैठक के साथ की ताकि उसे नए सत्र के लिए पुनर्गठित किया जा सके। हमने तीन समितियाँ बनाई ताकि गत वर्ष की बैठकों की समीक्षा, आगामी वर्ष के लिए सुझाव स्कूली व्यवस्था सम्बन्धी जिम्मेदारियों के विषय में क्या-क्या करना है उसकी योजना बनाई जा सके और क्लब के संविधान को जाँचा जा सके ताकि उसमें नई बातें जोड़ने या पिछली को संशोधित करने की ज़रूरत का पता चले।

खेल-कूद के कालांश के बाद मैंने बच्चों के समक्ष वे पुस्तकें रखीं जिन्हें मैं पुस्तकालय से लाई थी। मैंने प्रत्येक पुस्तक के बारे में कुछ रोचक बातें बताईं। बच्चों ने तब उनमें से अपनी पसन्द की किताबें चुनी और पढ़ने के लिए बैठ गए। इधर बड़े बच्चों ने पढ़ना शुरू किया और उधर पाँच-छह साल वाले बच्चे मुझे बताने लगे कि उन्होंने गर्मी की छुट्टियों में क्या-क्या मस्ती करी। उन्हें स्कूल के लिए सिले गए नए कपड़े बेहद अच्छे लग रहे थे और पहले दिन लिए हुई तैयारी उन्हें लुभा रही थी। उन्होंने इस सबके बारे में एक कहानी बनाई जिसे मैंने चार्ट पर उनके लिए लिखी। तब हरेक ने नए कपड़ों में स्कूल आते खुद का एक-एक चित्र बनाया। साढ़े ग्यारह बजे तक

समूह दो, तीन और चार के पठन सत्र बारी-बारी हुए। छोटे बच्चों ने जैसे ही अपना पठन सत्र समाप्त किया वे एक बड़ी सी गेंद के साथ बाहर खेलने गए।

कहानी सुनाने के कालांश में समूचा स्कूल ही बाहर आ गया। मैंने छोटे बच्चों को तीन सूअरों की कहानी सुनाई, उन्होंने उसका नाट्य रूपान्तर किया। मार्था भी हमारे साथ थी, क्योंकि कल वह इन नन्हों को संभालेगी। शेष बड़े बच्चे अलग-अलग पेड़ों की छाया में अपनी-अपनी समितियों में बैठे। खाने के पहले विलियम ने नन्हों की हाथ धोने में मदद की। मार्था और विलियम ने खाना की उनके साथ ही खाया। समिति के अध्यक्ष मेरे साथ खाने बैठे ताकि वे समितियों की प्रगति के बारे में बता सकें।

आज विश्राम का घन्टा सच में आरामदेह रहा। पर्ल नन्हों पर नज़र रखने के वास्ते उनके पास बैठ चुपचाप पढ़ने बैठी और नन्हें गर्म घास पर पसर गए। बड़े बच्चों ने वॉल्ट व्हिटमैन की कविता 'द कॉमनल्पेस' सुनी। हमने धीमें स्वरो में कविता के भावार्थ पर बात की। यहाँ पहाड़ों में हमें जीवन की तमाम अद्भुत वस्तुएँ निःशुल्क उपलब्ध हैं यह सोच हम कृतज्ञता से भर उठे।

विश्राम के कालांश के बाद प्राथमिक समूह के बच्चों ने वर्तनी और संख्या पर काम किया। इस दौरान विभिन्न समितियों ने सुबह जो काम प्रारम्भ किए थे उन्हें निपटाया।

दिन समाप्त हुआ तो क्लब बैठक बुलाई गई। मार्था सभापति रही। उसने सबसे पहले संविधान समिति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। समिति मौजूदा संविधान से संतुष्ट है, परन्तु एक संशोधन चाहती है। समिति सदस्यों का मानना था कि स्कूल के कोष में जो राशि है उसे कैसे खर्चा जाए यह समूह को तय करना चाहिए। उसने संशोधित संविधान पढ़ कर सुनाया जिसका सदन ने अनुमोदन किया।

हेलेन ने रख-रखाव समिति का प्रतिवेदन रखा। इस समिति के सदस्यों ने तय किया था हरेक काम का विस्तृत वर्णन कार्डों पर लिखा जाए ताकि सबको पता हो कि उसके तहत क्या-क्या करना है। जैसे:

झाड़ना (1)

- समूचे कमरे को झाड़ना
- दरवाज़ों को झाड़ना
- पायों को झाड़ना
- चूल्हे का झाड़ना



- दोनों छोटी अल्मारियों को झाड़ना
- यह सब सुबह स्कूल से पहले करना है।

## झाड़ना (2)

- मेज़-कुर्सियों को झाड़ना
- काम की बड़ी मेज़ को झाड़ना
- पियानों को झाड़ना
- पुस्तकालय की मेज़ कुर्सी झाड़ना
- यह सब सुबह स्कूल से पहले करना है।

### पुस्तकालय प्राभारी

- सुबह पुस्तकालय को झाड़ना
- काम में आ रही किताबों के कार्ड डब्बे में रखना
- किताब लौटने पर कार्ड पर लिखे नाम को काटना और कार्ड पुस्तक में रख उसे अल्मारी में वापस रख देना।
- सभी किताबों को यथा-स्थान रखना
- घर ले जाने वाली पुस्तकों लिए दिन के अंत में समय तय करना ताकि लिखते-पढ़ने के बाद बच्चे उन्हें घर ले जा सकें।
- नई पुस्तकें आने पर उनके कार्ड बनाना

अगर उपरोक्त व्यवस्था हो तो जिसकी भी बारी आए उसे पता होगा कि क्या-क्या काम होते हैं। समूह ने समिति को अनुमति दी कि वह उपरोक्त कार्ड बना डाले।

एल्बर्ट की समिति चर्चा के बाद उस नतीजे पर पहुंची थी कि क्लब की बैठकें ज़रूरी है और उन्हें गंभीरता से लेना चाहिए। अध्यक्ष का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। ऐसे ही छात्र या छात्रा को अध्यक्ष बनाना चाहिए जिसने पिछले अध्यक्षों को पूरा सहयोग दिया हो। समिति को यह भी लगा कि वे स्कूली व्यवस्था की पूरी ज़िम्मेदारियाँ तब बेहतर समझें और सीखेंगे, जब मैं उनमें कोई हिस्सा न लूं। वे क्लब की समूची व्यवस्था स्वयं चलाने की कोशिश करना चाहते हैं और केवल आवश्यकता पड़ने पर ही मेरी मदद लेना चाहते हैं। इस प्रस्ताव पर मतदान हुआ और प्रस्ताव पारित हो गया।

अगला काम था नए पदाधिकारियों का चुनाव। वॉरेन को अध्यक्ष, हेलेन को उपाध्यक्ष, एडवर्ड को सचिव व एन्ड्रू को कोषाध्यक्ष चुना गया। सदस्यों ने तब यह निर्णय भी लिया कि अल्मारियों के परदे, खेलघर और

मेज़-कुर्सियों को रंगने के लिए रंग, दुनिया का नक्शा बनाने के लिए मोमजामा और पुस्तकालय की मेज़ बनाने के लिए लकड़ी पर कुछ राशि खर्ची जाए। शाम घर लौटते समय मैं रास्ते भर गुनगुनाती रही। नया साल अद्भुत होने वाला है।

### **गुरुवार, 7 सितम्बर**

आज का दिन कल से भी अधिक सहजता से बीता और शाला का वातावरण खुशनुमा रहा। आर्थर मूड़ी का आनंद छलकता रहा। वह अपनी मेज़ पर बैठा चमचमाते नए जूतों में, अपना चित्र बना रहा था और बुदबुदाता जा रहा था “मुझे यह स्कूल अच्छा लग रहा है। मुझे इस स्कूल से प्यार है।”

हर साल नए सत्र के पहले माह हम कुछ समय, सीने, रंगने, मरम्मत करने में बिताते हैं ताकि स्कूल और मैदान का रखरखाव हो सके। आज हमने इसी काम की शुरुआत की। हमें अपने मैदान की चिंता अभी भी है, क्योंकि पिछले साल जिस परियोजना के तहत उसे सुधारा जाना था वह परियोजना वैली व्यू से हटा ली गई थी।

### **शुक्रवार, 8 सितम्बर**

आज तो सबको यों लगा मानो हम छुट्टियों के लिए भी स्कूल से दूर हुए ही न हों। जैसे ही बच्चे शाला पहुंचे, सभी कल शुरू की गई गतिविधियों में पुनः जुट गए। सफाई करने का समय आया ही था कि कोई मेहमान आ पहुंचा। मैं उसे लेकर व्यस्त थी, इधर वॉरेन और हेलेन ने सफाई करवा डाली, समूह के लिए खेल की योजना बनाई, खेल शुरू करवाए और समय समाप्त होने पर पढ़ाई-लिखाई के काम भी शुरू करवा डाले। बच्चों ने आगामी बीस मिनट तक अपना काम शांति से किया और मार्था ने पूरे आत्मविश्वास के साथ प्राथमिक समूह के साथ पठन कार्य शुरू किया। पिछले साल की तुलना में इस नए सत्र के तीसरे दिन के लिए यह प्रगति आश्चर्यजनक लगी।

इस सबका काफी श्रेय श्रीमती मान को जाता है। वे गर्मी की छुट्टियों में इच्छुक लड़कों को इकट्ठा कर तैरने ले जाती रहीं। हिल बच्चों को गर्मी बिताने आने वाले परिवारों में से एक के बच्चों में अच्छे दोस्त मिले। श्री प्रिन्लैक ने नहर रोक कर पानी भर लिया ताकि उनके बच्चों को तैरने की जगह मिले। एक और बात है जो इसमें महत्वपूर्ण है। मैंने हमारे चार बड़े लड़कों के आत्म सम्मान के बढ़ाने में काफी मेहनत लगाई है। उनके काम में इस कारण क्रमशः काफी सुधार हुआ है। पिछले बसंत तो वे इतने उत्साहित हुए कि अगले साल हाई स्कूल जाने की बात उन्हें असम्भव नहीं लग रही है। इस साल वे लगातार ऐसे सवाल करते रहे: “क्या आप कुछ लेखन

अभ्यास नहीं देंगी ताकि हमारी लिखावट सुधरे?” “क्या आप हमें वर्तनी के अभ्यास के लिए कुछ अतिरिक्त समय देंगी?” “हमें पढ़ाई करने के बेहतर तरीकों के बारे में बताइये ना?” ऐसे में क्या आश्चर्य कि वे काम शुरू करने की पूरी तरह से तैयार हैं।

### **बुधवार, 13 सितम्बर**

नन्हे बच्चे जब चित्रकारी में व्यस्त होते हैं तब एन्ड्रू उन पर नज़र रखता है। उन्हें साथ देखना मुझे सच में अच्छा लगता है। वह उनके कपाल पर लगे रंग के धब्बे पोंछता है, उनसे धीमे-कोमल स्वर में बात करता है, उन्हें अपने कपड़ों का ख्याल रखने का कहता है। वह उनके एप्रन बांधता है और उतारने के बाद उन्हें तह करके रखना सिखाता है।

हेलेन और एलिस नन्ही लड़कियों को सीना, सुई में खुद धागा पिरोना, सिखा रही हैं। वर्ना तो एक नन्ही माँ ही बन गई, वह पढ़ाती है, सलाह देती है, उनकी रक्षा करती है।

काउन्टी पुस्तकालय के प्रभारी तब आए, जब हम गा रहे थे। जब बड़े बच्चे अपनी किताबें चुनने लगे उस वक्त हेलेन और मार्था ने नन्हों को व्यस्त रखने के लिए अन्ताकक्षरी खिलवाई। बड़े बच्चे अपनी-अपनी किताबें चुनने के बाद, कोई छायादार कोना खोज अपनी दुनिया में खो गए। यह पूरा दृश्य इतना शांत व सौम्य था कि उसे छेड़ना मुझे अच्छा नहीं लगा। कला का पाठ मैंने कल के लिए मुलतवी कर दिया।

### **शुक्रवार, 15 सितम्बर**

चूंकि बच्चे ताज़ा घटनाओं में बेहद ऊर्चि ले रहे हैं मुझे लगा कि उचित होगा अगर मैं सामाजिक अध्ययन के कालांशों में उन्हें यह सिखाऊँ कि जो पढ़ा या सुना जाए उसका मूल्यांकन कैसे किया जाता है। वे जो कुछ पढ़ते हैं या रेडियो पर सुनते हैं, उस सबको सच मान बैठते हैं। आज काफी देर तक पोलिश कॉरिडॉर की समस्या पर बात हुई।

आज की बड़ी घटना थी नन्हों के खेलने के लिए रेत का डब्बा तैयार करना। बड़े लड़कों ने खेलघर के पास कल गद्दा तैयार कर उसमें एक बड़ा खोका लगा दिया था। आज उसमें वह रेत भर दी गई जो हम समुद्र तट के उस भ्रमण के समय लेते आए थे, जब नन्हे बच्चे साथ नहीं चले थे। नन्हे बेसब्री से रेत में खेलने की अपनी बारी का इंतजार करते रहे, क्योंकि हमारा सैंडबाक्स इतना बड़ा नहीं है कि सब एक साथ खेल सकें।

### **सोमवार, 18 सितम्बर**

खेलघर का रंग आज पूरी तरह सूख चुका है। प्राथमिक समूह के

बच्चों ने आज उसे सलीके से सजाया और खुशी-खुशी खेले। जिस समय शारीरिक शिक्षा का कालांश शुरू हुआ उन्होंने अपने अलाव में “केक” पकने रख दिया था। क्योंकि उसे जलने नहीं छोड़ा जा सकता था, नन्हे वहीं खेलते रहे। अपने नाटकीय खेलों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। उनका शब्द ज्ञान बढ़ा है, वे आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बने हैं और उनकी कल्पनाशीलता में इज़ाफा हुआ है। उन्हें झिझक की दीवारें बनाने का मौका ही नहीं मिला है। सच हमारे खेलघर का मूल्य उसकी वास्तविक लागत से कई गुना है। समूह की यूरोप की स्थिति में रुचि है। हम स्कूल प्रारम्भ होने से पहले हर दिन रेडियो पर खबरें सुनते हैं और तब दोपहर के कालांश पर सुने हुए पर चर्चा करते हैं।

### **मंगलवार, 19 सितम्बर**

आदतें बनने में लम्बा समय लगता है और प्रतीत यह होता है कि वे पक्की हुई हैं या नहीं इसकी सुनिश्चितता भी नहीं होती। ज़ाहिर है हमें लगातार जाँचते रहना पड़ता है। छेड़छोड़ करने और समय बर्बाद करने की कुछ वृत्तियां नज़र आने लगी हैं। ये हद से आगे बढ़ें उसके पहले ही विशेषाधिकारों पर लगाम कसनी होगी। आज मज़ाक ही मज़ाक में पर्ल ने वर्ना का गणित का पन्ना फाड़ डाला जबकि वर्ना ने उसे बड़ी सावधारी से सुंदर अक्षरों में लिखा था। पर्ल ने सोचा कि वर्ना को अपना काम फिर से करते देखना एक भारी मज़ाक था। यह ओछी-वृत्ति पर्ल में कभी-कभार सिर उठाती रहती है।

आज हेलेन अपनी पुरानी आदत पर लौट आई। दूसरों के साथ हुए हादसों का उसने इतना सुख लिया कि सब घबरा उठे। दोपहर को खेल के दौरान थॉमस ने हेलेन की ओर गेंद फेंकी, पर वह उसे पकड़ न पाई। थॉमस ने इसे बार-बार रेखांकित किया “तुम तो खेल में उस्ताद हो, फिर क्यों नहीं पकड़ सकी?” इस पर हेलेन ने गेंद पलटकर थॉमस की ओर कुछ यों फेंकी कि अगर वह झुका न होता तो उसे ज़ोर से लगती। थॉमस बिना नाराज़ हुए हंसा और बोला “अरे भाई, मार डालने की तो ज़रूरत नहीं है।” हेलेन यह बड़बड़ाती गई कि वह, उसके दांत तोड़ देगी। दूसरे बच्चों ने खेल जारी रखा और मुझे लगा कि बात खत्म हो गई है और सब झगड़ा भूल चुके हैं। पर दोपहर को जब मैं छोटे बच्चों के साथ काम कर रही थी और बड़े खुद बाहर पढ़ रहे थे तो हेलेन ने थॉमस से सच में झगड़ा किया। मुझे कुछ पता चलता इसके पहले तो वह घर को निकल गई। किसी बच्चे ने बीच में हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि उनका कहना था “कि अगर उसका मिजाज इतना गर्मा रहा है, तो वह घर में ही ठीक है।” मैंने थॉमस को बुलाया और बाहर पढ़ाई करने का विशेषाधिकार उस सप्ताह के लिए वापस ले लिया। शेष बच्चों का मिजाज़

सामान्य था। उन्होंने मुझे समूचे घटनाक्रम का संतुलित ब्यौरा दिया, उनके बयानों में साम्य था। बच्चों की राय थी। कि “दोनों गर्म मिजाज के हैं और खूब शान बघारते हैं।” अब तक का शांत वातावरण गड़बड़ा गया।

हम लोग हर वर्ष क्रिसमस के समय विभिन्न देशों में क्रिसमस त्यौहार की नाट्य प्रस्तुति करते रहे हैं जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैण्ड। इस साल श्रीमती रैमसे ने वादा किया है कि वे हमें क्रिसमस कथा के रूसी रूप को प्रस्तुत करने में मदद करेंगी। आज उन्होंने वह कथा मुझे सुनाई। कथा सुंदर है। उसे नाटक में रूपान्तरित करने से समूह के सभी बच्चों को उसमें भाग लेने का मौका मिलेगा, खासकर बड़े लड़कों को। कथा में नाटकीय गुण हैं, पृष्ठभूमि के लिये सुंदर रूसी दृश्य बनाने के अवसर मिलेंगे और हम रूसी क्रिसमस संगीत को भी पिरो सकेंगे।

### **बुधवार, 20 सितम्बर**

आज का दिन कल के विपरीत रहा। मैं जब प्राथमिक समूह के नन्हों को प्रकृति अध्ययन के लिए घुमाने ले गई तो वॉरेन ने स्कूल की ज़िम्मेदारी सम्भाली। बच्चों ने कल की घटना के बावजूद उन पर भरोसा जताते देख राहत की सांस ली। हेलेन और थॉमस दोनों ने वादा किया है कि वे स्वयं को काबू में रखेंगे।

भ्रमण के दौरान रिचर्ड को एक पक्षी मिला। हमें उसे ‘बोलते’ सुनने और उसके पंखों की गुदगुदी को महसूस करने में बड़ा मज़ा आया। रिचर्ड और क्लैरेंस जो पहले बड़े बेजान से थे, अब कुछ जीवन्त लगने लगे हैं। इरीन और सैली के साथ खेलना उनके लिए अच्छा रहा है। फ्लोरेन्स और रिचर्ड रास्ते भर समूह का ध्यान उन खूबसूरत वस्तुओं की ओर आकर्षित करते रहे जो उन्हें नज़र आईं: एक नन्हा मेपल वृक्ष का लाल पौधा जो चमकदार हरी काई के बीचों-बीच झांक रहा था। वे इसका वर्णन भी करते जा रहे थे। लौटकर हमने एक ‘टेरेरियम’ यानि ज़मीन पर उगने वाली वस्तुओं को पारदर्शी कांच से बनी शीशी में प्रदर्शित किया। उसे सील बन्द करते ही बच्चों ने जानना चाहा कि उसे कैसे सींचेंगे। मैंने कहा कि हम कल तक रुकेंगे और शायद तब वे खुद ही मुझे बता सकेंगे। पर हमें ज्यादा देर रुकना ही नहीं पड़ा दोपहर को शीशी के ऊपरी भाग में कुछ देर में ओस की जमावट नज़र आने लगी। रिचर्ड बोला “मुझे पता चल गया। अंदर खुद-ब-खुद पानी बरसेगा।”

कहानी कहने के कालांश में प्राथमिक समूह के बीच जाकर मैंने घोषणा की, “मुझे एक कहानी पता है।” वे चीखे “तो हमें सुनाइए।” सो मैंने उन्हें चूहे की और सॉसेज (संसाधित मांस) कहानी सुनाई। कहानी खत्म होने पर मैंने पूछा

अब बताओं कि कौन-कौन कहानी जानता है। सैली ने “तीन सूअरों” की कहानी खूब रस लेते हुए सुनाई और श्रोताओं को बांधे रखा। फ्लोरेंस ने भी “शेर और चूहा” वाली कथा बखूबी सुनाई। इरीन ने रूसी लोक-कथाओं वाली पुस्तक में पढ़ी एक रूसी कहानी सुनाई। इन बच्चों ने कहानी कहना बखूबी सीख लिया है।

### **गुरुवार, 21 सितम्बर**

आज तीन बजे काम बन्द कर हमने राष्ट्रपति रूज़वेल्ट को अमरीकी कांग्रेस के समक्ष “प्रतिरोध कानून” (एम्बार्गो एक्ट) पर वक्तव्य देते सुना। मुझे आशंका थी कि शायद भाषण बच्चों को बेहद कठिन लगे, पर वे ध्यान से सुनते रहे। डेनियल मेज़ पर रखी अपनी चीज़ों से खेलता रहा और एल्बर्ट ने फुसफुसा कर कुछ दूसरा करने की अनुमति चाही, क्योंकि उसकी खटर-पटर से उसे बात समझ नहीं आ रही थी। वॉरेन और हेलेन छुट्टी के बाद भी बैठे रहे ताकि पूरा भाषण सुन सकें। इस दौरान नन्हों ने खेलघर में खेलने की अपनी-अपनी कहानियाँ लिख डालीं। प्राथमिक समूह के बड़े बच्चों ने बड़ी अच्छी मौलिक कहानियाँ लिख डालीं हैं। एरिक को अब भी कुछ दिक्कत होती है। इरीनी एलिज़ावेथ और फ्लोरेंस नौ-दस वाक्यों की कहानियाँ लिख डालते हैं।

### **शुक्रवार, 29 सितम्बर**

यह व्यस्त और फलदाई माह रहा है। मैं सभी बच्चों के घर जा सकी हूँ और अभ्यास के कालांश में प्रत्येक बड़े बच्चे से व्यक्तिगत बातचीत कर पाई हूँ। बच्चों और उनके माता-पिता की सहयोग की वृत्ति पर मैंने खासतौर से गौर किया है। बच्चों ने अपनी कॉपियों के विभिन्न भागों को निशान-पट्टी लगा अलग-अलग दर्शाया है। फिलहाल उनकी कॉपियों में निम्नोक्त भाग हैं।

1. जो काम मुझे करने हैं
2. मेरी खास आवश्यकताएँ
  - (क) लेखन में मेरी गलतियाँ
  - (ख) बोलने में मेरी गलतियाँ
  - (ग) मेरी वर्तनी की भूलें
  - (घ) मेरी गणित सम्बन्धी समस्याएँ
  - (च) मेरी पठन सम्बन्धी समस्याएँ
  - (छ) मुझे जो स्वस्थ आदतें डालनी चाहिए
  - (ज) स्वास्थ्य सम्बन्धी जिन कमियों को मुझे सुधारना है
  - (झ) सफाई की दैनिक सूची

(ट) मैं इस वर्ष में कैसे सुधार लाना चाहती/चाहता हूँ

### 3 मेरी उपलब्धियाँ

- (क) मैंने जो पुस्तकें पढ़ीं
- (ख) कविताएँ जो मुझे पसन्द हैं
- (ग) मैंने जो कविताएँ और कहानियाँ लिखीं।
- (घ) मैंने जो रिपोर्टें लिखीं
- (च) जिन समितियों में मैंने सेवाएँ दीं
- (छ) जिन पदों पर मैं रही/रहा
- (ज) मैंने जो चीज़ें बनाईं
- (झ) जो काम मैं खुद कर पायी/ पाया
- (ढ) मैं जो करना चाहती/चाहता हूँ

4 सामाजिक अध्ययन

5 विज्ञान

6 स्वास्थ्य

7 ताज़ा घटनाएँ

8 4-एच क्लब के काम

हर नया वर्ष हमें जीवन जीने के एक अधिक ऊंची पायदान पर ले जाता है। इस वर्ष जितने भी मेहमान आए उन्होंने शाला कक्ष और बच्चों की साफ-सफाई पर टिप्पणी अवश्य की। बच्चों में एक दूसरे के प्रति और अपने परिवारों के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है। थॉमस और उसकी सौतेली माँ के बीच रिश्ते सुधरे हैं। हेलेन की बहनों को उसकी खूबियाँ नज़र आने लगी हैं। शायद हेलेन अब खुद भी यह सीख ले कि हर बार अपनी बात को बलपूर्वक रेखांकित करने की ज़रूरत नहीं है। बच्चों में सफाई जैसे कामों को आपस में बांट लेने की, स्वशासन को चलाने के लिए आपसी तालमेल व समझौते करने की वृत्ति नज़र आती है। साथ ही उनमें मूल्यों का सम्मान भी जग रहा है जिसे गरीब बच्चों के प्रति उनके नज़रिए, में साफ देखा जा सकता है।

बच्चों को लोक-कथाओं, गीत-संगीत व नृत्य को सीखने जानने के तमाम अवसर मिले हैं, जो प्रत्येक बालक की विरासत का हिस्सा होते हैं। उन्हें कहानियाँ सुनाने, उन्हें नाटकों के रूप में प्रस्तुत करने के ऐसे अवसर मिले हैं जिससे उनकी झिझक खुली है और भाषा पर उनकी पकड़ गहराई

है। चित्रकला, मिट्टी से खिलौने बनाना, स्कैच बनाना, कविताएँ-कहानियाँ लिखना जैसे माध्यमों का उपयोग भी उन्होंने किया है। उनका लेखन ईमानदार बना है और अब वे जो जानते या महसूस करते हैं उसे बखूबी लिख सकते हैं। हमें अपना पुस्तकालय का कालांश अच्छा लगता है जिसमें हम एक-दूसरे को उन किताबों के बारे में अनौपचारिक तरीके से बताते हैं, जिन्हें हम उस वक्त पढ़ रहे होते हैं। पुस्तकों को चुनने में वे उच्च कोटि की अभिरुचि दर्शा रहे हैं। इस पर पुस्तकालय की लाइब्रेयिन ने भी पिछली बार टिप्पणी की थी।

दुनिया और हमारे साथ दुनिया के रिश्ते में उनकी रुचि बढ़ रही है। पर साथ में इस माह हमने समस्याओं का भी सामना किया। पर मैंने उन्हें एक नई दृष्टि से देखना सीखा है। मैंने बच्चों के साथ जितने भी वर्ष बिताए हैं, मैंने यह पाया है कि हमेशा नई-नई समस्याएँ सर उठाती हैं। शायद ऐसी समस्यायें हमेशा ही तब तक आती रहेंगी जब तक लोग साथ-साथ रहेंगे। जिएंगे। हमें इन समस्याओं से परेशान नहीं होना चाहिए, उन्हें असुविधाजनक नहीं मानना चाहिए, बल्कि उनका सामना कर उनके समाधान तलाशने चाहिए। इस दृष्टिकोण को अपनाने पर हम बच्चों को टोकना, उन्हें दोष देना बन्द करेंगे और उनके साथ मिलजुलकर मूल कारण तलाशेंगे और तब समाधान की दिशा में काम करेंगे। बच्चे भी इस बीच यह पहचानने लगे हैं कि जब कभी मुझे प्रत्यक्ष नियंत्रण करना होता है तो मैं ऐसा सिर्फ अपनी सत्ता या धौंस जमाने के लिये नहीं करती, बल्कि समूचे समूह के हित में करती हूँ। अतः वे भी सहयोग करते हैं।

### **सोमवार, 2 अक्टूबर**

आज दोपहर राजकीय कृषि प्रयोग स्टेशन के उद्यान विशेषज्ञ श्री निसले माता-पिता, कुछ नौजवानों और स्कूली बच्चों को सब्जियों के भण्डारण के बारे में बताने आए। इस सर्द-नमी भरे दिन हम हिल परिवार के घर, उनके अलाव के सामने घण्टे भर से भी ज्यादा बैठे और सब्जियों को रसोई घर या भूतल भण्डार में खोखों व टिनों में सहेज कर रखने के गुर सीखते रहे। इसके बाद हम बाहर गए और निसले साहब ने एक सही कोना खुले गढ़दे के लिए चुना। उन्होंने हमें समझाया कि उसे कैसे खोदा जाए और सर्दी भर उसमें सब्जियाँ कैसे ताज़ी रखी जाएँ। कोल परिवार, मैथ्यू और मान परिवार हाल ही में शहर से आकर खेती करने लगे हैं, सो उन्होंने सीखने की उत्सुकता में तमाम सवाल पूछे। बच्चों को भी प्रश्न पूछने थे सो उन्होंने भी चर्चा में योगदान किया। बच्चों और वयस्कों के उत्सुक-जिज्ञासू चेहरे देख, उन्हें साथ-साथ सीखता देख मुझे बेहद रोमांच हुआ। एक ऐसे समूह का हिस्सा बनना मुझे सच में अच्छा लगा, जो अपने सदस्यों के बेहतर जीवन की योजना



बनाने की दिशा में एक छोटी सी पहल कर रहा था।

### गुरुवार, 5 अक्टूबर

आज सुबह जब मैं छोटे बच्चों को प्रकृति अध्ययन के वास्ते बाहर ले गई तो बड़े बच्चों ने चालीस मिनट तक स्वयं काम किया। जब शारीरिक शिक्षा के कालांश का समय आया तो क्लब के अध्यक्ष एन्ड्रू ने कुछ समय खेल योजना बनाने में बिताया। इस बीच कुछ बच्चे अपने खाने में से फल निकाल उन्हें कुतरते रहे। तब एन्ड्रू ने उन्हें खेलने की छूट दी और स्वयं खेल की निगहबानी की। और खेल समय खत्म होने पर सबको काम करने वापस ले आया। इस बीच सुश्री एवर्ट आ पहुंची। एन्ड्रू ने उन्हें हमारे अखबार का ताज़ा अंक पढ़ने को पकड़ाया और उन्हें कहा कि आराम से बैठें और मैं कुछ ही देर में लौट आऊंगी। अखबार की आड़ से मिस एवर्ट कक्षा में चल रही गतिविधियाँ देखती रहीं। हमारी भरसक कोशिशों के बावजूद जब भी गड़बड़ होती है तो उसके लिए मैं और मिस एवर्ट एक जुमले का प्रयोग करते हैं। हम कहते हैं “लोकतंत्र खड़खड़ाया।” लौटने पर मुझे अपनी मेज़ पर उनकी लिखी एक पक्ति मिली। लिखा था “आज लोकतंत्र खड़खड़ाया ही नहीं।”

लोकतांत्रिक नियंत्रण केवल उसी स्थिति में आ सकता है जिसमें बच्चों को अपनी समस्याओं के समाधान स्वयं खोजने की आज़ादी हो। बाह्य कृत्यों को करने की आजादी को अपने आप में एक लक्ष्य न बनने दिया जाए क्योंकि तब यह आज़ादी न रह, व्यक्तिगत मनमर्ज़ी की गुलामी में तब्दील हो जाती है। पर जिस तरह का स्व-अनुशासन ये बच्चे दर्शा रहे हैं उसने उन्हें बढ़ने-विकसित होने के लिए आज़ाद कर दिया है।

लोकतंत्र दूसरे अर्थों में भी नहीं खड़खड़ा रहा। इस साल बच्चे अपनी क्लब बैठकें खुद संचालित कर रहे हैं। पिछले सालों के दौरान मुझे हमेशा सचिव को याद दिलाना पड़ता था कि वह बैठक की गतिविधि को लिख डाले। अब समूह के दबाव के कारण ये सूचनाएँ नियमित रूप से दर्ज कर दी जाती हैं। आज की बैठक में चर्चा के वास्ते तमाम मसले हैं। सबसे पहले वे अपने कोष का हिसाब-किताब देख निर्णय लेते हैं कि नए परदे खरीदने के पहले वे कुछ समय इंतजार करेंगे। वे दोपहर के खेल की चर्चा भी करते हैं और तय करते हैं कि खेल के दौरान जो कोई दूसरों का मज़ा खराब करे उसे समूह से निकलने को कहा जाएगा। अगर वह बाहर निकलने से इन्कार कर दे या दूसरों को सताता रहे तो, कुछ बच्चों की समिति सलाह के लिए मेरे पास आएगी। बैठक के अंत में किसी को याद आया कि नये खेलों और नई टोलियों का चयन अब तक नहीं हुआ है। यह गौर करना बड़ा रोचक था। पिछले सालों में नई टोलियाँ और नए खेल चुनना ही सबसे महत्वपूर्ण मसला हुआ करता था जिसे सबसे पहले उठाया जाता था। तब दूसरे मुद्दे को घसीटा

जाता था, अक्सर सिर्फ इसलिए ताकि चर्चा करने के लिए कोई मसला तो हो। क्रमशः बच्चे उन मसलों पर भी बात करने लगे हैं जिनके बारे में वे सच में कुछ करना चाहते थे। और अब हाल यह है कि वे महत्वपूर्ण मसलों पर पहले बात करते हैं और सामान्य मसलों को अंत के लिए छोड़ देते हैं।

घर लौटते समय मैं इस सब पर सोचती रही। आजकल लोकतंत्र संरक्षण पर बड़ी बातें सुनाई पड़ती हैं। इसका मतलब क्या है और हम शालाओं में इस दिशा में क्या और कैसे कर सकते हैं? मुझे लगता है कि लोकतंत्र के फायदे और उसकी जिम्मेदारियों के प्रति पूर्णतः सचेत होना हो, लोकतंत्र की चाहत जगानी हो, तो बच्चों को शाला में लोकतांत्रिक जीवन जीने का अभ्यास करने देना होगा। पर सिर्फ इतना करना भर नाकाफी होगा। क्योंकि शाला का जीवन समूचे जीवन का केवल एक हिस्सा मात्र है। सो हमें समुदाय के लोकतांत्रिक जीवन में भी उस स्तर की हिस्सेदारी करनी होगी जितनी बच्चों की परिपक्वता हो। परन्तु अगर हम केवल उपरोक्त दो अभ्यास ही करते रहे तो हम लोकतंत्र की संकीर्ण समझ तक ही पहुँच सकेंगे। आज हम एक जटिल व परस्पर निर्भर दुनिया में जी रहे हैं अतः बच्चों को स्वयं के दुनिया, देश व काल के संदर्भ में समझना होगा।

इन निष्कर्षों के संदर्भ में जब मैं पिछले तीन सालों के अपने अनुभव को देखती हूँ तो लगता है कि एक क्षेत्र बच्चों के अनुभव से छूटा रहा है। उनके मानस में विभिन्न युगों में मानव के क्रमिक विकास की कोई छवि नहीं है। उन्हें देश व काल के संदर्भ में अभिमुख करना ज़रूरी है।

स्कूल के प्रारंभिक सप्ताहों में सामाजिक अध्ययन के कालांश का उपयोग हमारी कक्षा को ठीक-ठाक करने में लगाना मुझे एक अच्छी नीति लगती है। इससे हमें जमने का समय मिलता है और सत्र के प्रारम्भ में आने वाली कठिनाइयों को भी हम दूर कर पाते हैं। साथ ही यह मुझे बालकों, उनकी रुचियों व आवश्यकताओं का अध्ययन करने का अवसर भी देता है। सामाजिक अध्ययन व अन्य विषयों के दौरान हमें शाला में जो कुछ करें उसे दरअसल उन समस्याओं से उपजना चाहिए जो बच्चों के रोजमर्रा के स्कूली जीवन के अनुभवों से निकलती हों। इस साल हमारी रुचि युद्ध में है। हम इतिहास में पीछे जाकर युद्ध के कुछ पक्षों को समझने की चेष्टा करते रहे हैं। ठीक उसी तरह जैसे हम ताज़ा घटनाओं को समझने के लिए इतिहास का उपयोग करते रहे हैं। उनके तमाम सवालों को सुनते समय मुझे बारबार लगता है कि मुझे उन प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो हमें अतीत में ले जाएँ ताकि बच्चे स्वयं को काल के संदर्भ में अभिमुख कर सकें।

**सोमवार, 16 अक्टूबर**

आज नन्हे बच्चे पतझड़ का अध्ययन करने सैर पर निकले। हम सड़क पर मुड़े ही थे कि वे कहने लगे कि सूरज की किरणें कैसे पत्तों को किस कदर चमका देती हैं। यह भी कि सूरज पत्तों का “खनन” करता है। रिचर्ड ने पूछा कि “आखिर पत्तियाँ पेड़ से अलग क्यों हो जाती हैं?” हम सड़क के किनारे बैठ गए और मैंने समझाने की कोशिश की कि पेड़ सर्दियों की तैयारी किस प्रकार करते हैं। हमने पेड़ों को गौर से देखा, देखा कि पत्ते जहाँ से झड़े उसके निशान कैसे ठीक हो जाते हैं। बच्चों ने कई ऐसे पेड़ों को पहचानना सीखा जिनसे वे पहले अपरिचित थे। इन बच्चों को सब कुछ सूँघना पंसद है। उन्होंने साल को सूँघा, ससाफरास की जड़ों को भी और उन्हें इनकी गंध इतनी अच्छी लगी कि वे जो नज़र आया उसे ही सूँघने लगे। जब भी वे सैर पर निकलते हैं अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। उनका ध्यान वैसे तो पेड़ों पर था पर उनकी नज़र बीजों पर भी पड़ी। शुक्रवार को जब हम अपनी प्रकृति अध्ययन की कॉपियों को तैयार कर रहे थे तो लगा था कि वे लगभग तैयार हैं। पर आज सैर से लौटने के बाद बच्चों को लगा कि उन्हें एक पन्ना रंगीन पत्तियों पर भी जोड़ना चाहिए। आर्थर बोला “मेरी कहानी का शीर्षक होगा. ‘ये हैं कुछ सुन्दर पत्तियां।’ उसने मुझसे कहा कि मैं शीर्षक बोर्ड पर लिख दूँ ताकि वह उसे लिखने का अभ्यास कर ले। इन नन्हों को लिखना सीखने में ज़रा भी ज़ोर नहीं आता। लिखने के पीछे उनका एक ठोस मकसद जो है।

### मंगलवार, 17 अक्टूबर

इस सप्ताह के ‘करेंट इवेन्ट्स’ के अंक में एक लेख था “हमारी आज़ाद प्रेस ने जन्मदिन मनाया।” अपनी चर्चा में हम लेख से भटक गए क्योंकि कई रोचक सवाल सामने आए:

1. अमरीका में पहली आज़ाद प्रेस कैसे और कब स्थापित हुई?
2. रेवरेन्ड (पादरी) ग्लौवर की प्रेस अमरीका में सेंसरशिप से क्यों नहीं बच सकी?
3. प्रेस को आज़ादी कैसे मिली?

हमने विस्तार से मौजूदा युद्ध में सेंसरशिप का अर्थ और उसके स्थान पर बात की। थॉमस ने सबको आगाह किया कि अगर किसी लेख या खबर में शेष सब सच भी लिखा गया हो पर कुछ बातें छोड़ दी जाएँ तो भी वास्तविकता की एक पूर्णतः भ्रामक छवि रची जा सकती है। तीसरे सवाल पर बातचीत करते समय हमने जाना कि संविधान के पहले संशोधन की घोषणा द्वारा प्रेस को आज़ादी मिली। तब तमाम दूसरे सवाल उठे। हमें संविधान की ज़रूरत क्यों पड़ी? 1791 के पहले हमारा संविधान क्यों नहीं था? क्रांति

युद्ध से अमरीका को आज़ादी क्यों कर मिली? अमरीका जैसा छोटा अदना देश इंग्लैण्ड जैसे विशाल व सशक्त साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई कैसे जीत सका?

आज एण्ड्रू हमें छोड़ गया। उसके पिता अंततः वह खेत खरीद सके जिसके लिए उन्होंने इतनी मशक्कत की थी। उसके समूह को अपने अध्यक्ष को खोने का दुख था और मैं उस घुंघराले बालों वाले लड़के के लिए तरह-तरह से अफसोस महसूस कर रही थी। उसे हमारे जैसे स्कूल में ही होना चाहिए जहां उसकी क्षमताओं की कद्र हो।

इस वर्ष मैं बच्चों को काउन्टी पुस्तकालय से वाकिफ करवाना चाहती हूँ। आज स्कूल के बाद मैं प्रथम समूह के बच्चों को काउन्टी मुख्यालय ले गई ताकि वे शेष बच्चों के लिए किताबें ला सकें। फ्लॉरेन्स, एलिज़ाबेथ, एलिस और मे को बड़ा अच्छा लगा। उनकी टिप्पणियां थीं, “एल्बर्ट को यह अच्छी लगेगी,” “नन्हों के लिए यह चित्रों वाली किताब सही होगी।” “इस किताब के शब्द एलेक्स के लिए आसान होंगे।” “बड़े बच्चे इससे संविधान के बारे में पढ़ सकेंगे।”

लौटते समय सूरज ढल चला था। बादलों का रंग लगातार बदल रहा था और पहाड़ लाल व बैजनी नज़र आने लगे थे। हमने इस नज़ारे के शब्द चित्र बनाए। हम सबका समय अच्छा गुज़रा। बच्चों की बातें मानो उफ रही थीं, जबकि साल भर पहले तक यही समूह बिल्कुल मौन रहता था। थॉमस आज मदद देने की भावना से ओतप्रोत था। उसका अंह सच में बुलंद है। आजकल वह हरेक चीज़ को अपने से जोड़ कर ही सोचता है। उसकी अपनी ताज़ा छवि पूरी लापरवाही की है, सो वह बाल तक नहीं झाड़ता। पर जब वह मदद करना चाहता है तब उसके बारे में तमाम बातें पता चलती हैं क्योंकि तब वह बातचीत करता है, अमूमन खुद के बारे में। इस सबके बावजूद उसकी हर नई मुद्रा के पीछे छिपे एक संवेदनशील और बुद्धिमान लड़के की भी झलक आप देख सकते हैं, जो सुंदर होने के साथ कुशाग्र भी है। आप उसे पसंद करने पर मजबूर होते हैं।

### **बुधवार, 18 अक्टूबर**

हमने सेंसरशिप पर चर्चा जारी रखी। करेंट इवेन्ट्स के ताज़ा अंक में एक फ्रेंच अखबार का चित्र छपा है जिसके पृष्ठ पर एक हिस्सा काला किया हुआ है। इस काले स्थान पर लिखा हुआ है “सेंसर”। मैंने बच्चों से सवाल किया कि क्या उन्होंने कभी कोई अमरीकी अखबार देखा है जिसमें काले किए हुए स्थान हों? किसी बच्चे ने ऐसा कभी नहीं देखा था। क्या इसका मतलब यह है कि हमारे अखबार सब कुछ छापते हैं? मैंने जानना चाहा। यों हम ‘प्रोपोगैण्डा’ (सरकारी प्रचार) पर चर्चा करने लगे, ‘तथ्य’ व ‘राय’ में

अंतर पर भी बातचीत हुई। वॉरेन ने चर्चा में काफी योगदान किया। उसने बताया कि अगर विभिन्न विषयों पर किसी अखबार का नज़रिया जानना हो तो संपादकीय पढ़े जा सकते हैं और उनके सन्दर्भ में लेखों को आंका जा सकता है। इस पर मैंने जानना चाहा कि बच्चों के घरों में कौन-कौन से अखबार आते हैं और वे उन्हें कैसे पढ़ते हैं। हमें पता चला कि:

8 परिवारों के पास सप्ताह में एक बार न्यू यॉर्क डेली न्यूज़ आता है।

1 परिवार के पास इतवार को न्यू यॉर्क अमेरिकन आता है।

2 परिवार इतवार को न्यू यॉर्क टाइम्स मंगवाते हैं।

2 परिवार इतवार को न्यू यॉर्क हैरेल्ड ट्रिब्यून लेते हैं।

1 परिवार के पास नेवार्क सन्डे कॉल आता है।

सभी परिवार स्थानीय सप्ताहिक अखबार भी लेते हैं।

वॉरेन ने बताया कि वह सबसे पहले मुखपृष्ठ की सुर्खियां और दाहिनी ओर छपने वाला स्तम्भ देखता है। एल्बर्ट सबसे पहले “मज़ाक” और तब मुखपृष्ठ की खबरें पढ़ता है। समूह में दस बच्चे सबसे पहले मज़ाक पढ़ते हैं। पांच बच्चों ने बताया कि जो अखबार में सिर्फ कार्टून पढ़ते हैं और जब तक स्कूल के लिए अखबार से कुछ देखने-पढ़ने की मजबूरी ना हो तो कुछ भी नहीं पढ़ते।

क्योंकि अब हमारा अध्ययन महत्वपूर्ण दिशा में बढ़ चला है हमने दो सचिव चुने जो हमारी चर्चाओं को दर्ज कर सकें। वे दो अलग-अलग कॉपियों में नोट लिखेंगे ताकि भविष्य में उनसे मदद ली जा सके। हर दिन दो नए बच्चे सचिव की भूमिका निभाएंगे।

### **गुरुवार, 19 अक्टूबर**

आज मैं सात अलग-अलग अखबार लाई, जो 18 अक्टूबर के थे। हमने बोर्ड पर एक सूची बनाई जिसमें यह दर्ज किया गया कि किस अखबार ने किस खबर को सबसे अधिक महत्व दिया। जल्दी ही साफ हो गया कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है पर अखबारों में सहमति नहीं थी। यह भी साफ था कि तथ्यों पर भी मत अलग-अलग थे। एल्बर्ट ने जानना चाहा “हर अखबार में तथ्य अलग-अलग क्यों हैं?” सचिवों ने सवाल दर्ज कर लिया क्योंकि इसका जवाब हम अब तक तलाश नहीं सके थे। बच्चों ने इस बात पर गौर किया कि सबसे महत्वपूर्ण खबर को दाहिनी ओर के स्तम्भ में छापा जाता है।

### **शुक्रवार, 20 अक्टूबर**

जब हम महत्व के तौर पर दूसरी बड़ी खबर की सूची बना चुके तो बच्चों ने कुछ बातों पर गौर किया। ये थीं: कौन सी खबर सबसे महत्वपूर्ण है

इस पर अखबार असहमत होते हैं। एक अखबार में जिस खबर को सबसे महत्वपूर्ण बताया गया हो वह किसी दूसरे अखबार में दूसरा स्थान भी पा सकती है। स्थानीय खबरें महत्वपूर्ण होती हैं। युद्ध जो समूची दुनिया को प्रभावित करता है, स्थानीय खबरों से भी अधिक महत्वपूर्ण है। सभी अखबारों में युद्ध से जुड़ी खबरों को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया था। परन्तु न्यू यॉर्क के दो अखबारों व फिलेडेल्फिया के अखबारों में स्थानीय खबरों को दूसरा स्थान मिला था। थॉमस ने टिप्पणी कि “लगी शर्त, अगर युद्ध न हो रहा होता तो ये अखबार स्थानीय खबरों को ही सबसे महत्वपूर्ण स्थान देते, क्योंकि अधिकांश लोगों की रुचि उसी जगह में होती है जहां वे रहते हों।”

रिचर्ड हमारे अजायबघर के लिए ईट भट्टे कुछ ईटे लाया है। उनमें से एक गीली मिट्टी की थी, दूसरी धूप में सुखाई हुई और तीसरी जो पकाई जा चुकी थी। कल वह एक छोटा चूहा लाया था और उसने अपना सारा खाली वक्त उसके लिए एक पिंजड़ा बनाने में लगाया। स्कूल खत्म होने पर वह चूहे को पिंजड़े में डाल अपनी बांह के नीचे दाब, सम्भाल कर लेता गया ताकि शनि व इतवार को उसका ख्याल रख सके। छोटे बच्चों की अजायबघर में खूब रुचि है क्योंकि अब उनका भी अपना एक कोना है। वे काफी समय वहां चीजों को देखते बिताते हैं। कांच की शीशी में रखी स्टील की कतरने और चुम्बक उन्हें मोहते हैं। फ्लोरेंस और क्लैरेंस ने आज चुम्बक को कमरे की हरेक वस्तु पर लगा कर देखा। आर्थर को दस मिनट तक चर्खे को घूमता देखता रहा, जिसे पिछले साल बड़े लड़कों ने बनाया था। तब वह मेरे पास आया और मुझे विस्तार से समझाने लगा कि दरअसल वह काम कैसे करता है, मानो उसी ने चर्खे का अविष्कार किया हो।

आज थॉमस मेरे पास आया और बोला “मिस वेबर क्या आप हमारी क्लब बैठक में हमारे साथ बैठेंगी? हमें कुछ सलाह चाहिए।” बच्चे अध्यक्ष और सचिव के इर्दगिर्द एक अनौपचारिक घेरे में बैठे थे। वॉरेन मेरे लिए एक कुर्सी लाया और शिष्टता से मुझे बैठने को कहा और तब बड़े कामकाजी शैली में समझाया कि वे एक हैलोवीन पार्टी करना चाहते हैं जिसकी योजना बनाने में वे मेरी मदद चाहते थे। कार्यक्रम और नाश्ते की समितियां वे बना चुके थे। इन समितियों के अध्यक्ष के रूप में हेलेन व मार्था बैठक के बाद मेरे पास आईं और बोलीं कि मैं सोमवार को दोपहर का खाना उनके साथ खाऊँ और योजना बनाने में उनकी मदद करूँ। बच्चों को दोपहर के खाने के दौरान बातचीत करना बेहद पसंद आता है। उन्हें लगता है मानो वे वयस्क और व्यावसायिक हैं।

### **सोमवार, 23 अक्टूबर**

आज स्कूल जाते समय मैं धरती की खूबसूरती से सहम सी गई।

पहाड़ पार करने पर मैंने पाया कि छोटी वादी प्रकाश और रंगों में डूबी हैं। उधर आकाश काले बादलों से भरा घुमड़ रहा है। आकाश की छाया दूर पहाड़ियों का रंग बदल उन्हें गहरा नीला करे दे रही थी। घाटी पर पड़ने वाली रोशनी मेरे पीछे से फूट-फूट कर पड़ रही थी। मैं यह अनुभव बच्चों के साथ बांटना चाहती थी। मैंने बच्चों को जो कुछ देखा था बताया और सुझाया कि हम सब टहलने जाएँ और साथ-साथ दृश्य का आनंद लें। आज के लिए जो कार्यक्रम तय था उस पर चलना गुस्ताखी होती क्योंकि बाहर देखने-सीखने को इतना कुछ था, जो शायद सिर्फ आज ही तक रहने वाला था। चलते-चलते हम उस सब पर बातें करते रहे जो हमें दिख रहा था, दूर नज़र आती पहाड़ियों के रंगों की, उन पर पड़ती बादलों की छाया की सर्दियों में उगने वाले गेहूँ और जौ के चमकदार हरे खेतों की। आकाश में नज़र आ रहे नीले, स्लेटी और सफेद रंगों के अनंत रूप, विभिन्न पेड़ों के रंगों की, इस मौसम में पेड़ों में नज़र आते खास खुलापने की, नदी के गहराए हुए रंग की। आर्थर मेरे पास चल रहा था, मैंने जानना चाहा “तुम देख क्या रहे हो आर्थर?” “आप ठीक ही कर रही थीं मिस वेबर” उसने जवाब दिया “पहाड़ सच में नीले हैं।”

लौटने पर हम दसक मिनट सिर्फ बतियाते रहे। बातचीत ने ताज़गी भर दी। वॉरेन उन कुछ नज़ारों की ओर ध्यान बँटाना चाहता था, जो हमने पहले देखे थे। क्योंकि कई बच्चे ठीक यही करना चाहते थे सुबह का नियमित कार्यक्रम ताक पर रख दिया गया। हेलेने और मार्था ने चित्रकारी नहीं की, बल्कि सैर के समय जो रेखाचित्र बनाए थे उन्हें ही पूरा किया। मैं बच्चों को ठीक यही करने को प्रोत्साहित करती रही हूँ।

### **मंगलवार, 24 अक्टूबर**

बच्चों ने कल जो कुछ देखा था उस पर कुछ बेहद सुन्दर कविताएँ लिखीं। उनमें जो सबसे अच्छी हैं वे हमारे अखबार में छपेंगी। बच्चे आजकल इतना कुछ लिखते हैं कि हम अब उनमें से सबसे सुन्दर लेख, कविताएं चुन सकते हैं और अपना स्तर बढ़ा सकते हैं।

बच्चों को अपने द्वारा रचे गीत की प्रतियां इतनी अच्छी लगीं कि अब वे और गीत रचना चाहते हैं और उन्हें संकलित कर एक कितबिया बना क्रिसमस पर अपनी माताओं को भेंट करना चाहते हैं। इरीन एलिज़ाबेथ, फ्लोरेंस और सैली जिन कविताओं को याद कर रही हैं उनका एक संकलन वे अपनी आँओं के लिए बनाना चाहती हैं। नन्हों के कहानी वाले घंटे दौरान मैंने उन्हें “विवेकवान हान्स” और “बॉबी” की कहानियां सुनाईं। बाद में उन्होंने जानना चाहा कि “विवेकवान” का मतलब भला क्या होता है। जब

मैंने अर्थ समझाया तो सैली हंसने लगी। बोली बॉबी बड़ा समझदार था और विवेकवान हान्स कतई 'विवेकवान' नहीं था। सात वर्षीय सैली ने इन कहानियों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को बखूबी पकड़ लिया था।

### **गुरुवार, 2 नवम्बर**

बड़े बच्चे अखबारों के अध्ययन पर लौटकर खुश हुए। हम चंद रोज़ यह जानने भटकते रहे कि विश्व युद्ध में जर्मनी ने क्या खोया और हिटलर जैसा कोई इन्सान जर्मन कौम को क्योंकर गुमराह कर सका। आज हमने अखबार देखे और उनमें सम्पादकीय तलाशे। बच्चों ने मुझे बताया कि किन अखबारों ने किन-किन विषयों पर सम्पादकीय छापे थे और मैंने उनकी सूची बनाई। तक हरेक ने एक-एक सम्पादकीय और एक खबर चुनी ताकि वे उन्हें पढ़ें और उनमें अन्तर तलाश सकें।

### **सोमवार, 6 नवम्बर**

कल बच्चों को अखबार की सामग्री पढ़ने में इतनी तकलीफ हुई थी कि मैंने तय यह किया कि मैं ही उन्हें पढ़ कर सुना दूंगी। क्योंकि मकसद तो यही है ना कि वे एक सम्पादकीय और एक लेख में अन्तर समझ सकें। पर अगर पठन सामग्री बेहद कठिन हो तो वे अपना उद्देश्य ही भूल सकते हैं। मैंने न्यू यॉर्क टाइम्स में छपे रूस व तुर्की के बीच असफल रही प्रस्तावित सन्धि के बारे में लेख को पढ़ा। तब उसी विषय पर सम्पादकीय भी, तो दोनों की तर्ज से ही उनका अंतर साफ पता चला गया।

### **मंगलवार, 7 नवम्बर**

मैंने ईस्टॉन एक्सप्रेस में रक्तदान के विषय पर एक लेख पढ़ा और तब इसी विषय पर लिखे सम्पादकीय को भी। बच्चों ने तत्काल उनमें अन्तर को पकड़ लिया। वॉरेन ने सुझाया कि किसी एक घटना पर सभी अखबारों में छपी खबर पढ़ी जाए। बच्चे घटनाक्रम के वर्णन में अन्तर देख कौतुक से भर उठे। न्यू यॉर्क टाइम्स ने उसका सन्तुलित वर्णन किया था और खबर को पृष्ठ के बीच में छापा था। सूचना के सभी स्रोतों का उल्लेख था "नौसेना के अनुसार" या "जर्मन समाचार पत्र के अनुसार" इधर न्यू यॉर्क न्यूज ने इस खबर को सबसे बड़ी खबर मानते हुए मुखपृष्ठ पर मोटे-मोटे अक्षरों में छापा था। तीसरे पृष्ठ पर उस विषय में एक दूसरा लेख भी था जिसमें बताए गए स्रोत थे "एक चश्मदीद ने कहा..." या "माना यह जा रहा है..."। लेख की भाषा इतनी नाटकीय थी कि बच्चों को लगा मानो समूचा स्कॉटलैण्ड या तो लड़ रहा था, या आश्रय स्थलों में दुबके जा रहा था। जबकि टाइम्स में हवाई हमलों के बारे में एक ही पंक्ति थी और समाचार का शेष भाग का रिश्ता चेम्बरलिन की उसे रपट से था जो उसने ब्रितानी संसद में पेश की थी।



## बुधवार, नवम्बर 8

आज अन्य अखबारों में उसी घटना से सम्बन्धित समाचार को पढ़ा गया। उनमें नज़र आ रहा अंतर एक बार फिर से रेखांकित हुआ। बच्चों को तथ्यों और मतों के बीच अन्तर नज़र आने लगा है। न्यू यॉर्क जर्नल अमेरिकन में सम्बन्धित घटना पर कोई लेख नहीं था, पर संपादकीय ज़रूर था। सम्पादकीय में घटना के वर्णन से प्रारम्भ कर ब्रितानी नौसेना की कमज़ोरियों को रेखांकित किया गया था और सारा दोष रूज़वैल्ट पर थोपा गया था। थॉमस को इसमें कोई जुड़ाव नज़र नहीं आया सो उसने टिप्पणी की “लेखक रूज़वैल्ट को नापसंद करता है, है ना? लगता है वह घटना की आड़ में उस पर एक हमला ही कर रहा है।” तब हमने इस बात पर विचार किया कि कोई अच्छा अखबार अपने लेखों में क्या करने की कोशिश करता है। उसकी कोशिश यह रहती है कि सभी तथ्यों को सही-सही सामने रखा जाए जिससे लोग उसकी एक सच्ची छवि बना सकें। अखबार सूचनाओं के स्रोतों का उल्लेख करता है और भावनाओं के बदले तर्क पर बल देता है।

## शुक्रवार, 10 नवम्बर

बच्चों के किसी समूह को खुद अपनी देखभाल करते देखना कितना सन्तोष देता है ना। लगता है मेरे ये बच्चे अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से खुद को सिखा-पढ़ा रहे हैं। अपने इर्दगिर्द जो कुछ वे देखते या सुनते हैं उनके बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ रही है। मार्था सम्भवतः सबसे ज्यादा जिज्ञासू और सक्रिय है। वह अपना रोज़ की काम जल्दी खत्म कर लेती है और तब काफी शोध या प्रयोग करती है, खूब कविताएँ लिखती है और फिर भी नन्हों को कहानी सुनाने का समय निकाल लेती है। हाँ, ऐसा समय भी आता है जब वह बेवकूफी भरी हरकतें करती है और खिझाती हैं। पर तब हम उस समय तक उस पर कोई ध्यान नहीं देते जब तक वह फितूर खत्म न हो जाए। उसे धीरे-धीरे यह समझ आने लगा है कि जब वह सहयोग और योगदान करती है तभी लोग उस पर ज़्यादा ध्यान देते हैं।

एलिस और पर्ल में कलात्मक क्षमताएं हैं। दोनों ही इस दिशा में कुछ इस प्रकार बढ़ रही हैं जिसकी मुझे कोई सम्भावना पहले नहीं दिखती थी। जब तक किसी बालक में निहित सम्भावनाओं को उजागर करने, उन्हें विकसित करने के तमाम अवसर न उपलब्ध हों उनका पता भी नहीं चल पाता है। सभी प्रिन्लैक बच्चों में कुछ खासियत तो है। स्टैनली सुबह-सुबह कुछ शरमाता है, पर मुस्कराकर “मस्ते” कहता है। कुछ समय बाद वह कुछ खुलने लगता है और हरेक गतिविधि का आनन्द लेता है। एलिज़ाबेथ फ्लोरैन्स की अच्छी दोस्त है। फ्लोरैन्स कहती है “मुझे एलिज़ाबेथ पसन्द है, वह बड़ी अच्छी है।”

वाल्टर डैमरॉश आज फिर से ही रेडियो पर था और हमने उसका कार्यक्रम सुना। मार्या इस बात से बेहद खुश हुई कि उसने बीथोवन की धुन पहचान ली, क्योंकि हमने उसे पिछले साल गाया था। कई बच्चों ने उन गीतों को रेडियो पर सुना है जिन्हें हम स्कूल में गाते हैं।

### **सोमवार, 13 नवम्बर**

हमने अखबारों का अध्ययन जारी रखा। खबरें कैसे एकत्रित की जाती हैं यह जानने के लिए हमने उनकी तारीखों को देखा। बच्चों को पता चला कि एपी, यूपी आईएनएस जैसी समाचार एजेंसियां हैं जो उन छोटे अखबारों को भी विदेशों के समाचार उपलब्ध करवाती हैं जो खुद अपने सम्पाददाता यूरोप आदि नहीं भेज सकते। न्यू यॉर्क टाइम्स व हैराल्ड ट्रिब्यून में कई समाचारों के साथ “विशेष फोन द्वारा” या “विशेष केबल द्वारा” लिखा हुआ था। बच्चे यह समझ सके कि ऐसा केवल बड़े अखबार कर सकते हैं।

अब तक हमने लेखों व सम्पादकीयों में जितने अन्तर जाने थे उनको संक्षेप में दोहराया। एक अच्छा लेख सही तथ्य प्रस्तुत करता है; विश्वसनीय स्रोतों से सूचना लेता है; सभी पक्षों को रखता है; समाचार को सनसनीखेज़ नहीं बनाता। एक अच्छा सम्पादकीय अखबार के सम्पादक का मत सामने रखता है; तथ्यों का सही उपयोग करता है और ओछापन नहीं दर्शाता। बच्चे अपने अखबार के लिए लेख व सम्पादकीय लिखने को तैयार हैं। अब तक वे जिस तरह स्कूल का अखबार निकालते रहे हैं, उससे बच्चों का असंतोष दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है।

पठन के कालांश के बाद मैंने समूह को श्रीमति रेमसे की रूसी क्रिसमस कथा सुनाई। बच्चों को कहानी बेहद पसन्द आई। वे उसका नाट्य रूपान्तर करने को आतुर हैं।

लॉयड ने आज कहा कि वह अपनी सीट बदलना चाहता है। उसका कहना था कि वॉरेन और वह इतने अच्छे दोस्त हैं कि बातचीत का लालच बरबस ही होता है। उसे पता था कि अगर वह अपनी जगह बदलता है तो इससे उसकी इच्छाशक्ति मज़बूत होगी और साथ ही उसका काम भी बेहतर होगा। समूह के बच्चे कुछ देरे उसकी बात पर सहानुभूति से हंसे, तब कुछ स्थान बदले गए और लॉयड गम्भीरता से काम करने लगा।

### **मंगलवार, 14 नवम्बर**

नाट्य रूपान्तर का समय रोचक रहा। सभी बच्चे योगदान करने को उत्सुक रहते हैं और बड़े विश्वास से हिस्सा लेते हैं। पर लॉयड और डेनियल दोनों नए बच्चे अपवाद हैं। तीन साल पहले नाटकों की शुरुआत करते समय पुराने बच्चे जैसी बेवकूफी भरी हरकतें करते थे ठीक वैसी हरकतें दोनों नए

बच्चे भी कर रहे हैं। डेनियल ने आखिरकार चन्द पंक्तियों का योगदान किया, यद्यपि ऐसा करते समय उसका चेहरा लाल हो उठा था। समूह ने संवेदनशीलता दर्शाई और उसे सहज करने की तमाम कोशिशें कीं। उन्होंने कई सवाल पूछे और उसे दिशा देने के लिए अपनी ओर से कुछ जोड़ा भी।

### **शुक्रवार, 17 नवम्बर**

हम मौजूदा घटनाओं के अध्ययन के साथ-साथ समाचार पत्रों का अध्ययन भी जारी रखे हुए हैं। मार्था ने विल्सन के चौदह सूत्रीय कार्यक्रम पर एक रपट पेश की। उसका पक्का विश्वास था कि अगर इस कार्यक्रम पर पूरी तरह अमल किया जाता तो शायद आज हम युद्ध में न फंसे होते। उसने अपनी बातों के लिए तर्क दिए।

वॉल्टर डेमरॉश ने आज सरल व मिश्रित कठिन धुनों की चर्चा की। बच्चों को मिश्रित धुनों को सुन उन्हें पहचानने में बड़ा मज़ा आया।

### **सोमवार, 20 नवम्बर**

बड़े समूह के बच्चे आज एक फिल्म देखने गए। नाम था 'मिस्टर स्मिथ गोज़ टू वॉशिंगटन' उन्हें बड़ा मज़ा आया। मार्था तो वापस लौटने तक को तैयार न थी।

### **मंगलवार, 21 नवम्बर**

कल रात जो फिल्म देखी थी आज उस पर बात हुई। यह चर्चा भी हुई कि कोई प्रस्तावित बिल कानून कैसे बनता है, उन्हें पेश कैसे किया जाता है, संसदीय प्रक्रियाएँ कैसी होती हैं, बोलने व मत प्रकट करने की आज़ादी क्या है, व प्रमुख अखबारों पर ताकतवर लोगों का नियन्त्रण है। इन बच्चों के लिए अखबार व सेन्सरशिप ने नए अर्थ ले लिए हैं।

### **बुधवार, 22 नवम्बर**

पिछले कुछ दिनों से नन्हे मुझे अचरज में डालने की कोई योजना बनाते रहे हैं। वे अपनी योजना को छुपाए रखने में सफल भी रहे हैं। आज उन्होंने मुझे अपनी कहानी वाले कालांश में खासतौर पर बुलाया। फ्लोरैन्स ने घोषणा की "मिस वेबर आपके लिए जो नाटक तैयार किया गया है उसका नाम है रिकैटी रैकेटी मुर्गा। हम यह नाटक इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हमें कहानियों का कालांश बेहद पसन्द है।" इसके बाद जो प्रस्तुति उन्होंने दी उससे मैं इतनी खुश हुई कि मेरे आंसू निकल आए। उन्होंने मंचन को जिस हावभाव के साथ प्रकट किया उसका बयान करना सम्भव ही नहीं है। मार्था ने इसका निर्देशन किया था, मंचन के दौरान वह मेरे पास ही बैठी थी। वह शुरूआत के पहले फुसफुसाई "कुछ गलतियाँ हों तो उन पर ध्यान न दीजिएगा, मिस वेबर। ये सब कुछ शरमा और घबरा रहे हैं।" मेरा धन्यवाद

ज्ञापन पर्व (थैंक्स गिविंग) तो इस प्रसतुति से धन्य हो गया।

### **सोमवार, 27 नवम्बर**

बच्चों ने अपने अखबार को नया रूप देने पर विचार प्रारम्भ कर दिया है। आज हमने व्यापारिक समाचार पत्रों को देख उन खण्डों की सूची बनाई जिसमें अखबार सामान्यतः विभाजित होते हैं। तब हमने वे हिस्से हटा दिए जो हमारे अखबार में शामिल नहीं हो सकते थे, जैसे वित्त पृष्ठ। तब हमने फिर से अखबारों को देख उनके नामों का अध्ययन किया। बच्चों ने गौर किया कि कुछ अखबारों के दो नाम हैं। वॉरेन को सम्पादकीय पृष्ठ को कोने में यह सूचना मिली कि हैराल्ड ट्रिब्यून किसी समय दो अखबारों के रूप में छपता था, पर बाद में दोनों मिला दिए गए। अखबारों के संयुक्त होने की तिथि भी दी गई थी। मैंने बच्चों से सवाल किया कि दोनों अखबारों के लिए यों जुड़ जाना अच्छा क्यों रहा होगा। बच्चों ने तार्किक उत्तर दिए कि इससे उनकी पाठक संख्या बढ़ती है, उनके पास उपलब्ध राशि बढ़ती है, और वे अपने सम्पाददाताओं को अधिक मेहनताना दे सकते हैं और उनकी छपाई मशीनें बेहतर हो जाती हैं।

आज क्लब बैठक के बाद जब मैं कमरे में घुसी तो मुझे सभी बच्चों ने कहा “यह अब तक की सबसे अच्छी बैठक रही है।” बाद में वॉरेन ने बताया कि उन्होंने ‘मिस्टर स्मिथ गोज़ टू वॉशिंगटन’ के बारे में काफी कुछ जाना था।

### **मंगलवार, 28 नवम्बर**

कितना व्यस्त दिन था! हमने वे सारे भाग तय कर लिए थे जिसमें हम अपना अखबार बांटना चाहते थे और तब हमने प्रत्येक के लिए एक-एक सम्पादक चुना। बच्चों को लगा कि अगर उन्हें वास्तव में लोकतान्त्रिक होना है तो नन्हों को भी अपने भाग के लिए खुद अपना प्रतिनिधि चुनने देना चाहिए। यों बाल पृष्ठ के लिए फ्लोरैन्स को चुना गया। इसके बाद सम्पाददाताओं को लिखने के लिए लेख बांट दिए गए। लेख तैयार होने के बाद सम्बन्धित सम्पादक को सौंपे जाएंगे जो उन्हें स्वीकार या अस्वीकार कर सकेगा, या फिर सुधार के सुझाव देगा। जब शारीरिक शिक्षा का कालांश आया तो बच्चों ने अपने लेख समाप्त करने के लिए समय चाहा क्योंकि वे अपने विचारों के ताने-बाने को तोड़ना नहीं चाहते थे। पर ग्यारह बजे वे खेलने को उठे क्योंकि वे काफी देर कुर्सियों से चिपके रहे थे।

### **बुधवार, 29 नवम्बर**

हवा में क्रिसमस की भावना तैर रही है और बच्चे ताबड़तोड़ अपने काम खत्म करने की कोशिशों में जुटे हैं। नाटक प्रगति पर है। क्रिसमस के

उपहार तैयार करने की होड़ के कारण दिन के एक समय हमारी शाला, कार्यशाला में तब्दील हो जाती है। सभी सम्पादक इस आपाधापी के दौरान भी कुछ समय लेखों को जाँचने और सुस्त लेखकों को उकसाने के वास्ते निकालते हैं। लड़कों ने क्रिसमस सजावट की मालाएँ आदि बनाने की सामग्री जुटा ली है। नन्हों को अपनी कविताओं और कहानियों की कितबियाएँ बनानी हैं, अपने मौलिक गीतों की संगीत कितबियाएँ और प्रकृति सर्दियों तैयारी कैसे करती है उस अध्ययन की कितबियाओं के साथ, उन्हें अपने माता-पिता के लिए क्रिसमस उपहार भी बनाने हैं। और इस सबके बीच हम सब कुछ समय रोजमर्रा के पठन, वर्तनी और गणित का समय भी बचा लेते हैं।

### **सोमवार, 4 दिसम्बर**

हवाई द्वीपों और फलिपीन्स के कुछ मेहमान आज आए और बच्चों ने फिर से यह दर्शा दिया कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन से कितना अनुभव व तथ्यात्मक सामग्री जुटा ली है। मेहमानों को अचरज हुआ कि बच्चों को फिलिपीन्स के राष्ट्रपति का नाम मालूम था और वे हवाई द्वीपों की कुछ समस्याओं से भी परिचित थे। बच्चों ने मेहमानों से जानना चाहा कि क्या वे सच में संयुक्त राज्य अमरीका से स्वतन्त्र होना चाहते हैं। उन्होंने वहाँ के स्कूलों के बारे में सवाल पूछे और जानना चाहा कि उनका देश कैसा है। मेहमानों ने अपनी जुबान में गीत गाए और बातचीत की। और उनके आतिथ्य में हमने अमरीकी लोकगीत और लोकनृत्य प्रस्तुत किए।

### **बुधवार, 6 दिसम्बर**

अखबार का सम्पादक मण्डल स्कूल के बाद अखबार की तैयारी के लिए साथ बैठा। हमने अखबार के प्रत्येक पृष्ठ के लिए भूरे कागज की बड़ी शीटें काटीं। तब सबसे पहले उसके ले आउट पर सोचना शुरू किया गया। सम्पादकों ने तय किया कि सामग्री तीन कॉलम में पेश की जाएगी क्योंकि उससे कम में वह अखबार नहीं कहलाएगा और उससे अधिक के लिए जगह ही नहीं बचती थी। उन्होंने अखबार का नाम बदला, नगर उद्घोषक को अपना प्रतीक चुना और अपना नारा चुना “सब कुछ सुने सब कुछ बताए।” उन्होंने तय किया कि चूंकि सबसे महत्वपूर्ण काम जो वे कर रहे हैं वह अखबारों का अध्ययन है, सो इस विषय पर लिखा लेख दाहिनी ओर के कॉलम में होना चाहिए और उसका शीर्षक सबसे मोटे अक्षरों में छपना चाहिए। तब उन्होंने भूरे कागज पर उस जगह लेख चिपकाने शुरू किए, जो उनके अनुसार सबसे उपयुक्त जगह थी। पांच बजे तक काम सलटा नहीं था और घर जाने की उनकी इच्छा भी नहीं थी।

### **गुरुवार, 7 दिसम्बर**

आज सुबह मैंने तय किया कि शेष बच्चों को भी यह अनुभव मिलना चाहिए क्योंकि यह इस समूह के लिए इतना आनन्ददायक व कीमती रहा है। जो कल रात बैठक में शामिल हुए थे, वे आलेखों के प्रूफ पढ़ने और उन्हें फिर से लिखने में जुटे और बाकि बच्चे ले-आउट में मदद करने में। बच्चे जिस लगन से काम कर रहे थे उसे देखना बड़ा सन्तोषजनक था। लॉयड एक बढ़िया सम्पादक है, लेखों में गुणवत्ता पर बल देता है। उसके पेन्सिल उन वाक्यों के सामने सवालिया निशान लगाने में और निरर्थक शब्दों को हटाने में व्यस्त हैं।

### **बुधवार, 17 दिसम्बर**

अखबार का पहला संस्करण निकल चुका है। हमने उसे साथ-साथ पढ़ने में करीब घन्टा भर लगाया और हमें विश्वास है कि हमारे अब तक के तमाम प्रयासों में यह श्रेष्ठतम है। एल्बर्ट बोल उठा “हम सच में बढ़िया हैं।” उन्होंने हर परिचित व्यक्ति को अखबार की प्रति थमाई। उन्हें गर्व करने का वास्तव में हक है। थॉमस की एक टिप्पणी ने मुझे आगामी चरण की दिशा दी। उसने कहा “हमें बारह पन्नों की सामग्री जुटाने में महीने भर की कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। बड़े अखबार इतना सारा काम हर रोज़ भला कैसे करते होंगे?” मैंने बच्चों को सुझाया कि हम क्रिसमस के बाद किसी अखबार के कार्यालय और छापाखाने को देखने जा सकते हैं।

### **मंगलवार, 26 दिसम्बर**

पिछले दो सप्ताह इस कदर व्यस्त रहे कि डायरी में कुछ भी दर्ज करने का समय न मिला। पर मैं इस समय की कुछ छावियां मैं ज़रूर दर्ज कर लेना चाहती हूँ। बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक काफी सफल रहा, यद्यपि एक अर्से तक मुझे यह डर था कि ऐसा नहीं हो सकेगा। लॉयड जिसे एक महत्वपूर्ण किरदार निभाना था, पगला गया, और उसने परदे के पीछे काफी गड़बड़ी की। कार्यक्रम शुरू होता उसके पहले वह पूछता रहा “मुझे घबराहट हो रही है, मिस वेबर। क्या मैं ठीक लग रहा हूँ? मैं अपनी भूमिका ठीक से निभा लूंगा ना?” मानो उसके अलावा नाटक में कोई दूसरा बच्चा महत्वपूर्ण ही न हो।

अगले दिन हम कमरे की सफाई कर और उसे फिर से कक्षा की शक्ल दे रहे थे। इस काम के दौरान बच्चों ने नाटक की चर्चा की। उन्हें लॉयड का नज़रिया पसन्द नहीं आया था, सो यह बात उन्होंने लॉयड से कही। विलियम को भी लॉयड की बातों में आकर बहकने की बात पर कुछ सुनाया गया। हेनरी और डेनियल के बेहतरीन की पर प्रशंसा हुई। बच्चे अपने प्रदर्शन से सन्तुष्ट नहीं थे। उन्हें लगा कि पिछले सालों जैसा प्रदर्शन वे इस बार नहीं दे पाए थे। उनकी मुख्य आलोचना यह थी कि कलाकारों ने संवाद

साफ-साफ नहीं बोले और न ही वे भावनाओं को ठीक से अभिव्यक्त कर पाए। जहां तक दर्शकों का सवाल था, उन्हें नाटक पसन्द आया और उन्होंने बच्चों की काफी तारीफ की थी। सफाई के समय बच्चों की बातचीत से मुझे लगा कि वे दर्शकों की प्रशंसा से फूलकर कुप्पा नहीं हुए थे। ज़ाहिर है कि बच्चों की स्वयं से ऊँची अपेक्षाएँ हैं और वे अपनी गलतियों को बखूबी पकड़ लेते हैं।

जो लड़कियाँ हाईस्कूल में जाने लगी हैं, वे चाहती हैं कि वे संगीत के लिए यहीं आती रहें। सो हम अक्टूबर से ही सप्ताह में एक बार मिलते रहे हैं। उन्होंने माइकेल प्रेटोरियस की सोलहवीं शताब्दी की धुन पर एक गीत, एक अंग्रेजी कैरल व साइलेंट नाइट गाया। सभी गीत तीन सप्तकों में गाए गए थे और बेहद अच्छे रहे थे। इस माह बच्चों ने कई कविताएं रचीं जो उनके अनुभवों को सामने रखती थीं। बच्चों को बर्फ पसन्द है और सिर से पैर तक उससे ढक जाने पर उन्हें मज़ा आता है। उनका यह आनन्द उनकी कविताओं में झलकता दिखा।

### 1940 की गर्मियां

साल के बचे हुए महीनों में मैं डायरी में टिप्पणियां दर्ज नहीं कर पाई। पर इस दौरान तमाम ऐसी घटनाएं घटीं जिन्हें दर्ज कर लेना चाहिए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण घटना थी वह अध्ययन जो अखबारों में बच्चों की रुचि से जन्मा था।

दिसम्बर माह में मैंने बच्चों को 'जिम ऑफ द प्रेस' नामक पुस्तक पढ़कर सुनाई थी। यद्यपि पुस्तक हाईस्कूल स्तर के बच्चों के लिए लिखी गई थी, पर अखबारों की समझ की पृष्ठभूमि पहले से मौजूद होने के कारण बच्चे उससे काफी सीख सके। अखबारों के अध्ययन और इस पुस्तक को पढ़ने से उपजी समझ से लैस ये बच्चे 6 जनवरी को ईस्टन एक्सप्रेस के भवन में अखबार का कामकाज देखने-समझने गए। उन्होंने अखबार का कम्पोजिंग कक्ष, लीनोटाइप बैटरी और अखबार बनाने व छापने की पूरी प्रक्रिया देखी। उनकी रुचि इतनी गहरी थी और उन्होंने इतने सारे सवाल पूछे कि हमारे गाइड ने टिप्पणी की "इन्होंने कुछ भी नहीं छोड़ा है ना?"

लौटते समय उनकी बातचीत लगातार जारी रही। बच्चों को सभी कामों की रफ्तार पर अचरज हो रहा था। उन्हें अखबार की लीनोटाइप मशीन सबसे आकर्षक लगी। एक-एक अक्षर हाथों से कम्पोज करने से यह कितनी अलग थी। श्री मैथ्यूज़ जो हमें अखबार के दफ्तर ले गए थे, ने बताया था कि जब वे चीन में थे तब वे वहां एक छोटा अखबार छापते थे। उस वक्त उन्हें अक्षर-अक्षर जोड़कर शब्द बनाने पड़ते थे। ऐसा करना आंखों, हाथों और

स्नायुओं पर ज़ोर डालता था। लॉयड ने कहा कि जिस व्यक्ति ने लीनोटाइप मशीन ईजाद की वह ज़रूर बड़ा चतुर रहा होगा। “मशीन बनाई भला किसने, और इसे बनाने का विचार उसे कैसे आया?” उसने जानना चाहा। वॉरेन ने पूछा “छपाई की खोज कितने साल पहले हुई? मैंने पुरानी छपाई मशीनों के चित्र देखे हैं। पर वे तो आज देखी मशीन से बिल्कुल अलग लगते हैं।” एल्बर्ट की रुचि चित्रों की छपाई में थी। उसने चित्रों के ब्लॉक और उन पर उभरे नन्हे बिन्दुओं को बड़े ध्यान से देखा था। “ये बिन्दु चित्र कैसे बनाते हैं?” उसे पता करना था। लौटते समय हम काउन्टी पुस्तकालय में रुके और वहां छपाई से सम्बन्धित सभी किताबें इकट्ठी की और राज्य पुस्तकालय से कुछ दूसरी मंगवाने का आवेदन भी दिया।

अगले दिन हमने इसी यात्रा पर और बातें की। पहले कुछ समय तो हमने यही चर्चा की कि अखबारों का कितना प्रभाव है। एल्बर्ट का कहना था कि संप्रेषण के तमाम दूसरे साधन भी हैं रेडियो, फोन, टेलीग्राफ आदि। पर थॉमस ने कहा कि अखबारों की अपनी ही विशेषताएं होती हैं, उन्हें जब मर्जी उठाकर पढ़ा जा सकता है और जितनी बार चाहे पढ़ा जा सकता है। तब तक जब तक सारे तथ्य अच्छी तरह समझ न आ जाँएँ। लगभग इसी समय समूह ने तय किया कि सत्र के शेष दिनों में अगर हर सुबह एक अखबार आए तो अच्छा रहे। मुझे स्कूल कोष से कुछ पैसे खर्चने की अनुमति थी सो, मैं उनके इस आग्रह से सहमत हो सकी। बच्चों ने पूरे साल अखबारों में रुचि दिखाई है और अकेले या समूह में उनको पढ़ा भी है। जब हर दिन अखबार आने लगे तो कुछ बच्चे सुबह-सुबह ही उस पर नज़र दौड़ाने लगे। कई दोपहर मैंने उन्हें खबरों पर चर्चा करते सुना। खासकर पर्ल को इसमें खूब रस आता रहा।

जब बच्चों ने पुस्तकालय से लाई गई पुस्तकों में छपाई के विषय में पढ़ना शुरू किया तो उनकी रुचि इस विषय में भी जगी। उन्हें इसमें इतना मज़ा आने लगा कि वे अक्सर दूसरों को कुछ हिस्से पढ़कर सुनाते। “ज़रा सुनो तो सही” कोई कहता, और दूसरे उसे सुनने को थम जाते। एक किताब में लिखा था कि जॉन गूटनबर्ग ने छपाई मशीन का अविष्कार किया था। पर दूसरी किताब में लिखा था इसके अविष्कारक गूटनबर्ग नहीं बल्कि चीनी लोग थे। बच्चों ने कुछ बातें दर्ज कीं ताकि वे बाद में चर्चा कर सकें। लॉयड ने पुस्तकें पढ़कर उनमें से नोट लिख लेने का काम पहले कभी नहीं किया था, सो उसे यह सिखाने में मैंने कुछ समय लगाया।

बाद में हुई चर्चा के दौरान बच्चों ने तय किया कि उन्हें कुछ बातों पर अधिक जानकारी तलाशनी होगी। ये विषय थे:

गूटनबर्ग



सचल टाइप का अविष्कार  
गूटनबर्ग के पहले छपाई का स्वरूप  
प्रिंटिंग प्रेस में हुए सुधार  
यूरोप तथा अमरीका में छपाई का प्रसार  
लीनोटाइप  
कॉस्टर, फुस्ट व कैक्सटन  
चित्रों की छपाई।

हरेक बच्चे ने अपनी रुचि का विषय चुना और उस पर शोध में जुट गया। वॉरेन शहर के समाचार पत्र के छापाखाने में गया ताकि लोनोटाइप पर जानकारी ले सके। क्योंकि यह अखबार साप्ताहिक है, लोग अधिक व्यस्त न थे और उसके लिए समय निकाल सके। वॉरेन ने क्रॉम्पटन एन्साईक्लोपीडिया लीनोटाइप कैसे काम करता है की जानकारी पढ़ रखी थी, सो वह उनको मशीन के बारे में बताने लगा। छापाखाने में काम करने वाले उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे उसका नाम व पता छापने की अनुमति दी। वॉरेन ने समूह को सगर्व अपना छपा हुआ नाम व पता दिखाया और कहा कि वह कुछ रोज़ उसे हमारे अजायबघर में रखने देगा।

दो दिन विषय पर पढ़ने के बाद हमने छपाई के अविष्कार पर चर्चा की। हमने जाना कि सचल टाइप का अविष्कार मूलतः चीनी लोगों ने किया था, पर उनकी वर्णमाला नहीं थी सो यह उनके लिए व्यावहारिक नहीं रहा। चालीस हजार चित्र संकेतों को व्यवस्थित रखना कठिन काम था। एडवर्ड ने पूछा कि “वे कोई वर्णमाला क्यों नहीं अपना लेते? और उनकी लिपि कैसे विकसित हुई?” डेनियल ने जानना चाहा कि हमें हमारी वर्णमाला कैसे मिली? बच्चों ने एक किताब में पढ़ा कि गूटनबर्ग को सचल टाइप का विचार चीन से आए ताश के पत्तों से मिला था। इस पर उन्हें यह जानने की इच्छा हुई कि यूरोपवासियों को ताश के पत्ते चीन से कैसे मिले? मार्था ने पढ़ा कि कागज़ बनाने की खोज हो जाने से छपाई व्यावहारिक विकल्प बन सका था। इस पर हेनरी ने जानना चाहा कि कागज़ के पहले लोग क्या काम में लेते थे। कागज़ आखिर बनता कैसे है? हेनरी की रुचि मार्को पोलो में भी है। वह पढ़ते समय लगातार समूह के दूसरे बच्चों को कुछ न कुछ बताता रहता है। फलतः कई बच्चे उसके कंधों पर झुके नज़र आते हैं। उसने ही यह पता लगाया कि मार्को पोलो ने पूर्व के विषय में यूरोपवासियों की रुचि जगाई इसलिए ही यह संभव हो सका कि गूटनबर्ग चीनी ताश पत्तों से खेल रहा था। तब हमने फिर से उन विषयों की सूची बनाई जिनके बारे में हमें और जानकारी एकत्रित करनी थी:

वर्णमाला की खोज

कागज़ बनाने की खोज  
कागज के अविष्कार के पहले लेखन सामग्री  
मार्को पोलो  
क्रूसेड (धर्मयुद्ध)  
मार्को पोलो के समय का चीन  
गूटनबर्ग के समय का यूरोप

अब विषयों की संख्या इतनी हो चुकी थी कि हरेक अपना एक निजी विषय चुन ले। तब शोध घण्टों, रिपोर्ट, चर्चा सत्र व और फिर से शोध का सिलसिला शुरू हुआ। सभी बच्चों ने अपना योगदान दिया, सवाल पूछे, जिससे रिपोर्ट प्रस्तुत करने वालों को फिर से अपनी पुस्तकों पर लौटना पड़ा। जैसे-जैसे रिपोर्टें लिखी जाने लगीं, उनके विषय अन्य उप-विषयों में बंटने लगे। उदाहरण के बतौर गूटनबर्ग के काल में यूरोप को निम्न उप भागों में बांटा गया:

मठवासी साधु व मठ...  
महलों का जीवन व युद्ध  
नगर व शिल्पी संघ  
वर्णाक्षरों की खोज के विषय से निम्न उप विषय उपजे:  
इनका संस्कृति के लोग व उनका लेखन  
अमरिकी इन्डियन लोगों का लेखन  
रॉलैण्ड की गाथाएं व गीत  
मिश्रवासी  
फोनेशिवासी  
यूनानी  
रोमवासी

इधर हम पढ़ते और समूह के सामने अपने पढ़े हुए को प्रस्तुत करते जा रहे थे, उधर हमने जो बातें दर्ज की 'मात्रा बढ़ती जा रही थी। बच्चों ने अपनी शोध कर नोट्स दर्ज की थीं' उसके अलावा वे नोट्स भी थे, जो बच्चों ने एक-दूसरे की प्रस्तुतियों के दौरान ली थीं। इस सारी सामग्री का क्या करना है, यह एक समस्या बन गया। फेंक देने के लिए यह सामग्री बेहद मूल्यवान थी, पर बेतरतीब व अव्यवस्थित रूप में उसकी कोई खास कीमत भी न थी। थॉमस ने एक रोज़ मज़ाक किया "हमें तो एक किताब लिख डालनी चाहिए, आखिर इतनी सामग्री तो जुटा ही ली है जिससे एक किताब बन जाए।" मैंने उसे चौंकाते हुए कहा "क्यों नहीं?" इसके बाद इस पर हमने जितना सोचा, उतना ही ऐसा करना हमें समझदारी का काम लगा। और तब हम सच में इस काम में जुट गए। और हमने अपने नोट दर्ज करने में पूरी

सावधानी बरती। बच्चों को अगर अपनी शोध के दौरान अगर किसी ऐसे विषय पर कोई जानकारी मिलती जिस पर कोई दूसरा बच्चा काम कर रहा हो, तो फौरन एक सन्दर्भ कार्ड बना जाता और उस बच्चे को थमा दिया जाता। जब बच्चे अपनी-अपनी रिपोर्ट तैयार कर लेते, तो वे किसी तयशुदा दिन उसे प्रस्तुत करने के लिए अपना नाम लिखवा लेते। तब समूचा समूह ध्यान से सुनता, सुझाव देता और आलोचना भी करता।

थॉमस ने एक दिन क्रूसेड (धर्मयुद्ध) पर रिपोर्ट सामने रखी। उसे बड़ी परेशानी हुई, क्योंकि वह किताब में इस्तेमाल किए गए शब्दों को कम में ले रहा था। मैंने उससे कहा “अपने नोट्स भूल जाओ और अपने शब्दों में बात कह डालो।” तब धर्मयुद्ध की रोमांचकारी कथाएं व युद्ध के दौरान खून-खराबे का उसने धुंआधार वर्णन किया। उसने बालकों के धर्मयुद्ध का नाम लिया भर था कि हेलेन ने सुझाया कि उसे “बॉय ऑफ द लॉस्ट क्रूसेड” से सामग्री मिल सकती है।

जब एल्बर्ट ने साधुओं पर अपनी रिपोर्ट रखी तो मार्था ने उससे पूछा तुमने ‘गैब्रियल एण्ड द आवर बुक’ पढ़ी है? बेहद खूबसूरत पुस्तक है। मिस वेबर आपको वह हमें पढ़ कर सुनानी चाहिए। कुछ रिपोर्ट बेहद तरतीब से तैयार की गई थीं। लॉयड ने पुस्तकों के विकास पर रिपोर्ट तैयार की। उसके सामने मेज़ पर एक चार्ट में वे सारे चरण दर्ज थे जिनसे गुज़रते हुए पुस्तकों का मौजूदा स्वरूप विकसित हुआ था। चर्मपत्र (पार्चमेन्ट) का चीरक (स्क्रोल), जो प्राचीनतम पुस्तक रूप था, अक्सर सोलह से अठारह फुट तक लम्बा हुआ करता था। स्क्रोल जैसे-जैसे खुलता, अगले अध्याय नज़र आते जाते। उसने बताया कि कुछ बौद्ध ग्रन्थ स्क्रोल की पूरी लम्बाई में भी लिखे होते थे। पर चूंकि इन्हें पढ़ा नहीं जाता था, इससे असुविधा नहीं होती थी। हिब्रू में लिखे कानून, सम्बन्धी चर्मपत्रों में लेखन अलग-अलग स्तम्भों में होता था। ऐसे चीरकों के पृष्ठाकार लेखन ने किसी को यह विचार दिया कि उन्हें मोड़ दिया जाए। सो तब लकड़ी के टुकड़ों से स्क्रोल को पृष्ठों के रूप में उसे दबाया जाने लगा। इससे पुस्तकों को रखना आसान बन गया। इसके बाद लॉयड ने कैची उठाई उसे तह किए हुए स्क्रोल को तहों से काट डाला जिससे अगला चरण साफ हो गया। उसने बताया कि इस आकार में आते ही पृष्ठ के दोनों तरफ लिखना सम्भव हो गया और हमारी आधुनिक पुस्तकों का रूप सामने आया।

एडवर्ड और जॉर्ज को शोध करना बेहद कठिन लग रहा था और उनकी रुचि भी तब तक जगी नहीं थी जब तक हमने कागज बनाने के प्रयोग नहीं शुरू कर दिए। इन लड़कों ने बॉन्सर व गॉसमैन की पुस्तक “बुनियादी शाला में औद्योगिक कलाएं” नामक पुस्तक के निर्देश पढ़ कागज़ बनाने का

एक साँचा तैयार किया। हमने निर्देशों के अनुसार पहले चीथड़ों से कागज बनाया। इसमें हम सफल रहे। पर पार्चमेन्ट बनाने की हमारी कोशिश अधिक सफल नहीं रही। शायद इसलिए क्योंकि हम भेड़ की खाल को ठीक से तान नहीं सके। हम पैपिरस से भी कागज बनाना चाहते थे। हमने औद्योगिक कला सहकारी सेवा को अपना ऑर्डर भी भेजा। वे फ्लोरिडा से पैपिरस मंगवाते हैं। पर इस साल वहां इतनी ठण्ड पड़ी कि पैपिरस की तीनों फसलें बर्बाद हो गईं।

बच्चे हमारे अजायबघर में लगातार चीजें जोड़ते रहे। उन्होंने लकड़ी का गूदा, व्यावसायिक पार्चमेन्ट का टुकड़ा, खुद का बनाया पार्चमेन्ट, चिन्दियों से बना कागज, इस्टन एक्सप्रेस के दफ्तर से लाया गया कार्डबोर्ड का साँचा, ताम्बे का छापा, उपनिवेशकाल की मोम, प्राचीन बेबिलोनिया भट्टी में पका मृदपत्र, हिब्रू कानून का प्लास्टर से बना प्रतिरूप, इस्टन एक्सप्रेस में हमारे दौरे के बाद वाले अंक में छपी तस्वीर, प्रदर्शन के वास्ते रखे। प्रदर्शित चीजों की संख्या इतनी बढ़ गई कि हमें नई ताकें बनानी पड़ीं, जो हमारे कक्ष के एक तरफ खिड़कियों के नीचे दीवार की पूरी लम्बाई में बनाई गईं। इस व्यवस्था से हमारा कमरा सजीला भी लगने लगा और सुविधाजनक भी। एक दिन वॉरेन ने टिप्पणी कि हमारा कमरा अब स्कूल जैसा नहीं लगता।

बच्चे समूहों में जा काउन्टी पुस्तकालय से किताबें लाते रहे हैं। उन्होंने किताबों से प्यार करना सीख लिया है, वे उनकी अच्छी देखभाल भी करते हैं। यद्यपि इस साल हमने कई सौ किताबें काम में लीं किसी ने एक भी किताब को नुकसान नहीं पहुँचाया है।

जब सारी सामग्री इकट्ठी हो चुकी तो समूह एक शोध समूह से सम्पादकीय मण्डल में बदल गया। हमने बोर्ड पर उन तमाम विषयों की सूची बना डाली जिन पर जानकारी जुटा ली गई थी। हमने सूची का गौर से अध्ययन किया और तब विभिन्न विषयों को समेटते हुए कुछ शीर्षक बनाए:

अखबारों से सम्बन्धित

अखबार की छपाई

लीनोटाइप मशीन

चित्रों की छपाई

छापा मशीनें (प्रेस)

छपाई की खोज के विषय में

सचल टाइप की खोज

गूटनबर्ग की जीवनी

गूटनबर्ग के पहले छपाई

क्रूसेड (धर्मयुद्ध)  
मार्को पोलो: मध्ययुगीन जीवन  
महलों का जीवन  
नगर  
साधु व मठ  
वर्णमाला के विषय में  
लिपि की खोज  
इन्का लोग  
अमरीकी इन्डियनों का लेखन  
रोलैण्ड का गीत  
गुफा चित्र व लेखन  
मिस्त्र की चित्रलिपि  
फोनेशिन सभ्यता व लिपि का प्रसार  
रोमवासियों द्वारा लिपि का प्रसार  
लेखन सामग्री से सम्बन्धित  
मिस्त्र के अभिलेख  
गडेरियों द्वारा प्रयुक्त चमड़ा  
बेबिलोन में भट्टी में पकी ईंटों पर लेखन  
चीन में चीथेड़ों से बना कागज़  
पुस्तकों के स्वरूप का विकास  
पेपिरस के स्क्रोल  
प्राचीन सभ्यताओं के विषय  
मिस्त्र  
यूनान  
रोम  
बेबिलोनिया  
सुमेरिया  
एसिरियन  
चैल्डिया  
फोनेशिया  
आधुनिक लेखन सामग्री  
पेन  
पेन्सिल  
कागज़  
पुस्तकें

बड़े समूहों में पन्द्रह बच्चे थे (कार्टराइट बालक क्रिसमस के बाद स्कूल से चले गए थे। मैंने पांच सबसे सक्षम बच्चों को वरिष्ठ सम्पादन समिति में लिया: वॉरेन, हेलेन, मार्था, लॉयड व थॉमस। शेष बच्चे पांच समितियों में बंट गए। पहले दिन मैं प्रथम समिति से मिली और उन्हें सामग्री का सम्पादन कैसे किया जाए यह समझने में मदद की।)

1. सभी लेखों को पढ़ कर उसकी विषय वस्तु से परिचित होना।
2. सामग्री को व्यवस्थित कर अध्यायों में बांटना।
3. अध्यायों को परस्पर जोड़ने के लिए कुछ अनुच्छेद लिखना ताकि वे अलग-थलग न रह कर एक निरंतर कथा का रूप ले लें।
4. अगर आवश्यक लगे तो अध्यायों में शामिल लेखों में फेरबदल करना ताकि अनुच्छेदों में उभारे गए बिन्दुओं को रेखांकित करें।
5. समूची सामग्री को भाषा व वर्तनी की अशुद्धियां सुधारने के लिए पढ़ना।

यह समझाने के बाद मैंने समूह को स्वयं काम करने के लिए छोड़ा। उनसे तैयारी का संकेत मिलने पर मैं फिर साथ बैठी। मार्था ने बताया कि उन्होंने किस तरीके से काम किया और तब मैंने विभिन्न विषयों पर लिखे अनुच्छेद पढ़े व उन पर टिप्पणी की।

इस समिति ने समूची सामग्री को क्रम से चार अध्यायों में बांटा था, यह क्रम था:

एक अखबार की छपाई

लीनोटाइप

छपाई मशीनें

चित्रों की छपाई

समूह में अपने पहले अध्याय के प्रारम्भ में लिखा:

ताज़ा घटनाओं की जानकारी हम तक पहुंचाने का एक तेज़ फुर्तीला उपाय है अखबार। कोई अखबार यह कैसे करता है इसकी कहानी बड़ी रोचक है।

पहले अध्याय को दूसरे से जोड़ने के क्रम में समिति ने लिखा:

अगर लीनोटाइप न होता अखबारों की छपाई की प्रक्रिया बेहद सुस्त रहती। कुशाग्र व चतुर ऑटमार मार्गेन थालर, लीनोटाइप मशीन के आविष्कारक के कारण हमें घटनाओं की जानकारी उनके घटते ही मिल जाती है।

पहले मार्था ने “जीनियस माइन्ड” का जुमला सुझाया था। पर लॉयड ने बताया बताया कि समिति में इस पर बहस हुई और उसने कहा कि

जीनियस के स्थान पर 'इन्जीनियस' शब्द होना चाहिए। मैंने समूह से पूछा कि सब इस बारे में क्या सोचते हैं। पर शब्द से वे वाकिफ ही नहीं थे। मैंने शब्दकोष देखने की सलाह थी। पर वे तब भी अर्थ समझ नहीं सके। मैंने कहा कि वे शब्द के पास आइडैलिक्स में आए अक्षरों को देखें। हेनरी ने तब पाया कि जीनियस के बाद 'एन' लिखा है और इन्जीनियस के आगे 'एडीजे' अर्थात् विशेषण (एडजेक्टिव) इस पर वह बोला "मैं समझ गया, इन्जीनियस ही होना चाहिए क्योंकि हमें विशेषण की जरूरत है।"

तीसरे अध्याय के पहले उन्होंने जोड़ा था:

छपाई प्रेस हमेशा इतनी कुशल नहीं हुआ करती थी जितनी आज है। प्रारम्भिक प्रेस काफी सरल और अनगढ़ सी थी।

चौथा अध्याय शुरू किया गया था, इन शब्दों से:

चित्र, अखबारों का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। छपाई के लिए उन्हें बड़े रोचक तरीके से तैयार किया जाता है।

तब इस समिति का हरेक सदस्य अन्य समितियों का अध्यक्ष बना ताकि वह सम्पादन में उन समितियों को दिशा दे सके। सभी समूह सुझावों व आलोचनात्मक टिप्पणियों के लिए अपने अध्यक्षों के पास जाते। तब उन सुझावों के हिसाब से आलेखों में बदलाव करते। काम की कमी नहीं थी, क्योंकि संशोधनों के बाद भाषा व वर्तनी सुधाने का बहुतेरा काम पड़ा था। बच्चों ने अपने आलेखों को बारम्बार लिखा। हरेक आलेख समूह के लगभग हरेक सदस्य द्वारा पढ़ा भी गया। हमारी मुख्य कठिनाइयों पर चर्चा अंग्रेज़ी के कालांश में होती। अन्तिम नतीजे में न केवल अद्भुत तथ्यपरकता थी बल्कि अभिव्यक्ति का सौन्दर्य भी। काम में कई महीने लगाने पड़े, पर सच कहें तो इस काम पर बिताया हरेक पल सार्थक रहा।

समूह संख्या दो ने अपनी सामग्री को छह अध्यायों में बांटा।

सचल टाइप की खोज

गूटनबर्ग के पूर्व छपाई

धर्मयुद्ध व छपाई

मार्को पोलो

छपाई का प्रसार

मध्यकाल में पुस्तकें

उनके पहले व पुस्तक के पांचवें अध्याय की शुरुआत उन्होंने इन शब्दों से की:

लकड़ी पर खोदे गए ब्लॉकों के द्वारा छपाई करना धीमी और कठिन

प्रक्रिया है। जब सचल टाइप की खोज हुई तब जाकर पुस्तकें चुनिन्दा लोगों से दायरे से निकल कर अधिक लोगों को उलब्ध हो सकीं। सचल टाइप खोजने का श्रेय हम जॉन गूटनबर्ग को देते हैं।

इस प्रकार पांचवा अध्याय पिछले अध्याय से जुड़ा और उसमें गूटनबर्ग की जीवनी व उसके अविष्कार का वर्णन दिया गया।

छठा अध्याय शुरू हुआ इस अनुच्छेद से:

जैसा हम कह चुके हैं, गूटनबर्ग के काफी पहले ही चीन के निवासी एक प्रकार की छपाई की खोज कर चुके थे।

सातवें अध्याय की शुरूआती पंक्तियां थीं:

अगर धर्मयुद्ध (क्रूसेड) ने होते तो सचल टाइप व छपाई का अविष्कार सम्भवतः काफी समय बाद होता। धर्मयुद्धों के कारण यूरोपवासियों के समक्ष मानो एक नई दुनिया ही खुल गई।

इस अध्याय का अन्त उन्होंने इन शब्दों के साथ किया:

कुछ धर्मयोद्धा जब क्रूसेड यात्रा से लौटे तो वे अपने साथ ताश की पत्तियां लेते आए। ऐसे हो ताश के पत्तों से गूटनबर्ग को हटाए या जोड़े जा सकने वाले टाइप का विचार आया। यही कारण था कि छपाई प्रक्रिया की खोज भी सम्भव हुई और मार्को पोलो व अन्य साहसी यात्रियों की यात्राओं के वृत्तान्त छप सके। इन यात्रा वृत्तान्तों के साथ यह विचार भी तमाम लोगों तक पहुंचा कि वे पूर्व तक पहुंचने के लिए अज्ञात व खतरनाक समुद्री मार्गों को तलाशें।

अगला अध्याय शुरू करते समय उन्होंने निम्नोक्त अनुच्छेद जोड़ा पूर्व में रुचि जगाने वालों की सूची में केवल धर्मयोद्धाओं का नहीं बल्कि मार्को पोलो का उल्लेख भी ज़रूरी है। इसी रुचि के चलते तमाम वस्तुओं की खोज सम्भव हुई।

इसी अध्याय के आखिरी पक्तियों ने उपरोक्त वाक्यों का अर्थ भी स्पष्ट कर दिया:

जब तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर कब्ज़ा कर लिया और पूर्व में काफी अशान्ति फैली हुई थी, तो अब तक के ज्ञात व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गए जहां से विलास प्रेमियों को अपनी वस्तुएँ मिलती थीं। ज़ाहिर है कि तब कोलम्बस को यह सूझा कि वह पूर्व दिशा तक पहुंचने के लिए पहले पश्चिम की ओर जाए इससे न केवल नए जलमार्ग का द्वारा खुला बल्कि एक नई सभ्यता का मार्ग भी खोल दिया।

नवें अध्याय में उन्होंने लिखा:



सचल टाइप की खोज के बाद यूरोपीय देशों में तेज़ी से छपाई का प्रसार हुआ।

अध्याय में आगे चल कर यह बताया गया कि किस प्रकार यूरोप भर में तेज़ी से किताबें छपने लगीं। अध्याय के अन्त में लिखा गया था:

जब यूरोप की विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हो चलीं तो पढ़ने में व शिक्षा प्राप्त करने में लोगों की रुचि भी बढ़ी। इससे दुनिया में कई बदलाव आए। यह तथ्य कि अब कई लोग पढ़-लिख सकते थे, का प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रचार-प्रसार में बड़ा भारी हाथ था।

अध्याय दस की शुरुआत में उन्होंने लिखा:

पुस्तकों की छपाई के पहले पढ़ने-सीखने में रुचि कम थी। उस समय एक ही समूह था जिसने ज्ञान को जीवित रखा था। यह समूह प्राचीन दुनिया की पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियां बनाता रहा था। यह समूह था मठवासी पादरियों का।

इस अध्याय में उन्होंने मठवासी साधुओं के जीवन का वर्णन किया और उसकी तुलना नगरों व कस्बों में रहने वाले अन्य लोगों से की। अन्त में उन्होंने लिखा:

ऐसी ही दुनिया में जॉन गूटनबर्ग का जन्म हुआ था और इसी दुनिया ने छपाई का अविष्कार किया।

शेष समितियों ने भी अपनी सामग्री को ठीक इसी तरह सुव्यवस्थित कर पुस्तक में पांच अध्यायों के रूप में जोड़ा। ये अध्याय थे:

वर्णाक्षरों का अविष्कार

लेखन सामग्री

प्रारम्भिक सभ्यताएँ

आधुनिक लेखन सामग्री

पुस्तक निर्माण

सूचना एकत्रण के दौरान जरूरत पड़ने पर हम प्राचीन पृष्ठभूमि तक खोदते रहे और तब वर्तमान तक लौटे। कालक्रम का हम सबको बोध रहे इस वास्ते हमने टाइम-लाइन की मदद ली। अध्ययन समाप्त हुआ तब हमने तय किया कि इस कालक्रम को भी हमें अपनी पुस्तक में शामिल कर लेना चाहिए। हमने अपनी किताब में पुस्तक सूची (बिबलियोग्राफी) भी जोड़ी। इसके अलावा बच्चों ने किताब के लिए कई चित्र भी बनाए। उनकी सूची इस प्रकार है:

पुरानी लकड़ी की बनी छपाई मशीन

ठप्पा व फर्मा  
एक धर्मयोद्धा  
पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ  
प्राचीन काल में रिकॉर्ड रखने की विभिन्न विधियां  
(पेरुवियन क्विपू?)  
(नॉच्ड स्टिक)  
भोजवृक्ष की छाल  
(वैम्पम)  
मिश्र की चित्रलिपि  
चीनी अक्षराकृतियां  
हम एबीसी तक कैसे पहुंचे  
लेखन सामग्री  
मिश्र का पैपिरस  
बेबिलोन की कीलाक्षर लिपि  
यूनान की मोम की तख्तियां  
हमारी किताबें कैसे आईं  
एक आधुनिक किताब कैसे तैयार होती है।

क्योंकि हम सत्र के अन्तिम दिन तक सम्पादन का काम करते रहे थे यह आवश्यक हो गया कि बच्चे गर्मियों में की छुट्टियों में भी कुछ दिन स्कूल आएँ। इन दिनों बच्चों ने पन्ने मोड़ कर उन्हें पृष्ठों की शक्ल दी, उन पर चित्रों को ट्रेस किया। मैंने समूची किताब टाइप की। बच्चों ने फर्मी को जोड़ा और सबने मिलकर बोर्ड व चर्मपत्र से उसकी जिल्द तैयार की। हैलेन ने लाइनोलियम का एक ठप्पा तैयार किया जिससे स्क्रोल की आकृति छापी जा सकती थी, अन्तिम पृष्ठ इसी से छापे गए। यों हमारी मेहनत से एक बेहद खूबसूरत किताब तैयार हुई जो हमारे लिए बेशकीमती थी। मेरे एक मित्र ने उसकी प्रतियां बनाने का प्रस्ताव रखा। इसके लिए उसने किताब के हर एक पन्ने के फोटोग्राफ लिए और तब उसकी इतनी प्रतियाँ बना दीं कि हरेक बच्चे के पास इसकी निजी प्रति हो। हमने काउन्टी पुस्तकालय को और कुछ अन्य मित्रों को भी उसकी प्रतियाँ भेंट कीं।

इस अध्ययन और पुस्तक निर्माण का एक अन्य रोचक अनुभव भी रहा। 25 मई को हम न्यू यॉर्क शहर के मेट्रोपोलिटन आर्ट म्यूज़ियम को देखने गए थे। वॉरेन ने म्यूज़ियम के साथ पत्राचार किया था और हमारे लिए एक गाइड की व्यवस्था करवा दी थी। सो श्री ग्रीयर ने हमें दौरा करवाया और प्राचीन सभ्यताओं के लेखों- शिलालेखों के प्रामाणिक प्रतिरूप दिखाए। उन्होंने बच्चों को मिश्र के चित्राक्षरों के प्रतीक पढ़ना भी सिखाया। साथ ही

मिश्र, क्रीट, ग्रीस, रोमन सभ्यता की लेखनी व लेखन सामग्री के उदाहरण भी दिखाए। बच्चों ने बेबिलोनिया की मिट्टी पर खुदी तख्तियाँ देखीं, ग्रीस की मोम से बनी पट्टियाँ व मिश्र के पेपिरस के स्क्रोल (चीरक) भी। बच्चों को रंगीन पाण्डुलिपियाँ सबसे आकर्षक लगीं। श्री ग्रीयर तब पुस्तकालय से पार्चमेन्ट की पाण्डुलिपियाँ लाएँ। उन्होंने सावधानी से उसके पृष्ठ पलटे और बच्चे उन पृष्ठों को अचम्भे से भर देखते रहे।

बच्चों ने म्यूज़ियम में मम्मियाँ और उनके ताबूत, प्राचीन मिश्र के आभूषण, काम करने के औज़ार और अस्त्र-शस्त्र भी देखे। उन्होंने पिरामिड प्राचीन रोम के आवास और एक मठ की आकृतियाँ देखीं। सामन्ती कवच देखा। और तब देखा आधे घण्टे का एक चलचित्र जिसमें बताया गया था कि म्यूज़ियम खुदाई अभियान के लिए कैसे तैयारी करता है, मिश्र में खुदाई कर किसी कब्र को तलाशता है और मम्मी पर लिपटी पट्टियाँ कैसे हटाई जाती हैं। इससे बच्चों को वे तमाम बातें भी समझ आईं जिन्हें वे अध्ययन के दौरान साफ-साफ समझ नहीं सके थे।

इस अध्ययन के अनुभव पर नज़र दौड़ाने पर पाती हूँ कि मैं अपना उद्देश्य हासिल कर पाई हूँ। बच्चे खुद सोचने लगे हैं जो समझ व आदर्शों के विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उनका सोचना लगातार तात्कालिक अनुभवों से जुड़ा रहा अन्यथा वे विचार बच्चों के लिए बन्जर और बेमानी ही रहते। आज दुनिया में अपने स्थान की बेहतर समझ उनमें पनपी है। स्कूली सत्र के शेष दिन भी इतने ही सार्थक व समृद्ध रहे जितने इस अध्ययन के दौरान थे। यह अध्ययन इतना फलदाई व सार्थक न होता अगर वह वातावरण ही नामौजूद होता जिसमें बच्चों को लगातार समृद्ध अनुभवों को जीने का स्थान मिल सके। जिसमें रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं को समझने और उनके समाधान तलाशने के माध्यम से उनकी समझ को विसतार मिले। दो अन्य घटनाओं को भी यहां दर्ज करना आवश्यक लगता है क्योंकि ये दोनों इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि जहाँ कहीं शिक्षण में समान अवसर उपलब्ध होते हैं वहाँ कुशाग्र बच्चे उत्पीड़ित हो सामान्य नहीं बन जाते बल्कि अपनी क्षमताएँ अधिकतम सीमा तक विकसित कर पाते हैं।

बसन्त के एक दिन मुझे बड़े बच्चों की मानक उपलब्धि परीक्षा लेनी थी। परीक्षा के दौरान छोटे बच्चों को सम्भालने के लिए मुझे मदद तलाशने में परेशानी हुई। तब मार्था ने मदद का प्रस्ताव रखा। वह परीक्षा की पूर्व संध्या को नन्हों की किताबें घर ले गई और उसने उनके लिए पाठ तैयार किए। अगली सुबह उसने पाठ योजनाएँ मुझे दिखाईं। सच बड़ी सावधानी से सोच-विचार कर तैयार की गई थीं वे योजनाएँ। उतनी ही सावधानी से जितनी शायद मैं बरतती। यहां तक कि उसने प्रत्येक पाठ के उद्देश्य का भी

उल्लेख किया था। मार्था ने उनके खेलघर के आसपास बागवानी, करने में मदद की। वे सैर को गए और लौटने पर जो कुछ देखा था उसकी कथा लिखने में भी मार्था ने उनकी मदद की। उन्होंने तब अपना पठन सत्र जारी रखा और कहानी सत्र के समय स्वतःस्फूर्त मन्चन में मदद की। खाने के बाद हाथ-मुँह धोने और दोपहर को आराम करने के समय उनका ध्यान रखा। तब बच्चे खेले, उन्होंने गीत गाए, कुछ छपाई की और मिट्टी की आकृतियां बनाईं। वे घर लौटते उसके पहले उसने उन्हें वर्तनी और गिनती में भी मदद की। अगर कोई बारह साल की बच्ची नन्हों के एक समूह को पूरे दिन न केवल सम्भालती है बल्कि उन्हें गतिविधियों द्वारा खुश व व्यस्त भी रख पाती है, तो वह शब्द की समग्रता में 'शिक्षित' होती है।

दूसरी घटना भी मार्था से ही जुड़ी है। हमेशा की तरह इस बसन्त को भी हमने एक कठपुतली प्रदर्शन किया। शाला भवन में यह कार्यक्रम तीन बार हुआ और तब हमें आमन्त्रण मिला कि हम कस्बे के हाईस्कूल व ब्लेयर अकादमी में भी इसी कार्यक्रम को प्रस्तुत करें। प्राथमिक कक्षा के बच्चों ने 'नन्हे काले सैम्बों' की कहानी का मन्चन किया। इसे पूरी तरह मार्था ने तैयार करवाया था। उसने नन्हों की कठपुतलियां तैयार करने में मदद की थी, और कहानी को नाटक का रूप दिया था। मार्था ने उन बच्चों को खुद चुनने में मदद की, जो अन्ततः कठपुतलियां नचाने वाले थे। एरिक नन्हा सैम्बो बना। मार्था इस शरमीले बच्चे की छुपी क्षमताएँ उभार सकी, जिन तक मैं पहुंच ही नहीं पाई थी। उसने हर बच्चे की ज़िम्मेदारी उसे कछ ऐसे समझा दी कि वह मन्चन के समय आराम से दर्शकों के बीच बैठ सकी और अपनी मेहनत के नतीजे का लुत्फ उठा सकी। कार्यक्रम खत्म हुआ तो मेरी नज़रें मार्था की नज़रों से टकराईं, हम दोनों 'शिक्षिकाओं' को पता था कि हमने अपना काम बखूबी किया है।

### उपसंहार

इस चौथे साल की समाप्ति पर मैंने स्टोनी ग्रोव छोड़ दिया। अगर मैं इन पृष्ठों में इन बच्चों को ज़रा भी जीवन्त बना सकी हूँ तो आपके मन में यह सवाल उठ रहा होगा कि "आखिर इन बच्चों का आगे क्या हुआ? वे अब क्या कर रहे हैं?" इन प्रश्नों के जवाब इतने अहम हैं कि उनके बिना इस किताब का उद्देश्य तक पूरा नहीं होगा।

आना ओलसेउस्की और ओल्गा प्रिन्लैक ने हमारे स्कूल को सबसे पहले छोड़ा था। आना कस्बे के हाईस्कूल में दाखिल हुई और ऑनर्स के साथ पढ़ाई खत्म की। तब वह हमारे समुदाय से निकली और एक बड़े शहर में सेक्रेट्री पद पर काम करने लगी।

ओल्गा पढ़ाई जारी नहीं रख पाई क्योंकि उस वक्त उसके पिता का शिक्षा में भरोसा नहीं था। खासकर लड़कियों को पढ़ाना-लिखाना वे बेकार की बात मानते थे। सो ओल्गा को न्यू यॉर्क में घरेलू कामकाज करने भेजा गया। अपनी पहली बचत से उसने अपने दांतों का इलाज करवाया। उसके बाद से वह नियमित रूप से घर पर पैसे भेजती रही है ताकि उसके छोटे भाई-बहनों के लिए कपड़े खरीदने में परिवार को मदद मिले। उसने अपने माता-पिता को बहनों की पढ़ाई जारी रखने को मनवा लिया है।

फ्रैंक कुछ समय तक एक बड़े फलबागान में काम करता रहा। एक दिन जब मैं काउन्टी के दौरे पर थी तो मैं दोपहर का खाना खाने एक डाइनर में रुकी। अन्दर एक वेट्रेस किसी पुरुष से कह रही थी “शर्तिया फ्रैंक को खोने का तुम्हें बड़ा दुख होगा।” “दुख!” वह बोल उठा “वह अब तक का सबसे उम्दा कामगार रही है। अगर वह अंकल सैम (अमरीकी सरकार) के लिए काम करने न जा रहा होता, तो मैं किसी को उस पर हाथ न धरने देता।” ये लोग फ्रैंक प्रिन्लैक के बारे में बतिया रहे थे। फ्रैंक अब नौसेना में है।

रॉल्फ नौसेना के हवाई दस्ते के ज़मीनी दल में है। हाईस्कूल से निकलने के बाद उसने कुछ समय तक एक गराज में काम किया और तब युद्ध कार्य में लगा। रॉल्फ हाईस्कूल में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया। उसकी एक मात्र रुचि थी मशीनों में। अब वह वही काम कर रहा है जो उसे सच में पसन्द हैं, उसके खुशनुमा खतों से यह सिद्ध भी होता है।

इस बसन्त एक रात मुझे कैथरीन और सोफिया ने रात के खाने पर बुलाया। उनका घर आठ साल पूर्व के उस दिन विपरीत बिल्कुल साफ-सुथरा था, जब मैं पहली बार उसमें घुसी थी। दोनों लड़कियों ने खाना पकाया था। भुनी मुर्गी, आलू का भरता, फलियाँ, सेव, मूली, और हरी पत्तियों का सलाद, वैनिला पुडिंग और श्रीमती सेमेटिस और मेरे लिए कॉफी व बाकि सबके लिए दूध। सलाद बनाने की विधि कैथरीन ने सुश्री मोरेन के प्रदर्शन के दौरान सीखी थी। मैंने कैथरीन को सधे हाथों से सेव काटते और दक्षता से सलाद में नमक-कालीमिर्च आदि डाल, पलटते देखा। लगा यह सब वह केवल मेहमान की मौजूदगी के कारण नहीं कर रही, बल्कि उसे ऐसा करने का काफी अभ्यास भी है।

दोनों लड़कियाँ खुद सिले हुए लिबास पहने थीं। सोफिया ने मुझे अपने नए गर्मियों के कपड़े दिखाए जो उसने बड़ी सूझबूझ के साथ खरीदे और तब सिले थे। लड़कियों ने मुझे वह सुन्दर मखमली कपड़ा भी दिखाया जो उन्होंने अपनी बैठक के दीवान का खोल बनाने के लिए खरीदा था।

उस शाम मुख्य बातचीत इसी के इर्दगिर्द रही कि लड़कियों के लिए युद्ध कार्य करने न्यूयॉर्क जाना बेहतर होगा या निजी सचिवों के रूप में काम

करना, जिसके लिए उन्होंने अब तक तैयारी की थी। हाईस्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद कैथरीन पास के एक शहर में एक डॉक्टर की सचिव व सहायिका के रूप में काम करती रही थी। सोफिया ने पिछले साल हाईस्कूल खत्म किया था। समस्या के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद लड़कियों ने तय किया कि गर्मियां खत्म होने के बाद वे न्यू यॉर्क जाएंगी। वे वहां अपनी मौसी-मौसा के साथ तब तक रहेंगी जब तक वे यह तय नहीं कर लेती कि वे क्या करना चाहती हैं।

कुछ समय बाद श्रीमती सेमेटिस ने मुझसे कहा “पता है, मैं कभी नहीं सोचती थी कि मैं अपने बच्चों पर गर्व महसूस करूंगी, पर सच में मुझे उन पर नाज़ है।”

सन् 1939 की पतझड़ से सोफिया सेमेटिस, डॉरिस एन्ड्रेज़, मेरी ओलसेउस्की व रूथ थॉमसन हाईस्कूल में दाखिल हुईं। वार्षिक सत्र खत्म होने पर हाईस्कूल अच्छी पढ़ाई करने वाले बच्चों को व श्रेष्ठ नागरिकता के लिए प्रशस्ति पत्र देता है। यह तीन निचली कक्षाओं के छात्र/छात्रा को दिया जाता है। इसे पाने वाले जूनियर छात्रों में एक थी आना। जिन तीन नई छात्राओं को प्रशस्ति पत्र मिला वे थीं रूथ, सोफिया तथा मेरी। हाईस्कूल में दाखिल होने वाले कुल छात्र-छात्राओं में स्टोनी ग्रोव से जाने वाले बच्चों का प्रतिशत है मात्र चार फीसदी फिर भी पुरस्कार पाने वाले बच्चों में लगभग पचास फीसदी बच्चे हमारे स्टोनी ग्रोव के पूर्व छात्र थे।

डॉरिस और मे उस साल बाहर निकलीं और उनसे सम्पर्क टूट गया। पर मेरी शहर में सेक्रेट्री के पद पर काम कर रही है। रूथ गत वर्ष हाईस्कूल से सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुईं और अब उसका विवाह एक विमान चालक से हो गया है। वह अपने सपनों का घर-संसार बसाने को उत्सुक है। वह निश्चय ही एक अच्छी पत्नी और माँ बनगी। उसमें असामान्य व्यावहारिक बुद्धि है।

थॉमस लेनिक, एडवर्ड वेनिस्की, जॉर्ज प्रिनलैक व वॉरेन हिल 1940 की बसन्त में स्टोनी ग्रोव से निकले। हमने हेलेन ओलसेउस्की को भी हाईस्कूल भेज दिया क्योंकि वह तेज़ी से बढ़ रही थी और उसे अपने हम-उम्र बच्चों की दोस्ती और चुनौती की आवश्यकता थी।

दो महीने की अवधि में ही वॉरेन ने कस्बाई बच्चों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने उसे नवागुन्तक छात्र-छात्राओं की कक्षा का अध्यक्ष चुन लिया। अगले साल हेलेन द्वितीय वर्ष की कक्षा की अध्यक्षा बनी। जब हेलेन और वॉरेन जूनियर कक्षा में पहुंचे तो उन्होंने कठपुतलियों में अपनी रुचि को फिर से जगाया और अपने कला शिक्षक की मदद से अपने सहपाठियों उन्हें संचालित करना सिखाया। इस साल जब बंसत में उनका अन्तिम सत्र समाप्त

हुआ तो विदाई समारोह में सर्वश्रेष्ठ वक्ता होने के नाते हेलेन ने ही छात्र-छात्राओं की ओर से विदाई भाषण दिया था।

जॉर्ज हाईस्कूल नहीं गया। उसने कुछ समय नागरिक संरक्षण दल के सदस्य के रूप में बिताया और उम्दा रिकार्ड के साथ वहां से विदा ली। अब वह नौसेना में है।

एडवर्ड ने सोलह वर्ष की आयु तक हाईस्कूल में पढ़ाई की और तब क्योंकि हाईस्कूल में सीखने लायक उसे कुछ नहीं मिला उसने खेतीबारी के पक्ष में पढ़ाई छोड़ी उसने निश्चित रूप से अपने लिए सही विषय चुना-व्यावसायिक कृषि। कृषि प्रयोगशाला में वह खुश था पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम इन सुस्त बच्चों के लिए समग्र विकल्प नहीं हैं।

अगर हाईस्कूल उस स्तर से शुरू करने को प्रस्तुत होता, जहाँ एडवर्ड था, तो स्कूल उसे बहुत कुछ सिखा सकता था। बढ़ती परिपक्वता के हर स्तर पर एडवर्ड छपी सामग्री का पूरा-पूरा अर्थ समझ सकता था- अखबारों से, पत्रिकाओं से, किताबों से व कृषि सम्बन्धी सामग्री से। वह स्वयं को बेहतर तरीके से अभिव्यक्त करना सीख सकता था। वह व्यापक समाज में अपना अधिकतम योगदान दे सके, ऐसी तैयारी में स्कूल उसकी मदद कर सकता था। दूसरे शब्दों में एडवर्ड उस दिशा में विकसित हो सकता था, जिस दिशा का बयान इस पुस्तक में किया गया है।

शिक्षा को हमें विकास के रूप में देखना चाहिए। ऐसा सतत विकास जिसकी प्रक्रिया उतनी हो लम्बी होती है, जितना लम्बा हमारा जीवन पर एडवर्ड के लिए और न जाने इस देश के कितने ही दूसरे बच्चों के लिए बढ़ने की यह प्रक्रिया हाईस्कूल में ही थम जाती है। सीखने और बढ़ने के बदले ऐसे बच्चे धीरज धर स्कूलों में बैठे उस दिन की राह तकते हैं जब वे 'कानूनन' स्कूल 'छोड़' सकते हैं। हमारे लोकतन्त्र के मानव संसाधनों का कितना भारी अपव्यय है यह!

थॉमस भारी उम्मीदों के साथ हाईस्कूल गया था। वह सच में कुछ बनना चाहता था। वह अपनी सौतेली माँ को यह बता देना चाहता था कि उसमें भी कुछ 'खासियत' है। वह हाईस्कूल में छह महीने ही टिक सका। एक रोज़ वह मेरे पास आया और बोला "मैं हार गया मिस वेबर। मुझे सभी टीचरों की झाड़ सुननी पड़ती है क्योंकि मैं किताबों की बातें सीख नहीं सकता। लगता है मैं अपना समय ज़ाया कर रहा हूँ।" मैंने उससे देर तक बातचीत की, कोशिश यह की कि उसका खुद पर भरोसा फिर से जगा सकूँ, समझा सकूँ अगर वह पढ़ाई में सार्थकता नहीं खोज पाता तो इसमें गलती सिर्फ उसकी नहीं है। थॉमस ने एक छोटी फोटोग्राफी लैब में काम करना शुरू किया। जल्दी उसने इतने पैसे बचा लिए कि वह एक दुरुस्त हाल पुरानी कार

खरीद सके। तब से वह अक्सर मिलने आने लगा। उसके चुस्त-दुरुस्त कपड़ों व आत्मविश्वास से भरे आचरण से मुझे लगता रहा कि वह बिल्कुल ठीक-ठाक है। एक दिन उसने मुझे बताया कि उसने कितनी बचत कर ली है। जब मैंने पूछा कि वह बचत आखिर कर क्यों रहा है, तो उसका जवाब था “ज़ाहिर है आगे कभी मेरी इच्छा किसी से शादी करने की होगी, आपको तो पता है गृहस्थी शुरू करने के वास्ते काफी पैसों की दरकार होती है।”

थॉमस नियमित रूप से अखबार पढ़ता और हम सरकार और दुनिया के बारे में लम्बी चर्चाएँ करते। उसका मत हमेशा तथ्यों पर आधारित होता और वह अन्धी भावनाओं के बहाव में कभी नहीं बहता। थॉमस भी अब नौसेना में है। हमारे देश में सशस्त्र बल में शायद वही एक सदस्य है जो वास्तव में यह समझता है कि हम युद्ध क्यों लड़ रहे हैं!

एन्ड्रू डूलियो और कार्टराइट बच्चों ने 1939-1940 की सर्दियों में स्टोनी ग्रोव स्कूल छोड़ा और लॉयड मैथ्यूस ने उसी साल के अन्त में। कार्टराइट परिवार इस इलाके से ही निकल गया सो उनसे मेरा सम्पर्क टूट गया।

एन्ड्रू ने नए स्कूल में पढ़ाई तो पूरी की पर वह काफी पीछे रहा और अपने पिता के खेत में काम करने लगा। वह स्टोनी ग्रोव में रह रहा था, सो मैं एक रोज़ उससे मिलने गई। उसने मुझे अपने पिता के पशु दिखाए। और तब यह भी बताया कि वह किसी दूसरे काम के बनिस्बत खेतीबारी ही करना चाहता है। यह बताते समय उसके हाथ एक गाय के गले के पास थे और वह अपना चेहरा गाय के चेहरे से रगड़ रहा था। “यह गाय बेहद अच्छी है मिस वेबर” कहते समय उसकी आंखें चमक रहीं थीं।

लॉयड इसलिए चला गया क्योंकि उसके माता-पिता ने किसी दूसरे राज्य में खेत खरीद लिया। जाते समय उसकी मां ने मुझसे कहा कि साल भर स्टोनी ग्रोव में बिताना लॉयड के लिए फायदेमन्द रहा था। एक आत्म-केन्द्रित बच्चे से, जिसने हमारा क्रिसमस नाटक को लगभग बर्बाद कर दिया था, वह क्रमशः काफी परिपक्व हो चला और स्कूल के सबसे कुशल अध्यक्ष व हमारे अखबार के सबसे सक्षम सम्पादक के रूप में उभरा।

सितम्बर 1942 में पर्ल प्रिन्लैक, एल्बर्ट हिल और डेनियल कोल ने हाईस्कूल में दाखिला लिया। पर्ल वहां एक व्यापारिक (कर्मशियल) पाठ्यक्रम कर रही है जबकि एल्बर्ट और डेनियल व्यावसायिक (वोकेशनल) कृषि। डेनियल बेहतरीन पढ़ाई कर रहा है और उसमें एक अच्छे किसान बनने के सभी लक्षण हैं। मार्था भी उस साल हाईस्कूल में दाखिल हुई। चार वर्ष पहले रॉल्फ व मार्था को छोड़ जोन्स परिवार के अन्य सभी बच्चों का विवाह हो चुका था। तब उनकी दादी ने तय किया कि वे कामकाज से फारिग हो कुछ आराम



के साल बिताएंगी। तब श्री जोन्स और रॉल्फ करबे में रहने चले गए और मार्था अपनी एक विवाहित बहन के साथ रहने लगी।

मार्था ने करबे की शाला में सातवीं कक्षा में दाखिला लिया। पर उसके लिए अगले दो वर्ष दुखदाई सिद्ध हुए। उसने स्वयं को एक ऐसी अनियन्त्रित कक्षा में पाया जिसकी शिक्षिका भी कमजोर थी। वह स्थिति से असन्तुष्ट थी और नित नई कारगुजारियों को नेतृत्व देती थी। जब बातचीत के दौरान मैंने सुझाया कि वह स्थानीय 4-एच क्लब व गर्ल स्काउट क्लब की सदस्य बन जाए तो उसने कहा “वे कुछ नहीं करते। बेहद बेवकूफ हैं सब।” जब मैंने उसे याद दिलाने की कोशिश की, कि वह स्वयं भी स्थिति को बदलने की कोई चेष्ट नहीं कर रही है, उसने जो कहा उसमें मुझे कुछ वर्ष पूर्व के रैल्फ के दृष्टिकोण की प्रतिध्वनि सुनाई दी। वह बोली “क्या फायदा!” मार्था किशोरावस्था के कठिन दौर से गुज़र रही थी और उसकी मदद को कोई था ही नहीं। मैं उसकी स्थिति से काफी दूर थी सो कोई वास्तविक मदद नहीं कर पाई।

अब मार्था हाईस्कूल में है और स्थिति जस की तस है। वह जितना कुछ कर सकती है, नहीं कर रही है और अपनी तमाम खूबियों को ज़ाया कर रही है। हाईस्कूल कैसे उम्दा अवसर को गंवा रहा है!

और स्टोनी ग्राव स्कूल? मेरे छोड़ने के चार वर्षों पश्चात् उसका भला क्या हुआ?

यद्यपि वेतन कम था, और आधुनिक सुविधाओं की आदी किसी युवती के लिए यहाँ रहने की अच्छी जगह और मनोरंजन की कोई सुविधाएँ न थीं, एक नौजवान युवती ने स्कूल की ज़िम्मेदारी सम्भाली। उसकी बड़ी तरीफ थी और कई लोगों ने उसका नाम सुझाया था। पर उसे पढ़ाने का अनुभव न था, और यह पढ़ाने का उसका पहला साल था। पर हमें लगा कि जो कुछ कभी अनुभवहीनता के कारण होगी वह उसकी ऊँची योग्यताओं से पूरी हो सकेगी। वह संगीत, कला व साहित्य से परिचित थी। बेहद अच्छी छात्रा रही थी और कॉलेज के जूनियर वर्ष में श्रेष्ठ छात्रा चुनी गई थी।

फिर भी स्थिति से हम वाकिफ थे, सो हमने उसकी खूब मदद की। जब मैंने बच्चों को समझाया कि मैंने सहायक शिक्षिका का पद स्वीकार लिया है, तो उन्हें यह भी बताया कि नई शिक्षिका उनके बीच नए विचार लाएगी, ठीक वैसे जैसे नए छात्र व नए परिवार समुदाय में लाते हैं। मैंने यह सब इतनी अच्छी तरह समझाया कि बच्चे नई शिक्षिका का बेताबी से इन्तज़ार करने लगे, यहां तक कि आखिरी दिनों में मुझे ही कुछ अटपटा सा अकेलापन महसूस होने लगा। सामान्यतः जिस तरह बिदाई दी जाती है वैसा कुछ मेरे

साथ इन बच्चों ने किया ही नहीं। मेरे छोड़ने के सप्ताह भर बाद उन्हें याद आया कि उन्हें मुझे कोई बिदाई भेंट व पार्टी देनी चाहिए।

तीन दिनों तक नई शिक्षिका मुझे बच्चों के साथ काम करते देखती रही, और यथासम्भव मेरी मदद करती रही। इस दौरान मैंने उसे स्कूल व बच्चों के रिकॉर्डों से परिचित करवाया। पहले सप्ताह की योजना भी हमने मिलकर बनाई।

पहले सप्ताह तो नई शिक्षिका ने बच्चों को स्वयं अपनी गतिविधियों को निर्देशित करने दिया, सो स्कूल सामान्य रूप से चला। शिक्षिका ने भी इस दौरान बच्चों से बहुत कुछ सीखा। परन्तु अगले शनिवार तमाम सलाहों के बावजूद उसने मेज़-कुर्सियों को व्यवस्था को, कक्ष में लगी चार्टों व बुलेटिन बोर्डों को, खुद बच्चों से बिना पूछे ही बदल डाला।

सोमवार की सुबह जब बच्चे स्कूल पहुँचे तो उन्होंने बवाल मचा डाला। अव्वल तो बच्चों का भरोसा जीते बिना ही शिक्षिका ने एक बाहरी व्यक्ति की हैसियत में बच्चों के मसलों में दखलन्दाज़ी की। और यह भी तब जब बच्चे अब तक अपने से सम्बन्धित सभी मामलों के निर्णयों में भागीदारी निभाते आए थे। बच्चों को यह नागवार गुज़रा। पर यह नाराज़गी भी शायद वे भूला देते, बशर्ते शिक्षिका द्वारा किए गए बदलाव अच्छे होते। बच्चों ने अपने अनुभव से कक्षा में प्राकृतिक रोशनी का, अपनी विविध गतिविधियों के लिए सबसे बढ़िया उपयोग करना सीखा था ताकि उनकी आंखों पर ज़ोर न पड़े। अब उन्होंने पाया कि सारी की सारी मेज़ें, खिड़कियों की दिशा में जमा दी गई हैं। इसी प्रकार बच्चे बुलेटिन बोर्ड का बेहतर उपयोग सीख चुके थे, वे उस पर फोटो आदि लटकाने के बदले विभिन्न प्रकार की नोटिस, जिम्मेदारियों की सूची या चार्टों के लिए काम में लेते थे। अब बच्चों ने पाया कि उनकी सूचियां उनकी पहुंच से बाहर, शिक्षिका को मेज़ के पीछे लगे बोर्ड पर लग गई हैं और बुलेटिन बोर्ड पर पशुओं व पालतू जानवरों के चित्र लगे हुए हैं। जो वे कमरे के किसी भी हिस्से में लटकाए जा सकते थे। ज़ाहिर है कि शिक्षिका को यह सिखाया गया था, जैसा मुझे भी सिखाया गया था, कि किसी नई इकाई की शुरुआत के पहले उससे सम्बन्धित आकर्षक चित्र लगाने से बच्चों की रुचि जगाई जा सकती है। पर सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी के बारे में उसने क्या सीखा था? परिस्थिति को भांपकर अनुकूल निर्णय लेने के बारे में उसने क्या सीखा था? हमारे सुसभ्य समाज के अधिकांश लोगों की तरह उसने अपना सारा समय किसी दूसरे के विचार जानने-सीखने में बिताया था, इतना कि उसके पास मौलिक व आलोचनात्मक चिन्तन के लिए कोई वक्त ही नहीं बचा था।

इन और ऐसी ही अन्य घटनाओं के चलते बच्चों का उस पर से विश्वास उठ गया और वह उन्हें दिशा देने की क्षमता भी खो बैठी।

इधर बच्चों के माता-पिता भी सोच में पड़ गए। क्या इसे बच्चों की कोई फिक्र ही नहीं है? उन्हें यह तो पता था कि वह काम में इतनी नहीं डूबी है कि वह उनसे मिलने की फुरसत नहीं निकाल पाती, क्योंकि वे उसे अक्सर अपने साथियों के साथ घूमती-फिरती नज़र आती थी। उनके अनुसार उसने अपनी मित्र-मण्डली को चुनने में भी अक्लमन्दी नहीं दर्शाई थी। ज़ाहिर है कि ग्रामीण रीति-रिवाज़ और शिष्टाचार के बारे में वह न तो जानती थी, न जानने-सीखने की उसने कोई कोशिश ही की।

धीरे-धीरे वह स्वयं अपने, और कक्षा के रख-रखाव व दिखत के बारे में बेध्यान हो चली। दुर्भाग्य से कुछ समय बाद बच्चे भी लापरवाह व उदासीन हो गए। वे स्कूल साफ-सफाई की जिम्मेदारियां निभाने या “शिक्षिका के लिए काम करने” से इन्कार करने लगे।

स्थिति बद से बदतर होती गई। पहले तो बच्चे शिक्षिका से बातचीत कर मसले सुलझाने की चेष्टा करते थे पर जल्दी ही उनके साझे सत्र शिकायत करने और झगड़ने के सत्रों में तब्दील होने लगे। सो अन्ततः बच्चों ने कहा “भई, अगर वे ही सब कुछ जानती हैं, तो उन्हें ही अपनी तरह से सब करने दो।” और तब यह ब्रह्मास्त्र हर जिम्मेदारी से पिण्ड छुड़ाने के काम आने लगा।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि जो बच्चे आत्म-नियन्त्रण के शिखर तक पहुंचे हों वे अगले ही साल किसी दूसरी शिक्षिका के साथ इस कदर अनुशासनहीन बन जाएँ। सच तो यह है कि जिन स्थितियों का मैंने ऊपर बयान किया है, उन स्थितियों में बच्चे अगर आलोचना नहीं करते, भीगी बिल्ली से वह सब स्वीकारते जाते जो उनका विवेक गलत ठहरा रहा हो, तो वास्तव में जो कुछ पिछले चार सालों में उन्होंने सीखा था, उसका उद्देश्य भी परास्त हो जाता।

फिर भी बच्चे आखिर बच्चे ही होते हैं। अपरिपक्व होने के कारण उन्हें एक मार्गदर्शक की दरकार भी होती है। इस तथ्य को तो उस आदिम युग से ही स्वीकार लिया गया था, जबसे इन्सान ने दूसरे लोगों के साथ जीना प्रारम्भ किया था। अगर इस कथन में सच्चाई न होती तो समाज में शिक्षकों की कोई ज़रूरत ही न होती। परन्तु जब बच्चों का उस व्यक्ति पर से विश्वास उठ जाता है जिसे उन्हें मार्ग दिखाना हो तो वे भ्रमित हो जाते हैं। अपनी अपरिपक्वता के कारण जिन मसलों को वे स्वयं नहीं सुलझा सकते, ऐसे मसलों और गुत्थियों को सुलझाने में मददगार व्यक्ति उन्हें नज़र तक

नहीं आता।

अगले साल स्टोनी ग्रोव के बच्चों को एक परिपक्व व अनुभवी शिक्षिका मिली, जिसकी मदद से उनकी आदतें सुधर सकीं। दुर्भाग्य से स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे साल भर में ही स्कूल छोड़ने पर मजबूर हो गईं।

इसके बाद युद्ध के कारण शिक्षक मिलना ही असम्भव हो गया और समुदाय से ही जिसे महिला को असम्भव पढ़ाने का कुछ अनुभव था उसने बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी ली। वे अपनी सीमाएँ जानती थीं और उन्होंने बच्चों से ईमानदारी भी बरती। बच्चों को उनकी ईमानदारी पसन्द आई, सो उन्होंने स्थिति का फायदा उठा जिम्मेदारियों से बचने के बदले, अधिक से अधिक जिम्मेदारियाँ स्वीकार्य।

उस गर्मियों में एलिस ने मुझे कहा, “पता है आपको, हमें अब कौन पढ़ाएगा? हमें तो खुद ही खुदको पढ़ाना होगा ना!” और ठीक यही बड़े बच्चों ने किया भी। अगर पाठ के किसी बिन्दु पर वे असहमत होते तो उस पर देर तक चर्चा करते, तब तक जब तक वे सहमत न हो जाते। वे उन बिन्दुओं को एक सूची पर लिख लेते ताकि वे उनकी मदद के लिए सप्ताह में एक बार आने वाली शिक्षिका से पूछ लें। वे इस दौरान सभी तरह की किताबें पढ़ते रहे। उनकी पाठ्यपुस्तकों में जिन गतिविधियों को सुझाया गया था उन्हें करते रहे। साल के अन्त में उनकी उपलब्धियों की परीक्षा भी हुई और उन्हें अपनी कक्षा के औसत स्तर से कहीं अधिक आंका गया।

बच्चे अपने आप जो कुछ कर सकते थे वह सब उन्होंने किया। परन्तु अपरिपक्व बच्चों से यह उम्मीद तो नहीं रखी जा सकती कि वे समूचा काम कर सकेंगे। इस पुस्तक में चौथे साल का जो वर्णन है उसमें ये बच्चे दूसरी तीसरी और पांचवीं जमात में थे। उसके बाद के तीन सालों तक उनको सही मार्गदर्शन भी नहीं मिला था। इसके बावजूद उन्होंने जिस आत्मनिर्भरता का परिचय दिया वह सिद्ध करता है कि अगर शिक्षा की सही अवधारणा को हस्तान्तरित किया जा सके तो वह कितनी असरकार होती है। अगर कुछ ही साल बच्चों पर इतना असर छोड़ सकते हैं तो ज़रा सोचिए तो सही कि अगर बच्चों को रचनात्मकता व लोकतान्त्रिक जीवन का प्रशिक्षण उन बारह वर्षों तक मिलता रहे, जो वे स्कूलों में बिताते हैं, तो कैसे अद्भुत नागरिक तैयार हो सकेंगे!

इन सालों में स्टानी ग्रोव स्थित शाला-भवन क्रमशः बिना रख-रखाव के खस्ताहाल हो चला। दरवाज़े और दीवारें गन्दी उंगलियों के स्पर्श से कीचट हो चलीं। चित्रों के फ्रेम किताबों आदि पर धूल की तहें नज़र आने

लगीं। खेलघर का दरवाज़ा कब्जों से झूल गया और हवा में भड़भड़ाने लगा जंगली फूलों का रॉकगार्डन खरपतवार से इतना भर गया कि शेष सब उसके नीचे ही दब गया। यदाकदा कोई जीवट वाला फूल उस झुरमुट से लड़ सिर उठाता ज़रूर नज़र आ जाता था। लगता मानो वह भी शाला के बच्चों की ही तरह, उनके नियन्त्रण के बाहर की तमाम विपरीत ताकतों से संघर्ष कर रहा हो।

हमारा स्कूल भी देश के एक लाख एकल शिक्षक शालाओं सा बनने लगा था और उसका हश्र भी उनसा होता लगता था। गत बसन्त शिक्षा बोर्ड को लगने लगा कि शायद स्कूल को बन्द कर बच्चों को कस्बे के स्कूल में भेज देना ही बेहतर होगा। पर समुदाय ने एकमत हो इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। केवल दो परिवार जो हाल ही में बाहर से आकर बसे थे, ने प्रस्ताव के पक्ष में मत डाला। बच्चों के माता-पिता ने मुझसे कहा “युद्ध हमेशा थोड़े ही चलता रहेगा। शायद किसी दिन हमें फिर से कोई अच्छी शिक्षिका मिलेगी। स्कूल ही तो है जिसने हम सबको परस्पर बांधे रखा है।” ये लोग जानते हैं कि कोई छोटा सा स्कूल किसी समुदाय के लिए कितना असरकारी हो सकता है, सो वे उसे खत्म नहीं होने देना चाहते हैं।

पिछले सप्ताह मैं फिर से शाला भवन गई। पाया कि इन्हीं गर्मियों में उसकी अन्दर-बाहर से पूरी मरम्मत व पुताई करवाई गई थी। वह नन्हा सा सफेद डब्बानुमा भवन, धूप में मेरी आंखों के सामने चमक रहा था, ठीक आठ साल पहले के उस दिन की तरह जब मैंने उसमें अपना विश्वास जताया था। मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा। “किसी दिन इन्हें एक अच्छा शिक्षक ज़रूर मिलेगा,” मैंने सोचा। किसी दिन सभी बच्चों को अच्छे शिक्षक मिलेंगे। क्या यही लोकतन्त्र की मुख्य आशा नहीं है!